जय पराजय

अनुवादक

कविराज विद्याधर विद्यालंकार

ॐ

VIDYALANKAR SERIES

JAI PARAJAYA

विद्यालंकार–आर्यभाषा–ग्रंथमाला

(ग्रंथ दूसरा)

जय-पराजय

(उपन्यास)
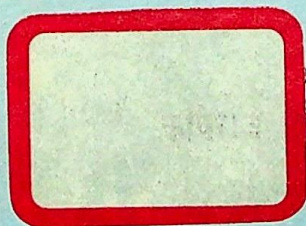
अनुवादक –

द्याधर विद्यालंकार

पुस्तक मिलनेका पता –
डाक्टर सत्यकाम वर्मा
३०१/६ राजेन्द्रनगर,
डाक:–नई दिल्ली ५

दाम —५) पांच रुपये

जय - पराजय

जेन आस्टिन के सर्वोत्तम उपन्यास
'प्राइड एण्ड प्रेजूडिस' का हिन्दी रूप

अनुवादक
विद्याधर विद्यालंकार
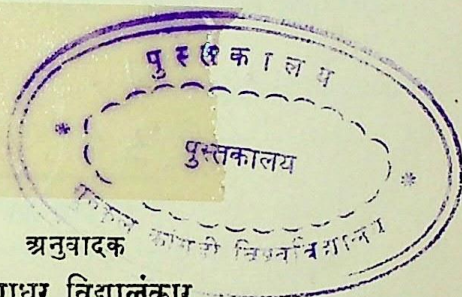
शारदा प्रकाशन
३७/६, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-५

मूल्य : पाँच रुपये
प्रथम संस्करण : मई, १९५९
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : शारदा प्रकाशन
३७/६, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
मुद्रक : साधन प्रिंटरी, हैदराबाद

समर्पण

उन सब माताओंको यह ग्रन्थ सादर समर्पित है जो कि अपनी सन्तानोंकी मंगल कामनाके लिये उन्हें विवाहके पुनीत सूत्रमें बांधकर अपने जीवनको सम्पूर्ण-सफल मानती हैं और वरवधुको प्रसन्न रखनेकी सदा चेष्टा करती हैं।

-- श्री विद्याधर विद्यालंकार

पुस्तक परिचय

आज हमें "विद्यालंकार-आर्यभाषा-ग्रंथमाला" का दूसरा ग्रंथ "जय–पराजय" प्रकाशित करते हुए बड़ा हर्ष होता है। मूलग्रंथ का नाम (Pride and Prejudice) प्राइड एण्ड प्रैजुडिस " है जिसे कुमारी जेन आस्टन (Jane Austen) ने लिखा था।

– जेन आस्टनका जीवन –

दक्षिणी इंग्लैण्ड में हैम्पशायर के स्टीवैन्टन गांव में जेन आस्टन १६ नवंबर (दिसम्बर–दूसरे लेखक) १७७५ ईस्वी सन को उत्पन्न हुई थी। उसके पिता रैवरैण्ड जार्ज आस्टन इसी गांव में रैक्टर (धर्मगुरु) थे। उसकी माता कैसेण्डा ले थी जो आक्सफोर्ड के बैलियोल में ५० वर्ष से मास्टर थी। यह भी सूखे व्यंग करने में प्रसिद्ध थी। सात संतानों में से जेन आस्टन सबसे छोटी सन्तान थी। इस बालिकाने न तो सारी आयु विवाह ही किया. न घरही छोड़कर बाहर निकली। कभी यात्रा के लिये गई भी तो बाथ को। आरंभ के १६ वर्ष तो उसने गांव में रैक्टरी (गुरुकुल) में रहकर ही शिक्षादीक्षा ली। यहीं पर उसने अपने

परिवार की जीविकार्थ छोटी आयुमें ही लिखना आरंभ किया था। १८०१ में आस्टन को बाथ जाना पड़ा। १८०५ में सौथम्पटन और १८०९ में चौटन में जो आलटन के समीप हैम्पशायर में था, जाना पड़ा। वहां जेन आस्टन १८१७ ईस्वी तक रही। उसकी मृत्यु विनचैस्टर में १८ जुलाई १८१७ सन में हुई। वह वहां के गिर्जे में दबाई गई और वहीं पर उसकी स्मृतिमें एक खिडकी बना दी गई।

अपने जीवन में मिस आस्टन ने पर्याप्त लिखा। परंतु उसने अपनी लेखनकला को गृहकार्यों में कभी विघ्नडालने वाली न बनने दिया। वह स्वयं गृहकार्यों में वैसी ही रुचि रखती थी जैसी कि लेखनकला में। वह सीनेपिरोने में बडी कुशल थी। घरको स्वच्छ सुन्दर सजाकर रखने में बडी दक्ष थी। लिखने पढ़ने में उसे बडी रुचि थी। उसके दिन बडे नियमित, निर्विघ्न तथा शान्त–एकान्त में गुजरते थे। उसके चारों ओर की स्थिति मर्यादित थी क्योंकि वह एक छोटे से गांव में घिरी हुई थी। तो भी वह अपने चारों ओर रहने वाले नरनारियों के चरित्रों स्वभावों तथा घटनेवांली विविध घटनाओं को बडी सूक्ष्म तथा आलोचनात्मक दृष्टिसे देखती तथा उनपर मनन करती थी। अपने गूढ निरीक्षण और गहरे अध्ययन से संचित किये हुए अपने ज्ञान को, कल्पनाओं को तथा भावों को अपने लिखे हुए उपन्यासों में ऐसा उतारती थी कि अंग्रेजी भाषा में लिखे हुए अन्य उपन्यासकारों में से अन्य किसीने भी इससे अधिक सजीव तथा यथार्थ वर्णन अपनी पुस्तकों में नहीं उतारा है।

जेन आस्टन का सर्वोत्तम उपन्यास "प्राइड एण्ड प्रैजुडिस है। यह अक्तूबर १७९६ से अगस्त १७९७ ईस्वी के बीच लिखा गया था। परन्तु अन्धे प्रकाशकोंने इसे १८१३ सन तक प्रकाशित ही नहीं किया। दो वर्ष बाद १७९७–१७९८ ई. में उसने "सैन्स एण्ड सैन्सिबिलिटी" लिखा। मिस आस्टन को इन उपन्यासों के प्रकाशन को प्रकाशक न मिल सके। "नार्थङर एबे" जोकि १७९८ सन में लिखा गया था, उसने तो इसे बहुत ही निरुत्साहित कर दिया था। क्योंकि उसके बाद १७९८ से १८०९ तक उसने वाटसन के कथनानुसार कुछ विशेष नहीं लिखा था। उसकी

अन्य तीन पुस्तकें– " मैन्स फील्ड पार्क, " " एम्मा " और " पर्सुएशन ' १८११ और १८१६ के बीच में लिखी गई थीं।

उत्तम समालोचकों ने यह प्राय: सर्व-सम्मति से स्वीकार किया है कि उसके पास कभी कोई बाहरका प्रभाव नहीं जा सका था। अन्य कोई भी उपन्यास-लेखक इतना अधिक अपने आपमें निमग्न नहीं रहता था जितना कि कुमारी आस्टन रहती थी। वह जब लिखने बैठती थी तो उस के पास कोई भी गृहकार्य, गांवकी घटना अथवा अन्य चित्तार्षक विषय, विघ्न न डाल सकते थे। वह जीवनके छोटे २ भावों–प्रेम, वियोग आदि विविध मानसिक भावों में तथा परिवर्त्तनोंमें बडा मनोयोग देती थी। उसकी दृष्टि बडी सूक्ष्म तथा व्यंगमिश्रित थी। परन्तु जीवनके तथ्योंको वर्णन करते समय वह व्यर्थमें किसी पर व्यंग या कटाक्ष न करती थी। वह चरित्र या कथाका वर्णन करते समय उचित, ललित तथा प्रसाद गुण विशिष्ट ऐसी सुन्दर भाषाका प्रवाह बहाती थी कि उसकी भाषा के भाव सबको सुगमतासे समझमें आ जाते थे।

बहुत कालके बाद कुमारी आस्टनकी धीरे २ लोकमें प्रसिद्धि हुई। आधुनिक युगमें तो उसके लिखे हुए उपन्यासों को पढना उसकालकी संस्कृति तथा सभ्यताके ज्ञानके लिये परम आवश्यक माना गया है। अब तो अंग्रेजीभाषा की एक उत्तम लेखिकाके रूपमें उसे सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया है। चाहे उसका नाम देरमें ही लोगोंके मुख पर चढा हो तो भी कुमारी आस्टनकी बुद्धि तथा प्रतिभा की उसके उत्तम प्रशंस-कोंने सदा ही प्रशंसा की है। कालरिज, टैनिसन, मैकाले, स्काट, सिडनी, स्मिथ, डिसरैली, आर्कबिशप, व्हाटले ये सब उसके सदा ही प्रशंसक रहे हैं। अन्तिम महाशय तो उसको जगत्के सामने लानेमें अग्रसर माने गये हैं, मैकाले ने कुमारी आस्टनकी प्रतिभाकी बहुत प्रशंसा की है। उसने तो कुमारीका लिखा हुआ " मैन्स फील्डपार्क " उपन्यास सर्वोत्तम माना है। डिसरैली ने " प्राइड एण्ड प्रैजुडिस (जय पराजय) १७ बार पढा था। स्काट ने उसके विषयमें कहा था " इस नवयुवती में साधारण जनताके सामान्य जीवनोंके विविध उलझे हुए भावों तथा चरित्रोंको वर्णन

करनेकी ऐसी असाधारण प्रतिभा और क्षमता है कि मैं उससे चकित रह गया हूं । क्योंकि मुझे अन्यत्र किसी लेखक में वह दिखलाई नहीं पडती ।

-- चरित्र चित्रण --

पाठक गण ! 'जय-पराजय' में जेन आस्टन ने जिन पात्रोंका वर्णन किया है वे बहुत अधिक नहीं हैं । बेनट परिवारके सातों प्राणी, मिस्टर बिंगले, मि० डारसी, तथा मि० कालिन्स या उनके सम्बन्धी ही मुख्य हैं । मिसिज बेनटका अपनी पुत्रियोंके विवाहार्थ उचित तथा अनुचित ढंगसे यत्न करना, मि० बेनटकी तटस्थता, जेनका प्रेमी स्वभाव, एलिजाबेथकी सतर्कता तथा पक्षपात, लीडिया की उच्छृंखलता, बिंगलेकी पराधीनता, डारसीका महा अभिमानी स्वभाव तथा कैथराईनकी व्यर्थकी अकडफूं ये सब भाव इतने अच्छे ढंगसे चित्रित हुए हैं कि पढते ही बनता है । उस समय इंग्लैण्ड के गांवोंमें क्या २ होता था इससे कुछ झलक मिल सकेगी ।

इस उपन्यास को हमें दूसरीवार अनुवाद करना पडा क्योंकि एक प्रकाशक महोदयने हमारी प्रथम अनुवाद की पुस्तक न तो पूरी छापी ही, न वापिसही की । इस कथा में अभिमानी डारसीकी और विकमकी झूठी पक्ष-पातिनी एलिजाबेथकी अन्तको पराजय हुई है इसी लिये इसका नाम " जय पराजय" हमने रखा है । हमें आशा है पाठक इसे पढकर प्रसन्न होंगे । साथ ही हमारे देशकी कुमारियें तथा नारियें भी इसको पढ़कर अपनी प्रतिभाको जगायेंगी और उत्तमोत्तम साहित्यकी रचना करके राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा करने में अग्रसर होंगी ।

निवेदक,

बुद्धजयन्ती
२४ मई १९५६ ई०

विद्याधर विद्यालंकार
प्राध्यापक
राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय
चारमीनार, हैदराबाद-दक्षिण

ॐ

जय-पराजय
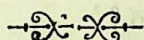
प्रथम परिच्छेद

इस बातको सब लोग मानते हैं कि अकेले आदमीको, जिसके पास रुपया हो, एक भार्याकी आवश्यकता होती है।

उस मनुष्यके भाव चाहे कुछभी हों,चाहे किसी स्थानमें जाकर वह ठहरे, परन्तु वहाँ के रहनेवाले यही समझते हैं कि हमारी किसी-न-किसी लड़कीसे इसका विवाह अवश्य होगा।

"मेरे प्यारे मिस्टर बेनट" उसकी स्त्रीने एक दिन कहा, "नीदरफील्ड पार्क आखिर किराएपर उठही गया। तुमने सुना।

मि· बेनट ने उत्तर दिया—"मैंने नहीं सुना"।

स्त्री फिर बोली–"हां हां, मैं जो कहती हूं, अभी मिसेज लांग आई थी और सब हाल बता गई है।

मि. बेनटने कुछ उत्तर न दिया।

उसकी स्त्री अधीर होकर बोली, 'क्या तुम नहीं जानना चाहते कि किसने लिया है?"

"तुम कहना चाहती हो, तो कह डालो, मुझे सुननेमें कुछ आपत्ति नहीं है।"

यह इशारा काफी था, वह बोली–'मेरे प्यारे ? मिसेज लांगने मुझे बताया है कि एक उत्तरीय इंग्लेंडके बहुतही धनवान युवा मनुष्यने किराएपर लिया है।

वह चौपहिया गाड़ीमें जिसमें चार घोडे जुते थे, बैठकर सोमवारके दिन कोठी देखने आया था, और उसे वह कोठी इतनी अच्छी लगी कि तुरन्तही मिस्टर मारिससे सब निर्णय करके किराएपर लेली। माईकल मसके पहले वह उसमें आजायगा, और उसके नौकर इस सप्ताहके अन्ततकही मकानमें आजायँगे।'

'उसका नाम क्या है ?'

'बिंगले।'

'विबाहित है या अविवाहित ?'

'अविवाहित, मेरे प्यारे ? अकेला आदमी चार-पांच हजार पौण्डकी वार्षिक आय। हमारी लड़कियोंके लिए कैसी अच्छी बात है।'

'यह कैसे ? लडकियोंसे उससे क्या प्रयोजन ?'

'मेरे प्यारे बेनट ? कैसी बातें कहते हो ? मेरा विचार तो यह है कि हमारी एक लड़कीसे वह विवाह करे।'

'क्या इसीलिए वह यहां आकर ठहरेगा ?

'तुम कैसे भोले हो ? कदाचित् वह हमारी किसी कन्यासे प्रेम करने लगे। इसलिए जैसेही वह आए, तुम उससे मिलने जाना।'

'मुझे तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। तुम और लडकियां आ जा सकती हो। और उत्तम तो यह होगा कि लडकियोंहीको भेज दें क्योंकि तुमभी पर्याप्त सुंदर हो और कदाचित् तुम्हीं उसको अधिक सुन्दरी प्रतीत हो।'

'मेरे प्यारे ! तुम तो अब मुझे बनाने लगे। मुझको सुन्दरताका भाग मिला अवश्य था परंतु अब मुझमें कोई विशेष बात नहीं है। जिस स्त्रीकी पाँच लडकियां बडी होजांय उसको अपनी सुन्दरताका ध्यान छोड देना चाहिये।

'ऐसी दशामें स्त्री सुन्दर नहीं रहती, तो इस विषयपर विचार करनाही वृथा है।'

'परन्तु मेरे प्यारे ! तुमको मि. बिंगलेसे मिलने अवश्य जाना पडेगा।'

'यह काम तो मुझसे न होगा।'

'अपनी लडकियोंका ध्यान करो, सोचो कि एकके लिए कैसा अच्छा वर

मिल सकता है। सर विलियम और लेडी ल्यूकस उससे मिलने जायेंगे। तुमकोभी जाना पडेगा, क्योंकि यदि तुम न गये, तो हमारेलिए जाना असम्भव है

'इसमें कौनसी बात है, तुम चली जाना, मि. बिंगले तुमसे मिलकर प्रसन्न होंगे और मैं पत्र लिख दूंगा कि मेरी हार्दिक इच्छा है कि वह जिस लडकीसे चाहें विवाह करलें। यद्यपि मैं स्वयं लिजीकी सिफारिश करूंगा।'

'ईश्वरके लिये ऐसा न करना। लिजी औरोंसे अच्छी नहीं है। मै शपथ खाकर कह सकती हूं कि लिजी जेनसे सुन्दरतामें आधीभी नहीं है, और हंस-मुख होनेमें लीडियासे कहीं कम है, परंतु तुम सदासे लिजीकोही अच्छा कहते हो।'

'सच तो यह है कि कोई लडकीभी अच्छी नहीं। सब मूर्ख और अपढ हैं। केवल लिजीमें थोडीसी तेजी अपनी बहनोंसे अधिक है।'

मि. वेनट! तुम अपने बच्चोंको बुरा कैसे कह सकते हो। मुझको छेडने में तुमको आनन्द मिलता है। मेरे दिलकी धडकनका तुमको तनिकभी ध्यान नहीं है।

'ऐसा सोचना तुम्हारी भूल है। मुझको उसका बहुत ध्यान है। बीस वर्षसे धडकनही सुनता आ रहा हूं।'

'तुम नहीं समझते कि मैं कितना कष्ट उठा रही हूं।

'मुझको बिश्वास है कि तुम चार हजार पौंड वार्षिक आयवाले बहुतसे युवकोंको देखनेके लिए जीवित रहोगी।'

'बीसियों आवें तो हमको क्या, जब तुम उनके पास जाओगेही नहीं।'

'मैं तुमको विश्वास दिलाता हूं कि यदि बीस आयेंगे तो मैं सबके पास जाऊंगा।'

......

द्वितीय परिच्छेद

मिस्टर बेनट एक अद्‍भुत गुणोंका मिश्रण था। वह कभी चुभती हुई बातें करता था, कभी चुप रहता था। तेईस वर्ष साथ रहनेके अनन्तर भी उसकी स्त्री कमसमझ, बहुत कम पढी हुई और क्रोधी स्वभावकी थी। जब उसको किसी बातमें निराशा होती थी, तो वह समझती थी कि मुझको हृदयकी धडकन हो रही है। उसके जीवनका उद्देश्य लडकियोंका विवाह कर देना था और जीवनका सुख चार घरोंमें जाकर गप-शप लडाना था।

मि. बेनट मि. बिंगलेसे मिलने सबसे पहले पहुंचे। उसने पहलेही से जानेका विचार कर लिया था। परन्तु अपनी स्त्रीको अन्ततक यही विश्वास दिलाता रहा कि वह न जायगा। यहांतक कि मिल आनेके अनन्तर, सन्ध्यातक स्त्रीको इस भेंटकी खबर न. थी। निम्नलिखित प्रकारसे यह बात खुली।

अपनी दूसरी कन्याको एक टोपी ठीक करते देखकर वह बोला, 'मुझको पूर्ण विश्वास है कि बिंगलेको यह टोपी पसन्द आवेगी।'

'मांने क्रोधित होकर कहा, मि. बिंगलेकी पसन्दसे हमको क्या, जब हम मि. बिंगलेसे मिलेंगेही नहीं।'

एलेजाबिथ बोली- 'मामा, तुम्हारी भूल है। भोजोंमें तो भेंट अवश्य होगी। और मिसिज लांगने बचन दिया है कि वह हमारा परिचय करादेगी।'

मैं मिसिज लांगकी बातोंमें विश्वास नहीं करती। उसकी स्वयं दो भानजियां है। वह बडी स्वाथी और पाखण्डी स्त्री है। मैं उसको अच्छा नहीं समझती।'

'मेरीभी यही सम्मति है और मैं इस बातसे खुश हूं कि तुम बिंगलेसे मिलनेके लिए उसपर भरोसा नहीं करती हो। यह मि. बेनटने कहा।

मिसेज बेनटने उसका कुछ उत्तर नहीं दिया। परन्तु अधीर होकर अपनी एक लडकीको डांटने लगी, 'किटी! ईश्वरके लिए खांसना बंद करो, मुझपर दया करो, मेरी धडकन बढती जाती है।'

'पिताने कहा, 'किटीको यहभी नहीं मालूम कि किस समय खांसना चाहिए। लिजी, अब बाल (नाच) कब होगा ?'

'कलके पन्द्रहवें दिन।

'मांने चिल्लाकर कहा- 'मिसेज लांग उसके एकही दिन पहले आवेगी इसलिये अब परिचय होना असम्भव हो गया। क्योंकि स्वयं उसका परिचय उस समयतक बिंगलेसे न हुआ होगा।'

'तो मेरी प्यारी ! तुम अपनी सखीसे बाज़ी मार सकती हो, और तुम बिंगलेसे उसका परिचय कराना।'

'असम्भव, मि. बेनट असम्भव। जब हम स्वयंही परिचित न होंगे, तब तुम क्यों मुझको इतना छेडते हो।'

'मैं तुम्हारी सम्मतिका आदर करता हूं, पन्द्रह दिनका परिचय बहुत थोडा है। पन्द्रह दिनमें तो यहभी पता नहीं चलता कि मनुष्य किस प्रकारका है। परन्तु यदि हमने साहस न किया, तो कोई और कर बैठेगा। मिसेज लांग और उसकी भानजियोंको भी मौका मिलना चाहिये, और यदि तुमने परिचय न कराया तो मैं करा दूंगा।'

लडकियां पिताको ताकने लगीं। मां ने कहा- 'व्यर्थ बात, व्यर्थ बात। वह बोला, इतना चिल्लानेका क्या प्रयोजन है? क्या तुम परिचय करानेके नियम को व्यर्थ समझती हो ? मैं तुमसे सहमत नहीं हूं, बोलो मेरी ! तुम पढी लिखी हो और बहुत समझदार हो।'

मेरी कुछ समझकी बात करना चाहती थी, परन्तु उसके कुछ समझमें न आया कि क्या कहे ?

पिताने कहा- ' जब तक मेरी अपने विचारोंको भाषाका रूप न दे, तब तक मि. बिंगलेके विषयमें बातचीत करनी चाहिए।'

उसकी स्त्रीने कहा- 'बस, मि. बिंगलेसे तो मैं उकता गई।'

'यह सुनकर मुझे बडा दुःख हुआ। यदि यह मुझे प्रातःकाल मालूम होता तो मैं क्यों उसके पास जाता। बडा दुर्भाग्य है कि अब मेरे उसके यहां हो आनेके कारण, हमारा उसका परिचय होनेसे रुक नहीं सकता।'

यह सुनकर वहांपर उपस्थित सभी अचम्भेमें आगए। मिसेज बेनट तो बहुत खुश हुई और फिर बोली– 'यह तो मैं पहलेही समझती थी। तुम कितने अच्छे हो ! मुझको पूर्णविश्वास था कि कन्याओंका प्रेम तुमको मजबूर करेगा कि उससे परिचय करो। मैं कितनी प्रसन्न हूं। तुमभी बडी हंसी करनेवाले हो। प्रातःकाल हो आए और उसके विषयमें अबतक कुछ न कहा।

'मि. बेनटने कहा– 'किटी, अब जितना चाहो खांसो,' यह कहकर वह अपनी पत्नीकी प्रसन्नतासे थककर कमरेसे चला गया।

जब द्वार बंद होगया तो बेनट बोली, ' लडकियो। तुम्हारा पिता बहुत अच्छा है। किसप्रकारसे तुम उसकी कृपाका बदला दे सकती हो। अब इस अवस्थामें हम लोगोंको नये आदमियोंसे जान–पहचान करना अच्छा नहीं लगता। परन्तु तुम्हारे लिए वह सब कुछ करनेको तत्पर है। मेरी प्यारी लीडिय मुझको पूर्ण विश्वाल है कि यद्यपि तुम सबसे छोटी हो परन्तु मि. बिंगले' तुम्हारे साथ अवश्य नाचेगा।

'ओह !' लीडियाने कहा, 'मुझको इसकी कुछ चिन्ता नहीं। यद्यपि मैं सबसे छोटी हूं, परन्तु सबसे लम्बी भी हूं।

इसके अनन्तर यही बातें होती रही· कि देखें बिंगले कब हमारे यहां आता है और कब उसे भोजन के लिए निमंत्रण देना उचित होगा।

— —

तृतीय परिच्छेद

मिसेज बेनट अपनी पांचों कन्याओंकी सहायतासे भी अपने पतिसे मि. बिंगलेका कोई सन्तोषदायक वर्णन न निकाल सकी। नानाप्रकारसे उन्होंने उससे पूछा, परन्तु उसने सबको टाल दिया। हार मानकर उनको लेडी ल्यूकससे ही

पूछना पडा। उसने उसकी बडी प्रशंसाकी। कहा कि सर विलियम उससे बहुत प्रसन्न हुआ है। बिंगले बिल्कुल युवा, अत्यन्त सुन्दर और वहुतही भला है। सबसे बडी बात तो यह है कि बहुतसे आदमियोंको लेकर वह नाच में आवेगा। इससे अच्छी बात क्या होसकती थी। नाचसे अनुराग होना प्रेममें फंसनेकी पहली सीढी है। इसलिए मि. विंगलेके हृदयकी बहुत प्रशंसा होने लगी।

मिसेज बेनटने अपने पतिसे कहा–'यदि मेरी एक पुत्री नीदरफील्डकी स्वामिनी हो जाय, और मेरी और पुत्रियांभी अच्छे घर चली जाएं, तो मुझे संसारमें कोई इच्छा शेष न रहेगी।'

थोडे दिनके वाद बिंगले मि. बेनटके यहां आया, और पुस्तकालयमें दस मिनट बैठा। उसको आशा थी कि वह युवतियोंके (जिनकी सुन्दरताका वर्णन वह सुन चुका था) भी दर्शन करेगा। परन्तु उसकी भेंट केवल पिताहीसे हुई। युवतियां अधिक भाग्यवान रहीं। क्योंकि उन्होंने ऊपरकी खिडकीसे उसको देखा कि वह नीला कोट पहने था और काले घोडेपर सवार था।

भोजनके लिए निमंत्रण तुरन्तही भेजा गया। और मिसिज बेनट इस चिन्तामें थी कि क्या क्या खाना पकवाया जाय कि ऐसा उत्तर आया, जिससे उसकी आशा धूलमें मिल गई। बिंगलेको दूसरे दिन नगरमें जाना था, इसलिए वह निमंत्रण स्वीकार न कर सका। मिसेज बेनट यह समझ न सकी कि अभी तो नगरसे आये हैं, और अभी फिर वहां जानेका क्या प्रयोजन है? उसको भय होने लगा कि वह यहां जमकर ने रहेगा, और इधर-उधर भागा फिरेगा। लेडी ल्यूकसने उसको शांत किया। और कहा कि वह नाचके लिये बहुतसे मित्रोंको लेने लंडन जा रहा है। और फिर खबर फैली कि विंगले लंडनसे बारह युवातियां और सात युवकोंको लायेगा। उतनी युवातियोंका आना सुनकर कन्याओंको बडा दुःख हुआ। परन्तु नाचके एक दिन पहले यह जानकर आनन्द हुआ कि वह केवल छः ही युवातियोंको लाया है, जिनमेंसे पांच उसकी बहने हैं, और एक

उसकी मौसेरी बहन है। जब पार्टी नाचके कमरेमें आई, तो केवल पांचही लोग थे। मि· बिंगले, उसकी बहनें, बडी बहनका पति और एक कोई युवा।

मि· बिंगले सुन्दर और भला मनुष्य प्रतीत होता था। उसकी बहनोंकी अदासे फैशन टपकता था। उसका बहनोई मि· हर्स्ट भला आदमी प्रतीत होता था। परन्तु उसके मित्र मि. डारसीने सबका चित्त अपनी ओर आकर्षित कर लिया। वह सुन्दर लंबा और अच्छे कुटुम्बका था। उसके प्रवेश करते ही यह खबर फैल गई कि उसकी आय दस हजार पौंड वार्षिक है। पुरुषोंने कहा कि वह सुन्दर हं। स्त्रियोंने प्रकाशित किया कि वह मि· बिंगलेसे बहुत अधिक सुन्दर है। और सब लोग बडी देर तक उसका मुख प्रशंसासे निहारते रहे। परन्तु थोडी देरके बाद उसके स्वभावसे सबको घृणा होगई और उसकी सर्व-प्रियता जाती रही। क्योंकि यह पता लगा कि वह बहुत ही अभिमानी है। अपनेको सबसे बडा समझता है, और उसको प्रसन्न करना असम्भव है। उसकी सारी सम्पात्ति भी उसकी रक्षा न कर सकी! और तब तो सबने यह कहना आरम्भ किया कि वह बहुत ही भद्दा है। और बिंगलेके पैरोंकी रजके बराबर भी नहीं है।

बिंगलेने मुख्य २ पुरुषोंसे अपना परिचय कर लिया। वह हंस–मुख और मिलनसार था और प्रत्येक नाचमें सम्मिलित हुआ था उसको क्रोध था कि नाच बहुत जल्दी समाप्त हो गया। इसीलिए उसने प्रकाशित किया कि मैं भी एक नाच शीघ्रही करूंगा। ऐसे सुन्दर गुणोंने उसको सर्ब-प्रिय बना दिया। डारसी केवल एक बार मिसेज हर्स्टके साथ और दूसरी बार मिस बिंगलेके साथ नाचा। उसने और युवतियोंसे परिचय करने में निषेध कर दिया, और इधर–उधर टहलता रहा। वह बहुत ही घमंडी और संसारमें घृणित समझा गया और सब लोगोंने यह प्रार्थना की कि वह फिर कभी यहां न आवे! मिसेज बेनट उससे बहुत क्रोधित हुई, क्योंकि उसने उसकी एक कन्याका अपमान किया था। पुरुषोंकी कमीके कारण एलेजबिथ बैठी हुई थी और डारसी पासही खडा था। उसने डारसी और बिंगलेका यह वार्त्तालाप सुना।

बिंगले- 'डारसी! तुम नाचते क्यों नहीं हो? अकेले क्यों खडे हो? चलो नाचो।'

डारसी- 'मैं न नाचूंगा। तुम जानतेहो कि जब तक मैं अपने साथीसे भली प्रकार परिचित न होऊं, मैं नहीं नाचता। और यहां नाचना तो असम्भव है। तुम्हारी बहनें दूसरोंसे वादा कर चुकी हैं, और इस कमरेमें कोई स्त्री भी ऐसी नहीं कि जिसके संग नाचना मैं दण्ड न समझूं।'

बिंगले-'मैं तो यह न कहूंगा। इतनी सुन्दर कन्यायें तो मुझको जीवनभर में नहीं दिखीं। और बहुत-सी तो अत्यन्त ही सुन्दर हैं।'

डारसी ने सब से बड़ी मिस बेनट की ओर देखते हुए कहा-,'एक यही सुन्दर युवती है, जिसके संग तुम नाच रहे हो ?'

बिंगले- 'होगा, इतनी सुन्दर युवती तो मैंने आज तक नहीं देखी। उसकी बहिन तुम्हारे पीछे बैठी है। काफी सुन्दर है। मैं अपनी साथिन से कहकर उससे परिचय कराहूँ !'

डारसीने पीछे घूमकर देखते हुए कहा– 'कौन ? वह ! मुझको यह आकर्षित नहीं कर सकती ! और मैं इस समय उस युवतीको, जिसके संग और लोगोंने न नाचा, श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देख सकता। तुम जाओ अपनी साथिन की हंसीके मजे उडाओ, मेरे संग क्यों व्यर्थ समय नष्ट कर रहे हो ?'

मि. बिंगलेने डारसीका कहना मान लिया। डारसी घूमने लगा, और एलेजबिथको उससे घृणा होगई। उसने यह कहानी अपने मित्रोंको सुना दी क्योंकि वह बडे मसखरे स्वभावकी थी।

संध्या अच्छी प्रकार बीत गई। सबसे बडी मिस बेनटकी बहुत प्रशंसा हुई। मि· बिंगले उसके साथ दो बार नाचा। जेनको इस बातकी उतनीही खुशी थी, जितनी उसकी मांको। एलेजेबिथ जेनकी खुशीसे खुश थी। मेरी ने स्वयं सुना था की लोगोंने कहा कि वह सबसे चतुर है। कैथरीन और लीडिया कभी खाली न बैठीं और नाचमें यही इनकी अभिलाषा थी। सब लोग प्रसन्न होकर

घर लौटे। मि· बेनेट जाग रहे थे। और इस बातको जाननेके लिए बडे उत्सुक थे कि संध्या कैसे बीती। उनको आशा थी कि उनकी स्त्री निराश होकर लौटेगी। परन्तु यहां तो किस्सा ही कुछ और था। कमरेमें घुसतेही उसने कहा 'प्यारे बेनट! कितनी अच्छी संध्या हमने व्यतीत की। अच्छा होता तुमभी वहां होते। जेनकी बहुत प्रशंसा हुई। मि. बिंगलेने उसको बहुत सुन्दर समझा और उसके साथ दोबार नाचा। यही एक कन्या थी जिसके संग दुबारा नाचने की उसने प्रार्थनाकी। पहलेतो वह मिस ल्यूकॅसके संग नाचा। यह देखकर मुझे खेद हुआ। परन्तु उसने उसको पसंद न किया। कोई भी उसको पसंद नहीं कर सकता। जेनको नाचते हुए देखकर बिंगले आकर्षित हुआ, और फिर वह जेनके संग नाचा। फिर मिस किंगके संग नाचा। और फिर मेरिया ल्यूकसके संग नाचा, और फिर दुबारा जेनके संग नाचा और फिर लिजीके संग और–।

बेनट- 'यदि उसको मेरे ऊपर दया होती, तो वह इतना न नाचता। ईश्वरके लिए अब उसके साथियोंकी चर्चा न करो। अच्छा होता कि पहले ही नाचमें उसको मोच आ जाती।

मिसेज बेनट-मेरे प्यारे! मैं उससे बहुत प्रसन्न हूं। वह बहुतही सुन्दर है और उसकी बहिनें बडी ही अच्छी है। उनके कपडे बडे अच्छे सिले हुए थे और मिसिज हर्स्टके गाऊनकी लेस–'

बेनटने इसे रोक कर कहा-'कपडोंका वर्णन रहने दो।'

फिर वह दूसरे विषयपर बोली और मि· डारसीकी दिल खोलकर निंदा की। अच्छा ही हुआ कि लिजी उसको पसंद न आई, क्योंकि वह बहुतही बुरा और घृणित मनुष्य है। इतना घमंड भी असहनीय होता है। इधर घूमा उधर घूमा, अपनेको न जाने क्या समझता है। साथमें नाचनेके योग्य नहीं। यदि तुम वहां होते, तो उसको दो चार सुनाते। 'मैं उससे घृणा करती हूं।'

——

चतुर्थ परिच्छेद

जब जेन और एलेजबेथ अकेलेमें मिलीं, तो जेन ने बिंगलेकी बडी प्रशंसा की। वह ऐसा है, जैसा एक युवाको होना चाहिए, समझदार और हंसमुख। इतने अच्छे स्वभावका मनुष्य मैंने नहीं देखा।

एलेजबेथ- 'और वह सुन्दर भी है। कोई उसमें कमी नहीं है।'

जेन- 'जब उसने मुझसे दूसरी बार नाचनेको कहा तो मैं बहुत प्रसन्न हुई। मैं इतने आदरकी आशा नहीं करती थी।'

एलेजबेथ- 'मैं तो करती थी। तुम आदरसे अचम्भेमें आ जाती हो मैं नहीं आती। यह तो सर्वथा स्वाभाविक बात थी। कमरेमें तुम सब युवतियोंसे पांच गुना सुन्दर थीं, इसलिए उसको धन्यवाद देनेकी कोई आवश्यकता नहीं। मैं तुमको आज्ञा देती हूं कि तुम उससे प्रेम करो। तुम तो पहले बहुतसे मूर्खोंको पसन्द कर चुकी हो।'

जेन– 'प्यारी लिजी !'

एले॰- 'नहीं नहीं, तुम प्रत्येकको पसन्द कर लेती हो। पुरुषोंमें तुमको दोष नहीं दीखता। प्रत्येक पुरुष तुमको भला प्रतीत होता है। मैंने तो कभी तुमको किसीकी बुराई करते नहीं सुना।'

जेन- 'मैं शीघ्र किसीकी बुराई नहीं करती, परन्तु जब कुछ कहती हूं तो अपने हृदयकी ही बात कहती हूं।'

एले॰- 'यह तो मैं जानती हूं, और यही तो मुझको आश्चर्य है कि तुम इतनी समझदार होकर दूसरोंकी मूर्खताओं और निर्बलताओंको नहीं देख सकतीं। बनावटी मुंहफट मनुष्य तो बहुत मिलेंगे, बिना किसी प्रयोजनके प्रत्येक पुरुषकी भलाईको अच्छा करके दिखाना, और बुराईके विषयमें कुछ न कहना तुम्हारा ही काम है। मेरी समझमें तुम उसकी बहनोंको भी पसंद करती होगी। उनका स्वभाव उसका सा तो नहीं है।'

जेन- कदापि नहीं। परन्तु, बातचीत करनेमें बहुतही अच्छी हैं। मिस बिंगले अपने भाईके संग रहेगी और घरकी देख-भाल करेगी और मुझको पूर्ण आशा है कि वह बहुत ही अच्छी पडोसिन होगी।'

एलेजबेथ चुपचाप सुनती रही, परन्तु सहमत नहीं हुई। नाचमें उनका व्यवहार हृदयको प्रसन्न करने वाला न था। अपनी बहनके स्वभाव समझनेमें अधिक तीव्र होनेके कारण और अपनी बहनका-सा सहजमें प्रसन्न होजानेवाला अपना मन न होनेके कारण उसने उन स्त्रियोंको पसंद न किया। वास्तवमें देखनेमें वे अच्छी स्त्रियां थीं। जब चाहें तो हंस-बोल भी सकतीं थीं, परन्तु बहुत ही घमण्डी और अहंकारिणी थीं। सुन्दर भी थीं, सबसे अच्छी पाठशालामें शिक्षा भी पाई थी। वीस हजार पाऊंडकी सम्पत्ति भी पास थी। व्यय भी अपनी सामर्थ्यसे अधिक करती थीं। और बडे बडे लोगोंसे मिलती भी थीं। इन कारणोंसे वह अपनेको बडा और दूसरेको घृणित समझती थीं। उनको प्रत्येक समय यह ध्यान रहता था कि हम बहुत ही ऊंचे कुटुम्बमें से हैं। परन्तु यह भूल जाती थीं कि उनकी और उनके भाईकी सम्पत्ति व्यापारकी कमाई हुई है।

मि॰ बिंगलेने अपने पितासे कोई एक लाख पाऊण्डकी सम्पत्ति पाई थी। उसका पिता कुछ जायदाद खरीदना चाहता था, परन्तु इससे पूर्व ही मर गया। मि॰ बिंगलेकी भी यही इच्छा थी, और अपने ही प्रांतमें वह जायदाद खरीदना चाहता था। परन्तु अब एक अच्छा मकान मिल जानेके कारण उसके स्वभावको जानने वाले मनुष्य यही समझते थे कि अब वह आगामी जीवन नीदरफील्ड ही में व्यतीत करेगा। और जायदाद मोल लेनेका भार अपने लडकोंपर छोड जायगा।

उसकी बहनोंकी प्रबल इच्छाथी कि वह जायदाद खरीदे। परन्तु अब जबकि उसने मकान किराएपर ले लिया है, मिस बिंगले उसीके साथ रहना चाहती थी। और मिसेज हर्स्ट की भी जिसने एक फैशनेबिल और निर्धन

मनुष्यसे विवाह किया था, यही इच्छा थी। मि· बिंगलेको बालिग हुए अभी दो वर्ष भी नहीं हुए थे कि किसीने नीदरफील्डकी प्रशंसा उससे की। उन्होंने आकर उसे देखा, पसंद किया और तुरन्त ही किरायेपर ले लिया।

डारसी और बिंगलेके चरित्रमें बहुत अंतर होनेपर भी परस्परमें गाढी मित्रता थी। डारसी बिंगलेके हंसमुखपन और उदार स्वभावको पसंद करता था। यद्यपि उसका अपना चरित्र इसके विरुद्ध था। बिंगले डारसीकी समझका उपासक था। समझमें डारसी ही बढा हुआ था। बिंगले भी कम समझ न था, परंतु डारसी बढा हुआ था। डारसी अहंकारी, घुन्ना और कठिनतासे प्रसन्न होने वाला था। और उसका आचार आकर्षक नहीं था। इसकेविरुद्ध बिंगले जहाँ जाता था, मनको मोह लेता था। डारसी सर्वदा लोगोंको दुःख पहुंचाता था। इस नाचके विषयमें जो उन दोनोंका वार्तालाप हुआ,वह उनके स्वभावको भले प्रकार प्रगट करता था। बिंगलेको आज तक इतनी सुन्दर कन्यायें और इतने हंस-मुख मनुष्य नहीं मिले थे। प्रत्येक मनुष्य उसपर दयालु था। और वह सबका मित्र होगया। मिस बेनटतो उसकी सम्मातिमें इतनी सुन्दर थी कि कोई अप्सरा भी उसकी समानता नहीं कर सकती थी। डारसी कहता था कि इस नाचमें केवल मनुष्योंकी भीड थी। सुन्दरताका नाम निशान न था, और किसीने भी उसको आकर्षित न किया। मिस बेनट सुन्दर अवश्य है, परन्तु वह हंसती बहुत है।

मिसेज हर्स्ट और उसकी बहनने यह बात मानली परन्तु फिर भी उनकी सम्मातिमें जेन एक सुन्दर कन्या थी, और उससें वह जान-पहचान बढाना चाहती थी। जेन सर्वसम्मतिसे सुन्दर ठहराई गई, और मि. बिंगलेको यह अधिकार मिला कि वह जो चाहे उसके विषयमें सोचे।

——

पंचम परिच्छेद

लांगबोर्नसे थोडीही दूरपर एक कुटुम्ब रहता था जिससे बेनटके कुटुम्ब से बहुत मेल-जोल था। सर विलियम ल्यूकस पहले मेरिटनमें व्यापार करते थे और उन्होंने कुछ धन एकत्रित कर लिया था। सम्राट्को अभिनन्दन देनेके कारण उनको नाईटकी उपाधि मिली थी। उपाधि मिलनेपर उनको अपने पहले मकानसे घृणा होगई। इन दोनोंको छोडकर वे मेरिटनसे एक मीलकी दूरीपर एक मकानमें जिसका नाम 'ल्युकसलाज' होगया, रहने लगे। कुछ काम न होनेके कारण वे सब संसारसे बडी सज्जनताका व्यवहार करते थे। उपाधि मिलनेसे उनको कोई अहंकार नहीं हुआ, परन्तु वे सबसे झुककर मिलने लगे। स्वभाव ही से वे बहुत ही नम्र और मिलनसार थे। और उपाधि पानेसे तो वे अत्यन्त ही अच्छे हो गये।

लेडी ल्यूकस बहुत ही अच्छी स्त्री थी। इसके बहुत बच्चे थे। सबसे बडी लडकी थी जिसकी अवस्था २७ वर्षकी होगी। बह बहुत समझदार थी। वह एलिजाबेथकी प्यारी सखी थी।

दोनों कुटुम्बोंकी कन्याओंका मिलकर नाचके विषयमें वार्तालाप करना आवश्यक था। दूसरे दिन प्रातःकाल ही ल्यूकस कुटुम्बकी कन्या बेनट वालोंके यहाँ आई।

मिसिज बेनटने कहा- 'शारलोट, आरम्भ तो तुमने वहुत अच्छा किया। विंगलेने पहले तुम्हारे ही संग नाचना पसंद किया।'

शारलोट- 'हाँ, परन्तु अपनी दूसरी साथिनको अधिक पसन्द किया।

मिसिज बेनट– तुम्हारा मतलब जेनसे है। क्योंकि वह उसके संग दो बार नाचा। इससे तो यही प्रतीत होता है कि उसने जेनको पसन्द किया, और मेरा विश्वास भी ऐसा ही है। मैंने कुछ इसके विषयमें सुना भी है। कुछ राबिनसनसे बात हुई थी, मालूम नहीं क्या।'

एलिजबेथ- 'मैंने वह बात सुनी थी। राबिनसनने पूछा कि मेरिटन का नाच कैसा रहा और कितनी सुन्दर स्त्रियां वहां थीं, सबसे सुन्दर कौन है। बिंगलेने तुरन्त ही अन्तिम प्रश्नका उत्तर दिया कि सबसे बडी मिस बेनट सबसे सुन्दर है। इसके विषयमें दो सम्मतियें नहीं हो सकतीं।

मिसेज बेनट- यह तो बिल्कुल स्पष्ट है। परन्तु कदाचित् इसका परिणाम कुछ न निकले।'

शारलोट- 'मैंने तो एलेजा कुछ और ही सुना है। डारसीकी बातें ऐसी सुननेके योग्य नहीं, जैसी उसके मित्रकी की विचारी एलेजा पर्याप्त सुन्दर नहीं।'

मिसेज बेनट- 'डारसीके बुरे व्यवहारकी चर्चा लिजीसे न करो। वह ऐसा निकृष्ट मनुष्य है कि उसका पसन्द करना भी दुर्भाग्य है। मिसेज लांग मुझसे कहती थीं, कि वह आध घण्टे तक उनके पास बैठ रहा, और मुंहसे एक बात भी न बोला।'

जेन- इसमें कुछ भूल है। मैंने स्वयं डारसीको उनसे बातें करते देखा।'

मिसेज बेनट-'हां, जब मिसेज लांगने उकता कर उससे पूछा कि नीदरफील्ड उसके पसन्द आया था नहीं, तो उसको उत्तर देना ही पडा, परन्तु बातें करनेके कारण उसके क्रोधकी मात्रा बढ गई।

जेन- 'मिस बिंगले मुझसे कहती थीं कि वह बहुत कम बोलता है परन्तु अपने इष्ट-मित्रोंमें वह खुलकर बातें करता है।

मिसेज बेनट- मैं इसका विश्वास नहीं करती। मैं समझती हूँ कि वह घमंडमें डूबाहुआ है, उसने सुनलिया होगा कि मिसेज लॅांगके पास गाडी नहीं है, इसी लिए वह उससे नहीं बोला।'

शारलोट- 'मिसेज लॅांगसे न बोला तो न सही। एलिजबेथके संग तो उसको नाचना चाहिये था।

मांने कहा-'लिजी! यदि मैं तुम्हारे स्थानमें होती, तो दूसरी बार कहने पर भी उसके संग नाचती।'

एलिजाबेथ- 'मैं प्रण करती हूँ कि ऐसाही होगा।'

शारलोट- उसके घमंडको तो मैं सहन कर सकती हूँ, क्योंकि उसको घमंडी होनेका अधिकार है। इतना सुन्दर युवा, कुटुम्ब वाला, धनवान फिर और क्या चाहिए ?

एलेज.- 'यह बिलकुल सच है, मैं उसके अहंकारको क्षमा कर देती, यदि वह मेरा दिल न तोडता।'

मेरी जो अबतक ध्यानमें मग्न थी बोली- 'अहंकार, मेरी सम्मतिमें सामान्य निर्बलता है। मैंने जो कुछ पढा है उससे प्रमाणित होता है कि यह बहुत सामान्य बात है। मनुष्यका स्वभाव ही घमंडकी ओर झुका हुआ है। हम में से बहुत कम ऐसे हैं, जो अपनेमें कोई न कोई गुण (चाहे हो या न हो) समझकर उसीपर घमंड करते हैं। मान और घमंड दो भिन्न भिन्न वस्तुएं हैं। घमंड तो वह है जो हम चाहें कि दूसरे मनुष्य हमको अच्छा समझें, और मान वह है जो हमारी राय किसीके विषयमें हो।

एक ल्युकसका पुत्र जो बहनोंके संग आया था, बोला, यदि मैं मिस्टर डारसीके बराबर धनवान होता तो मैं इस बातकी चिंता न करता कि मैं कितना अभिमानी हूँ। मैं कुत्तोंका गोल रखता और शराबकी एक बोतल प्रति दिन उडाता।'

मिसेज बेनट—"तुमको इतनी शराब नहीं पीनी चाहिए थी, और यदि मैं तुमको पीते देखती, तो बोतल छीनलेती।"

लडका कहता रहा कि तुमको छीनने का अधिकार नहीं होता। और वह कहती रही कि मैं अवश्य छीन लेती। यह विवाद उनके चले जाने तक जारी रहा।

——

षष्ठ परिच्छेद

लांगबोर्नकी स्त्रियां नीदरफील्ड गईं, और वहांकी स्त्रियां इनके यहां आईं। मिसेज हर्स्ट और मिस बिंगलेको जेनका स्वभाव अच्छा लगा। और यद्यपि मांका स्वभाव असहनीय था और छोटी बहनें बात करनेके योग्य न थीं फिर भी बडी दोनों बहनोंसे अधिक परिचय करनेकी इच्छा उन्होंने प्रगटकी। जेन तो इस इच्छासे बहुत प्रसन्न हुई, परन्तु एलिजाबेथ संदिग्ध ही रही, और वह समझ न सकी कि जेन इसको कैसे पसंद कर सकती है। उसकी समझमें जेनके संग अच्छे व्यवहार का कारण यह था कि उनका भाई जेनको पसंद करता था। यह स्पष्ट था कि वह जेनको पसंद करता था और जेन भी उसकी ओर खिंच रही थी। जेन समझती थीं कि संसार उसकी इस दशाको न समझेगा। एलिजाबेथने यह बात अपनी सखी मिस ल्यूकससे कही।

शारलोटने उत्तर दिया- 'ऐसी अवस्थामें संसारसे छिपाना भला प्रतीत होता है; परन्तु कभी इससे हानि भी हो जाती है। यदि स्त्री अपना प्रेम अपने प्रेम-पात्रसे भी छिपाए तो कदाचित् वह उसको खो ही बैठे। प्रत्येक अनुराग में कुछ न कुछ अभिमान और कृतज्ञता होती है, उसको यों ही छोड देना ठीक नहीं। आरंभ तो हम स्वतन्त्रतासे कर सकते हैं। किसीको अधिक पसंद करना स्वाभाविक बात है। परन्तु हम में से बहुत थोडे ऐसे हैं, जो बिना दूसरी ओरसे कुछ उत्साह पाए प्रेम करनेमें समर्थ हों। दसमेंसे नौ स्त्रियोंको चाहिए कि जितना प्रेम करती हों उससे अधिक दिखावें। बिंगले तुम्हारी बहनको पसंद अवश्य करता है परन्तु यदि तुम्हारी बहन उसको उत्साह न दिलायेगी तो बस पसंद ही पर मामला समाप्त है।

एलि०- परन्तु वह उत्साह तो अपने स्वभावके अनुसार दिलाती है। यदि मैं समझ सकती हूँ कि वह उसको चाहती है तो यदि बिंगले न समझे तो वह निरा मूर्ख है।

शार - परन्तु यह भी याद रखो कि वह जेनके स्वभावको तुम्हारी तरह नहीं समझता।

एलि.- परन्तु यदि स्त्री किसीको चाहती है और उसके छिपानेका प्रयत्न नहीं करती तो उसको पता अवश्य लग जाता है।

शार.- कदाचित् अधिक मिलने जुलनेपर वह यह समझ सके। यद्यपि जेन और बिंगले मिलते हैं। तो भी वह मिलना देरतक नहीं रहता क्योंकि वे बडे बडे जलसोंमें मिलते हैं जहां परस्पर अधिक बातचीत भी नहीं हो सकती। इसलिए जेनको चाहिए कि जितनी देर मिले उतनी देर उसके मनको अपनी ओर आकर्षित करे। जब उसको वह फँसा लेगी, तो प्रेम करनेके लिए समय बहुत मिलेगा।

एलिजबेथने उत्तर दिया- ' यदि स्त्रीकी यही इच्छा हो कि धनवान मनुष्यसे उसका विवाह हो तो तुम्हारी चाल अच्छी है। और यदि मैं धनवान पुरुषसे विवाह करनेकी इच्छा करती तो यही चाल खेलती, परन्तु जेनके भाव ऐसे नहीं। वह जानबूझकर ऐसा नहीं कर रही है। अभीतक वह यह भी नहीं समझ सकती कि वह उससे प्रेम करती है या नहीं। अभी जानपहचानको दोसप्ताह हुए हैं, उसके संग मेरिटनमें नाची थी। एकदिन उसके घरपर गई थी और चारबार उसके संग भोजन किया है। मनुष्यका चरित्र समझनेके लिए इतना संसर्ग पर्याप्त नहीं।

शा.- यह बात तो ठीक नहीं है। यदि केवल उसने उनके संग भोजन ही किया होता, तो जान सकती थी कि उनकी भूख कितनी हैं। चार दिन दोनोंकी भेंट हो चुकी है इतने दिनमें तो क्या से क्या हो जाता है।

एलि.- 'हां, इन चार दिनोंमें थोडा बहुत एक दूसरेको समझने लगे हैं। परन्तु अधिक नहीं।'

शारलोटने कहा—'मैं चाहती हूँ कि जेन सफलता प्राप्त करे और यदि जेनका कल उससे विवाह हो जाय तो मैं यही समझती हूँ कि उसको प्रसन्न जीवन व्यतीत करनेका उतना ही अवसर है जितना कि यदि वह बारह महीने उसका चरित्र अध्ययन करनेके बाद उससे विवाह करे। विवाहमें सुख होना तो केवल भाग्यपर निर्भर है। यदि दम्पति एक दूसरेके चरित्रको भले प्रकार विवाह से पहले जान भी लें तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि वह सुखी जीवन

व्यतीत करेंगे। क्योंकि कभी कभी बादमें भी वह एक दूसरेके विरुद्ध हो जाते हैं। इसलिए मैं तो यही अच्छा समझती हूँ कि हम जिससे विवाह करने वाले हों उसके दोषोंको जितना कम समझें उतना ही अच्छा है।'

एलिजा.- 'शारलेट! तुम हँसी करती हो यह बात ठीक नहीं है। तुम स्वयं समझती हो कि यह ठीक नहीं है। और तुम स्वयं कभी इस प्रकारसे विवाह न करोगी।'

मि. विंगलेके अपनी बहनके साथ प्रेमपर ध्यान करते हुए एलेजविथको यह तनिक भी संदेह न हुआ कि उसके मित्रकी आँखोंमें वह भी एक मनोरंजनका साधन हो रही है। डारसीने पहले तो उसको सुन्दर भी न कहा। नाचमें अवहेलनासे उसे देखा। जब वे दूसरी बार मिले तो डारसीने उसकी ओर केवल कटाक्ष करने को देखा। परन्तु जब वह यह बात अपनेको और अपने मित्रोंको स्पष्ट करके दिखा चुका कि उसके मुखपर सुन्दरताकी एक रेखा भी नहीं है, तो उसको विदित होने लगा कि उसकी काली आँखोंकी छबिने उसके मुखपर एक असाधारण सुन्दरता उत्पन्न कर दी है। यह मालूम होनेके अनन्तर उसको कुछ और भी बातें दुःखमें डालने वाली प्रतीत हुईं। यद्यपि समालोचककी दृष्टिसे देखकर उसने उसमें बहुत भद्दापन पाया था, परन्तु फिर भी उसको मानना पडा कि उसका शरीर हृदयको प्रसन्न करनेवाला है। यद्यपि वह यह बार बार कहता था कि उसकी चाल ढाल फैशनेबल संसार से बिलकुल पृथक् है, परन्तु फिर भी वह उसके सहज प्रसन्नवदनसे आकर्षित हो गया। एलेजविथको इस बातकी खबर न थी। वह तो डारसीको समझती थी कि वह ऐसा आदमी है, जो कभी किसीको पसन्द नहीं आ सकता और जिसने उसको अपने साथ नाचने योग्य भी नहीं समझा।

डारसी एलिजबेथके विषयमें और कुछ जानना चाहता था, और इस लिए उससे बातचीतकी इच्छा रखते हुए उसने एलिजवेथकी और लोगोंसे बातचीतको सुनना आरम्भ किया। एलेजबेथसे यह बात छिपी न रही। सर विलियम ल्यूकसके यहां पार्टीमें ऐसा हुआ।'

एलिजवेथने शारलेटसे कहा-'मेरी समझमें नहीं आता कि मिस्टर

डारसी मेरी और कर्नल फास्टरकी बातोंको क्यों सुनते हैं।'

शारलोट– इस प्रश्नका उत्तर तो मि. डारसी ही दे सकते हैं।'

एलि.- 'परन्तु यदि फिर उसने ऐसा किया तो मुझे उससे कहना पडेगा कि यह क्या हरकत है। उसके नेत्रोंमें कटाक्ष भरा हुआ है। इसलिए मैं ही उसको पहले दबा लूंगी, नहीं तो वह मुझको परेशान कर डालेगा।'

इतनेमें ही डारसी उनकी ओर आता दिखाई दिया, और शारलोटने एलिजबेथको छेडकर कहा कि अब डारसीसे कहो तो जानूं। एलिजबेथ उसकी ओर मुडकर बोली—

एलि.– मि. डारसी ! आपकी सम्मतिमें क्या मैं अभी जो कर्नल फास्टर से एक नाच देनेकी प्रार्थना कर रही थी तो वह मैं भले प्रकार नहीं कर रही थी ?'

डारसी– 'बहुत भले प्रकार। यह विषयही ऐसा है कि जिसमें स्त्रियां बहुत तेज हो जाती हैं।'

एलि.– 'आपतो स्त्रीजाति ही पर आक्षेप करने लगे।'

मिस ल्यूकस– ' एलिजबेथ ! अब मैं तुमको छेडे बिना नहीं रह सकती। मैं बाजा खोल रही हूँ, तुमको गाना पडेगा।'

एलि.- तुम अद्भुत सखी हो। प्रत्येक मनुष्यके सामने गाने बजानेको कहती हो। यदि मुझको संगीतमें कुछ भी स्वाद होता तो तुम एक अमूल्य सखी होतीं। परन्तु ऐसी दशामें तो मैं ऐसे मनुष्यके सामने नहीं गा सकती, जिसने अच्छे अच्छे गाने सुने हैं। मिस ल्यूकसके हठ करनेपर उसने कहा यदि गाना पडेगा तो मजबूरी होगी। और डारसीकी ओर गंभीरतासे देखकर कहा कि एक बडी पुरानी कहावत है जिसको यहां सब लोग जानते हैं कि 'अपनी सांसको अपना शोरबा ठण्डा करनेके लिये ठीक रखो, और मैं अपनी सांसको गीत अलापनेके लिये ठीक रखूंगी।'

उसका गीत प्रसन्न करनेवाला था, परन्तु बहुत अच्छा न था। एक दो गीत गानेके बाद, इससे पहले कि वह लोगों की प्रार्थना और गाने के लिये स्वीकार करे, उसकी बहन मेरी उत्सुकता से बाजे पर आ बैठी, क्योंकि

मेरीही कुटुम्बमें सुन्दर न थी, और अपनी सुन्दरताकी कमी पूरी करने के लिए वह विद्या और संगीत सीखनेमें हरसमय लगी रहती थी। अपना कौशल दिखानेकेलिए वह सदा अधीर रहती थी।

मेरीको न तो बुद्धि थी न ज्ञान था। घमण्ड ने यद्यपि उसको इन बातों में मन लगाने को मजबूर किया था, उसके साथ ही साथ उसका ढंग ऐसा होगया था कि जिसको कोई पसन्द नहीं कर सकता था। एलिज़ाबेथ यद्यपि उससे आधा भी नहीं गा सकती थी, परन्तु फिर भी उसको सबने खुशीसे सुना।

मेरी बहुत गानेपर भी केवल अपनी छोटी बहनों और कुछ फौजी अफसरोंकी प्रशंसा प्राप्त करसकी, जो कमरेके कोनेमें नाचने लगे।

मिस्टर डारसी पास ही में खडा हुआ भुनभुना रहा था कि संध्या बितानेका यह कैसा बुरा ढंग है। न कोई बातचीत है न कुछ। इतनेमें सर विलियम ल्यूकस उसके पास आकर बोले :–

मि. डारसी! युवकोंके लिये नाच कितनी अच्छी वस्तु है। सभ्य समाजों में इससे अच्छा कुछ नहीं।

डारसी-'निस्संदेह। और फिर बडी अच्छाई यह है कि असभ्य समाजों मेंभी इसकी प्रथा है, प्रत्येक जंगली नाचना जानता है।'

सर विलियम हंस पडा और बोला, 'आपका मित्र बिंगले तो खूब नाचता है, और मुझको पूर्ण विश्वास है कि आप भी इस कलाको खूब जानते हैं।'

डारसी- आपने मुझको मेरिटनमें नाचते देखा तो होगा ?

ल्यूकस- हाँ, और देखकर बहुत प्रसन्नता हुई थी। क्या आप सेंट-जेम्समें नाचा करते हैं ?'

डारसी- कदापि नहीं।'

ल्यूकस– 'क्या वहां नाचनेसे वहां की शोभा न बढेगी ?'

डारसी- ' यदि मेरे मनकी बात चले तो मैं कहीं भी नाचना नहीं चाहता।'

ल्यूकस- 'क्या आपका कोई मकान शहरमें है ?'

मि. डारसीने गरदन हिलाकर कहा- हां।'

ल्यूकस- मेरा विचार भी शहरमें एक मकान लेनेका था। क्योंकि मुझको अच्छे समाजमें उठने बैठनेका शौक है। परन्तु मुझको शंका थी कि कदाचित् लेडी ल्यूकसको लंदनकी जलवायु अनुकूल न बैठे।

वह उत्तरकी प्रतीक्षा करता रहा परन्तु डारसी कुछ न बोला। इसी समय एलिजबेथ उधरसे होकर निकली, और सर विलियमने उसको रोक कर कहा-'मेरी प्यारी एलिजा! तुम नाच क्यों नहीं रही हो? मि. डारसी! मैं आपकी सेवामें इस युवतीको पेश करता हूँ। आपकी बहुत अच्छी साथिन यह नाचमें होगी। इतनी सुन्दरताको सामने देखकर आप नाचनेसे इनकार नहीं कर सकते। और एलिजबेथका हाथ पकडकर वह डारसीके हाथमें देने ही को था। (डारसी अचम्भेमें आगया, परन्तु उस हाथको पकडनेकी अनिच्छा भी न थी) कि एलिजबेथने अपना हाथ खींच लिया, और सर विलियमसे कहा-

एलि -'मुझको बिलकुल इच्छा नहीं है। कृपया आप यह न खयाल करें कि मैं इस ओर साथी ढूंढनेको आई थी।'

मि. डारसीने उचित प्रकारसे एलिजबेथसे नाचनेकी प्रार्थना की परन्तु एलिजबेथने स्वीकार न किया, और सर विलियमभी एलिजबेथको राजी करने में लगे रहे।

सर विलियम- 'मिस एलिजा ! तुम इतना अच्छा नाचती हो कि हम लोगोंको अपने नाच दिखानेकी प्रसन्नतासे वंचित रखना निर्दयता है। और यद्यपि मि. डारसी साधारण प्रकारसे नाचते नहीं हैं, तब भी हम लोगोंको आध घण्टेके लिये अवश्य अनुगृहीत करेंगे।'

'मि. डारसी तो दयाके भण्डार हैं' यह कहकर एलिजबेथ हँसी।

सर विलियम-'अवश्य हैं। परन्तु इससमय तो एलिजा तुम्हारे संग नाचनेकी लालसाने भी उनको इतना दयावान बना दिया है। तुम्हारे जैसी साथिन पाकर कौन न नाचेगा।

एलिजबेथ कनखियोंसे देखती हुई चल दी। उसके न नाचनेसे डारसी

को उसकी ओर आकर्षित किया। इतने में मिस बिंगले आकर बोली-

'मैं समझ सकती हूँ कि आप किस ध्यानमें मग्न हैं।'

डारसी- 'कदापि नहीं।'

मिस बिंगले- 'आप सोच रहे हैं कि इस प्रकारसे संध्या बिताना कैसा असहनीय है। एक मनुष्य भी बातचीत करनेके योग्य नहीं। मैं कभी भी इतनी खिन्न नहीं हुई। आपकी सम्मति क्या है?'

डारसी- समझनेमें तुमने बिलकुल भूल की है। मैं इस समय अच्छी बात सोच रहा था। मैं यह सोच रहा था कि एक सुन्दर स्त्रीके मुखपर दो अच्छे नेत्र क्या आनंद दे सकते हैं।'

मिस बिंगलेने डारसीकी ओर आंख गडाकर देखा और पूछा कि वह कौन भाग्यवान स्त्री है, जिसने आपके मनमें यह बात उत्पन्न की है?'

मि· डारसीने तुरन्त ही उत्तर दिया—'मिस एलिजबेथ बेनट।

मिस बिंगले- 'मिस एलिजबेथ बेनट? मैं आश्चर्यमें आगई हूँ। कबसे वह आपकी प्रेमपात्री हुई है और कब मैं आपको बधाई दे सकूंगी।'

डारसी- 'यह तो मैं पहलेही समझता था कि स्त्रियोंका दिमाग बहुत जल्दी काम करता है। एक क्षणमें ही प्रशंसासे प्रेम और प्रेमसे विवाहपर पहुँच जाती हैं। बधाईकी बात मैं पहले ही से समझता था।'

मिस बिंगले- 'नहीं नहीं। यदि आप गम्भीरतासे कहते हैं तो यह बात निश्चय है। निस्सन्देह आपकी सास बहुत ही सुन्दर है। और वह सदा आपके साथ पम्बरले में रहेगी।'

डारसी उदासीनतासे ये बातें सुनता रहा। और डारसीके मुखके भावसे जब मिस बिंगलेने समझ लिया कि कोई खटका नहीं है, तो वह बडी देरतक हँसी करती रही।

——

सप्तम परिच्छेद

मिस्टर बेनटकी कुल सम्पत्तिसे दो हजार वार्षिक की आय थी। दुर्भाग्यसे यह कुल सम्पत्ति लडका न होनेके कारण उसके मरनेके अनंतर लडाकियोंको न मिलकर एक दूर के नातेदारको मिलती। मिसिज बेनटके लिये उसका पिता चार हजार पौण्ड छोडगया था। मिसिज बेनटकी एक बहन मिस्टर फिलिप्सको ब्याही थी जो उसके पिताका मुन्शी था और जिसने बादको उसके पिताका काम संभाला था। उनका एक भाई लंडनमें व्यापार करता था।

लाँगबोर्न ग्रामसे मेरिटन एक मील था। युवतियां वहाँ सप्ताहमें तीन चारबार घूमने जाती थीं, और अपनी मौसीके यहांभी हो आती थीं। कैथरीन और लीडिया अधिकतर वहां जाती थीं। क्योंकि वहाँ जानेसे प्रात:काल तो हँसीमजाकमें कटजाता था और सन्ध्याको प्रात:कालकी बातोंकी चर्चामें समय कटजाता था। ग्राममें चाहे कोई नये समाचार न मिलें। परन्तु उनकी मौसी से तो कुछ न कुछ नई बातें अवश्य मालूम होती थीं। आजकल तो समाचारों की कमी न थी क्योंकि मेरिटनमें एक फौजका गारद सर्दीके लिये पडाव डाले पडा था।

मिस्टर फिलिप्सके यहां जाकर अबतो उनको बहुत ही मनोहर समाचार मिलते थे। प्रतिदिन किसी न किसी अफसरका नाम और उसके संबन्ध मालूम होतेथे। उनके रहनेका स्थान बहुत दिनतक गुप्त न रहा। और अन्तमें अफसरोंसे जान पहचान भी होगई। मिस्टर फिलिप्स उनके यहां गया और इसलिये उनकी भानजियोंको एक नवीन आनन्द प्राप्त हुआ। सिवाय अफसरों के अब कोई और चर्चा न थी। मिस्टर बिंगले की सारी सम्पत्ति (जिसकी चर्चा से उनकी माता को बडी प्रसन्नता होती थी) उनकी आँखों में फौजी अफसरों के तमगों के सामने कुछ आस्तित्व न रखती थी।

एक दिन इस विषयपर सुनते सुनते मिस्टर बेनटने शान्तिपूर्वक कहा:-

"तुम्हारी बातचीत सुनकर मैं इसी परिणामपर पहुँचा हूँ कि देशमें तुमसे अधिक मूर्ख कन्या कोई नहीं। बहुत दिनसे इसका मुझे सन्देह था, परन्तु अब मुझको पूर्णविश्वास हो गया है।"

कैथरीन लज्जित होकर चुप हो रही। परन्तु लीडिया इस बातकी परवाह न करके कैप्टन कारटरकी प्रशंसा करती रही, और यह आशा प्रगट करती रही कि कल उससे मिलूंगी। क्योंकि वह परसों ही सुबह लंदन जायेगा।

मिसिज बेनट- 'मुझको आश्चर्य है कि तुम अपने ही बच्चोंको मूर्ख समझनेमें क्यों तत्पर रहते हो। यदि मैं किसी के बच्चे को मूर्ख समझना चाहती, तो कमसे कम अपने बच्चोंको तो कभी भी मूर्ख न समझती।'

मिस्टर बेनट- 'यदि मेरे बच्चे मूर्ख हैं, तो मुझको सर्वदा उन्हें मूर्ख समझना चाहिये।'

मिसेज बेनट- 'हुं, परन्तु हमारे सभी बच्चे चतुर हैं।'

मिस्टर बेनट- 'यही तो एक बात है, जिसपर मैं तुमसे सहमत नहीं। मुझको आशा थी, हमारे-तुम्हारे भाव सब मिलते हैं, परन्तु इस बातको मैं अवश्य ही कहूंगा कि हमारी ये दोनों छोटी लडकियां बिलकुल बेवकूफ हैं।'

मिसिज बेनट- 'मेरे प्यारे बेनट! लडकियोंमें मां और बापकी सी समझ नहीं होसकती। जब वे हमारी अवस्थाकी होंगी, तो वे भी अफसरोंका ध्यान न करेंगी। मुझको वह समय याद है कि जब मैं एक लालकोटको बहुत पसन्द करती थी। और अबभी दिलमें पसंद करती हूँ। निस्सन्देह यदि कोई युवा कर्नल पांच छः हजार वार्षिक वेतन पानेवाला मेरी कन्याके लिये मुझसे प्रार्थना करे तोमैं उसे इन्कार न करूंगी। और मेरी समझमें तो कर्नल फास्टर सरविलियमके यहां अपने फौजी कपडे पहनकर बडा सुन्दर प्रतीत होता था।

लीडियाने कहा- 'मौसी कहती थी कि कर्नल फास्टर और कैप्टन कारटर अब मिस वाटसनके यहां उतना नहीं जाते, जितना पहले जाते थे। वे अब क्लार्कके पुस्तकालयमें बहुधा खडे रहते हैं।'

मिसेज बेनट इसका उत्तर दे नहीं पाई कि एक नौकरने आकर मिस बेनटके नामकी एक चिट्ठी दी। चिट्ठी नीदरफील्डसे आई थी। और नौकर उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहा था। मिसेज बेनटकी आँखें उज्ज्वल हो उठीं, और वह लडकीसे बार बार पूछने लगी, किसका पत्र है? क्या लिखा है? प्यारी जेन! जल्दी बताओ'

जेनने यह कहकर कि 'मिस बिंगलेका पत्र है' पत्रको पढकर सुनाया।

'मेरी प्यारी सखी! यदि तुमको कष्ट न हो तो आज हमारे यहां ही भोजन करो। यदि तुमने ऐसी कृपा न की तो हम आजन्म एक दूसरेसे घृणा करेंगे। शीघ्रही इस पत्रके पाते आओ। मेरा भाई और पुरुष अफसरोंके यहां भोजन करेंगे।'

तुम्हारी सदा शुभचिन्तिका-
कैरोलीन बिंगले।

लीडिया चिल्ला उठी,—'अफसरोंके यहां, मेरी मौसीने मुझको यह नहीं बताया।'

मि· बेनट–'पुरुष घरमें नहीं रहेंगे बडा दुर्भाग्य है।'

जेन– 'क्या मुझको गाडी मिल सकती है?'

मिसेज बेनट– 'नहीं मेरी प्यारी! तुम घोडेपर जाओ, क्योंकि पानी बरसने वाला है। इसलिये रातको भी वहीं रह जाना।'

'एलिजबेथने कहा– यह तो बडी अच्छी बात है, परन्तु वह शायद अपनी ही गाडीमें तुमको भेज दें।'

मि· बेनट–सब लोग बिंगलेकी गाडीमें मेरिटन गये होंगे और हर्स्टकी गाडीमें तो घोडा भी नहीं है।'

जेन–'मैं गाडीमें जाऊंगी।'

मिसेज बेनट–'मेरी प्यारी। तुम्हारा पिता आज घोडे नहीं दे सकता। खेलमें आवश्यकता है। क्यों मिस्टर बेनट ठीक है न?'

मिस्टर बेनट—"खेल में तो उनकी बहुत आवश्यकता रहती है परन्तु

मुझको मिलते बहुत कम हैं।'

एलि - परन्तु पिताजी यदि आज आप घोडे ले लो तो मां का मतलब पूरा हो जायेगा।'

पिताने अन्त में कहा कि घोडे नहीं मिल सकते ! इसलिये जेन गाडीपर न जा सकी, और उसकी मां की आशा पूरी हुई। क्योंकि उसके पहुंचने के बाद ही पानी बडे जोरसे बरसने लगा। जेनकी बहनोंको कुछ चिन्ता हुई, परन्तु मां बहुत खुश थीं। पानी शामको भी बरसता रहा, जेन वापिस न आ सकी।

मिसेज बेनट-'मेरा विचार कैसा अच्छा था।'

दूसरे दिन खाना हो ही रहा था कि नीदरफील्डसे आकर एक नौकरने चिट्ठी दी, जिसमें लिखा था —

'मेरी प्यारी लिजी !

मेरी तबीयत आज अच्छी नहीं। भीग जानेके कारण ही ऐसा हुआ है। मेरे दयावान मित्र मुझको आने नहीं देते। डाकूटर जौन्सको बुलानेको कह रहे हैं। इस लिये यदि तुम उनके यहां आनेकी बात सुनो तो घबराना नहीं। थोडा सिरदर्द और गलेमें खराश है, और कोई बात नहीं।

— तुम्हारी बहिन।'

मि० बेनटने चिट्ठी सुनकर कहा-'मेरी प्यारी ! यदि तुम्हारी लडकीको बीमारीका भयंकर आक्रमण हो, यदि वह मर भी जाये तो कैसे सुखकी बात है कि यह सब बात मिस्टर बिंगलेकी चाहमें और तुम्हारी आशाके अनुसार हुई।'

मिसेज बेनट- 'मुझको उसके मरनेका भय नहीं है। थोडीसी ठण्ड लग जानेसे आदमी मर नहीं जाता। वहां देखभाल भले प्रकार होगी। वहां ठहरना अच्छा ही है। मैं स्वयं जाकर उसको देख आऊंगी, यदि मुझको गाडी मिल सके।'

एलिजबेथ बहुत चिन्तित थी, इसलिए गाडी न मिलने पर भी उसने जानेका पक्का निश्चय कर लिया। और उसने अपना इरादा प्रकट किया।

मां ने कहा– 'तुम कैसी मूर्ख हो। इस धूलमें वहां जाओगी। वहां पहुंच कर तुम देखनेके योग्य भी न रहोगी।'

एलिज,- 'मैं केवल जेनको देखने जा रही हूँ। और मेरा कोई प्रयोजन नहीं।'

मिस्टर बेनट- 'क्या यह मुझको संकेत है कि मैं घोडोंको बुलवा दूँ।'

एलिज.- 'नहीं, मैं पैदल जाना चाहती हूँ, केवल तीन मील तो है ही। भोजनके समय तक वापिस आ जाऊंगी।'

मेरी—'मैं तुम्हारी दयाकी प्रशंसा करती हूँ। परन्तु प्रत्येक भावको बुद्धि से दबाना चाहिये। मेरी सम्मतिमें व्यायाम उतना ही करना चाहिए, जितना सहा जा सके।'

कैथरीन और लीडियाने कहा–'हम भी मेरिटन तक तुम्हारे साथ चलेंगे। एलिजबेथ ने उनके साथ चलना स्वीकार किया, और तीनों युवातियां चल पडीं।

लीडिया- 'यदि हम तेज चलें तो सम्भव है कि केप्टन कारटरसे भेंट हो जावें।'

मेरिटन पहुँचकर वे पृथक् हो गईं। दोनों छोटी युवातीयां तो एक अफसर की स्त्रीके यहां चली गईं और एलिजबेथ अकेली तेजीसे खेतोंको लाँघते हुए पत्थरोंको फांदते हुए अधीरतासे चली। अन्तमें उसको मकान दीखने लगा। उसकी टांगें थक गईं थीं, मौजे धूलसे भर गए थे, और मुख तेज चलनेके कारण तमतमा रहा था।

वह खानेके कमरेमें लाई गई, और वहां जेनके अतिरिक्त सब लोग एकत्रित थे। सबको बडा आश्चर्य हुआ कि वह किस प्रकारसे ऐसे खराब मौसम में, इतने सुबह तीन मील पैदल चलकर आई। मिसेज हर्स्ट और मिस बिंगले को तो यहबात अविश्वसनीय प्रतीत होती थी। एलिजबेथको यह निश्चय होगया कि वे उसको घृणाकी दृष्टिसे देखती हैं। परन्तु वे उससे बहुत ही नम्रतासे मिलीं, और उनके भाईकी चालढालमें तो नम्रतासे भी अधिक दयाभाव था। मिस्टर डारसी बहुत कम बोले। और हर्स्ट तो चुप ही रहे। डारसी तो कभी

उसके मुखकी चमकको जो व्यायामके कारण आ गई थी प्रशंसा करता था परन्तु मि. हर्स्ट खाने ही में लीन था।

बहनकी तबीयतके विषयमें कुछ अच्छे उत्तर न मिले। जेनको नींद बहुत कम आई थी। और यद्यपि वह उठ गई थी परन्तु कमरेसे बाहर आने के योग्य न थी, क्योंकि उसको ज्वर चढा हुआ था। एलिजबेथ तुरन्त ही जेन के पास लेजाई गई और जेन उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुई। अधिक बातें तो न करसकती थी,परन्तु जब मिस बिंगले चली गई तो, वह केवल अपनी कृतज्ञता उन लोगोंके व्यवहारकी ओर प्रगट कर सकी। एलिजबेथ चुपचाप उसकी सेवा करने लगीं! जब खाना समाप्त होगया तो बिंगलेकी बहनेंभी आ गईं और एलिजबेथ भी उनको पसंद करने लगीं। क्योंकि उनका व्यवहार जेनके साथ बडा प्रेममय था। डाक्टर आया। रोगीको देखकर बोला कि सरदी लग गई है। उसको बिछौनेमें लेटकर कुछ औषधि पीनी चाहिए। ऐसाही किया गया क्योंकि उसका बुखार बढ रहा था और सिरमें दर्द हो रहा था। एलिजबेथ ने उसको एक क्षण के लिये भी नहीं छोडा। वे स्त्रियां भी वहीं रहीं क्योंकि उनको और कुछ काम न था।

जब घडीमें तीन बजे एलिजबेथने जानेकी इच्छा प्रकट की। मिस बिंगलेने कहा कि गाडी कसवा दूं। और एलिजबेथ इसको स्वीकार करने ही को थी कि जेनने चाहा कि वह रातको वहीं रह जाये। फिर मिस बिंगलेको भी उसको रातको ठहरनेके लिये निमंत्रण देना पडा। एलिजबेथने कृतज्ञतापूर्वक रहना स्वीकार किया। एक नौकर रहनेकी सूचना देने लांगबोर्न गया, और उससे यह भी कह दिया गया कि रातके पहननेके कपडे लेता आवे।

———

आठवां परिच्छेद

पांच बजे दोनों स्त्रियाँ कपडे पहनने को गईं, और साढे छः बजे एलिज़ाबेथ खाने को बुलाई गई। उससे उसकी बहन की तबीयत के विषय में

प्रश्न किये गये.परन्तु वह कोई सन्तोषजनक उत्तर न देसकी। जेनकी तबीयत अभी ठीक न थी। बहनोंने तीन चार बार अपनी सहानुभूति प्रगट की, और कहा कि सरदी लगना भी बड़ी बुरी बात है। फिर जेनके विषयमें सब भूल गई। उनकी उदासीनताको देखकर एलिजाबेथको उनसे फिर घृणा होने लगी। उनका भाई ही एक ऐसा मनुष्य था, जिसको उसने अच्छा समझा। जेनके रोगकी उसको बहुत चिंता थी, और वह उसके विषयमें बहुत पूछता था। उसके भाव ऐसे थे जिनसे ऐलिजाबेथको यह प्रतीत होने न दिया कि उसका वहां रहना अनुचित है। उसके अतिरिक्त किसीने भी एलिजाबेथकी परवाह न की। मिस बिंगले तो हरसमय डारसीको मन मोहने का प्रयत्न किया करती थी। मिसेज हर्स्ट भी डारसी ही की खुशामदमें लगी रहती थी। और मिस्टर हर्स्ट उन मनुष्योंमें से था, जिनके जीवन का उद्देश्य खानापीना और ताश खेलना था। वह एलीजाबेथसे कुछ न बोला।

जब खाना समाप्त हो गया। वह जेनके पास चली गई और मिस बिंगलेने उसके जाते ही उसकी निन्दा करनी आरम्भ की। 'उसकी चेष्टायें बहुत बुरी थीं। अहंकार और असभ्यताकी वह मूर्त्ति थी। बात करनेका ढंग उसको नहीं आता। उसमें सुन्दरता बिलकुल नहीं,' इत्यादि। मिसेज हर्स्टने अपनी बहनसे सहमत होकर कहा।

'उसमें कोईभी अच्छी बात नहीं है सिवाय इसके कि वह पैदल खूब चल सकती है। मैं उसकी आज सुबहकी आकृति कभी न भूलूंगी। वह बिलकुल जंगली मालूम होती थी।

मिस बिंगले– 'निस्संदेह। मुझे तो हँसी रोकना मुश्किल हो गया। उसके आने ही की क्या आवश्यकता थी। क्या किसीकी बहनको सरदी नहीं लगती। उसके बाल कैसे उलझे हुए थे।'

मिसेज़ हर्स्ट– 'हां, और उसका पेटीकोट तुमने अवश्य देखा होगा। छः इञ्च कीचडसे भरा था। और उसकी गाऊन जो उसने पेटीकोट छुपानेके लिये नीची करदी थी, अपना काम नहीं करती थी।'

बिंगले- 'तुम लोगोंने एलिजबेथका चाहे ठीक ही चित्र खींचा हो।

परन्तु मुझको वह न भाया। मेरी समझमें तो एलिजाबिथ जब आज प्रातःकाल इस कमरेमें घुसी तो अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होती थी। उसका गंदा पेटीकोट मुझको नहीं दिखा।'

मिस ब्रिंगले-'मिस्टर डारसी ! तुमने तो अवश्य देखा होगा, और मेरा विचार है कि तुम अपनी बहनको इस प्रकारकी चेष्ठा करते पसन्द न करते।'

डारसी- 'कभी नहीं।'

मिसेज हर्स्ट- 'तीन चार पांच मील इस तरहसे आना, धूलसे घुटनों तक भरजाना और बिलकुल अकेला आना इन सब बातोंका क्या प्रयोजन है? इससे एक घृणित प्रकारकी स्वतन्त्रता प्रगट होती है, जो गांवके रहनेवालों ही को शोभा दे सकती है।'

बिंगले- 'इससे बहनका प्रेम प्रगट होता है जो कि अनुकरणीय है।'

मिस ब्रिंगलेने धीरेसे मिस्टर डारसीसे कहा- 'कदाचित्, आजकी चेष्टासे आपकी सम्मतिमें उसके नेत्रोंकी प्रशंसामें कुछ परिवर्तन हो गया है।'

डारसी-'बिलकुल नहीं। व्यायामसे वह अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होती थी।'

इसके बाद कोई न बोला और फिर मिसेज हर्स्टने आरम्भ कियाः-

मिसेज हर्स्ट- 'मुझको जेनका बहुत खयाल है। वह बडी प्यारी युवती है। मैं हृदयसे चाहती हूँ कि उसको अच्छा वर मिले। परन्तु ऐसे पिता माता और ऐसे नीच सम्बधियोंके होते हुए इसकी कुछ आशा नहीं।'

बिंगले- 'मैंने किसीसे सुना है कि इनका मौसा मेरिटनमें वकील है।'

मि॰ हर्स्ट- 'हां, एक औरभी है जो वहीं नीच बस्तीमें रहता है।'

उसकी बहनने कहा- 'यह खूब कही और दोनों हंसने लगीं।'

ब्रिंगले- 'यदि उनके चाचा और मामासे सारी नीच बस्तियें भरी हों तबभी जेनकी सुन्दरतामें कोई आपत्ति नहीं कर सकता।'

डारसी-'परन्तु इस बातका यह प्रभाव तो अवश्य पडेगा कि वह किसी मनुष्यसे विवाह न कर सकेगी।'

बिंगलेने इस बातका कुछ उत्तर न दिया। उसकी बहनोंने हृदयसे इसका समर्थन किया एवं बडी देरतक एलिजबेथके नीच संबन्धियोंका हंसी-मजाक

उडाती रहीं।

फिर दया करके वे जेनके कमरेमें गईं। काफी पीनेके लिये बुलाने तक वहीं बैठी रहीं। जेनकी दशा अभी अच्छी न थी। अतः एलिजबेथ उसको अकेला न छोड सकी। अधिक रात बीतनेपर जब जेन सो गई, तब वह उसको छोडकर नीचे उतरकर आई। ड्राइंग रूममें प्रवेश करतेही उसने देखा कि सब लोग ताशका जुआ खेल रहे हैं। उन्होंने इसको भी खेलनेका निमंत्रण दिया। परन्तु यह समझकर कि बाजी तेज हो रही होगी उसने अपनी बहनका बहाना करके खेलनेसे इन्कार कर दिया। और कहा कि थोडी देर, जब तक मैं यहां बैठी हूं मैं कोई पुस्तक ही पढूंगी। मि. हर्स्टने उसकी ओर आश्चर्यसे देखकर कहा—

'बडे आश्चर्यकी बात है कि आप ताशखेलनेसे पढनेको अच्छा समझती हैं।'

मिस बिंगले—'एलिजबेथ ताशोंसे घृणा करती है। उसको पढनेका शौक है। और किसी बातमें स्वाद नहीं आता!'

एलिजबेथ—मैं न इतनी प्रशंसा और न इतनी घृणाकी अधिकारिणी हूँ। मैं बहुत पढने वाली नहीं। और मुझे और भी बहुत सी बातों में स्वाद आता है।"

बिंगले—"अपनी बहन की सेवा करने में आप बडी ही दक्ष हैं, और मुझको आशा है कि वह तुरन्त ही ठीक हो जायेंगी।'

एलिजबेथने उसको हृदयसे धन्यवाद दिया और फिर एक मेजकी ओर जिसपर कुछ पुस्तकें पडी थीं, चली गई। बिंगले और पुस्तकें लानेकेलिये उठा और बोला—

'मेरी इच्छा है कि मेरा पुस्तकालय आपके लाभके लिये और मेरी नेकनामीके लिये बडा होता तो अच्छा था। मैं बहुत ही आलसी आदमी हूँ। मेरे पास बहुत पुस्तकें तो नहीं हैं परन्तु फिरभी जितनी हैं वे भी नहीं पढीं।'

एलिजबेथने उसको विश्वास दिलाया कि मेरे लिये कमरेमें ही पर्याप्त पुस्तकें हैं।

मिस बिंगले–मुझको बडा आश्चर्य है कि मेरे पिताने अधिक पुस्तकें न छोडीं। मि· डारसी! पेम्बरलेमें आपका पुस्तकालय कितना अच्छा है?'

डारसी– अच्छा होना ही चाहिए, क्योंकि यह पुश्तोंका काम है।'

मिस बिंगले–'फिर आपनेभी तो उसको बहुत बढाया है। आप भी तो सदा पुस्तकें मोल लिया करते हैं।'

डारसी– कुटुम्बके पुस्तकालयकी किस प्रकारसे लोग उपेक्षा कर सकते हैं, मेरी समझमें नहीं आता।'

मिस बिंगले–'आप किसी चित्रकी उपेक्षा नहीं करते। आप सदा उस रमणीय स्थानको सुन्दर बनानका प्रयत्न किया करते हैं। चार्ल्स! मैं चाहती हूँ कि तुम जब कभी अपना मकान बनाओ तो वह पेम्बरलेके समान बनाना।'

चार्ल्स बिंगले– 'मेरी भी यही इच्छा है।'

नवम परिच्छेद

रातका अधिक भाग एलिजाबेथने जेनके कमरेमें बिताया। प्रात: काल उसने बडी खुशीसे मिस्टर बिंगलेके पूछनेपर उसको यह सूचना दी कि जेन की तबियत कुछ ठीकहै। तबियत सुधरनेपर भी उसने यह इच्छा प्रगट की कि लांगबोर्न से माँको बुलालिया जाय कि वह स्वयं उसको देखजाये। चिठ्ठी तुरन्तही भेजीगई और खानेंके बादही मिसिज बेनट अपनी दोनों छोटी लड-कियोंको लिये वहां आ पहुंची। यदि जेनका रोग भयंकर होता तो मिसेज बेनट घबरा जाती। परंतु जब उसको यह संतोष होगया कि बीमारी कुछ नहीं है, तो उसकी यही इच्छा थी कि वह शीघ्र अच्छी न हो, नहीं तो नीदरफील्ड से जाना पडेगा। इसालिए उसने जेनका यह प्रस्ताव कि मैं घर चलूंगी अस्वीकार किया। डाक्टरने भी उसको वहांसे जानेकी सम्मति नहीं दी।

जेनके पास थोडी देर बैठकर वह अपनी तीनों कन्याओंको लेकर बाहर कमरेमें आई। बिंगलेने आशा प्रगट की कि जेनकी दशा इतनी बुरी आपने न पाई होगी जितना आपको भय होगा।

मां-'नहीं, उसकी अवस्था ठीक नहीं है। डक्टरकी राय है कि वह अभी यहाँ ही रहे। इसलिए उसको आपका अतिथि और कुछदिन रहना पडेगा।"

बिंगले-"यहां से जानेका तो विचार ही नहीं करना चाहिए। मेरी बहन तो इसबात को बिलकुल न मानेगी"

मिस बेनट-"श्रीमती जी ? आप निश्चिंत रहिए। जबतक वह हमारे यहां है, उसकी सेवामें त्रुटि न होगी।"

मिसेज बेनटने बहुत धन्यवाद देतेहुए कहा-"मुझको पूर्णविश्वास है, यदि आप ऐसे सज्जन न होतें तो उसकी दशा बहुत बिगड जाती, क्योंकि वह बहुत बीमार है। और वह अत्यन्त कष्टमें है। जिसे वह बडे धैर्यके साथ सहन कररही है। उसका स्वभाव बहुत ही अच्छा है। बहुधा मैं अपनी लड-कियोंसे कहा करती हूं कि जेनके मुकाबिलेमें वे कुछ नहीं। मिस्टर बिंगले! वह कमरा आपका बहुत अच्छा है, और सामने कैसा दृश्य है। ग्राममें नीदरफील्ड से अच्छी कोई कोठी नहीं यद्यपि आपने थोडेही दिनोंके लिए उसको लिया है, तो भी इसे शीघ्र न छोडिएगा।

उसने उत्तर दिया-"जो कुछ मैं करता हूं जल्दीमें करता हूं। यदि मेरे मनमें नीदरफील्ड छोडनेकी बात आए तो पाँच मिनिटमें छोडकर चलदूंगा। अभी तो यहाँ ठहरना ही मालूम होता है।'

एलिजाबेथ-"आपके विषयमें बिलकुल ऐसा ही मेरा विचार था।"

बिंगले-"तो आप मुझको बिलकुल समझ गई हैं।"

एलिजाबेथ-"हाँ, बिलकुल।"

बिंगले-'मैं तो इसको अपनी प्रशंसा समझना चाहता था, परन्तु इतने सहजमें स्वभाव समझ लिया जाय यह बडे दुःखकी बात है।"

एलिजाबेथ-"इसका अर्थ यह नहीं है कि आपका सहजमें आजाने वाला

स्वभाव टेढे स्वभाव से अधिक या कम प्रशंसनीय है।"

मां- 'लिजी! तुम कहाँ हो, इस बातका ध्यान रखो । जंगली ढंगसे हरजगह वार्तालाप करना अच्छा नहीं होता।"

बिंगले-"मुझको पता नहीं था कि आप स्वभावपर अध्ययन करती हैं। यह तो बडा मन बहलानेवाला अध्ययन होगा ?"

एलिजाबेथ-"हाँ, परंतु मेरा स्वभावको अध्ययन करनेमें अधिक मन लगता है।'

डारसी-ग्राममें तो इस अध्ययनका बहुतकम अवसर मिलता होगा। क्योंकि यहांका समाज बहुत संकीर्ण और छोटा है।'

एलिजाबेथ- "एक ही आदमीमें भिन्न-भिन्न अवस्थाओंमें इतना परिवर्तन होता है कि उसीको अध्ययन करनेमें आनन्द आता है।

मिसेज बेनटने डारसीको इस प्रकारसे ग्रामके विषयमें आक्षेप करतेहुए सुनकर, चिढकर कहा-"शहरके समान यहांभी सब कुछ होता है।

प्रत्येक मनुष्य आश्चर्य में आगया। डारसी ने मुख फेरालिया। मिसेज बेनटने समझा कि मैंने इसको हरादिया। फिर वह बोली- 'मैं नहीं समझ सकती कि ग्रामसे अधिक लंदन में क्या रखा है, दुकानों और शराबखानों के अतिरिक्त। ग्राम बहुतही सुन्दर होते हैं। क्यों मिस्टर बिंगले ठीक है न?'

बिंगले-'जब मैं ग्राममें होता हूँ तो मुझे ग्राम छोडनेको दिल नहीं चाहता और शहरमें भी यही हालत होती है। दोनोंमें कुछ कुछ अच्छाइयाँ हैं। और मैं दोनोंमें प्रसन्न रह सकता हूँ।'

मिसेज बेनट-"क्योंकि आपका स्वभाव ही अच्छांहै । परन्तु वह मनुष्य (डारसी की ओर देखकर) ग्राम को कुछ समझता ही नहीं।"

एलिजाबेथने लज्जित होकर कहा—" मां, तुम मि० डारसीकी बात नहीं समझीं। उनका प्रयोजन यह था कि ग्राममें उतने भिन्न २ प्रकारके मनुष्य नहीं मिलते, जितने शहर में मिलते हैं। और यह बात ठीक भी है।"

मिसेज बेनट-"यह कौन कहता है। परन्तु इतना बडा ग्राम तो कोई

और नहीं। यहां बहुत मनुष्य मिलते हैं। हम स्वयं चौबीस कुटुम्बों में भोजन करते हैं।"

बडी कठिनतासे एलिजाबेथका विचार करके बिंगलेने हँसी रोकी। उसकी बहन को तो इसका कोई विचार न था। उसने डारसीकी ओर देखकर मुस्कराया।

एलिजबेथने अपनी मां का ध्यान भटकानेके लिए पूछा 'शारलोट ल्यूकस तो घर पर नहीं आई थी?'

मिसेज बेनट—'अपने पिताके साथ कल आई थीं। मिस्टर बिंगले! सर विलियम भी कैसे अच्छे आदमी हैं। ऐसा सहज स्वभाव, सबसे बातें करना, इसीसे आदमीका अच्छापन प्रगट होता है। और वे आदमी जो अपने को बडा समझकर अपना मुँह ही नहीं खोलते अच्छे नहीं कहे जा सकते।'

एलिज़·—'शारलोटने हमारे यहां खाना खाया था या नहीं?'

मां—'नहीं, उसको घर जाना था। शायद कबाब बनाने होंगे। मिस्टर बिंगले! मैं सदा ऐसे नौकर रखती हूँ, जो अपना काम कर सकें। मेरी लडकियां दूसरे प्रकारसे पाली गई हैं। परन्तु प्रत्येक मनुष्य अपना काम अच्छा ही समझकर करता है। ल्यूकस कुटुम्बकी लडकियां बहुत अच्छी हैं। परन्तु शोक है कि वे सुन्दर नहीं हैं। शारलोट तो इतनी बुरी नहीं। वह हमारी विशेष परिचिता है।'

बिंगले– 'वह तो अच्छी मालूम होती है।

मिसेज बेनट–'हां, परन्तु आपको मानना पडेगा कि वह सुन्दर नहीं। लेडी ल्यूकस स्वयं इस बातको मानती है। और जेनकी सुन्दरतासे ईर्ष्या करती है। मैं अपनी लडकीकी प्रशसा करनी नहीं चाहती। परन्तु प्रत्येक मनुष्य कहता है कि जेनके समान सुन्दर कन्या दूसरी नहीं। जब वह केवल पन्द्रह वर्षकी थी, तब मेरे भाई गार्डनरके यहां एक पुरुष था, जो उससे इतना प्रेममें फंस गया था कि मेरी भावजको विश्वास था कि हमारे वहांसे आनेके पहिले वह अवश्यही विवाहका प्रस्ताव करेगा। परन्तु उसने नहीं किया, कदाचित् उसने उसे बहुत छोटी समझा। उसने कुछ बहुतही सुन्दरकविता

जेनपर लिखी थी।'

एलिजबेथने अधीर होकर कहा— 'और उस प्रेमीकी प्रेमकथा समाप्त हो गई। बहुधा ऐसा ही होता है। परन्तु प्रेमको दूर भगानेके लिए कविता करना आज ही मैंने सुना।'

डारसी- 'मैं समझता था कि कविता प्रेमकी ज्वाला बढाती है।'

एलिज.- 'हां, अच्छे सच्चे प्रेमकी तो ज्वाला कविता बढाती है, परन्तु झूठे थोडेसे प्रेमको एक अच्छा गीत भगा देता है।'

डारसी मुस्कराया। सब लोग चुप हो गये। एलिजबेथको यही भय था कि मां कहीं फिर न बोल पडे। मां बोलना चाहती थी, परन्तु कुछ विषय उसको न मिला। कुछ देर चुप रहकर वह फिर बिंगलेको धन्यवाद देने लगी और लिजी और जेनके वहां रहनेकी क्षमा मांगी। बिंगलेने स्वाभाविक प्रकारसे इसका उत्तर शिष्टतासे दिया और बहनको भी ऐसा करनेका कहा। परन्तु बहन ने टूटे फूटे शब्दोंमें बनावटी ढंगसे उत्तर दिया। मिसेज बेनटने प्रसन्न होकर गाडी कसनेकी आज्ञा दी। यह संकेत पाकर लीडिया आगेको बढी, और मिस्टर बिंगलेको याद दिलाया कि उन्होंने नाच करनेका वचन दिया था। उसको पूरा करना चाहिये। नहीं तो बडी लज्जाजनक बात होगी।'

लीडिया गठी हुई १५ वर्षकी युवती थी। उसका रंग साफ था, और वह अपनी मांकी दुलारी लडकी थी। इस कारण वह छोटी ही अवस्थामें बाहर निकल आई, और उसके मौसाके घर आनेजानेके कारण अफसरोंने भी उसकी ओर कुछ ध्यान दिया। इससे वह और भी मानिनी होगई थी।

बिंगलेने उत्तर दिया—'मैं अपना बचन पूरा करनेका विश्वास दिलाता हूँ, और जब तुम्हारी बहन अच्छी हो जायगी, तो मैं तुमसे ही पूछकर नाच का दिन निश्चित करूंगा। उसकी बीमारीमें तो तुम नाच होना अच्छा न समझोगी?'

लीडियाने सन्तुष्ट होकर कहा- 'हां, जेनके अच्छा होजाने तक प्रतीक्षा करना ही चाहिए। उस समय तक कैप्टन कारटर भी आजायेंगे और आपके साथ नाच हो जानेके बाद मैं उनसें नाच देनेके लिये कहूंगी।'

मिसेज बेनट और उसकी लडकियां चली गईं। एलिजबेथ जेनके कमरे में गई। और दोनों बहनें डारसीके साथ बेनट कुटुम्बकी हंसी उडानेका प्रयत्न करने लगीं। डारसी, एलिजबेथकी हंसी उडानेमें सम्मिलित न हुआ, यद्यपि मिस बिंगलेने उसके जादूभरे नयनोंका कईवार वर्णन किया।

— —

दसवां परिच्छेद

वह दिन भी पहले ही दिनके समान व्यतीत होगया। मिसिज हर्स्ट और मिस बिंगलेने कुछ घण्टे रोगीके कमरेमें व्यतीत किए। जेन बहुत धीरे २ अच्छी हो रही थी। संध्याको एलिजबेथ ड्रायंगरूममें आई। ताशकी मेज आज नहीं थी। डारसी लिख रहा था और मिस बिंगले उसके पास बैठी हुई उसके अक्षरोंको देख रही थी और बार२ उसको संबोधन करके कहती थी कि अपनी बहनको मेरी ओरसे यह संदेसा भेजदो। मिस्टर हर्स्ट और मिस्टर बिंगले पिकट खेल रहे थे, और मिसिज हर्स्ट खेल देख रही थी। एलिजबेथने सुईका काम उठा लिया और डारसी और मिस बिंगलेके वार्तालापमें वह स्वाद लेनेलगी। मिस बिंगले कभी तो उसके हस्ताक्षर करती थी और कभी सीधी लिखावटको अच्छा बताती थी, और कभी उसके इतने लम्बे पत्रपर आश्चर्य प्रगट करती थी। डारसी उदासीनतासे वे बातें सुन रहा था। और इस वार्तालापसे उन दोनोंका चरित्र भले प्रकार मालूम देता था।

मिस बिंगले–'मिस डारसी इस पत्रको पाकर कितनी प्रसन्न होगी।'

डारसीने कुछ उत्तर न दिया।

मिस बिंगले- आप कितना तेज लिखते हैं।'

डारसी- यह आपकी भूल है। मैं सुस्त लिखता हूँ।'

मिस बिंगले- 'आप वर्षमें कितने पत्र लिखते होंगे? कामके इतने पत्र लिखना तो मुझको अच्छा नहीं लगता।'

डारसी- 'सौभाग्यकी बात है कि पत्र लिखना मेरे हिस्सेमें है, आपके हिस्सेमें नहीं।'

मिस बिंगले-आप अपनी बहनको लिख दीजिये कि मैं उससे मिलना चाहती हूँ।'

डारसी—'आपकी इच्छानुसार एक बार मैं यह लिख चुका हूँ।'

मिस बिंगले—'मुझको यह भय है कि आपकी कलम ठीक नहीं चलती, लाइये मैं बनाऊं। बहुत अच्छी बनाती हूँ।'

डारसी—'धन्यवाद, परन्तु मैं अपनी कलम आपही बनाता हूँ।'

मिस बिंगले—'आप इतना अच्छा किसप्रकार लिखते हैं ?'

डारसी चुप रहा।

मिस बिंगले—'अपनी बहनको लिख दीजिये कि मुझको यह सुनकर बहुत हर्ष हुआ कि उसने बाजा बजानेमें बहुत उन्नति की है। और यहभी लिख दीजिए कि बाजेकी छोटी मेजका खयाल करके मैं खुशीके मारे फूली नहीं समाती।'

डारसी-'अपनी खुशीको उस समयतक रोक रखिये जबतक मैं दूसरा पत्र लिखूं। अब इस पत्रमें जगह नहीं है।'

मिस बिंगले-'खैर, जाने दीजिए, जनवरीमें तो मैं उससे मिलूँगी ही क्या सदा आप इतने लंबे और मनोहर पत्र लिखते हैं ?'

डारसी- लंबे तो अवश्य होते हैं। परन्तु मनोहर होते हैं या नहीं यह मैं नहीं कह सकता।'

मिस बिंगले-'मेरी सम्मति तो यह है कि जो मनुष्य आसानीसे लम्बे पत्र लिख सकता है, वह कभी बुरे नहीं लिखेगा।'

मिस्टर बिंगले- 'यह डारसीकी कुछ प्रशंसा न हुई। क्योंकि डारसी बहुत सोच समझकर देरमें पत्र लिखता है। क्यों डारसी ठीक है न ?'

डारसी- 'मेरे लिखनेका ढंग तुमसे भिन्न है।'

मिस बिंगले-'चार्ल्स तो बिलकुल लापरवाही से लिखता है आधे शब्द छूट जाते हैं; और आधोंमें धब्बे पड जाते हैं।'

बिंगले-'मेरे विचार इतने शीघ्र आते हैं कि मैं उनको लिख नहीं सकता। इसीलिए मेरे पत्र पाने वाले मेरे पत्रका आशय नहीं समझते।'

एलिजबेथ- 'आपकी सज्जनताके कारण आपपर कोई आक्षेप नहीं हो सकता।'

डारसी-' सज्जनताकी दिखावट बड़ी ही बुरी है। यह भी या तो सम्मतिका न होना या शेखी प्रगट करती है।'

बिंगले-'और जो अभी मैंने बात कही उस सज्जनतामें किस बातकी झलक है?'

डारसी-'शेखी की। वास्तवमें तुमको अपने लिखनेके दोषोंपर अभिमान है। क्योंकि तुम समझते हो कि उन दोषोंका कारण यह है कि तुम्हारे विचार बड़ी तेजीसे आते हैं, और तुम उनको लापरवाहीसे लिखते हो। यह बात प्रशंसायोग्य नहीं परन्तु तुम उसको अच्छाही समझते हो। शीघ्रतासे काम करनेकी शक्ति काम करनेवालेको अच्छी मालूम होती है। चाहे उसमें कितने ही दोष रह जाएं। आज प्रातःकाल जब तुमने मिसेज बेनटसे कहा कि तुम यदि नीदरफील्ड छोडना चाहो, तो पांच मिनटमें छोडकर चल सकतेहो, इससे तुम्हारा भाव यही था कि तुम्हारी इस बातके लिए प्रशंसा की जाय। यह बात प्रशंसनीय नहीं होसकती, क्योंकि बहुतसे काम अधूरे छोडकर तुम जाओगे, जिससे न तुम्हें लाभ होगा न और किसीको।'

बिंगले-'प्रातःकालकी मूर्खताकी बातोंपर रातको ध्यान देना ठीक बात नहीं। मैं सच कहता हूँ मैंने जो कुछ कहा था उसके एक २ अक्षरको सत्य विश्वास करता हूँ। इसलिए मैंने वह बात स्त्रियोंकी दृष्टिमें आदर प्राप्त करने के लिए नहीं कही थी।'

डारसी-'यह तो मैं मानता हूँ। परन्तु मैं यह विश्वास नहीं करता कि तुम इतनी शीघ्र यहांसे जा सकोगे। तुम्हारा जाना या न जाना उसी प्रकार होगा जैसे किसी अन्य मनुष्यका। और यदि तुम घोडेपर चढकर जा भी रहेहो और तुम्हारा कोई मित्र कहे कि बिंगले एक सप्ताह ठहर जाओ तो तुम अवश्य ठहर जाओगे और जरा और कहनेपर एक मास और ठहर जाओगे।

एलिजबेथ-'इस बातसे तो आपने यही प्रमाणित किया कि मि॰ बिंगले का स्वभाव उससे भी अधिक अच्छा है, जितना उन्होंने स्वयं प्रगट किया।'

बिंगले-मुझको बडी प्रसन्नता हुई कि आपने मेरे मित्रकी बातको प्रशंसा में पलट दिया। परन्तु मुझे भय है कि मेरे मित्रका यह प्रयोजन कभी न था। वह अच्छा समझता यदि मैं अपने मित्रकी बात न मान कर तुरन्त घोडेपर चला जाता।

एलिजबेथ- 'इसका अर्थ यह है कि मिस्टर डारसी आपके शीघ्रतामें स्थिर किए हुए संकल्पोंपर हठसे स्थिर रहना अच्छा समझते हैं।'

बिंगले-'मैं यह बात नहीं समझा सकता, डारसी स्वयं समझायेंगे।'

डारसी-''आप मेरी सम्मतिको उलट पुलटकर प्रकाशित करते हैं। और मुझसे यह आशा करते हैं कि मैं उसे समझाऊं। अस्तु, ऐसी ही बात मानकर मैं कहता हूँ कि मिस बेनट जिस मित्रने हमसे ठहरनेकी प्रार्थना की उसने केवल अपनी इच्छा ही प्रगट की और उस इच्छा के समर्थन में एक भी युक्ति नहीं बताई।'

एलिजाबेथ- ''बिना किसी युक्तिके अपने मित्रकी बात मान लेना आपकी दृष्टि में कोई आदर नहीं रखता।''

डारसी-''बिना समझे हुए बात मान लेना बुद्धिका अभाव ही प्रगट करता है।"

एलिजा॰-''मिस्टर डारसी आपकी सम्मति में मित्रता और प्रेमका कोई अधिकार नहीं। प्रार्थीका प्रेमही प्रार्थना स्वीकार करनेके लिये पर्याप्त है। युक्तिके लिये प्रतीक्षा करना प्रेमका अभाव प्रगट करता है। मैं मिस्टर बिंगले के विषयमें कुछ नहीं कह सकती। जब ऐसा अवसर होगा तब देखाजायगा। परन्तु यदि एक मित्र दूसरे मित्रकी साधारण बात बिना किसी युक्तिके मानले तो क्या आप उस मनुष्यको बुरा समझेंगे!"

डारसी-''यह अच्छा होगा कि इस बातको आगे बढानेके पहले हम वह निर्णय करलें कि उस प्रार्थनाका कितना महत्व है और मित्रता परस्पर किस दर्जे की है।

बिंगले-"हां ठकि है, उससे बहस में महत्व पैदा होजायगा । मिस बेनट मैं आपको बिश्वास दिलाता हूँ, कि यादि डारसी मुझसे इतना लंबा न होता तो मैं उसका तनिक भी आदर न करता। मैं कहता हूँ कि डारसी से भयंकर मैं दूसरा जीव नहीं जानता । बिशेषकर अपने घरपर रविवारके दिन जब कुछ काम नहीं होता इसकी भयंकरता और बढ जाती है।

मि० डारसी मुस्कराया । एलिजाबेथने अनुभव कियाकि डारसीको वह बात बुरी लगी इसालिये वह नहीं हंसी। मिस बिंगले अपने भाईसे इस बातपर क्रोधित हुई।

डारसी-' बिंगले मैं तुम्हारी बात समझ गया । तुम विचार करने को घणित समझते हो, इसलिये इसप्रकार से हमको चुप कराना चाहते हो।"

बिंगले--कदाचित् ऐसा ही हो । बहसमें झगडा होजाता है। यदि तुम और मिस बेनट अपना विवाद उस समयतकके लिए उठा रखो, जबतक मैं बाहर जाऊं तो अच्छा होगा। और फिर जितना चाहे मेरी बुराई करना।"

एलिजाबेथ-"जो बात आप चाहते हैं। मैं करनेको तय्यार हूँ। अच्छा होगा कि मिस्टर डारसी अपना पत्र समाप्त करदें।"

डारसीने उसकी बात मानली और पत्र समाप्त किया। पत्र लिखकर डारसीने मिस बिंगले और एलिजबेथसे गानेके लिए प्रार्थना की। मिस बिंगले तुरंत पियानोके पास उचक आई, और एलिजबेथसे गानेके लिए प्रार्थना की। एलिजबेथके अस्वीकार करनेपर वह स्वयं बजाने लगी। मिसेज हर्स्ट अपनी बहनके संग गाने लगी और इसी समयमें एलिजबेथने देखा कि मि. डारसी बार बार उसकी ओर देख रहे हैं। उसकी समझमें न आता था कि इतना बडा आदमी किस प्रकारसे मेरी ओर प्रशंसाकी दृष्टिसे देख सकता है। और यह सोचती थी कि मेरी ओर वह इसलिए देखता है कि वह मुझसे घृणा करता है, बडे आश्चर्यकी बात है। वह यही समझ सकी कि वह मेरी ओर इसलिये देखता है कि जितने लोग यहां बैठे हैं. उन सबमें उनके विचारके अनुसार मैं घृणित हूँ। परन्तु इस ध्यानसे उसको कुछ शोक न हुआ, क्योंकि वह स्वयं डारसी

को पसन्द नहीं करती थी। इसलिए उसको डारसीकी अपने विषयमें सम्मति की कुछ चिन्ता न थी।

कुछ इटालियन गीत गाकर मिस बिंगलेने स्काच तान बजाई, और डारसीने तुरन्त ही एलिजबेथसे कहा, 'मिस बेनट! क्या इस समय तुम्हारा नाचनेको दिल नहीं चाहता।'

एलिजबेथ हँसी और चुप रही। डारसीने प्रश्न दोहराया।

एलिजबेथ 'मैंने आपका प्रश्न सुना था। उसीका उत्तर सोच रही थी। आपकी इच्छा है कि मैं कहूँ कि हां जी चाहता है ताकि आप रुचि की निन्दा करें। परन्तु मुझको यही बात अच्छी लगती है कि मैं दूसरेकी चालको विफल कर दूं। इसलिए मैं यही उत्तर देती हूँ कि मैं नाचना नहीं चाहती। अब जितना चाहें आप मुझसे घृणा करें।'

डारसी–'मेरा इतना साहस नहीं है।'

एलिजबेथ समझती थी कि डारसीको यह उत्तर बुरा लगेगा परन्तु वह उसकी बातसे आश्चर्यमें आ गई। एलिजबेथके बात करनेके ढंगमें कुछ ऐसी मिठास थी कि कोई उसका बुरा न मान सकता था,और डारसीतो उसके नयनों के जादूसे प्रभावित हो चुका था। वह यह विश्वास करता था कि यदि एलि-जबेथके सम्बन्धी इतने नीच न होते तो कदाचित् मैं इससे विवाह करलेता। मिस बिंगलेने सब बातें देखीं, और ईर्ष्यासे जल उठी। अब वह यही चाहती थी कि जैन शीघ्र अच्छी हो तो एलिजबेथ वहांसे जाये। वह बार बार डारसी को एलिजबेथके विषयमें छेडकर यह चाहती थी कि डारसी एलिजबेथसे घृणा करने लगे।

दूसरे दिन बागमें घूमते हुए मिस बिंगलेने डारसीसे कहा, 'विवाह हो जानेपर, अपनी सासको कमबोलनेके लाभ बता दीजियेगा। और यदि होसके तो छोटी सालियोंको अफसरोंके पीछे दौडनेसे रोकियेगा। यदि मैं इस नाजुक विषयमें कुछ कह सकूं, तो अपनी प्राणप्यारी एलिजबेथकी असभ्यताको कम करनेका प्रयत्न कीजियेगा।'

डारसी—'मेरे गृहस्थ जीवनके सुखके लिये आपको कुछ और प्रस्ताव करना है ?'

मिस बिंगले-'हां, मौसा फिलमस और फिलमसके चित्र पैम्बरलेमें अपने मौसा जजके बराबर लगा दीजियेगा। एलिजबेथके चित्र खिंचवानेका प्रयत्न न कीजियेगा क्योंकि कोई चित्रकार उन सुन्दर नेत्रोंका चित्र नहीं खींच सकता।'

डारसी-'उसके नेत्रोंके भावका चित्र खेंचना तो कठिन ही है। परन्तु नेत्रोंके रंग आकार और सुन्दर भावको चित्र खींच सकता है !'

इसी समय मिसिज हर्स्ट और एलिजबेथ दूसरी ओरसे आगये।

मिस बिंगलेको घबराहट हुई कि कहीं उन्होंने सुन लिया हो। वह बोली 'मुझको नहीं मालूम था कि आप लोग भी घूमना चाहती हैं।'

मिसिज हर्स्ट-'तुमने अच्छा नहीं किया कि हमको छोडकर इस तरह चली आईं। यह कहकर उसने मिस्टर डारसीके खाली हाथमें हाथ दे दिया और एलिजबेथको अकेली छोड दिया। उस रास्तेमें केवल तीन आदमी ही चल सकते थे। मि॰ डारसीने उनकी असभ्यताको समझकर कहा-'हमारेलिये यह रास्ता पर्याप्त चौडा नहीं है, चलो दूसरी ओर चलें। परन्तु एलिजबेथने हँसकर कहा—'आप लोग यहीं ठहरें। आप सब बहुत अच्छे प्रतीत होरहे हैं। चौथे आदमीको सम्मिलित करके दृश्य सुन्दर न रहेगा। नमस्ते।'

यह कहकर वह भाग गई। वह प्रसन्न थी कि दो तीन दिनमें अब घर वापिस जाऊंगी। जेन आज बहुत अच्छी थी और उसकी इच्छा थी कि अपने कमरेसे शामको एक दो घण्टेके लिये बाहर निकले।

——

ग्यारहवां परिच्छेद

जब खाना होचुका, एलिजबेथ दौडकर अपनी बहनको ड्रायंगरूममें ले आई। स्त्रियोंने उसका स्वागत किया और जबतक पुरुष नहीं आये उससे

बातचीत करती रहीं। बातचीत करनेका ढब उनका अच्छा था। वे भोजका वर्णन अच्छा कर सकती थीं। छोटी २ बातोंको भलेप्रकार कह सकती थीं। परन्तु पुरुषोंके आते ही जेनसे उनको कोई दिलचस्पी न रही। मिस बिंगले डारसीसे बातें करना चाहती थी। डारसीने तुरन्त ही जेनको बधाई दी। मि॰ हर्स्टने भी सिर नवाकर प्रसन्नता प्रगट की। परन्तु बिंगले तो खुशीके मारे फूला न समाता था। आध घण्टेतक अंगीठीको ठीक करता रहा कि जेनको सरदी न लग जावे। उसकी प्रार्थनापर जेन उठकर अंगीठीके पास चली गई और वह उसके पास बैठकर बातें करने लगा। एलिजबेथ दूसरे कोनेपर बैठी हुई यह देखकर प्रसन्न होरही थी।

चाय समाप्त होनेपर मि. हर्स्टने अपनी सालीसे ताश लानेको कहा। परन्तु व्यर्थ। क्योंकि वह पहलेसे जान चुकी थी कि डारसी ताश खेलना नहीं चाहता। मि. हर्स्टकी प्रार्थना अस्वीकार हुई। मिस बिंगलेने उससे कहा कि ताश खेलनेकी इच्छा किसीको नहीं है और सब लोगोंके चुप रहनेसे यही प्रगट हुआ कि वह ठीक कह रही है। मिस्टर हर्स्टको सिगार पीनेके अतिरिक्त कोई काम न रहा, डारसीने पुस्तक उठाली। मिस बिंगलेने भी एक पुस्तक उठाई। मिसेज हर्स्ट अपने छल्ले और कुंजियोंसे खेलती रही कभी २ अपने भाई और जेनके वार्तालापमें सम्मिलित हो जाती थी।

मिस बिंगलेका ध्यान अपनीपुस्तकसे अधिक इस बातमें था कि डारसीने कितना पढा। बार बार उससे प्रश्न करती थी परन्तु डारसीको वह आकर्षित न कर सकी। वह पढता ही रहा। थककर उसने अपनी पुस्तक रख दी। उस पुस्तक को उसने इसीलिये चुना था कि वह डारसीकी पुस्तकका दूसरा भाग पढे। वह बोली—'इस प्रकारसे संध्या व्यतीत करना कितना अच्छा है। पढनेके बराबर कोई वस्तु नहीं। पुस्तकसे मनुष्य कभी नहीं थकता। जब मैं घर करूंगी तो बडा अच्छा पुस्तकालय अपने यहां बनाऊंगी।

इस बातका किसीने उत्तर न दिया। उसने जंभाई लेकर पुस्तक फेंकदी और कमरेमें इधर उधर देखने लगी। फिर भाईसे बोली—'चार्ल्स क्या तुम सचमुच नाच देनेवाले हो। नाच देनेके पहले यह अच्छा होगा कि सब लोगों

की सम्मति लेलो। हममें से कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जिनके लिये नाच दण्ड है।'

उसके भाईने कहा—'यदि तुम्हारा अभिप्राय डारसीसे है, तो वह नाच होनेसे पहले सोने जा सकता है। नाच तो नीचे होगा। और तुरन्त ही निमंत्रणपत्र भेजे जायेंगे।

मिस बिंगले-'मैं नाचको अधिक पसन्द करती, यदि उसमें थोडासा परिवर्तन कर दिया जाता। अधिक अच्छा होता कि नाच मुख्य न रहकर वार्तालाप मुख्य हो जाता।'

बिंगले–'परन्तु फिर वह नाच न कहाता।'

मिस बिंगलेने कुछ उत्तर न दिया और खडी होकर कमरे में टहलने लगीं। वह सुन्दर थी और कमरे में घूमने का उसका ढंग भी अच्छा था, परन्तु फिर भी वह अपने प्रयत्न में विफल रही और डारसी पढता ही रहा। निराश होकर उसने आन्तिम चाल यह चली कि एलिजाबेथ से कहा, आओ तुम भी कमरे में घूमो। एक दशा में बैठे रहनेके अनन्तर घूमनेमें बडा आनन्द आता है। एलिजाबेथ को आश्चर्य हुआ परन्तु वह घूमनेके लिये खडी हो गई। डारसी को भी आश्चर्य हुआ और उसने ऊपर देखकर पुस्तक बन्द करदी। घूमनेके लिये उसको भी निमंत्रण दिया गया, परन्तु उसने अस्वीकार करते हुए कहा 'घूमनेके दो ही कारण हो सकते हैं। और उसके उसमें सम्मिलित होनेसे बाधा पडनेका भय है।'

मिस बिंगलेने एलिजबेथसे कहा कि डारसीका क्या प्रयोजन है मैं नहीं समझी, तुम कुछ समझीं ?

एलिजबेथ-'नहीं। परन्तु यह विश्वास रखो कि वह हमपर कुछ आक्षेप करना चाहता है। उसको निराश करनेका सबसे अच्छा ढंग यही है कि अब उससे इस विषयमें कुछ न पूछा जाये।

मिस बिंगले उसको निराश करनेमें असमर्थ थी। इसलिये उसने पूछा कि तुम्हारा इस बातसे क्या प्रयोजन है।

डारसी–'मुझको अपना प्रयोजन समझानेमें कोई आपत्ति नहीं है। इस प्रकारसे संध्या व्यतीत करनेसे यही प्रगट होता है कि यातो आप एक दूसरेके

रहस्योंसे परिचित हैं या आप यह समझती हैं कि इस तरह चलनेसे आप सुन्दर प्रतीत होती हैं। यदि पहली बात है तो मेरा सम्मिलित होना बाधक होगा और यदि दूसरी बात है तो मैं यहां बैठे २ आपकी सुन्दरताका आनन्द अधिक उठा सकता हूँ।

मिस बिंगले—'अनुचित निन्दित बात। किस प्रकारसे हम इनको दण्ड दें'।

एलिजबेथ–'कुछ कठिन नहीं है यदि आपकी इच्छा हो। हम लोग एक दूसरेको दण्ड दे सकते हैं। इनको छाडो, इनपर हँसो। आपकी तो इन से पर्याप्त घनिष्ठता है, आप जानती होंगी कि किस प्रकारसे इनको दण्ड दिया जाय।'

मिस बिंगले- 'सच कहती हूँ मुझे दण्ड देनेका ढंग नहीं मालूम। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मेरी घनिष्टताने मुझे अभी यह नहीं सिखाया। शांति और धीरजवाले आदमीको कौन चिढा सकती है। वह हमको ही उल्लू बना देगा और उसपर बिना किसी विषयके हँसना हमारी मूर्खता प्रगट करेगा। मिस्टर डारसी ही हम लोगोंपर हँस २ के लौट जायगा।'

एलिजबेथ–'मिस्टर डारसीपर कोई हंस नहीं सकता यह कैसी असाधारण बात है। मैं तो समझती हूँ कि ऐसे मनुष्योंसे परिचित होना बडी हानि है। क्योंकि मैं दूसरेपर हसे बिना नहीं रह सकती।'

डारसी-'मिस बिंगलेने मेरे विषयमें ऐसी बात कही कि जो सर्वथा निर्मूल है। सबसे बुद्धिमान और सबसे भले आदमीकी बुद्धि और अच्छे कामकी भी वह हंसी उडा सकता है, जिसके जीवनका पहला उद्देश्य दूसरोंकी हंसी उडाना ही है।'

एलिजबेथ–'निस्संदेह, परन्तु मैं उन मनुष्योंमेंसे नहीं हूँ जो बुद्धि और अच्छी बातोंकी हसी उडायें। मूर्खता, झखसे तो अवश्य मुझको हंसी आती है, परन्तु मैं समझती हूँ कि आप इन बातोंसे रहित हैं।'

डारसी—'इन बातोंसे बिलकुल रहित होना तो असम्भव है। परन्तु यह मेरे जीवनका उद्देश्य रहा है, कि मुझमें कोई ऐसी निर्बलता उत्पन्न न हो कि दूसरेको उसपर हंसनेका अवसर मिले।'

एलिज.-'अहंकार और मान ही से तो आपका प्रयोजन है ?'

डारसी-'घमंड तो एक निर्बलता अवश्य है परन्तु मान यदि मनुष्य वास्तव में दूसरोंसे बढा-चढा है तो कोई बुरी बात नहीं।'

एलिजबेथने हंसी छिपानेके लिये दूसरी ओर मुख कर लिया।

मिस बिंगले- 'आप डारसीकी परीक्षा कर चुकीं। अब बताइये किस निर्णयपर पहुँचीं।'

एलिज,—'मिस्टर डारसीमें कोई दोष नहीं। वह स्वयं ही इस बातको मानते हैं।'

डारसी-नहीं मैं यह तो नहीं कहता। मुझमें बहुतसे दोष हैं। परन्तु वे बुद्धिसे सम्बन्ध नहीं रखते। मैं अपने मिजाजके विषयमें नहीं कह सकता। मैं अपने हठपर स्थिर रहता हूँ। दूसरोंके सुखकी चिन्ता नहीं करता। दूसरोंकी मूर्खता और दोषोंको नहीं भूलता। मेरे भावमें दूसरोंकी चाटुकारीसे कोई परिवर्तन नहीं होता। मेरा स्वभाव चिडाचिडा है। एकबार यदि मैं किसीके विषयमें बुरी सम्मति स्थिर करलूं तो फिर वह मेरी दृष्टिमें अच्छा नहीं हो सकता।'

एलिज.-यह दोष अवश्य है। परन्तु मैं इनपर हंस नहीं सकती। आप मेरी हंसीसे रक्षित हैं।'

डारसी-'प्रत्येक मनुष्यके स्वभावमें कोई न कोई स्वाभाविक दोष होता है, और वह पढने लिखनेसे भी नहीं जाता।'

एलिज—'और प्रत्येक दोष दूसरोंसे घृणा करता है।'

डारसीने हंस कर कहा—'और आपका दोष दूसरोंकी बातोंके अशुद्ध अर्थ निकालना है।'

मिस बिंगले इस वार्तालापसे जिसमें उसका कुछ भाग न था क्षुब्ध होकर बोली, कुछ गाना होना चाहिये। लूईजा! यदि मिस्टर हर्स्ट जग जायें, तो तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है?'

उसकी बहनने कुछ आपत्ति न की। पियानो खुल गया। थोडी देरके बाद डारसी यह सोचकर प्रसन्न हुआ कि मैं एलिजबेथके आकर्षणसे इस समय तो बच गया।

बारहवां परिच्छेद

एलिजबेथने दूसरे दिन प्रातःकाल मां को लिखा कि हम लोगोंके लिए आज गाडी भेज दो। परन्तु मिसिज बेनटका बिचार यह था कि जेन कमसे कम एक सप्ताहतक वहां रहे। इसलिये उसको जेनकी बात अच्छी न लगी। उसने उत्तर दिया कि मंगलसे पहले गाडी नहीं मिल सकती, और यदि मि· बिंगले और उसकी बहन तुमको रोकना चाहें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। एलिजबेथ अब ठहरनेके विरूद्ध थी। इसलिये उसने जेनसे कहा कि बिंगलेकी गाडी मांगकर चलो। और अन्तमें यह निश्चय हुआ कि आज जानेकी इच्छा प्रगट की जाय।

गाडीके लिये प्रार्थना की गई। फिर उनके ठहरनेके लिए उधरसे कहा गया। और दूसरे दिनतकका जाना स्थगित होगया। मिस बिंगलेको अब इस बातका शोक था कि क्यों मैंने इन्हें ठहरनेको कहा। क्योंकि एलिजबेथसे उसको जेनके प्रेमकी अपेक्षा अधिक ईर्ष्या थी। बिंगलेको उनके जानेका सुन कर बहुत शोक हुआ और उन्होंने जेनसे ठहरनेके लिए बहुत कुछ कहा। परन्तु वह स्थिर रही।

डारसीको वह सूचना अच्छी लगी। क्योंकि एलिजबेथ उसकी इच्छाके विरुद्ध उसको आकर्षण कर रही थी, और मिस बिंगले भी उसको इस विषय में बहुत छेडती थी। उसने अब यह निर्णय किया कि अब मेरी ओरसे कोई बात ऐसी न हो कि जिसमें कोई यह समझे कि मैं एलिजबेथको प्रशंसा की दृष्टिसे देखता हूँ। यह वह समझता था कि अब कोई बात मेरे मुंहसे निकली तो उसको इस प्रकारका विचार अवश्य होगा। सनीचरको कठिनतासे उसने एलिजबेथसे दस शब्द कहे यद्यपि आध घण्टेतक वह दोनों बिलकुल अकेले रहे। डारसीने उसकी ओर आंखे फेरकर भी न देखा। रविवारको प्रातःकाल

के बाद जानेका समय हुआ। मिस बिंगलेने एलिजबेथको भलमंसीसे बिदा किया और जेनमें बहुत प्रेम प्रगट करते हुए कहा कि आपसे मिलकर मुझे वडा हर्ष होता है। जेनसे हाथ मिलाकर एलिजबेथ तकसे भी हाथ मिलाया। एलिजबेथ बडी खुशीसे बिदा हुई।

घरमें पहुंचनेपर उनकी मां ने खेद प्रगट किया और कहा कि तुमने क्यों दूसरोंकी गाडी मांगी। यदि जेनको सरदी लग जाती तो क्या होता। परन्तु पिताको उनके आनेका बहुत हर्ष हुआ, क्योंकि उनके बिना घर सूना लगता था और जेन और एलिजबेथके न होनेसे घरमें बातोंका आनन्द ही न था।

मेरी सदाकी तरह पढनेमें लगी हुई थी। और उसको बहुतसी बातें कहनी थी। कैथरिन और लीडियाको और ही बात करनी थी। बुधवारसे आज तक फौजमें बहुत कुछ नई बातें हो गई थी। बहुतसे अफसर उनके मौसाके यहां खाने आये थे। एक सिपाहीके बेंत पडे थे, और यह समाचार फैल चला था कि कर्नल वार्स्टर विवाह करनेवाले हैं।

— —

तेरहवां परिच्छेद

मि० बेनटने दूसरे दिन प्रातराश करतेहुए अपनी स्त्रीसे कहा-मुझको आशाहै कि आज तुम अच्छा खाना बनवाओगी। क्योंकि हमारे कुटुम्बमें आज एक आदमी आयेगा।'

मिसेज बेनट-'कौन मेरे प्यारे! मुझे तो नहीं मालूम। क्या शार्लोट आयेगी। उसके खानेके लिए कोई बिशेष प्रबन्ध नहीं करना है। उसके यहाँ से तो हमारे यहाँ खाना अच्छा बनता है।'

मिस्टर बेनट-'जिसके आनेको मैं कहरहा हूँ वह एक पुरुष है और अपरिचित है।'

मिसेज बेनट-'अवश्य ही बिंगले होगा। जेन! तूने मुझे अभीतक बताया क्यों नहीं ? मैं मिस्टर बिंगले से मिलकर बहुत प्रसन्न हूँगी। कैसे दुर्भाग्यकी बात है कि घरमें मछलीका एक टुकडाभी नहीं है। लीडिया, घंटी बजाओ। अभी हिलसे कुछ कहना है।

मिस्टर बेनट-मिस्टर बिंगले नहीं है परन्तु वह एक ऐसा मनुष्य है जिसको मैंने आजतक नहीं देखा।

सब उत्सुक होगए और पाँचों कन्याओं और स्त्रीने एक दम उससे प्रश्न किया कि 'यह कौन है।'

कुछ देर उनकी उत्सुकता बढाकर बेनट बोला-एकमास हुआ जब मुझको यह पत्र मिलाथा। पन्द्रह दिनहुए मैंने इसका उत्तर दिया। यह मेरे चचेरे भाई कालेसकी चिट्ठी है जो मेरे मरनेके बाद तुम्हें इस घरसे जब चाहे निकाल दें।'

उसकी स्त्रीने कहा-उस दुष्टका नाम मेरे सामने न लो। कैसे दुखकी बात है कि तुम्हारे बच्चोंको कुछ न मिले और वह सब लेजाय। यदि मैं तुम्हारे स्थानमें होती तो इसका कुछ प्रबन्ध करती।

जेन और एलिजाबिथने उसको कानून समझाना चाहा। परन्तु मिसेज बेनेट कुछ न समझी और यही कहती रही कि कैसी निर्दयता है कि पाँच लड-कियों वाले कुटुम्बको छोडकर एक अपारिचित मनुष्यको सब सम्पत्ति सौंप दी जाय।

मिस्टर बेनट-'है तो ऐसाही, और मिस्टर कालेसके पापका प्रायाश्चित्त नहीं हो सकता। परन्तु तुम यदि उसका पत्र सुनो तो उसके लिखनेके ढंगसे तुमको उसपर कुछ दया आयेगी।

मिसेज बेनेट-'कदापि नहीं। मैं ऐसे झूठे पाखंडियोंको अच्छा नहीं समझती। अपने पिताके समान तुमसे सदा झगडा क्यों नहीं करता रहता।

मिस्टर बेनेट-'ऐसा ही उसने लिखा है, पत्र सुनो।'

पत्र

हंसफोर्ड
१५ अक्तूबर

मान्यवर महोदय !

जो विवाद मेरे पूज्य पिताजी और आपके बीच में था उससे मैं बहुत क्षुब्ध रहता था। जबसे मेरे दुर्भाग्यसे मेरे पिता इस संसारसे चल बसे, मैं सदा यही सोचता था कि किस प्रकारसे इस खाईको भरा जाय। पहले मुझको भय था कि कहीं मेरे पूज्य पिताकी स्मृतिमें अपमान न हो कि जिस मनुष्यसे उसका बैर रहा, उससे मैं मित्रता करूं। पर अब मैं इस विषयमें निश्चिन्त होगया हूँ। क्योंकि ईस्टर में मैं पादरी होगया हूं और सौभाग्यसे सर लूई डी बौरोकी विधवा माननीया लेडी कैथरीन डी बौरीने कृपा करके मेरा संरक्षक होकर, अपने यहाँके गिरजेका पादरी मुझको नियत किया है। वहाँ मेरा हार्दिक प्रयत्न यह रहेगा कि मैं उस देवीका अनुगृहीत रहकर इंग्लैंडके गिरजेके नियमोंके अनुसार धर्मसम्बन्धी सब संस्कार किया करूं। पादरी होकर मैं अपना यह धर्म समझता हूँ कि जितने कुटुम्बियोंपर मेरा प्रभाव हो सकता है वहां शान्तिका राज्य स्थापित करूं। इन्हीं कारणोंसे मैं आज अपने को सराहता हूँ कि आपसे मित्रभाव प्रगट करनेमें मेरी कितनी बडाई है। कृपया इस बात पर ध्यान न दीजिये कि आपके बाद लौंगबोर्नका मैं मालिक हूँगा और इस लिये मेरे शान्तिके सन्देशको ठोकर न मारियेगा। मुझको शोक है कि आपकी प्रशंसित कन्याओंको हानि पहुँचानेका कारण हूँ और इस लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उसका प्रतिकार करनेको उद्यत हूँ—खैर इसकी बात फिर होगी। यदि आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं सोमवार १८ नवम्बर शामको चार बजे आपके यहां आऊंगा। और शनीचर तक रहूंगा। देवी कैथरीनने इस बातकी आज्ञा मुझे देदी है। आपकी माननीया पत्नी और कन्याओंकी सेवामें सादर नमस्ते।

आपका
शुभचिन्तक और मित्र
'विलियम कालंस'

मिस्टर बेनट ने कहा— 'तो चार बजे यह सन्धि करनेवाला सज्जन आवेगा। पत्रसे तो वह बहुत ही कृपालु युवक प्रतीत होता है, और सम्भवतः हमारा बहुमूल्य परिचित प्रमाणित होगा, यदि लेडी कैथरीनने यहां उसको फिर आनेकी आज्ञा दी।'

मिसेज बेनट- 'लडकियोंके साथ प्रतिकार करनेके विषयमें जो उसने लिखा है वह बहुत ही समझकी बात है। मैं उसको इस काममें निरुत्साहित न करूंगी।'

जेन-'यह समझना कठिन है कि वह हमारा प्रतिकार करेगा। परन्तु ऐसी इच्छा ही उसका हृदय अच्छा होना प्रगट करती है।'

एलिजबेथका ध्यान लेडी कैथरीनके लिये उसका असाधारण सम्मान होनेकी ओर गया। उसने कहा,-'यह तो कोई विचित्र मनुष्य मालूम होता है। मेरी समझमें नहीं आता कि कैसा मनुष्य है। लिखनेके ढंगसे दिखावा टपकता है। क्यों पिताजी, ऐसा आदमी क्या समझदार हो सकता है ?'

मि. बेनट-'नहीं, मेरे समझमें तो इसके विरुद्ध ही होगा। उसके पत्रमें स्वाभिमान और दासताके भावोंका मिश्रण है। मैं उससे मिलनेके लिये अधीर हो रहा हूं।'

मेरी—'उसके लिखनेका ढंग तो बुरा नहीं है। बहुतसी बातें नई नहीं हैं, परन्तु अच्छे प्रकारसे लिखी गई हैं।'

कैथरीन और लीडियाको पत्र सुनकर या आगंतुकका आना सुनकर कोई प्रसन्नता न हुई। यह तो असम्भव था कि उनका चचेरा भाई फौजी कोट पहनकर आवे। और अब उनको फौजी कोट पहननेवालेके अतिरिक्त किसी के संग आनन्द न आता था। मिसेज बेनट पत्र सुनकर खुश थीं और अतिथि का स्वागत करनेके लिये तत्पर थीं। पतिको और कन्याओंको इस बातसे बडा आश्चर्य हुआ।

मिस्टर कालंस ठीक समयपर पधारे। सारे कुटुंबने उसका स्वागत किया। मिस्टर बेनट तो कम बोले परन्तु स्त्रियोंने खूब बातें की। मिस्टर

कालंस तो चुप होना जानता ही न था। वह एक लंबा भारी भरकम आदमी था। अवस्था २५ वर्षकी होगी। गंभीरता और शानमें डूबा हुआ था, उसकी चाल और ढंग नियमित थे। थोडी ही देर बैठा होगा कि उसने मिसेज बेनटको इतनी अच्छी लडकियोंकी माता होनेकी बधाई दी। मैंने इनकी सुन्दरताके विषयमें बहुत कुछ सुना था। परन्तु देखकर प्रसिद्धिसे कहीं अधिक पाया। निस्संदेह इनके विवाह अच्छे घरोंमें होंगे। यह ढंग कन्याओंको अच्छा न लगा परन्तु मिसेज बेनट बोली, महाशय, आप बहुत दयालु हैं। आपके मुंहमें घी शक्कर। यह तो बहुत ही दरिद्रतामें जीवन काटेंगी।

कालंस-'आपका प्रयोजन क्या इससे यह है कि सब सम्पत्तिका उत्तराधिकारी मैं हूंगा।'

मिसेज बेन्ट—"हाँ, आप को स्वीकार करना पडेगा कि लडकियों के लिये यह कैसे दुख की बात है। इसमें आपका कोई अपराध नहीं, संसार में ऐसा होता ही रहता है।"

कालंस"-मैं समझता हूं कि मेरी चचेरी बहनोंके लिये यह अन्याय है। और मैं कुछ और भी कहना चाहता था, परन्तु अभी कहनेसे मुझको आप जल्दबाज समझेंगे। मैं युवतियोंको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उनकी प्रशंसा करनेको तत्पर होकर आया हूँ। इस समय मैं और कुछ न कहूंगा। जब अधिक परिचय हो जायगा।'

इतनेमें खानेका बुलावा हुआ। लडकियां एक दूसरेको देखकर हंसने लगीं। मिस्टर कालंसकी प्रशंसा लडकियों ही तक परिमित न रही। हालके फरनीचरकी परीक्षा होकर प्रशंसा हुई। इसकी इस प्रशंसासे मिसेज बेनट प्रसन्न होती, परन्तु दिलको दुखानेवाली बात यह थी कि मिस्टर बेनटके बाद यह सब माल उसीका होगा। खानेकी भी प्रशंसा हुई और उसने पूछा कि मेरी किस सुन्दर चचेरी बहनने खाना बनाया है। परन्तु मिसेज बेनटने शान से उसको टोककर कहा कि हम रसोईया रख सकते हैं, और लडकियोंको

रसोईखानेमें कोई काम नहीं करना पडता। कालंसने मिसेज बेनटसे क्षमा प्रार्थना की। नम्रतासे मिसेज बेनटने कहा कि मैंने तुम्हारी बातका बुरा नहीं माना, परन्तु वह पंद्रह मिनटतक क्षमा मांगता ही रहा।

——

चौदहवां परिच्छेद

खानेके समय मिस्टर बेनट कुछ न बोले। परन्तु जब नौकर चले गए, उन्होंने प्रतिनिधिसे बात करना उचित समझकर लेडी कैथरीनके विषयमें आरंभ किया। मिस्टर कालंस उस देवीकी प्रशंसामें बहुत कुछ बोले। उन्होंने कहा— 'अपने सारे जीवनमें मुझको ऐसी स्त्री कोई नहीं मिली, जो इतनी कुलीन होकर इतनी दयालु हो। कृपा करके उसने मेरे दोनों उपदेशोंको पसंद किया। दो बार मुझको रोजिन्समें खाना खानेको बुलाया। बहुतसे लोग लेडी कैथरीनको अहंकारी कहते हैं, परन्तु मैंने कभी ऐसी बात उसमें नहीं पाई। मुझसे वह बडे भले प्रकार बोलती है। लोगोंसे मैं मिलूं इसमें कोई आपत्ति नहीं करती। और अन्य सम्बन्धियोंके पास जानेकी छुट्टी दे देती है। उसने मुझको सम्मति दी है कि मैं विवाह कर लूं। एक बार वह मेरे यहां आई भी, और मुझको सम्मति दे गई कि ऊपरके कमरेमें अलमारियां लगालूं।'

मिसेज बेनट–'ये बहुत ही उचित बातें थीं, अवश्यही वह अच्छी स्त्री होंगी शोक है कि हमारी धनिक स्त्रियां इस प्रकारकी नहीं होतीं। क्यों महाशयजी, ये आपके समीप ही रहती हैं ?

कालंस–'जिस बागमें मेरी कुटिया है उसके साथकी गली छोडकर रोजिन्स पार्क है, जिसमें देवीजी रहती हैं।

मिस बेनट–'आपने कदाचित् कहा था कि वे विधवा हैं, उसके कुटुम्बियोंमें कोई और है ?'

कालंस- 'केयल एक लडकी है जो इस सब सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणी होगी।'

मिसेज बेनट— 'तो वह बहुत भाग्यशाली कन्या है। क्या वह सुन्दर है ?'

कालंस-'अत्यन्त सुन्दर है। लेडी कैथरीन स्वयं कहतीं हैं कि सुन्दरता में उनकी कन्याके बराबर नारी जातिमें कोई नहीं। उसकी आकृतिसे सज्जनता टपकती है। दुर्भाग्यसे कुछ बीमारसी रहती है, जिसके कारण वह बहुत सी बातें नहीं सीख सकी। यह मुझसे उसकी शिक्षानिरीक्षकाने कहा था, जो उसके संग रहती है। कन्या बहुत ही अच्छे स्वभाव की है और कभी-कभी कुटिया के सामने से अपनी फिटन में निकलती है।"

मिसेज बेनट—"क्या वह सम्राट् से मिलाई जा चुकी है। मैंने उसका नाम साम्रट्से मिलनेवाली युवतियोंमें नहीं देखा।"

कालसं-"उसका स्वास्थ्य ऐसा है कि लंडनमें रहना अनुकूल न होगा इसी कारण वह सम्राट्से मिलाई न जासकी। मैंने लेडी कैथरीनसे कई बार कहा है कि उसकी सुन्दर पुत्री डचैज होनेके योग्य है। मैं बहुधा ऐसी ऐसी चाटुकारीकी बातें कह देता हूँ, जिनसे स्त्रियाँ प्रसन्न हो जाती हैं। ऐसी बातें कहना मेरा धर्म है।

मिस्टर बेनट- 'आपका विचार उचित है। सौभाग्यकी बात है कि आपको खुशामद करना आता है। क्या मैं पूछ सकता हूं कि ये बातें आपको तुरन्त ही सूझती हैं या आप पहलेसे सोच रखते हैं।'

कालंस-'कुछ तो सोच रखता हूं, और कुछ अवसरपर भी सूझ जाती हैं। परन्तु मैं कहता इस प्रकारसे हूं कि मालूम हो कि अवसरपर ही सूझी हैं।'

मिस्टर बेनटने समझ लिया कि उनका अतिथि बिलकुल मूर्ख है। सूरत गम्भीर बनाकर वह इसकी बातें सुनता था और कभी-कभी एलिजबेथकी ओर देखकर मुस्कराता था।

चायके समयतक उसकी मूर्खता खूब प्रकट होने लगी। मि० बेनटने अपने अतिथिको ड्राइंगरुममें बुलाया, और पुस्तक पढनेको कहा। मिस्टर कालिन्सने पढना स्वीकार किया और एक पुस्तक उसको दी गई। उसने पुस्तक देखकर अलग रखदी और कहा मैं उपन्यास नहीं पढता। किसीने उसको घूरा। और लीडिया अचम्भेमें आगई। पुस्तकें दीगईं और उसने फौर्डीसके उपदेश नामकी पुस्तक को पढना शुरु किया। तीनही पृष्ठ पढे होंगे कि लीडियाने माँसे कहा, मां, फिलिप्स मौसा रिचर्डको निकाल देंगे और कर्नल फार्स्ट उसे नौकर रखलेंगे। मैं कल मेरीटन जाकर इसके विषयमें पूछूंगी और यहभी पूछूंगी कि डेनी कब आयेंगे।

लीडियाको बडी बहनोंने चुप रहनेको कहा, परन्तु कालंसने क्रुद्ध होकर पुस्तक रखदी और कहा-मैंने कईबार देखाहै, कि युवतियोंको गम्भीर पुस्तकें अच्छी नहीं लगतीं। यद्यपि वे उन्हीं के लाभके लिये लिखी जाती हैं। मुझको बडा आश्चर्य है कि अपनेही लाभकी वे नहीं सुनतीं। परन्तु अब मैं अपनी छोटी चचेरी बहिनको तंग न करुंगा।'

यह कहकर उसने मि० बेनटसे बेगमैन खेलनेको कहा। मि० बेनटने स्वीकार करतेहुए कहा कि युवतियोंको हँसी की बातें करने दीजिए। मिसेज बेनट और लडकियोंने लीडियाकी असभ्यताके लिए क्षमा माँगी। और बचन दिया यादि आप फिर पुस्तक पढें तो कोई आपात्ति न होगी। परन्तु मि० कालंसने उनको विश्वास दिलाया कि मुझे अपनी छोटी चचेरीबहनसे कोई बैर नहीं है और मैंने उसका बुरा नहीं माना है। यह कहकर वह मि० बेनट से बेगमैन खेलने लगा।

——

पन्द्रहवां परिच्छेद

मि॰ कालंस समझदार मनुष्य न था। शिक्षा संगति भी अच्छी न थी। उसके जीवनका अधिकांश समय अपढ और कंजूस पिताके संग व्यतीत हुआ था। कुछदिन यूनिवर्सिटीमें रहा था, परन्तु वहांभी कुछ प्राप्त न किया। सर्वदा पिताके दबावमें रहनेके कारण उसमें दीनता आगई थी। परन्तु अब अकेलेमें रहनेके कारण और कुछ रुपया मिलनेके कारण उसे घमंड भी हो गया था। सौभाग्यसे हंसफोर्डके पादरीका स्थान खाली हुआ, और वह वहां नियत हो गया। वह अपनी संरक्षिका का अत्यन्त आदर करता था, और अपने विषयमें भी उसकी सम्मति अच्छी थी। अपनेको बहुत कुछ समझता था। इन कारणोंसे उसका चरित्र घमंड और चाटुकारिता, स्वाभिमान और दीनताका विचित्र मिश्रण था। उसको अब ब्याह करनेकी इच्छा थी, और लँगबोर्नके कुटुम्ब से संधि करनेमें उसका गुप्त प्रयोजन यही था कि यदि उन कन्याओंमेंसे कोई ऐसी सुन्दर हो जैसी उनकी प्रसिद्धि थी, तो वह एकसे विवाह कर लेगा। उन कन्याओंको उनके पिताकी सम्पत्तिसे वंचित रखनेका यही प्रतिकार उसने सोचा था। वह समझता था कि ऐसे विचारसे मेरा परमार्थ और दयालुपन टपकता है।

लडकियोंको देखकर उसके विचारमें परिवर्तन न हुआ। जेनका प्यारा मुख देखकर उसने उससे विवाह करनेका मन ही मन विचार कर लिया। दूसरे दिन मिसेज बेनटसे बातचीत करते हुए उसको यह मालूम हुआ कि जेनकी कहीं और बातचींत है। परन्तु और कन्याओंके विषयमें वह कुछ नहीं कह सकती थी, कि वह किसीसे प्रेम करती हैं या नहीं।

मिस्टर कालंस जेनसे एलिजबेथपर आ रहे। औंर मां से अपना विचार प्रगट कर दिया।

मिसेज बेनट बहुत खुश हुई। और उसे विश्वास हुआ कि शघ्रिही मेरी सब कन्यायें विवाहित हो जाएंगी। कल ही मिसेज बेनट जिसे घृणाकी दृष्टिसे देखती थीं उसे आज उसने आदरका पात्र समझा। मेरीके अतिरिक्त सब बहनें मेरिटनकी ओर जाने लगीं। और मि· बेनटकी प्रार्थनापर मि. कालंस उनके संग चलनेको तत्पर हुए। मि. बेनट मि· कालंससे पीछा छुडाना चाहते थे, और अपने पुस्तकालयमें अकेला बैठना चाहते थे। क्योंकि मि. कालंस खानेके अनंतर वहीं आकर बैठ गये थे। और यों तो पढनेको एक बडी पुस्तक खोल ली थी। परन्तु असल प्रयोजन उनका यह था कि अपने घर और बाग की प्रशंसा करें। मिस्टर बेनट मकानके दूसरे कमरेमें तो मूर्खता और अभिमान सहन कर तकते थे, परंतु पुस्तकालयमें वे स्वतंत्र रहकर शांति चाहते थे। कालंसने अपनी बडी किताब बंद कर दी, और चल दिए। रास्ते भर वह तो बिना प्रयोजन बडी २ बातें करता रहा, और युवातियां सभ्य उत्तर देती रहीं। छोटी कन्याओंका चित्त तो वह अपनी ओर आकर्षित करना नहीं चाहता था। और छोटी कन्याओंकी दृष्टि भी अफसरोंको ढूंढ रही थीं।

शीघ्र ही प्रत्येक युवतीका ध्यान एक नवीन युवककी ओर गया जो एक अफसरके संग टहल रहा था। अफसरका नाम मि· डेनी था। जिसके लंडनसे लौटनेकी प्रतीक्षा लीडिया कर रही थी। इस नवीन आगंतुक की सजधज ऐसी थी कि किटी और लीडियाने उनका नाम जाननेके लिए यह छल किया कि दुकानमें कोई वस्तु मोल लेनेके बहाने उनके पास पहुंच गईं। मि. डेनीने अपने मित्रका परिचय उनसे कराया। वह मिस्टर विकम हैं जिन्होंने हमारी फौज में लैफ्टीनेण्ट होना स्वीकार किया है। उस युवकको आदर्श बनाने के लिए यही एक फौजी कपडोंकी कमी थी। वह बहुत ही सुन्दर, गठीला, प्रसन्नमुख युवा था। परिचयके बादही बातचीत शुरू हो गई। बातचीत हो रही थी कि घोडोंकी टाप सुनकर सब लोगोंने मुडकर देखा, और बिंगले और डारसी गाडीसे उतरे। बिंगले और जेनकी बातें होने लगीं। मि· डारसी प्रयत्न कर रहा था कि वह एलिजबेथकी ओर न देखे कि उसकी आंखें विकमसे चार हुई। एलिजबेथने उन आंखोंके चार होते ही उन दोनोंके मुखपर विचित्र परिवर्तन

देखा। एकका मुख सफेद पड़ गया, दूसरा लाल हो गया। मि. बिकमने हैट उठाकर प्रणाम किया। मि. डारसीने उसका उत्तर दिया। एलिजबेथ मनमें सोचने लगी कि क्या बात है ?

मि. बिंगले विदा होकर डारसीके संग गाडीमें चले गए। मि· डेनी और मि· विकम मि· फिलिप्सके मकानतक युवतियोंको पहुंचाने आए। लीडियाकी प्रार्थना और मि.फिलिप्सके निमंत्रणपर भी वे अंदर न घुसे। मिसेज फिलिप्स अपनी भानजियोंके आनेसे बहुत प्रसन्न हुई। जेनने मि· कालंसका उससे परिचय कराया। मिसेज फिलिप्स बहुत ही नम्रतासे उससे मिली और उसने भी नम्रतासे उत्तर दिया। मिसेज फिलिप्सने फिर पूछा कि दूसरा नया मनुष्य कौन था, जिसके विषयमें केवल यही उत्तर मिला कि वह फौजमें लेफ्टीनेण्ट होनेवाला है। विकम उसका नाम है। विकमके सामने फौजके और अफसर घृणित और मूर्ख प्रतीत होने लगे। कुछ अफसरोंका दूसरे दिन फिलिप्सके यहां भोज था। उसने कहा,- 'मैं अपने पतिको विकमके पास भी निमंत्रण लेकर भेजूंगी।' दूसरे दिनके विचार से सब लोग प्रसन्न हो उठे और फिर सब लोग चले। मि. कालंसने बहुत नम्रतासे प्रणाम किया। घर आते हुए एलिजबेथने जेनसे कहा,- मि. डारसी और मि· विकमकी चार आंखें होते ही एक दूसरेका रंग बदल गया।' परन्तु जेन उसका कुछ अर्थ न समझ सकी। घर लौटकर मि. कालंसने मिसेज बेनटसे मिसेज फिलिप्सकी अत्यन्त प्रशंसा की। उसने कहा कि लेडी कैथरीन और उसकी पुत्रीके अतिरिक्त मैंने इतनी सभ्य स्त्री नहीं देखी। केवल वह सभ्यतासे मिली ही नहीं, परन्तु उसने मुझे कल भोजनमें भी बुलाया है,यद्यपि मुझसे उससे कोई जान-पहचान नहीं। कदाचित् ये सब बातें आपसे संबंध होनेके कारण हैं। परन्तु फिर भी इतनी नम्रता, इतनी सभ्यता मैंने पहले नहीं देखी।

——

सोलहवां परिच्छेद

दूसरे दिनके भोजनमें कोई आपत्ति न हुई। सब लोग गाडीमें बैठकर मेरिटन पहुंचे। पहुंचतेही मालूम हुआ कि मि. विकम भी आए हैं। इस समाचारके मिलनेके बाद ही मि. कालंसने कमरे और उसके फरनीचरको देखना आरंभ किया और उस कमरेका मुकाबिला रोजिंसके एक छोटे कमरेसे किया। पहले तो यह सुनकर मि' फिलिफ्स खुश न हुई परन्तु फिर जब उनको मालूम हुआ कि रोजिंस लेडी कैथरीनके रहनेका स्थान है, और लेडी कैथरीन कितनी धनवान है और उसके केवल एक अंगीठी बनानेमें ८०० पौंड व्यय हुए हैं। तब उसने इस मुकाबिलेको अच्छा समझा। लेडी कैथरीनके प्रासादका वर्णन करते हुए कभी वह अपनी कुटियाका भी वर्णन करने लगता था। मिसेज फिलिफ्स उसकी बातें बडे ध्यान से सुनती रही और उसे एक बहुत बडा आदमी समझा। लडकियां बाजेकी धुनमें थीं, और कालंसकी बातें बिलकुल नहीं सुन रही थीं। इतनेमें पुरुष आगये। मि. विकमके घुसनेपर एलिंजबेथने प्रतीत किया कि वह वास्तवमें प्रशंसाके योग्य है। फौजके अफसर सब ही सुन्दर और भलेमानस-से थे। यहांपर इस समय चुने २ अफसर थे। परन्तु मिस्टर विकम उन सबसे इतना अधिक सुन्दर था, जितनाकि वह फिलिफ्स मौसासे सुन्दर था। मि. विकमकी ओर सब स्त्रियोंकी दृष्टि थी और एलिजबेथको सबने सौभाग्यवती समझा, जबकि वह इसके पास आकर बैठ गया। तुरंत ही शिष्टाचारसे वार्तालाप आरंभ किया। यद्यपि विषय बहुत ही भद्दा और अरुचिकर था परन्तु फिरभी बात करनेके ढंगने उसको मनोहर बना दिया था।

मि. विकम और अफसरोंके होते हुए बिचारे मि. कालंसको किसीने न पूछा। युवातियोंके लिए तो वह कुछ भी न था। कभी कभी मिसेज फिलिफ्स

से वार्तालाप कर लेता था। उसकी ही दयासे खानेमें उसे कुछ कमी न रही। अब ताशकी मेज लगी। मि. कालंसने मिसेज फिलिफ्सको अनुगृहीत करनेके लिए ह्विस्ट खेलना आरंभ किया, और कहा मैं इस खेलको बहुत कम जानता हूँ। परन्तु मेरी अवस्थामें मिसेज फिलिफ्स अनुगृहीत हुईं। उसने यह जानने की कि वह किन कारणोंसे खेलने आया है, प्रतीक्षा न की। मि. विकमने ताश नहीं खेले और एलिजबेथ और लीडियाके बीचमें जाकर बैठ गए। पहले तो प्रतीत होता था कि लीडिया ही उससे बातें करती रहेगी, परन्तु थोडी ही देर में लीडिया ताशकी ओर झुक गई, और इधरका कुछ भी ध्यान न रहा। मि. विकमको एलिजबेथसे बातें करनेका अवसर मिला और वह उसकी बातोंको ध्यानसे सुनने लगी। एलिजबेथ डारसी और विकमकी जान-पहचानके इतिहासको जाननेको उत्सुक थी। मि. विकमने स्वयं ही इस विषयपर चर्चा आरम्भ की। उसने पूछा यहांसे नीदरफील्ड कितनी दूर है और इसका उत्तर पानेपर उसने पूछा कि मि· डारसी वहांपर कबसे आए हुए हैं ?

एलिजबेथ–'एक महीना हो गया, सुनती हूं कि डारबिशायरमें मिस्टर डारसीकी बडी जायदाद है।'

विकम–'हां, दस हजार पौंडकी वार्षिक आय है। आपको इसके विषय में समाचार देनेवाला मुझसे अच्छा कोई मनुष्य नहीं मिल सकता। बचपन ही से मेरा इस कुटुम्बसे विशेष सम्बन्ध रहा है।'

एलिजबेथ आश्चर्यमें आगई।

विकम–आश्चर्यकी बात ही है। आपने कल देखा होगा कि कल हम कैसे रूखे भावसे एक दूसरेसे मिले। क्या आप मि. डारसीसे भलीभांति परिचित हैं ? '

एलिज.—'हां, थोडा बहुत जानती हूं। चार दिन उसी घरमें रही हूं। मैं उनको अच्छा नहीं समझती।'

विकम—' मुझको अपनी सम्मति देनेका कोई अधिकार नहीं हैं। मैं उनको बहुत दिनसे जानता हूं, इसलिए निष्पक्ष भावसे मैं उनको नहीं देख

सकता। आपकी सम्मति लोगोंको आश्चर्यमें डाल देगी, और कदाचित् यहांके अतिरिक्त यह सम्मति आप कहीं और प्रगट न करेंगी।'

एलिज.—मैं इस बातको नीदरफील्डके अतिरिक्त प्रत्येक स्थानमें प्रगट करनेको तत्पर हूं, हर्टफोर्ट शायरमें कोईभी उसको अच्छा नहीं कहता। प्रत्येक मनुष्य उससे घृणा करता है, और जो सम्मति मैंने प्रगट की है, यही सब करेंगे।'

विकम-'यह सुनकर मुझको कोई शोक नहीं हुआ। प्रत्येक मनुष्यको उसकी योग्यताके अनुसार ही समझना चाहिये, परन्तु डारसीके सम्बन्धमें मैं इतना कह सकता हूँ कि संसार उसे धन और सम्पत्तिसे अंधा होकर या उसके स्वभावसे डरकर उसको उसी दृष्टिसे देखता है, जिससे वह स्वयं चाहता है कि मनुष्य उसको देखें।"

एलिज.-'थोडी ही जान-पहचानके अनन्तर मैं तो उसको बुरा समझने लगी। विकमने अपना सिर हिलाया और कहा, मालूम नहीं कि वह यहां कब तक ठहरें।'

एलिज.—'मैं नहीं जानती। अभी तक तो मैंने कुछ नहीं सुना। क्या उसके यहां रहनेसे आपके यहां रहनेमें कुछ बाधा पडनेका भय है?'

विकम—'नहीं, मैं मि॰ डारसीसे भागनेवाला नहीं हूं। यदि वह मेरी शकल नहीं देखना चाहता, तो उसीको जाना पडेगा। हम लोगोंमें परस्पर मित्रताके भाव नहीं हैं। मुझको उससे मिलनेमें कष्ट होता है, परन्तु मैं सारे संसारके सामने कह सकता हूं, कि इसने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया। उसका पिता बडा ही सज्जन और मेरा सच्चा मित्र था। मि॰ डारसीको देखकर मेरी जीवात्माको बहुतसी पुरानी बातें याद आकर दुःख होता है। उसने मेरे संग लज्जाजनक व्यवहार किया। मैं उसकी प्रत्येक बातको क्षमा कर सकता हूँ, परन्तु मुझको दुःख होता है, जब मैं देखता हूँ कि उसने अपने पिताकी आशाको अपने पिताकी स्मृतिका अपमान करके धूलमें मिला दिया।

एलिजबेथ औरभी कुछ सुनना चाहती थी, परन्तु विषय ऐसा था कि वह स्वयं कुछ न पूछ सकी। मि. विकम फिर और विषयोंपर बात-चीत करने

लगे। मेरिटनके आस-पास कौन बस्ती है। मिलने-जुलनेके योग्य यहां कौन मनुष्य है। मैं आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ। मैं यहां इसी प्रयोजनसे आया हूँ कि कुल लोग मिले-जुलें। इस फौजके अफसर बहुत अच्छे हैं और मेरे मित्र डेनीने यहांका बहुत अच्छा वर्णन मुझसे किया है। सोसायटी विना मैं जीवित नहीं रह सकता। मेरी आशायें धूलमें मिल चुकी हैं। इसलिये काम और सोसायटी मेरेलिए आवश्यक है। फौजमें आनेका मेरा कभी विचार न था गिरजेकी नौकरीके लिए मैं निश्चय कर चुका था और आज यदि मिस्टर डारसी चाहते तो मैं एक बडे गिरजेका पादरी होता।

एलिज.—'अच्छा?'

विकम—'हां, मि. डारसीके पिताने यह वसीयत की थी कि सबसे अच्छे गिरजेमें जो उनके अधिकारमें हो मुझे पादरी नियत किया जाए। वे मेरे अभिभावक बने थे। और मुझसे बहुत प्रेम करते थे! उन्होंने मेरेलिए यही निर्णय किया था। परन्तु जगह खाली होनेपर वह दूसरेको दे दी गई।'

एलिज.—'हा ईश्वर। यह कैसे हुआ। उनकी वसीयतपर क्यों नहीं ध्यान दिया गया। आपने मुकद्दमा क्यों नहीं चलाया?'

विकम—'कुछ ऐसी कमी वसीयतमें रह गई थी कि मुकद्दमा जीतनेकी कोई आशा न थी। कोई सज्जन तो उस वसीयतके अर्थोंमें गडबड न करता परन्तु मि. डारसीने गडबड करके कहा कि वह केवल एक सिफारिश है, और मैं इस समय तुमको यह जगह नहीं दे सकता, क्योंकि तुम अपनी फिजूलखर्ची और मूर्खतासे इसके अधिकारी न रहे। दो वर्ष हुए जब यह जगह खाली हुई थी, और दूसरेको दे दी गई थी। कोई दोष मुझमें ऐसा न था कि जिससे मैं उसका अधिकारी न रहा हूं। मैं स्पष्टवक्ता हूँ इसलिए स्वतन्त्रतासे मैंने अपने भाव उसपर प्रगट कर दिये। इससे अधिक मेरा कोई अपराध नहीं। हम लोग बहुत ही एक दूसरेसे पृथक् हैं और वह मुझसे घृणा करता है।'

एलिज.—'चाहिए तो यह कि संसारमें ये बातें प्रकाशित करके उसका खूब अपमान किया जाए।'

विकम-"वह अपने किए का फल आप भोगेगा । मैं स्वयं कुछ न करूंगा । जबतक मुझको उसका पिता याद रहेगा, मैं उससे बदला नहीं ले सकता ।'

एलिजाबेथ के हृदयमें यह सुनकर विकमके लिए बडे आदर का स्थान होगया ।

एलिजा—'परन्तु ऐसा दुर्व्यवहार करनेसे उसको क्या लाभ हुआ ?'

विक्रम—"मुझसे वह घृणा करता है । घृणाका कारण ईर्ष्या है । यदि उसके पिता मुझसे इतना अच्छा व्यवहार न करते तो मेरी उसकी अच्छी निभती । परन्तु उसके पिताके असाधारण प्रेमने उसको मुझसे चिढा दिया ।'

एलिजा०-"मैं मि० डारसीको इतना बुरा नहीं समझती थी । मैं यह समझती थी कि वह मनुष्य मात्रहीसे घृणा करताहैं । परन्तु मुझे यह संदेह न था कि वह इतना नीच, इतना अन्यायी और इतना क्रूर है । कुछ देर ठहर कर वह फिर बोली-"मुझको याद पडता है कि एक दिन वह शेखी मार रहा था कि जिससे मैं क्रोधित होजाता हूँ उसको कभी क्षमा नहीं करता । उसका स्वभाव बहुत ही भयंकर होगा ।'

विकम-"मैं इस विषयमें कुछ नहीं कहना चाहता । क्योंकि मैं उसके साथ न्याय नहीं करसकता ।'

एलिजाबेथ कुछ देर सोचकर फिर बोली-'इस प्रकारसे अपने बाल-सखा और अपने पिताके प्यारे के संग दुर्व्यवहार करना कैसा नीच कर्म है ।'

विकम-"हम एकही ग्राम, एकही पार्कमें उत्पन्न हुए, हमारा बचपन एकसाथ कटा । एकही घरमें रहते रहे । एकही खेल खेला, एकही पिताकी संरक्षतामें बडे हुए । मेरे पिताने आपके मौसाहीका पेशा अंगीकार कियाथा । परन्तु मिस्टर डारसीके पिताके लिए उसने सब कुछ छोडदिया । इनके पिता उसको आदरकी दृष्टिसे देखतेथे । कि डारसी स्वयं इस बातको मानते हैं कि वे मेरे पिताके बहुत अनुगृहीत हैं । परन्तु फिर भी मेरे पिताके मरनेके अनंतर अपने पिताकी वसीयत होतेहुए भी उन्होंने मुझे ठुकरादिया ।'

एलिज०-"घृणित,निन्दित कर्म । मुझको आश्चर्य है कि मि. डारसी के अभिमानने उनको न्याय करनेसे क्यों रोका ? यदि और किसी कारण नहीं तो इस अभिमान हीके कारण उनको आपकी सहायता करनी चाहिए थी कि मुझको लोग बेईमान न कहें ।'

विक्रम-"यहबात ठीक है कि वह अभिमानसे भरा हुआ है, और इस अभिमान ही के कारण वह बहुधा अच्छे कर्म करता है । परन्तु मेरे संग व्यवहार करनेमें अभिमान के अतिरिक्त और भावोंने उसको दबालिया ।'

एलिज० —"क्या ऐसा निन्दित अभिमान भी कोई अच्छा काम कर सकता है ?'

विक्रम-"हाँ, अभिमान के कारण वह बहुधा अपना धन-दान करता है अपने यहांके किसानोंकी सहायता करता है, निर्धनोंकी रक्षा करता है । अपने पिताके नामपर भी उसको अभिमान है । किसी कामसे उसके पिता या कुटुम्ब का अपमान न हो या जनतापर उसका प्रभाव कम न हो, इसका वह सदा ध्यान रखता है। वह बहुत ही दयालु और प्रेमी भाइयोंमें से है ।'

एलिज.-'मिस डारसी, किस प्रकारकी कन्या है ?'

विक्रम- 'डारसी कुटुम्बके किसी व्यक्तिकी बुराई करनेमें मुझको कष्ट होता है । वह भी अपने भाईके समान बहुत ही मानिनी है। छुटपनमें बहुत ही स्नेही और हंसमुख थी। मुझको बहुत स्नेह करती थी। मैंने घंटों उसके संग व्यतीत किए हैं। परन्तु अब कुछ नहीं । पंद्रह-सोलह वर्षकी सुंदर कन्या है। और बहुतसे गुणोंसे संपन्न है। पिता की मृत्युके अनंतर वह लंडनमें रहने चली गई, और वहां एक स्त्रीके साथ रहती हैं।'

एलिजबेथ इधर उधरकी बातें करके, फिर उसी विषयपर आगई, और बोली, 'मुझको आश्चर्य होता है कि बिंगलेसे उसकी इतनी मित्रता क्यों है।' मि. बिंगले जो विनयकी मूर्ति है किस प्रकारसे ऐसे मनुष्यसे मित्रता कर सकते हैं। क्या आप मि· बिंगलेको जानते हैं ?'

विक्रम—'बिलकुल नहीं ।'

एलिज.—'वह हंसमुख, सरल हृदयके सज्जन हैं। कदाचित् वह मि.

डारसीको नहीं समझते।'

विक्रम–'संभव है। मि. डारसीमें योग्यताकी कमी नहीं। जहां चाहे मित्रताके भाव भी प्रगट कर सकता है। अपने बराबरवाले धनाढ्योंमें वह एक और ही मनुष्य होता है। निर्धनोंके साथ व्यवहारमें अभिमान उसका साथ नहीं छोडता। परन्तु धनवानोंकी संगतिमें वह दानी, सच्चा, माननीय और हँसमुख हो जाता है।'

ह्विस्ट समाप्त हो गया, और खेलनेवाले दूसरी मेजपर आ गए। मि. कालंस, एलिजबेथ और मिसिज फिलिफ्सके बीचमें आकर बैठ गए। मिसेज फिलिफ्सने पूछा कि कितना जीते। मि. कालंसने उत्तर दिया— 'सब बाजी में हारे परन्तु मैं इन छोटी २ बातोंकी चिंता नहीं करता। रुपया हाथका मैल है। आप चिंता न करें। जब मनुष्य ताश खेलने बैठे तो उसको समझ लेना चाहिए कि उसमें हार जीत होती ही रहती है। पांच शिलिंग मेरेलिए कोई बडी चीज नहीं है। बहुतसे लोगोंके लिए तो पांच शिलिंग बहुत होते हैं, परन्तु लेडी कैथरीनकी कृपासे मैं इन छोटी बातोंपर ध्यान नहीं देता।'

मि. विक्रमका ध्यान कालंसकी ओर गया और उसने धीरेसे एलिजबेथसे पूछा, क्या आपके नातेदार कैथरीनके कुटुम्बसे अच्छी तरह परिचित हैं?'

एलिज.–'लेडी कैथरीनने इन्हें नौकरी दी है। यह मुझे नहीं मालूम कि कबसे ये लेडी कैथरीनको जानते हैं।'

विक्रम–' आपको मालूम होगा कि लेडी कैथरीन और डारसीकी मां परस्पर बहनें थीं। इसलिए लेडी कैथरीन डारसीकी मासी है।'

एलिज,—'नहीं मुझको यह नहीं मालूम था। मैं परसोंसे पहले लेडी कैथरीनको जानती ही न थी।'

विक्रम–'उसकी पुत्री मिस बौरो सारी सम्पत्तिकी उत्तराधिकारिणि होगी और विश्वास किया जाता है कि मिस बौरो और डारसीकी सम्पत्ति एक दूसरें में मिल जायेंगी।'

यह समाचार सुनकर एलिजबेथको हंसी आई, क्योंकि उसको मिस बिंगलेका स्मरण आ गया। उस बेचारीकी सेवा शुश्रूषा व्यर्थ जायेगी।

क्योंकि डारसीका विवाह उससे न हो सकेगा।'

एलिज.—'मि. कालंस मां बेटियोंकी बडी प्रशंसा करते हैं, परन्तु सब वर्णन सुनकर मेरा विचार यह हुआ है कि कृतज्ञताने मि. कालंसको उनके अवगुण देखनेमें असमर्थ बना दिया है। मेरी समझमें तो वह भी एक मानिनी और घमंडी स्त्री है।"

विक्रम- 'मेरी भी यही सम्मति है। मैंने परसोंसे उसको नहीं देखा परन्तु यह मुझको याद पडता है कि मैंने उसको कभी पसन्द नहीं किया। वह बडी ही तेज और घमंडी है। कहा जाता है कि वह बहुत ही समझदार और चतुर है, परन्तु मेरे विचारमें उसकी चतुरता धनके कारण और अपनें भानजे के अभिमानके कारण ही है।'

एलिजबेथने समझा कि विक्रमने बहुत ठीक वर्णन किया है। वे दोनों बडी देरतक बातें करते रहे। फिर ताशके समाप्त होनेपर खाना आया। खानेके शोरगुलमें बातचीत नहीं हो सकती थी। परन्तु फिर भी मि. विक्रमसे प्रत्येक स्त्री बातचीत करना चाहती थी। जो कुछ वह कहता था, खूब कहता था। जो कुछ करता था, खूब करता था। एलिजबेथ उसके अतिरिक्त कुछ विचार ही न कर सकती थी। रास्ते-भर तो वह कुछ न बोल सकी, क्योंकि लीडिया और कालंस तो चुप ही न लगाते थे। लीडिया अपनी हार और जीतका वर्णन करती थी, और मि. कालंस मि. और मिसेज फिलिप्सकी सभ्यताके गुण गाते थे। बार बार कहते थे कि मुझको हारकी कोई चिन्ता नहीं। इतने ही में गाडी लाँगबोर्न पहुँच गई।

सत्रहवां परिच्छेद

एजिजबेथने जेनसे विक्रमकी बातचीत सुनाई। जेन आश्चर्यसे सुनती रही। उसको विश्वास न आता था कि किस प्रकारसे मि. डारसी मि. बिंगले

के स्नेहके योग्य नहीं है। परन्तु वह बिक्रम जैसे सुन्दर युवककी बातपर अविश्वास भी न कर सकती थी। विक्रमने जो इतनी निर्दयताका व्यवहार सहन किया था, उससे जेनके दयाके भाव जागृत हो उठे। वह यह समझने लगी कि किसी भूलसे दोनोंमें मन-मुटाव हो गया होगा।

जेन-'अवश्य ही कोई भूल हो गई है, जिसको हम समझ नहीं सकते। बिना किसीको दोषी ठहराये हुए हम यह कह सकते हैं कि इस मन-मुटावका कारण समझनेकी शक्ति हममें नहीं है।'

एलिज.-'बहुत ठीक। परन्तु यदि तुम डारसीके व्यवहारकी ओर दृष्टि डालोगी, तो अवश्य ही तुम्हें किसीको दोषी ठहराना पडेगा।'

जेन—'जितना चाहो हंसलो परन्तु मैं यह कभी भी नहीं मान सकती कि मि. डारसी इतने नीच हैं कि वे अपने पिताके प्रियके साथ ऐसा दुर्व्यवहार कर सकते हैं, असम्भव है। कोई भी मनुष्य जिसको अपने चरित्रका कुछ भी ख्याल हो ऐसा नहीं कर सकता। क्या उसके परम मित्रोंसे यह बात छिपी रह सकती है ? नहीं कदापि नहीं।'

एलिज.—'मैं यह विश्वास कर सकती हूँ कि मिस्टर बिंगलेको डारसी के चरित्र समझने में धोखा हो गया हो! परन्तु विकम ऐसी झूठी कहानी नहीं गढ सकते और डारसी चाहें तो इसका प्रतिवाद कर सकते हैं। विकमके मुख से सत्यता टपक रही थी।'

जेन-'मेरी समझमें नहीं आता कि कौन बात ठीक है?'

एलिज.-'क्षमा करो। यह तो कोई कठिन बात नहीं है।'

जेनकी समझमें केवल एक बात आती थी कि यदि मि. बिंगले धोखेमें पडे हुए हैं, तो मिस्टर डारसीका सच्चा चरित्र खुलनेपर उनको अत्यन्त कष्ट होगा!'

इतनेमें दोनों युवतियोंकी पुकार हुई, क्योंकि मिस्टर बिंगले और उनकी बहनें नीदरफील्डमें नाचका न्यौता देने आई थीं। मंगलको नाच होगा। दोनों बहनोंने जेनसे मिलकर बहुत हर्ष प्रगट किया, और कहा, 'मिले हुए मुद्दतें हो गईं और इतने दिनतक तुम क्या करती रहीं।' कुटुम्बके और लोगोंकी ओर

उन्होंने बहुत कम ध्यान दिया। वे मिसेज बेनटसे दूर रहीं। एलिजबेथसे बहुत थोडी बातचीत की और किसीसे कुछ न बोली। थोडी देरमें वह जल्दीसे उठ कर चलने को तत्पर हो गई। जिससे मि· बिंगलेको बहुत आश्चर्य हुआ।

नीदरफील्डके नाचसे प्रत्येक स्त्रीको बडी प्रसन्नता हुई। मिसेज बेनट कहती थी कि यह जेन ही के कारण नाच दिया गया है। और इस बातसे वह बहुत प्रसन्न थी कि साधारण कार्ड न भेजकर वह स्वयं निमंत्रण देने आए। जेनको यह प्रसन्नता थी कि बिंगलेसे फिर मिलनेका अवसर मिलेगा। एलि. जबेथ इस ध्यानमें मग्न थी कि मि· विकमके संग नाचूंगी, और मि· डारसी की दृष्टि और व्यवहारसे मि· विकमकी कहानीकी सत्यताका प्रमाण मिलेगा। लीडिया और कैथरीनको किसी विशेष व्यक्तिके साथ मिलनेकी कोई प्रसन्नता न थी। परन्तु उन्होंने भी सोच रखा था कि आधे नाच मि· विकमके साथ नाचेंगे। मेरीको भी नाचमें जानेमें कोई आपत्ति न थी। उसने कहा कि प्रातःकाल तो मैं अपना काम कर लेती हूँ। कभी-कभी शामको समाजमें जानेमें कोई विशेष हानि नहीं। मैं उन लोगों में से हूँ जो यह समझते हैं कि प्रत्येक मनुष्यके लिए कुछ खेल-तमाशा होना आवश्यक है।

एलिजबेथकी प्रसन्नताकी सीमा न थी, और यद्यपि वह मि. कालंससे बिना काम न बोलती थी, फिरभी उसने मिस्टर कालंससे पूछा कि आप मिस्टर बिंगलेका निमंत्रण स्वीकार करेंगे। नाचमें सम्मिलित होनेको कोई बाधा न थी। और लेडी कैथरीनके क्रोधित होनेका भी भय नहीं था।

कालंस-मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी सम्मतिमें इस प्रकारके नाचमें जो एक अच्छे चरित्रका युवक भले आदमियोंको देता है, कोई बुराई नहीं हो सकती। और मैं स्वयं अपनी सब चचेरी बहनोंके संग नाचूंगा। और मिस एलिजबेथ मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि पहले दो नाचोंमें तुम मेरे संग नाचोगी। मुझको आशा है कि जेन इस प्रार्थनाके लिए मुझको क्षमा करेंगी। इसमें उनके अपमानकी कोई बात नहीं है।'

एलिजबेथ घबरा गई क्योंकि पहले वह मि· विकमके संग नाचना चाहती थी। परन्तु अब क्या हो सकता था? खैर, उसके बाद मिस्टर विकम

के संग नाच लूंगी, यह सोचकर उसने मि. कालंसके प्रस्तावको स्वीकार किया। उसको कुछ कुछ विश्वास होने लगा कि सब बहनोंमेंसे मि. कालंसने मुझको ही अपनी स्त्री बनानेके लिए चुना है। इस विश्वासकी पुष्टि कालंसकी अपनी ओर बढती हुई नम्रताने करदी। वह इससे प्रसन्न न होकर आश्चर्यमें आ गई। थोडे ही समयके अनन्तर उसकी मांने यह कहा कि एलिजबेथ और कालंसके विवाहकी संभावनासे मुझे बहुत प्रसन्नता है। एलिजबेथ चुप रही, क्योंकि उत्तर देनेसे झगडा होनेका भय था। संभव है कि मि. कालंस प्रस्ताव न करें और प्रस्ताव करनेतक झगडा करना व्यर्थ है।

यदि नीदरफील्डके नाचके विषयमें वार्त्तालाप करना न होता, तो बेनट कुटुम्बकी युवतियोंके लिए समय बिताना असह्य हो जाता। क्योंकि निमंत्रण के दिनसे नाचके दिन तक बराबर वर्षा होती रही और वह मेरिटन एक बार भी न जा सकीं। न मौसीसे भेंट हुई, न अफसरोंका कोई समाचार मिला। एलिजबेथको भी यह समय बिताना कठिन हो रहा था। क्योंकि वह मिस्टर विकमसे मिलनेको अधीर हो रही थी। मंगलके नाचकी प्रतीक्षाके अतिरिक्त और कोई भी बात, शुक्र, सनीचर, रविवार और सोमवारको सहनीय नहीं बना सकती थी।

अठारहवां परिच्छेद

एलिजबेथ जब नीदरफील्ड पहुँची तो उसने मिस्टर विकमको लाल फौजी कोट वालोंके जमावमें न पाया। उसको यह तनिक भी भय न था कि वह यहां न होगा। वह बहुत बन-ठनकर विकम ही के लिए आई थी। थोडी ही देरमें उसको यह सन्देह हुआ कि मिस्टर डारसीके कारण बिंगलेने

उसको निमंत्रित नहीं किया होगा। यद्यपि यह बात ठीक नहीं थी। उसी समय मि. डेनीने मि· विकमकी अनुपस्थितिका कारण बताया कि वह परसों किसी कामसे शहरको गए हैं और अभीतक नहीं आए। फिर मुस्कराकर कहा, मेरी समझमें कामने तो इतना नहीं रोक रखा है, परन्तु वास्तवमें वह यहांके एक मनुष्यका सामना नहीं करना चाहते। यह बात एलिजबेथने सुनली और उसको डारसीसे बहुत क्रोध हुआ। उसने डारसीके नम्र प्रश्नोंका उत्तर भी ठीक प्रकारसे न दिया। डारसीसे धीरजसे बात करना विकमकी ओर पाप करना है। उसने निर्णय कर लिया कि मैं डारसीसे बिलकुल वार्तालाप न करूंगी और वह इतनी चिढ गई थी कि बिंगलेसे भी उसने ठीक प्रकारसे बातचीत न की।

परन्तु एलिजबेथके स्वभावने उसका चिड-चिडापन बहुत देर तक स्थिर न रखा। शारलोटसे अपने दुःखोंका वर्णन करके वह मि· कालंसके संग नाचनेको तैयार होगई। पहले दोनों नाचोंमें वह बहुत दुःखित रही, क्योंकि मि: कालंस बहुत ही भद्दे थे और नाचमें बहुधा भूल करते थे। इस कारण उसको इन दोनों नाचोंमें बहुत ही लज्जित होना पडा। इन नाचोंसे छूट्टी पाकर उसकी प्रसन्नताकी सीमा न रही। इसके अनन्तर उसने एक फौजी अफसरके संग नाचा और उससे यह जानकर उसको प्रसन्नता हुई कि मि. बिकम सर्वप्रिय हैं। नाचनेके अनन्तर यह शारलोटसे बातें कर रही थी कि मि· डारसीने आकर उसके साथ नाचनेकी प्रार्थना की। बिना सोचे समझे ही उसने प्रार्थना स्वीकार करली। वह तुरत चला गया और एलिजबेथ इस स्वीकृतिपर पछताने लगी। शारलोटने उसको समझाते हुए कहा कि मुझको विश्वास है कि डारसीको भला मनुष्य पाओगी।

एलिज.—'ईश्वर न करे। इससे अधिक दुर्भाग्यकी बात नहीं हो सकती कि जिस मनुष्यको घृणा करनेका मैंने निर्णय कर लिया है, उसीको मैं भला-मानस पाऊं।'

जब नाच फिर प्रारंभ हुआ, डारसीने आकर उसको नाचनेके लिए निमंत्रित किया, तो शारलोटने उसके कानमें कहा, 'देखो मूर्खता न करना।

विक्रमके ध्यानमें मि- डारसीको जो उससे दसगुणा अधिक धनवान है, क्रोधित न कर देना।' एलिजबेथने कुछ उत्तर न दिया और नाचमें सम्मिलित हो गई। उसको स्वयं आश्चर्य हुआ कि वह मि. डारसीके बराबर खडी थी। उनके पास वाले आदमियोंको भी आश्चर्य हुआ। कुछ देरतक बिना बातचीत किए वह नाचते रहे। एलिजबेथने सोचा कि कदाचित् दोनों नाच बिना बातचीत किए ही समाप्त हो जायेंगे। फिर उसने सोचा कि मुझको बोलना चाहिये, नहीं तो डारसीको बडा दुःख होगा। उसने नाचके विषयमें कुछ कटाक्ष किया। डारसी उत्तर देकर चुप हो रहा। उसके अनन्तर एलिजबेथने फिर कहा, अब मि. डारसी आपके बोलनेकी बारी है। मैंने नाचके विषयमें कटाक्ष किया। आप कमरेकी लंबाई और चौडाईके विषयमें कुछ कहिये।

डारसीने हँसकर कहा, 'जो कुछ आप चाहेंगी मैं कहूँगा।'

एलिज –'इस समयके लिये तो यही उत्तर पर्याप्त है। मेरी सम्मतिमें तो प्राइवेट नाच पब्लिक नाचोंसे अच्छे होते हैं। अच्छा अब हमको चुप हो जाना चाहिए।'

डारसी– 'तो क्या नाचते हुए बातचीत करनेमें आप किसी नियमका पालन करती हैं ?'

एलिज.–'कभी २ जितना कम बोलना पडे उतना ही अच्छा। आधे घण्टे तक चुप रहना भी बुरा मालूम होता है। और कुछ आदमियाके संग नाचनेमें बातचीतका ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये कि बिलकुल कम बोलना पडे।'

डारसी–'इस समय क्या आप अपने मनोभावको प्रगट कर रही हैं या आप यह समझती हैं कि यह कहकर आप मुझको प्रसन्न करेंगी ?'

एलिज.—'दोनों बातोंका ध्यान है। हम दोनोंके मनके भाव एक ही से हैं। हम दोनों न मिलनसार हैं न अधिक बोलनेकी इच्छा रखते हैं। उसी समय बोलना चाहते हैं, जब कोई बात ऐसी कहनी हो, जिससे सारे कमरेके मनुष्य अचम्भेमें आजांए और हमारा नाम परम्परा तक उस बातके लिए प्रसिद्ध रहे।'

डारसी–'आपका चरित्र तो ऐसा नहीं है। मैं नहीं कह सकता कि मेरे चरित्रसे यह चित्र मिलता है कि नहीं। निस्संदेह आपका विश्वास तो ऐसा ही है कि मैं बिलकुल मिलनसार नहीं हूँ और न अधिक बातचीत करना चाहता हूँ।'

एलिज.—'मैं अपने कथनपर आप ही विचार नहीं कर सकती।'

डारसी चुप हो रहा। फिर थोडी देरके बाद उसने पूछा कि 'आप और आपकी बहनें क्या मेरिटन बहुधा आया करती हैं?'

एलिजबेथने उत्तर दिया कि 'हां, और जब आप हमको वहां मिले थे, तो हम एक नये मनुष्यसे परिचय कर रही थीं।'

इसका प्रभाव डारसीपर तुरन्त ही पडा। उसके मुखके भाव बदल गए। कुछ देर तक चुप रह कर वह बोला– 'मिस्टर विकमकी चाल-ढाल इतनी अच्छी है कि वह मित्रता शीघ्र ही कर लेता है, परन्तु वह मित्रता अधिक काल तक रहेगी इसमें मुझे संदेह है।

एलिजबेथने जोर देकर कहा–'दुर्भाग्यसे आपकी उससे मित्रता नहीं रही और इससे जीवनपर्यन्त उसको कष्ट उठाना पडेगा।'

डारसीने कुछ उत्तर न दिया और विषयको बदलना चाहा। इसी क्षण सर विलियम ल्यूकस उधरसे गुजरे। डारसीको देखकर विनम्र भावसे उन्होंने सिर झुकाकर कहा, कि– 'मैं आपको इतना अच्छा नाचनेपर और इतनी अच्छी साथिन पानेपर बधाई देता हूँ। मुझको यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप नाचनेवालोंमें प्रथम श्रेणीके हैं। और आपकी सुन्दर साथिन आपके नाचकी सुन्दरतामें बाधा नहीं डालती।'

'ईश्वरने चाहा तो यह नाच बार बार देखनेको मिलेगा। विशेष करके जब (जेन और बिंगलेकी ओर देखकर) एक अच्छा और शुभ कार्य होगा। तब कितनी बधाइयां होंगी। परन्तु मैं आप लोगोंके बीचमें बाधा डाल रहा हूँ। मि डारसी! आप मुझसे क्रोधित होंगे कि इस सुन्दर युवती और आपकी बात-चीतके बीचमें मैं आपडा।'

डारसीने पिछली बात बिलकुल नहीं सुनी, क्योंकि वह सर विलियमकी उसके मित्र और जेनके विषयवाली बातपर ध्यान देने लगा। जेन और बिंगलेको वह देखने लगा। थोडी देरमें उसने एलिजबेथसे कहा–'सर विलियमके आनेसे मैं भूल गया कि हम लोग क्या बात-चीत कर रहे थे।'

एलिजबेथ– 'हम तो कुछ भी नहीं बोल रहे थे। दो तीन विषयोंपर बात छिडी पर सफलता न हुइ अब किस विषयपर बातचीत करें, मेरी समझमें नहीं आता।

डारसीने मुस्कराते हुए कहा– 'पुस्तकोंके विषयमें आपकी क्या सम्मति है ? '

एलिज– 'पुस्तक, हम दोनों कभी एक पुस्तक एक ही भावसे नहीं पढते। '

डारसी–'मुझे शोक है, आप ऐसा समझती हैं। ऐसी दशामें तो विषय की कमी नहीं हो सकती। हम अपनी भिन्न–भिन्न सम्मतिपर वार्त्तालाप कर सकत थे। '

एलिज.—'नाचनेके कमरेमें मैं पुस्तकोंपर बातची। नहीं कर सकती। यहां तो मेरे सिरमें और ही हवा भरी रहती है।'

डारसी—'आप यहांके दृश्योंपर ध्यान देती हैं ?'

एलिज—'हां सर्वदा। थोडी देरके बाद फिर वह बोली, मि. डारसी मुझे याद पडता है कि मैंने आपको एकबार ऐसा कहते हुए सुना था कि यदि आप किसी से क्रोधित हो जायें तो फिर उसे कभी क्षमा नहीं करते। मैं समझती हूँ कि क्रोधित होनेमें भी आप सदा सावधान रहते होगें ? "

डारसी–" निस्सन्देह "।

एलिज–" और अपने को किसीके विरुध्द पक्षपात करनेमें भी आप सदा सावधान रहते होगें "।

डारसी–हां, यत्न तो ऐसाही करता हूँ।

एलिज–विशेष प्रकारके जो लोग अपनी सम्मति कभी बदलते नहीं उन्हें प्रथम वार किसी के विषयमें सम्मति बनाते हुए अच्छी प्रकार न्याय करना चाहिये।

डारसी–क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप ये प्रश्न क्यों पूछरही हैं ?'

एलिज–' केवल आपके चरित्रको समझ लेनेकेलिये, उसने डारसी के गौरवको कम करते हुए कहा, 'मैं आपके स्वरूपको जान लेना चाहती हूँ'

डारसी–' इससे आपको क्या लाभ पहुँचेगा ?'

एलिजबेथने सिर हिलाते हुए कहा–' मैं कुछ समझ नहीं सकती । मैं आपके विषयमें इतनी भिन्न भिन्न बातें सुनती हूँ कि मैं उनसे बहुतही परेशान हो उठी हूँ '।

डारसीने गंभीरता से उत्तर दिया–मैं इसबातको मानलेता हूँ कि मेरे विषयमें आपको बहुत भिन्न भिन्न प्रकारकी बातें सुनने को मिली हैं। परन्तु मिस बेनट, मैं चाहता हूँ कि आप मेरा चरित्रचित्रण इन बातोंके आधारपर इस समय न करें, क्योंकि इससे दोनों ओर किसीको भी लाभ न पहुँच सकेगा ।

एलिज–परन्तु यदि मैं इससमय आपको समझनेकाप्रयत्न न करुंगी तो फिर मुझे शायद ऐसा अवसर कभी भी न मिल सकेगा ।

डारसीने रुखाईसे उत्तर दिया–मैं आपके किसी भी आनंदको कम करनेका विचार नहीं करसकता । इसपर वह कुछ न बोली । उसके बाद वे दूसरी वार नाचने चले गये और दोनों ही बिना बातचीत किये अलग होगये। वे दोनों ही असन्तुष्ट थे, यद्यपि एक जैसे नहीं । क्योंकि डारसीके हृदयमें एलिजाबेथ के लिये प्रबल प्रेमके भाव थे जो उसे सहिष्णु बना रहेथे । इसी कारण उसने उसे क्षम्य समझा था और अपना सारा क्रोध उसपर से दूर कर डाला था ।

उन्हें अलग हुए अभी कुछ देर न हुई थी कि उसीसमय मिस बिंगले उसके पास पहुंचगई। और बड़ी सभ्य नम्र भाषामें उससे बोली,–मिस एलिजा मैंने सुना है कि तुम जार्ज विकम को मिलकर बहुत प्रसन्न हुई हो । तुम्हारी बहन अभी उसीके विषयमें मुझसे बातें कर रही थी और सहस्रों प्रश्न पूछ रही थी । परन्तु मैं देखती हूँ कि वह युवक तुमसे यह कहना भूल गया है कि वह स्वर्गवासी मिस्टर डारसीके जाबदादके मैनेजर के रूपमें रखे हुए

मुंशी बूढे विकम का पुत्र है। तोभी मैं तुम्हें मित्रता के नाते इतना अवश्य कहूंगी कि उसकी कही हुई सब बातोंपर पूरा विश्वास न करना। जहांतक मि. डारसी का उसके साथ बुरा व्यवहार करनेका वृत्तान्त तुमने सुना है यह सर्वथा झूठ है। इसके विरुद्ध मि. डारसीने उसपर अपार दया दर्शाई है यद्यपि जार्ज विकमने मि डारसीके साथ अत्यन्त असभ्य व्यवहार कियाहै। यद्यपि मैं सब बातें विस्तारसे तो नहीं जानती परन्तु मैं यह निश्चयसे जानती हूँ कि मि॰ डारसी को तनिकभी दोष नहीं दिया जा सकता कि वे जार्ज विकम का नाम और उसके विषयमें कोई बात नहीं सुन सकते हैं। यद्यपि मेरे भाईने आफिसरोंको निमंत्रण देनेके समय उसको भी निमंत्रण दियाथा परन्तु वह इस बातसे बहुतही प्रसन्न है कि मि॰विकम स्वयंही यहांपर नहीं आया है। उसका इस गांवमें आना एक बडीही अनुचित बात है और मैं चकित हूँ कि उसने यहां आनेकी बात सोचीही क्यों। मिस एलिजा, मुझे तुमपर दया आतीहै क्योंकि तुम्हारे प्रियके अपराध को मैंने तुम्हारे सामने प्रकट करदिया है। परन्तु वास्तवमें यदि उसके वंशका विचार किया जाये तो हम उससे इससे अधिक की कुछ और आशा भी तो नहीं कर सकते थे।

एलिजाबेथने क्रोधसे कहा-उसका अपराध और उसका वंश तुम्हारे कथनके अनुसार ऐसा हो भी जैसा कि तुमने कहा है। परन्तु मैं देखती हूँ कि तुमने उसपर मि. डारसीके मुंशीके पुत्र होनेका जो दोष लगाया है वह व्यर्थ ही लगाया है क्योंकि मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि उसने इस विषयमें स्वयं ही मुझे बता रखा है।

मिस बिंगलेने दूसरी ओर जाते हुए कहा। मैं तुमसे क्षमा मांगती हूँ कि मैंने तुम्हारे बीचमें विघ्न डाला। परन्तु मेरे मनमें तुम्हारे लिए सद्भावना थी।

एलिजबेथने मनमें कहा-'असभ्य लडकी मुझपर इस प्रकारसे तुम कुछ प्रभाव नहीं डाल सकती। तुम कुछ नहीं जानती हो, यह सब मिस्टर डारसी की शरारत है।' फिर वह अपनी बडी बहनको ढूंढने लगी। जिसने मिस्टर बिंगलेसे इसी विषयपर बातचीत की थी। जेनके मुखपर प्रसन्नताके भाव थे,

और ऐसा विदित होता था कि संध्या बहुत अच्छी गुजरी है। एलिजबेथने उसके भाव समझ लिए और जेनकी आगामी प्रसन्नताका अनुभव करके वह विकमका अनुराग और विकमके शत्रुओंपर घृणा भूल गई। उसने मुस्कराते हुए अपनी बहिनसे कहा-'मैं जानना चाहती हूँ कि मि. विकमके विषयमें आपको क्या मालूम हुआ ? परन्तु कदाचित् आप अपने ही कार्यमें इतनी लिप्त थीं कि तीसरे मनुष्यका विचार आना असंभव था।'

जेन-'नहीं, मैंने उसके विषयमें पूछताछ की परन्तु कोई सन्तोषजनक बात कहनेको नहीं है। मि. बिंगले उसके विषयमें बहुत कम जानते हैं। डारसीसे क्यों अनबन हुई, यह उनको विदित नहीं। परन्तु डारसी बहुत ही सच्चा और आदर योग्य है यह वे कहनेको तैयार हैं। और उनको पूर्ण विश्वास है कि विकम इस व्यवहारके भी जो डारसीने उनके साथ किया अधिकारी न थे। मि बिंगले और उनकी बहनकी बातोंसे यह विदित होता है कि मि, विकम इस योग्य नहीं कि उनसे मिला जुला जाय। मुझको भय है कि मि· विकमने अपने ही कर्मोंसे मि· डारसीकी मित्रता खो दी है।'

एलिज.-'मि. बिंगले तो मि· विकमको नहीं जानते ?"

जेन-'नहीं, उस दिन पहली बार उन्होंने उसे देखा।'

एलिज-''तो फिर यह विकमका वर्णन उन्होंने जो डारसीसे सुना था, उसीके अनुसार किया। परन्तु वह पादरी की नौकरीके विषयमें क्या कहते हैं ? '

जेन- 'यह तो उनको भले प्रकार याद नहीं, यद्यपि उन्होंने डारसीसे इस विषयमें कई बार सुना है। उनको विश्वास है कि मि· डारसीके पिताकी वसीयतमें कुछ शर्तें भी थीं।'

एलिज.· मि· बिंगलेकी सच्चाईमें मुझे संदेह नहीं। परन्तु मुझे क्षमा करना यदि मैं कहूँ कि मुझको इन बातोंमें विश्वास नहीं। क्योंकि मि. बिंगले स्वयं मि. विकमको नहीं जानते और जो कुछ उन्होंने सुना है, वह अपने मित्र डारसीसे सुना है। इसलिए मेरी सम्मति उन दोनों मनुष्योंके विषयमें वही है जो पहले थी।'

इसके अनन्तर वार्तालापका विषय बदल गया। एलिजबेथने अपनी बहनकी बातें जो मि॰ बिंगलेके अनुरागकी कहानी थी सुननी आरंभ कीं। इतने में मि. बिंगले स्वयं आन पहुँचे और एलिजबेथ उनको छोडकर मिस ल्यूकसके पास चली गई। तुरन्त ही मि. कालंसने आकर कहा-कि 'सौभाग्यसे मुझको एक नई बात अभी मालूम हूई है। मुझे पता लगा है कि इस कमरेमें मेरी मालिकनके निकटका एक सम्बन्धी है। मैंने स्वयं उसकी बातें सुनी हैं। कैसे अचम्भेकी बात है, किसको यह ख्याल आ सकता था कि लेडी कैथरीनका भानजा यहां होगा। मैं ईश्वरको धन्यवाद देता हूँ कि मुझको यह बात समयपर मालूम हो गई और अब मैं उनसे जाकर इस बातकी क्षमा मांगूंगा कि मैं पहले उनकी सेवामें जानेके कारण उपस्थित न हो सका।'

एलिज-'आपको स्वयं अपना परिचय उनसे न कराना चाहिये।'

कालंस-'अवश्य करूंगा। मैं उनसे क्षमा मांगूंगा। अब तक मैं उनसे न मिल सका। वह लेडी कैथरीनके भानजे हैं। मैं उनसे लेडी कैथरीनके कुशल समाचार भी कहूंगा।'

एलिजबेथने मि. कालंसको समझाया कि मि. डारसी बिना परिचयके बातचीत करना असभ्यता समझेंगे। यह आवश्यक है कि आप दोनों एक दूसरे के यहां होनेका ध्यान न करें। और यदि परिचय करना आवश्यक हो तो मि. डारसी ही को स्वयं पहले बात-चीत करनी चाहिए। मि॰ कालिन्स उसकी बात सुनकर बोला, 'मेरी प्यारी मिस एलिजबेथ ! मैं तुम्हारी सम्मतिका बहुत आदर करता हूँ। परन्तु साधारण सभ्यता और गिरजेके पादरियोंकी सभ्यतामें बडा अन्तर है। गिरजेका छोटा-सा छोटा आदमी आदरमें संसारके बडे से बडे आदमीके बराबर है। इस कारण मुझको अपनी इच्छाके अनुसार काम करने दो। तुम्हारी सम्मति अस्वीकार करनेकी मैं क्षमा मांगता हूँ। यद्यपि तुम्हारी सम्मति सर्वदा मैं मानूंगा, परन्तु इस मामलेमें मैं अधिक अच्छी सम्मति अपनी शिक्षाके कारण स्वयं स्थिर कर सकता हूँ।' नम्रतासे सिर झुकाकर वह मि. डारसीकी ओर बढा। एलिजबेथ ध्यानसे उसकी ओर देखने लगी।

मि॰ कालंसने झुककर मि. डारसीको प्रणाम किया। मि. डारसी अचम्भेमें आ गए। एलिजबेथ कुछ बात तो न सुन सकी। परन्तु होंठोंके हिलनेसे वह क्षमा हंसफोर्ड और लेडी कैथरीन-इन तीन शब्दोंका प्रयोग समझ सकी। मि॰डारसी ने उसको रूखे भावसे कुछ उत्तर दिया। मि॰ कालंस फिरभी बोलते रहे। मि. डारसीकी घृणा की सीमा न रही। सिर झुकाकर वह दूसरी ओर चल दिये। मि, कालंस फिर एलिजबेथकी ओर आकर बोले-- 'मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि मि. डारसी मुझसे बहुत भली प्रकार मिले। सभ्यतासे उत्तर दिया और यह भी कहा कि लेडी कैथरीन बहुत बुद्धिमान है। उन्होंने यदि आपको चुना है, तो आप अवश्य इस कामके योग्य होंगे। यह विचार बहुत ही सुन्दर है। मैं उनसे बहुत प्रसन्न हुआ।'

एलिजबेथको अब कोई अपनी बात न सोचनी थी इसलिए वह मि. बिंगले और अपनी बहनके विषयमें सोचने लगी। जेनके आगामी सुखका विचार करके वह इतनी ही प्रसन्न हुई, जितनी जेन। उसको विचार आया कि जेन इसी घरकी मालकिन होगी। उसकी मां के विचार भी ऐसे ही थे। परन्तु वह मांके पास नहीं गई, क्योंकि उसे भय था कि वह कुछ बकने न लगे। जब खाना खाने बैठे, दुर्भाग्यसे उसको मां के पास बैठना पडा। उसको यह देखकर बडा कष्ट हुआ कि उसकी मां लेडी ल्यूकससे खुल्लमखुल्ला जेन और बिंगलेके विवाहकी बातचीत कर रही है। विषय बडा उत्तेजित था और मिसिज बेनट ऐसे विवाहके लाभ वर्णन करनेसे कभी थक न सकती थीं। इतना सुन्दर युवक, इतना धनवान, फिर हमारे निवास स्थानसे तीन मीलकी दूरीपर रहना, कैसी अच्छी बात है। जेनको इतना अच्छा वर मिलनेसे मेरी छोटी लडकियों को भी अच्छे वर मिल जायेंगे। फिर अब बुढापेमें मुझको भी आराम मिलेगा, क्योंकि मैं अपनी अविवाहिता पुत्रियोंको जेनके सुपुर्द कर दूंगी। उसने लेडी ल्यूकससे कहा, कि 'ईश्वर करे तुमको भी यह सौभाग्य प्राप्त हो।' परन्तु मन में यही विश्वास करती थी कि ऐसा होनेकी कोई सम्भावना नहीं।

एलिजबेथने व्यर्थ ही प्रयत्न किया कि उसकी मां अधिक न बोले या कमसे-कम धीरे २ बोले। क्योंकि मि. डारसी जो सामने बैठे हुए थे सब सुन

रहे थे। उसकी मां ने झिडक कर कहा- 'मि. डारसीसे मुझे क्या प्रयोजन। मैं उनसे नहीं डरती। कोई कारण नहीं है कि मैं ऐसी बात न कहूं, जो मि. डारसीको बुरी लगे।'

एलिज,-'ईश्वरके लिए धीरे २ बोलो। मि. डारसीको क्रोधित करके तुमको कुछ लाभ न होगा। उसका मित्रभी तुमको बुरा ही समझेगा।'

एलिजबेथके कहनेका कुछ प्रभाव न पडा। उसकी मां जोर२से बातें करती रही। एलिजबेथका मुख बार२ लज्जासे लाल होने लगा। वह बार२ मि.डारसी की ओर देखती थी, और प्रत्येक दृष्टिसे उसको यह विदित हुआ कि यद्यपि मि डारसी उसकी मां की ओर नहीं देख रहे हैं, परन्तु उनका ध्यान उसकी बातोंकी ओर है। मि. डारसीके मुखके भावमें धीरे २ परिवर्तन होने लगा और घृणासे गम्भीरता मुखपर छा गई।

अन्तमें मिसेज बेनटकी बात समाप्त हुई। लेडी ल्यूकर भी उकता गई थी वह उठ गई। मिसिज बेनटको अब केवल ठण्डे सुअरके मांस और मुर्गीके शोरवे परही सन्तोष करना पडा। एलिजबेथको कुछ प्रसन्नता होने लगी कि इतने ही में उसको फिर दुःख हुआ कि खानेके बाद गानेकी चर्चा होनेपर मेरी गानेको तैय्यार होगई। उसने संकेतसे मना किया। परन्तु मेरी कुछ न समझी। ऐसा अच्छा अवसर मेरीको कहां मिलता। उसने गाना शुरू कर दिया। एलिजबेथकी दृष्टि उसीकी ओर थी। उसीको फिर और दुःख हुआ कि मेरी जब गीत समाप्त कर चुकी, और मनुष्योंने उसको दूसरा गीत गानेको कहा, तो उसने गाना आरंभ कर दिया। मेरीको गाना नहीं आता था, उसकी आवाज धीमी थी, और भाव बनावटी थे। एलिजबेथको बहुत वेदना हो रही थी। उसने जेनकी ओर देखा कि वह किस प्रकारसे इस दुःखको सहन कर रही है परन्तु जेन बिंगलेसे बातोंमें लगी हुई थी। फिर उसने अपनी दूसरी बहनोंकी ओर देखा, जो एक दूसरेको मुंह चिढा रहीं थीं। कभी २ डारसीकी ओर घृणाकी दृष्टिसे देखा. जो गम्भीर बना बैठा था। फिर उसने अपने पिताकी ओर देखा, पिता समझ गया और मेरीने गीत समाप्त किया तो उसने कहा—

'बेटी ! तुमने बहुत अच्छा और बहुत देर गाया। परन्तु अब और युवतियोंको गानेका अवसर दो।'

मेरीको यह सुनकर कुछ दु:ख हुआ और अन्य युवतियोंसे गानेके लिए प्रार्थना की गई।

कालंस–'यदि मुझको गाना आता होता तो मैं अवश्य सब लोगोंको अनुगृहीत करनेके लिए एक तान लगाता। संगीत एक अत्यन्त निष्पाप मन-मोहक पदार्थ है। पादरीके लिए भी उसमें कोई पाप नहीं है। इससे मेरा यह प्रयोजन नहीं कि पादरी और काम छोडकर संगीतहीमें लगजाए। उसको और बहुतसे काम करने हैं। सबसे पहले तो उसको अपना दसवां भाग इस प्रकार से ठीक करना है कि उसको भी लाभ हो और उसके संरक्षकको भी बुरा न लगे। उसको अपना उपदेश लिखना होता है और जो समय बचता है, इसमें अपने घरकी उन्नति की चिंन्ता और देख-भाल करनी चाहिए। उसको सबसे नम्रभावसे मिलना चाहिए और विशेष कर जिसने उसको नौकरी दी हो, उसके कुटुम्बके किसी सम्बन्धीसे कहीं भी मिलनेपर बहुत ही आदर दिखाना चाहिए। यह कहकर उसने नम्रतासे मि॰ डारसीको प्रणाम किया। कमरेमें आधे लोगोंसे अधिक कुछ लोगोंने उसकी वक्तृता सुनी। कुछने उसको घूरा, कुछ हंसने लगे। मि॰ बेनटको तो इस वक्तृतामें बहुत ही आनन्द आया। मिसिज बेनटने गंभीरतासे लेडी ल्यूकससे मि. कालंस की बहुत प्रशंसा की।

एलिजबेथको ऐसा प्रतीत होता था कि यदि उसके कुटुम्बिनोंने पहले से यह निर्णय कर लिया होता कि आज संध्याको हम अपनी मूर्खताओंको प्रदर्शित करेंगे, तब भी कदाचित् इतने अच्छे प्रकारसे और सफलतासे न कर सकते। उसको यह प्रसन्नता थी कि कमसे कम बिंगलेने उनकी मूर्खताओंपर अधिक ध्यान न दिया। उसको यह अवश्य बुरा लगा कि मि. डारसी और उसकी दोनों बहनोंको उसके कुटुम्बकी हंसी उडानेका अवसर मिलेगा। उसको यह निर्णय करनेमें कि डारसी की घृणापूर्ण दृष्टि या बिंगलेकी बहनोंकी मुस्कराहटमेंसे कौन अधिक असहनीय है, चिंतित होना पडा।

शेष संध्यामें भी एलिजबेथको कुछ आनन्द न मिला। मि. कालंस उसके पास बैठे और उसको छेडते रहे। यद्यपि उसने उनके संग नाचनेकी प्रार्थना अस्वीकार करदी। तबभी उसने उनसे प्रार्थनाकी कि 'मैं आपका परिचय जिस युवतीसे चाहे करा दूं और उसके साथ आप नाचें। परन्तु उसने एलिजबेथको विश्वास दिलाया कि नाचनेमें उसका मुख्य उद्देश्य यह है कि वह एलिजबेथके निकट ही रहे। एलिजबेथको अब चुप रहना पडा। थोडी देरमें उसका कष्ट कुछ कम हुआ क्योंकि मिस ल्यूकसने आकर मि· कालंसको बातोंमें लगा दिया।'

मि· डारसीके आक्रमणसे अब वह स्वतंत्र थी। यद्यपि बहुधा वह उसके समीप ही रहा परन्तु उसने आकर उससे कभी बातचीत न की। एलिजबेथको यह सोचकर प्रसन्नता हुई कि मि.विकमकी चर्चा चलानेसे ही डारसीने मुझसे बोलना अच्छा नहीं समझा।

लाँगबोर्नवाले सबसे अन्तमें बिदा हुए। और मिसिज बेनटकी युक्तिसे सबके जानेके अनन्तर पन्द्रह मिनटतक उनको गाडीकी प्रतीक्षा करनी पडी। इससे हार्दिक बिदाईका अवसर मिल गया। मिसिज हर्स्ट और उसकी बहन बिलकुल न बोले। केबल उन्होंने थकनेकी बात कही और वह अधीर हो रही थीं कि मकान शीघ्र खाली हो। मिसिज बेनटने उनसे बातचीत करनेका बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह न बोली। मि कालंस, मि. बिंगले और उनकी बहनोंका धन्यवाद करते रहे और नाचकी सफलतापर बधाई देते रहे। डारसी कुछ न बोला। मि. बेनट भी चुप थे और इस दृश्यका आनन्द उठा रहे थे। बिंगले और जेन परस्पर बातें कर रहे थे। एलिजबेथने भी मौनकी शरण ली थीं। लीडिया भी थक गई थी, और जंभाई लेते हुए कभी कभी यह कहती थी, 'हे ईश्वर मैं थक गई हूँ।

अन्तमें जब बिदा होनेका समय आया, मिसिज बेनटने नम्रतासे कहा, 'मिस्टर बिंगले मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँगी, यदि आप सब लोग किसी दिन हमारे यहां भोजन करें।' बिंगलेने अपनी कृतज्ञता प्रगट करते हुए. कहा- 'कल मैं एक कामसे लन्दन जा रहा हूँ। मैं वहांसे आनेपर अवश्य आपके यहां आऊंगा।'

मिसिज बेनटकी प्रसन्नताकी सीमा न थी। उसको पूर्ण विश्वास था कि तीन चार महीनेके भीतर ही उसकी पुत्री नीदरफील्डकी मालकिन होगी। उसको यह भी विश्वास था कि उसकी दूसरी कन्या कालंससे विवाहित होगी। एलिजबेथका उसको सबसे कम प्यार था, इसलिए उसको इस विवाहकी इतनी प्रसन्नता न थी, जितनी बिंगले और जेनके विवाहकी थी।

उन्नीस ां परिच्छेद

दूसरे दिन लॉंगबोर्नमें नया ही दृश्य उपस्थित हुआ। मि. कालंसने यह निर्णय कर लिया कि अब मुझको प्रस्ताव करनेमें विलम्ब न करना चाहिए। मेरी छुट्टी शनीचर तक ही की है। मिसेज बेनट, एलिजबेथ और एक और छोटी कन्याको साथ बैठे हुए देखकर उसने मांसे कहा –'माता जी। क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि मुझको मिस एलिजबेथसे अकेलेमें कुछ बातचीत करनेका अवसर आज दिया जायगा। एलिजबेथका मुख आश्चर्यसे लाल होगया। मिसिज बेनटने तुरन्त ही उत्तर दिया– अवश्य, मुझको पूर्ण विश्वास है कि लीजीको इसमें कोई आपत्ति नहीं हो सकती। किटी चलो मुझको तुमसे कुछ काम है। और काम समेटकर वह जाने ही को थी कि एलिजबेथने पुकारकर कहा— माताजी आप न जायें। मि. कालंसको कोई एसी बात नहीं कहनी है, जो आपकी उपस्थितिमें नहीं कही जा सकती।'

मिसिज बेनट–' बस चुप रहो, मेरी इच्छा है कि तुम यहां ठहरो'। लिजीको उठता हुआ देखकर उसने फिर कहा–'मैं तुमसे अनुरोध करती हूँ कि तुम यहां ठहरकर मि. कालंसका प्रस्ताव सुनो।' एलिजबेथ इस आज्ञाका उल्लंघन न कर सकी। एक क्षणके अनन्तर उसको यह भी ध्यान आया कि यह काम जितना ही शीघ्र समाप्त हो उतना ही अच्छा। वह अत्यन्त ही खिन्न

थी। मिसिज बेनट और किटी चलीं गईं। उनके जानेके अनन्तर मि. कालंस बोले-

'मेरी प्यारी मिस एलिजबेथ! विश्वास रखो कि तुम्हारी लज्जाने तुम्हारी कोई हानि न करके तुम्हारे गुणोंको और बृद्धि दी है। मेरी दृष्टिमें तुम गिर जातीं यदि इस प्रकारसे तुम थोडीसी अस्वीकृति न प्रगट करतीं। परन्तु मुझको यह विश्वास दिलानेकी अनुमति दो कि यह प्रस्ताव करनेमें तुम्हारी माननीया माता मुझसे पूर्ण सहमत है। तुम अब मेरी बातोंका प्रयोजन समझ गई होगी, चाहे लज्जावश तुम यह स्वीकार न करो। मेरा प्रेम छिपा नहीं रहा। ज्योंही मैंने इस गृहमें प्रवेश किया, तुमको ही अपने आगामी जीवनका साथी स्थिर किया। परन्तु इसके पहले कि मैं अपने भाव प्रगट करूं मैं यह उचित समझता हूँ कि मैं तुमको कारण बताऊं कि मैं विवाह क्यों करना चाहता हूँ। और मैं क्यों हर्टफोर्ड शायरमें अपनी धर्मपत्नी चुननेके लिए आया।'

मि. कालंसकी बातें सुनकर एलिजबेथने बडी कठिनतासे अपनी हंसी रोकी। वह बोलता रहा, विवाह करनेका पहला कारण यह है कि मैं पादरीके लिए यह उचित समझता हूँ कि वह विवाह करके अपने अनुयायियोंके सन्मुख विवाह करनेका उत्तम दृष्टांत रखे। दूसरे मैं समझता हूँ कि विवाहसे मेरी प्रसन्नतामें बृद्धि होगी। तीसरे मुझको मेरी दयालु संरक्षिकाने भी यही सम्मति दी है। दो बार बिना पूछे ही उन्होंने यह कहा और हंसफोर्डसे लौटते हुए उन्होंने कहा,मि.कालंस तुम्हारे समान पादरीके लिए विवाह करना अति आवश्यक है। किसी भली कन्याको चुनो, जो कामकाजमें चतुर हो जिसके अमीराना विचार न हों और जो थोडीसी आयमें भले प्रकार घरका प्रबन्ध कर सके। यही मेरा उपदेश है। ऐसी स्त्रीको ढूंढो। फिर मैंभी तुम्हारे यहां आऊंगी। मेरी सुन्दरी एलिजबेथ! लेडी कैथरीनकी दयासे तुम बहुत प्रसन्न रहोगी। उनकी चाल ढालका वर्णन मैं नहीं कर सकता और तुम्हारी हंसी और समझसे वह भी प्रसन्न होगी। अब मैं तुमको यह बताना उचित समझता हूँ कि अपने पडोसियोंको छोडकर मैं लौं बोर्नमें विवाह करने क्यों आया। विश्वास रखो कि वहां बहुतसी सुन्दर युवतियां हैं। बात यह है जैसा कि तुम जानती

हो कि तुम्हारे माननीय पिताकी मृत्युके अनन्तर (ईश्वर करे वह चिरायु हों) मैं ही इस सम्पतिका उत्तराधिकारी हूँगा। इसलिए मैंने उचित समझा कि मैं अपनी स्त्री उसीकी पुत्रियोंमेंसे चुनूं। ताकि जब यह दुर्घटना हो तो तुम्हारे कुटुम्बपर जितनी कम विपत्ति पड सके उतनाही अच्छा है। मेरी सुन्दर एलिजबेथ ? इसी कारणसे मैं यहां आया हूँ और मुझको आशा है कि तुम मेरा कारण जानकर मेरा आदर अधिक करोगी। अब मुझको कुछ अधिक नहीं कहना है। केवल तुमको यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैं तुमसे अधिक प्रेम करता हूँ। धन पानेकी मुझे चिन्ता नहीं और न मैं तुम्हारे पितासे इस प्रकारका प्रश्न करूंगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे कुछ नहीं दे सकते। एक हजार पौंड तुमको तुम्हारी माताकी मृत्युके अनन्तर मिलेंगे। और मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ कि इस विषयमें विवाहके अनन्तर मेरे मुखसे कभी कोई बात भी नहीं निकलेगी।'

अब मि० कालिन्सको रोकना अत्यन्त आवश्यक था। एलिजाबेथ ने कहा--"मान्यवर महोदय ! आप बहुत शीघ्रता करते हैं। कदाचित आप भूलगए हैं कि मैंने आपको अभी कोई उत्तर नहीं दिया। व्यर्थ समय नष्ट न करके मैं आपके प्रस्तावके लिये आपको धन्यवाद करती हूँ। मैं समझती हूँ कि आपने यह प्रस्ताव करके मेरे आदरको बढाया है। परन्तु अस्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई उत्तर असम्भव है।'

मि० कालिन्सने हाथ हिलाकर कहा "क्या आप मुझको यह पाठ सिखाना चाहती हैं कि युवतियोंके लिये यह स्वभाविक है कि वह जिस पुरुष से विवाह करने की गुप्त इच्छा रखती हैं, उसके प्रस्ताव को पहलीबार अस्वीकार करदेती हैं। कभी कभी तो दूसरी और तीसरीबार भी स्वीकृति नहीं मिलती, इसीलिये मुझको कोई आश्चर्य नहीं हुआ और पूर्ण आशा है कि हम विवाह की वेदीपर चढेंगे।

एलिज०-"मैं सच कहती हूँ कि मेरे उत्तरके अनन्तर आपकी आशा असाधारण है। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं उन युवतियों में से नहीं हूँ। (यदि ऐसी युवतियां हैं) जो इतनी मूर्खता करती हैं कि अपनी

प्रसन्नताको इस आशापर दुविधामें डालदेती हैं कि उनसे दूसरीबार फिर प्रस्ताव कियाजायेगा। मैंने सोच विचारकर अस्वीकार किया है। आप मुझको प्रसन्न नहीं करसकते। न मैं हीं आपको प्रसन्न करनेकी शक्ति रखती हूँ। यदि आपकी संरक्षिका लडी कैथरॉन मुझको जानती होती तो मुझको विश्वास है कि आपकी स्त्री होनेके अयोग्य मुझको वह समझतीं।'

मि० कालिन्सने गम्भीर भावसे कहा--'यदि मुझको इस बातका विश्वास होता। परन्तु मैं यह अनुमान नहीं करसकता कि लेडी कैथरिन तुमसे प्रसन्न न होंगी। मैं तुम्हारी लज्जा, तुम्हारी मितव्ययता और तुम्हारे अनेक गुणोंकी प्रशंसा उनसे करूंगा।

एलिजा०--"मि० कालिन्स, मेरी प्रशंसा व्यर्थ न कीजिए। मुझको अपने लिये आप सोचने दीजिए। यह समझिये कि जो मैं कहती हूँ, वही मेरा प्रयोजन है। मैं चाहती हूँ कि आपका जीवन बडा सुखमय हो। और मैं समझती हूँ कि आपका प्रस्ताव अस्वीकार करके मैं आपको दुःखमय जीवन व्यतीत करनेसे बचा रही हूँ। अपने प्रस्तावमें हमारे कुटुम्बकी ओर जो दया के भाव आपने प्रगट किए हैं उनके विषयमें मैं यह कहना चाहती हूँ कि जिस समय आपको अधिकार हो आप लाँगबोर्नकी सम्पत्ति अवश्य लेलें। यह कहकर वह उठकर कमरेसे जाने लगी, कि मि कालंसने फिर पूछा 'जब मुझको आपसे दूसरी बार प्रस्ताव करनेका सौभाग्य होगा मुझको आशा है कि आप अधिक अच्छा उत्तर देंगी। मैं आपको निर्दयताका दोषी नहीं ठहराता। क्योंकि मैं जानता हूँ कि स्त्री जातिके लिए यह परम्परासे प्रथा चली आती हैं कि पहली बार वह पुरुषके प्रस्तावको अस्वीकार कर देती है। कदाचित् इस समय भी जो आपने कहा है मैं उसीसे उत्साहित हो रहा हूँ। क्योंकि वह स्त्रियोंकी सच्ची लज्जाके अनुसार है।

एलिजबेथने गरम होकर कहा– 'वास्तवमें मि. कालंस, आप विचित्र आदमी हैं। यदि मेरी अस्वीकृति आपको उत्साहित करती है, तो मेरी समझ में नहीं आता कि किसप्रकारसे मैं अपनी अस्वीकृति प्रगट करूं,जिससे आपको विश्वास हो जाये कि मैं सचमुच आपके प्रस्तावको अस्वीकार करती हूँ।'

कालंस— 'मेरी प्यारी एलिजबेथ ! मैं तुम्हारे उत्तरसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हारी अस्वीकृति केवल शब्दसे है। मैं यह समझा हूँ कि तुम मेरा प्रस्ताव स्वीकार करोगी क्योंकि मैं तुम्हारे पति होनेके अयोग्य नहीं हूँ। मेरा घर तुम्हारे योग्य है। मेरी समाजमें स्थिति है। कैथरीन कुटुम्बसे जो मेरा संबंध है, और तुम्हारे कुटुम्बसे जो मेरी नातेदारी है, ये सब बातें मेरे पक्षमें हैं। विचार लो कि यद्यपि तुममें बहुतसे गुण हैं, परन्तु फिर भी सम्भव है कि तुमको कभी भी ऐसा अवसर न मिले कि कोई दूसरा मनुष्य तुमसे विवाहका प्रस्ताव करे। तुम्हारी सम्पत्ति इतनी थोड़ी है कि तुम्हारी सुन्दरता और गुणों पर वह पानी फेर देती है। इसलिए मैं इस परिणामपर पहुंचता हूँ कि इस प्रस्तावको अस्वीकार करके तुम मुझको दुविधामें डालकर मेरे प्रेमको उन्नति देना चाहती हो। जैसा कि सभ्य युवतियां किया करती हैं।

एलिजा.—'महाशय ! मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मैं उन सभ्य युवतियोंमेंसे नहीं हूँ जिनकी सभ्यता एक मान्य पुरुषको खिन्न करती है। मैं चाहती हूँ कि आप मुझको सच्चा समझें, मैं आपके प्रस्तावके लिए एक बार फिर धन्यवाद देती हूँ। परन्तु उसको स्वीकार करना सर्वथा असम्भव है। मेरा हृदय मुझको मना करता है। क्या मैं इससे अधिक स्पष्ट कुछ कह सकती हूँ। आप मुझको सभ्य स्त्री न समझकर एक सच्चा जीव समझकर विश्वास करें कि मैं हृदयसे आपको अस्वीकार करती हूँ।'

मि. कालंसने प्रेमके आवेशमें कहा– 'तुम कितनी अच्छी हो। मुझको कोई संदेह नहीं है कि तुम अवश्य मेरे प्रस्तावको स्वीकार करोगी। जब तुमको यह विदित होगा कि तुम्हारे माता पिता भी हृदयसे चाहते हैं कि यह संबंध हो।'

एलिजबेथ इस हठका क्या उत्तर दे सकती थी ? वह चुपचाप वहांसे चली गई। उसने निर्णय कर लिया कि यदि मेरी बार २ की अस्वीकृति इसको उत्साहित करेगी, तो मैं अपने पितासे कहकर इस बातको समाप्त कराऊंगी। उनका ना करना तो सभ्य स्त्रीकी बनावट न समझी जायगी।

बीसवां परिच्छेद

मि. कालिंस अधिक देरतक अकेले अपनी सफलतापर विचार न कर सके। क्योंकि मिसेज बेनट कमरेके बाहर ही टहल रही थी। ज्योंही एलिजबेथ द्वार खोलकर बाहर निकली, मिसेज बेनट अन्दर घुसकर मि. कालिंसको बधाई देने लगी। मि. कालिंसने उस भेंटकी सत्य बातें मिसेज बेनटको सुनाईं और यह कहा—'मुझको बिलकुल सन्तोष है। क्योंकि एलिजबेथकी अस्वीकृतिका कारण स्त्री-जातिकी लज्जाके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह सुनकर मिसेज बेनट घबरा उठी। क्योंकि वह एलिजबेथके चरित्रसे भली प्रकार परिचित थीं। उसने कहा- 'मि. कालिंस ! लिजिको समझाना पड़ेगा, मैं उससे अभी बातचीत करूंगी। वह बहुत ही हठी और मूर्ख कन्या है। अपनी भलाई नहीं समझती। मैं उसको समझाऊंगी।'

कालिंस–देवी ! क्षमाकरें, यदि वह वास्तवमें हठी और मूर्ख है, तो वह मेरी दशाके पुरुषके लिए अनुरूप धर्म-पत्नी न होगी। क्योंकि मैं विवाह करके सुख चाहता हूँ। यदि वह वास्तवमें अस्वीकार करती है तो उसको बलपूर्वक प्रसन्न करना ठीक नहीं। क्योंकि यदि उसके चरित्रमें यह दोष है तो मुझे वह सुख नहीं पहुंचा सकती।'

मिसेज बेनटने घबराकर कहा—'महाशयजी। आप मेरी बात नहीं समझे। लिजी इन बातोंमें हठी है, परन्तु और बातोंमें उसका स्वभाव बहुत अच्छा है। मैं अभी मि. बेनटके पास जाकर सब ठीक किए देती हूँ। उसको उत्तर देनेका अवसर न देकर मिसेज बेनट दौड़कर मिस्टर बेनटके कमरेमें पहुंची, और बोली- 'मि. बेनट। शीघ्रता कीजिए। लिजीको समझाइये कि वह मि. कालिंससे विवाह करले। क्योंकि वह कहती है- 'मैं न

करूंगी।' यदि आपने जल्दी न की तो मि. कालिंस कदाचित् अपना विचार परिवर्तन करके उससे विवाह न करें।'

मि. बेनटने पुस्तक छोडकर आंखें उठाकर देखा, और उदासीनताके भावसे देखते रहे। इस समाचारसे उनको कोई खेद नहीं हुआ। वे बोले, मैं तुम्हारी बात नहीं समझा, तुम क्या कह रही हो।

मिसेज बेनट—'मि. कालिंस और लिजी की बात कर रही हूँ। लिजी कहती है कि मि. कालिंससे विवाह न करूंगी और मि. कालिंसने अब यह कहना आरंभ कर दिया है कि वे लिजीसे विवाह न करेंगे।'

मि. बेनट-'तो ऐसे अवसरपर मैं क्या कर सकता हूँ। काम तो बिगड ही गया है।'

मिसेज बेनट—'आप लिजीको समझाएँ। उससे कहें कि उसको यह विवाह स्वीकार करना पडेगा।'

मि. बेनट-'अच्छा उसको बुलाओ वह मेरी सम्मति सुनेगी।'

मिसेज बेनटने घण्टी बजाई और मिस एलिजाबेथ बुलाई गई।

उसके पिताने कहा, प्यारी पुत्री! मैंने तुमको बहुत ही आवश्यक काम के लिए बुलाया है। मैंने सुना है कि मि. कालिंसने तुमसे विवाह करनेका प्रस्ताव किया है। क्या सच है?

एलिजाबेथने उत्तर दिया— 'हां।'

बेनट-'और तुमने अस्वीकार कर दिया है?'

एलिजा—'जी हां।'

मि. बेनट—'अच्छा अब मतलबपर आओ। तुम्हारी माता की इच्छा है कि तुम उससे विवाह करो। क्यों मिसेज बेनट! ठीक है न?'

मिसेज बेनट—'हां, और यदि एलिजाने उससे विवाह न किया तो मैं एलिजा. का मुँह न देखूंगी।'

मि. बेनट- "एलिजा! तुम्हारे सामने अब बडी कठिन समस्या है। तुम्हरी माता तुम्हारा मुँह न देखेंगी, यदि तुम मि. कालिंस से विवाह न करोगी और यदि तुम करोगी तो मैं तुम्हारा मुँह न देखूंगा।'

एलिजाको हँसी आगई परन्तु मिसेज बेनट जो समझती थी कि मेरे पति की इच्छा मेरे अनुसार है, बहुत ही निराश हुई। उसने कहा मि॰ बेनट क्या कहते हो ? तुमने तो कहा था कि मैं एलिजाको विवाह करनेपर बाधित करूंगा।'

मि. बेनट–'मेरी प्यारी ! मैं तुमसे दो प्रार्थनायें करता हूँ। एक तो अपनी समझका स्वतंत्रतापूर्वक मुझको प्रयोग करने दो, और दूसरे अपने कमरे में मुझको स्वतन्त्रतापूर्वक रहने दो। कृपा करके जितना शीघ्र संभव हो मुझे छोड दो।'

इसपर भी मिसेज बेनट अपनी पुत्रीको समझाती रही और कभी धमकाती रहीं। उन्होंने जेनको अपनी ओर मिलाना चाहा, परन्तु जेनने भी नम्रता पूर्वक निषेध कर दिया। एलिजा कभी तो हंसीमें बात टालती रही और कभी गंभीरतासे उत्तर देती रही परन्तु अपने निश्चयमें दृढ रही।

मि॰ कालिंस अकेलेमें बैठे सोच रहे थे। उनकी समझमें यह न आता था कि मेरे समान अच्छे आदमीको कैसे एलिजाने अस्वीकार कर दिया। उसके अभिमानको कुछ ठेस लगी थी।

जब कुटुम्बमें यह हलचल मची हुई थी, शारलोट ल्यूकसने गृहमें प्रवेश किया। लीडियाने दौडकर उससे कहा– 'अच्छा हुआ तुम आगई। यहां बडा तमाशा हो रहा है। मि. कालिंसने लिजीसे विवाह करनेका प्रस्ताव किया और लिजीने अस्वीकार कर दिया। शारलोट उत्तर दे भी न पाई थी कि किटीने भी आकर यही समाचार कहा। खानेके कमरेमें घुसनेपर (जहां मिसेज बेनट अकेली बैठी थी) मिसेज बेनटने कहा–'तुम अपनी सखीको समझाओ कि वह कुटुम्बकी इच्छा अनुसार काम करे। प्यारी मिस ल्यूकस तुम मेरी सहायता करो। मेरी ओर कोई नहीं। मुझसे निर्दयताका व्यवहार किया जा रहा है। किसीको भी मेरी धडकन की चिन्ता नहीं। इतनेमें जेन और एलिजा कमरेमें घुसीं।

मिसेज बेनट-'यह लो आन पहुंची। ऐसी उदासीन जैसे कुछ हुआ ही नहीं। जैसे हम सब मर गए। मिस लिजी समझ लो कि यदि तुम इस प्रकार

से प्रस्ताव अस्वीकार करोगी, तो तुमको पति न मिलेगा। और तुम्हारे पिता के मरनेके बाद तुम्हारा निर्वाह कैसे होगा? मैं कहे देती हूँ कि मैं तुमको न रखूंगी। आजसे मेरा तुम्हारा कोई नाता नहीं। मैं अब तुमसे न बोलूंगी। कहना न माननेवाले बच्चोंसे बात करना मुझे अच्छा नहीं लगता। जिन लोगों को दिलकी धडकनका रोग होता है वे अधिक बात करना नहीं चाहते। मेरी दशाका कोई अनुमान नहीं कर सकता। जो लोग चिल्लाते नहीं हैं, उनपर कोई दया नहीं करता।

उनकी पुत्रियां चुपचाप सब सुनती रहीं। क्योंकि वे सब समझती थीं कि बोलनेसे वह और चिढ जायगी। वह बोलती रही कि इतनेमें मि,कालिंस बडी शानसे उस कमरेमें घुसे। उनको देखकर उसने लडकियोंसे कहा- 'बस अब किसीके मुँहसे बात न निकले मुझको मि. कालिंससे कुछ बातचीत कर लेने दो।'

एलिजाबेथ कमरेसे बाहर चली गई। जेन और किटीने उसका अनुकरण किया। लीडिया बातें सुननेके लिए वहीं डटी रही। और शारलोट पहले तो कालिंसके प्रश्नोंका उत्तर देती रही और फिर खिडकीके पास जाकर खडी होगई जैसे वह कुछ सुनती नहीं। कातर बानीमें मिसेज बेनटने कहा- मि. कालिंस।'

कालिंस-'देवी जी। सर्वदाके लिए यह विषय बंद हो गया। मैं आपकी पुत्रीपर कोई कटाक्ष नहीं करना चाहता। हम लोगोंका धर्म है कि विपत्तियों का उदासीनतासे सामना करें। विशेषकर मेरे लिए जो गिरजेका पादरी है यही उचित है और मैं अब बिलकुल उदासीन हूँ। इस कारण नहीं कि मुझको यह संदेह होगया है कि हम विवाह करके सुखी न होते, परन्तु इस लिए कि यह उदासीनता उसी समय पूर्ण सुख दे सकती है कि जब उस वस्तु का जिसको पानेकी हम अभिलाषा रखते थे, और जो हमको नहीं मिली— मूल्य हमारी दृष्टिमें कम हो रहा हो। मैं आपके कुटुम्बका कोई अपमान नहीं करता। मेरा ढंग सम्भव है कि आपको बुरा मालूम हो, परन्तु हम सभीसे

भूल हो सकती है। मेरी नियत इस मामलेमें बिलकुल ठीक रही। मेरा प्रयोजन यह था कि मुझको एक अच्छी सखी मिल जाय, और आपके कुटुम्बका भी भला हो। यदि कोई अनुचित बात मुझसे हो गई हो तो मैं उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

इक्कीसवां परिच्छेद

मि॰ कालिंसके प्रस्तावपर अब कोई वार्तालाप न होता था। कभी-कभी एलिजाबेथको अपनी माताकी झिडकियां सुननी पडती थीं। मि, कालिंस कुछ दुखी या खिन्न नहीं प्रतीत होते थे, परन्तु क्रोधसे चुप रहते थे। वे एलिजाबेथसे बिलकुल न बोले और मिस ल्यूकससे बात-चीत करते रहे जो उसकी बातें बडे ध्यानसे सुनती रही। दूसरे दिन भी मिसिज बेनटका क्रोध शान्त न हुआ। मि. कालिंस भी क्रोधित थे। एलिजाबेथको आशा थी कि इस प्रकार निराश होनेसे कदाचित् मि. कालिंस शीघ्र लौट जायें। परन्तु उन्होंने जो शनीचरको जानेका विचार कर लिया था उसमें कुछ परिवर्तन न हुआ।

खानेके बाद लडकियां मेरिटनकी ओर चलीं। वहां उनको मि॰विकम मिले जो उनके साथ उनकी मासीके घर तक गये। सबने नीदरफील्डके नाचमें मि॰ विकमकी अनुपस्थितिपर शोक प्रगट किया। मि॰ विकमने एलिजाबेथसे कहा-कि ज्यों-ज्यों नाचका समय निकट आता था मेरा विचार दृढ होता जाता था कि अच्छा होता मैं मि॰ डारसीसे न मिलता। उसी संगतिमें इतने घण्टे साथ रहनेसे सम्भावना थी कि कुछ अनुचित दृश्य हम दोनोंके बीचमें हो जाते। एलिजाबेथने उसके इस विचारकी बहुत प्रशंसा की और दोनों बातें करते हुए लौंगबोर्नको लौट आए।

एलिजाबेथको यह प्रसन्नता थी कि मैं आज मि. विकमका परिचय अपने माता और पितासे कराऊंगी।

घर पहुंचनेके अनन्तर जेनके नाम एक चिट्ठी नीदरफील्डसे आई, जिस पर किसी स्त्रीके हाथका पता लिखा था। एलिजाबेथने देखा कि पत्र पढते २ जेनके मुखका रंग बदलता जाता है। इतनेमें पत्र पढकर जेनने अपनेको संभाला और बातचीतमें लगनेका प्रयत्न किया। परन्तु एलिजाको पत्रका विषय जाननेकी अत्यन्त उत्कंठा थी। और ज्योंही मि.विकम गए कि वह और जेन अपने कमरेमें ऊपर गईं। जेनने पत्र निकालकर कहा,मिस बिंगलेका पत्र है। वह लिखतीं हैं-सब लोग नदिरफील्ड छोडकर चलेगए और अब लौटकर आनेका कोई विचार नहीं। तब उसने जोरसे पहला वाक्य पढा जिसमें लिखा था,कि हम अभी अपने भाई का अनुसरण करते हुए लंदन जा रहे हैं। फिर लिखा था मुझको हर्डफोर्डशायर छोडनेमें केवल एक ही दुःख है कि तुमसे मिलना जुलना न होसकेगा। परन्तु मैं आशा करती हूँ कि हम फिर मिलेंगे। और तुम मुझको पत्र लिखती रहोगी एलिजाबेथ अविश्वाससे ये बातें सुनती रही। एकदमसे उनके चले जानेसे उसको आश्चर्यमें डाल दिया, परन्तु इसमें शोककी कोई बात न थी। क्योंकि वह समझती थी कि उनकी नीदरफील्डसे अनुपस्थितिके अर्थ यह नहीं हैं कि बिंगले भी वहां न आसके। एलिजाने कहा, दुर्भाग्य की बात है कि चलते हुए तुम अपने मित्रोंसे न मिल सकीं। परन्तु हम यह आशा नहीं कर सकते कि वह आनन्दका समय बहुत शीघ्र आ जायेगा, जब तुम मिस बिंगलेसे बहनके समान न मिल सकोगी। मि. बिंगले लंदनमें अधिक काल नहीं रुक सकते।'

जेन-'मिस बिंगलेने स्पष्ट प्रकारसे लिख दिया है कि वह इस सरदीमें यहां वापिस न आयेंगे और मैं तुमको पत्र पढकर सुनाती हूँ- 'जब मेरे भाई कल यहांसे गए तो वे समझते थे कि उनका काम तीन चार दिनमें हो जायेगा। परन्तु हमको यह आशा नहीं है, और हम यह नहीं चाहते कि अकेलेमें हमारे भाईको कुछ कष्ट हो। इसलिए हम भी वहीं जा रहे हैं। हमारे बहुतसे परिचित मनुष्य वहां पहुंच चुके हैं और मेरी इच्छा होती है कि तुम सभी वहां होतीं, परन्तु इसकी कोई आशा नहीं। मै आशा करती हूँ कि भाग्यसे तुमको

यहां बहुतसे मित्र मिलेंगे और तुम हम लोगोंके यहां न होनेका कुछ विचार न करोगी ।'

जेन-'इससे स्पष्ट है कि वे इस सरदीमें वापिस न आयेंगे।'

एलिजा.- 'इसके अर्थ तो यही हैं कि मिस बिंगले चाहती है कि वे यहां न आयें।'

जेन-'तुम क्यों ऐसा समझती हो । बिंगले स्वयं अपनी इच्छाका मालिक है, और वह स्वयं ही यहां नहीं आना चाहता । मैं तुमसे कोई बात न छिपाऊंगी । पत्रके एक अंशसे मुझे विशेष दुःख होता है, वह सुनो-

'मि. डारसी अपनी बहिनसे मिलनेको अधीर हो रहे हैं और सच तो यह है कि हम भी अधीर हो रहे हैं । मेरे विचारमें मिस डारसीके समान सुन्दर और पढी लिखी कोई कन्या नहीं और जो प्रेम मुझको और मेरी बहनको उससे है वह और बढ रहा है क्योंकि हमको आशा है कि शीघ्र ही वह हमारी बहन हो जायगी। मुझको स्मरण नहींहै कि मैंने तुमको पहले यह बात बताई या नहीं। परन्तु अब मैं तुमको यह बात बताना चाहती हूँ कि मेरा भाई मिस डारसीको बहुत अच्छा समझता है और बराबर मिलनेका अवसर होनेसे अवश्य ही प्रेम होजाएगा । मेरे भाईमें स्त्रियोंको आकर्षण करनेकी अद्भुत शक्ति है । इस लिए मेरी प्यारी बहन ! मुझको आशा है कि वह संबन्ध अवश्य हो जायगा जिससे हम सबको बहुत प्रसन्नता होगी ।'

जेन- 'बोलो लिजी ! क्या कहती हो । क्या इससे स्पष्ट नहीं है कि मिस बिंगले न चाहती है न आशा करती है कि मैं उसकी बहन हूंगी । प्रत्युत् उसको पूर्ण विश्वास हैं कि उसका भाई मेरी ओरसे पूर्ण उदासीन है और मेरे भावोंको समझते हुए वह मुझको पहलेसे यह बता देना चाहती है कि मैं कुछ आशा न रखूं। क्या इस पत्रका कुछ और आशय भी हो सकता है ?'

एलिजा,—'हां, मेरे अर्थ तुमसे सर्वथा भिन्न हैं, सुनोगी ?'

जेन- 'अवश्य।'

एलिजा.-'अच्छा सुनो । मिस बिंगले समझती है कि उसका भाई तुमसे प्रेम करता है वह चाहती है कि वह मिस डारसीसे विवाह करे। इसलिए वह लदन

जाकर उसको वहां रोक रखना चाहती है, और तुमको विश्वास दिलाना चाहती है कि उसका भाई तुम्हारी ओरसे उदासीन है।'

जेनने सिर हिला दिया।

एलिजा.—जेन! मेरा विश्वास करो। जिसने तुम दोनोंको साथ देखा है वह एकक्षण भी विश्वास नहीं कर सकता कि बिंगले तुमसे प्रेम नहीं करता। मिस बिंगले इतनी मूर्ख नहीं है कि वह यह न समझे। यदि मि. डारसीमें वह इससे आधा प्रेमभी पाती तो वह अपने विवाहके कपड़े बनवा छोड़ती। हम धनवान नहीं हैं इसलिए वह चाहती है कि मिस डारसीका विवाह उसके भाईसे हो, जिसमें बिना किसी कष्टके उसका विवाह मि. डारसीसे हो सके। इस चालमें उसको सफलता अवश्य प्राप्त होती यदि मिस बौरो उसकी राहमें न होती। मेरी प्यारी जेन! क्या तुम विचार कर सकती हो कि चूंकि मिस बिंगले तुमसे कहती है कि उसका भाई मिस डारसीको चाहता है और वह तुमको नहीं चाहता, तो यह मिस बिंगले की शक्तिमें है कि वह अपने भाईको तुमसे प्रेम करनेसे रोक सके।'

जेन—'मिस बिंगलेके विषयमें हम दोनोंकी सम्मति नहीं मिलती। तुह्मारे कथनानुसार तो मुझको निश्चिन्त रहना चाहिए। तुम्हारी बात सत्य नहीं हो सकती। मिस बिंगले कदापि मुझको धोखा न देगी और मैं केवल यही आशा कर सकती हूँ कि उसको स्वयं धोखा हो गया है।'

एलिजा.—ठीक है। विचार अच्छा है। मेरी बात न मानो तो यही विश्वास करो कि मिस बिंगलेको धोखा हो गया है।'

जेन—'मेरी प्यारी बहन! क्या मैं बिंगलेसे विवाह करके प्रसन्न हो सकती हूँ जब मैं यह जानती हूँ कि इसकी बहनें और मित्र यह चाहते हैं कि वह अन्य कन्यासे विवाह करें।'

एलिजा.—'इसका निर्णय कर लो। और यदि अच्छे प्रकार विचार करके तुम यह समझो कि यदि उसकी बहनोंका दिल दुखानेसे तुमको उसकी पत्नी होकर सुख न होगा तो मेरी सम्मति यह है कि तुम विवाह न करो।'

जेनने हंसते हुए कहा—'कैसी बातें करती हो। वह चाहे जितनी दुखी करें परन्तु मैं एक क्षण भी यह विचार नहीं कर सकती कि मैं बिंगलेका प्रस्ताव अस्वीकार कर दूं।'

एलिजा.—'मेरा भी यही विचार था।'

जेन— 'परन्तु यदि वह इन सरदियोंमें लौटकर यहां न आया तो न जाने क्या हो। छः महीनेमें तो सैकडों बातें हो सकती हैं।'

उसके वापिस न आनेका विचार तो एलिजाबेथकी समझ ही में न आता था। वह समझती थी कि यह मिस बिंगलेकी चाल है। और मिस्टर बिंगलेसे स्वतंत्र आदमीपर इसका प्रभाव नहीं पड सकता। उसने अपनी बहिनको भी यही समझाया। जेन भी आशा करने लगी कि बिंगले नीदरफील्डमें वापिस आकर उसकी हार्दिक इच्छाको पूर्ण करेगा।

उन्होंने यह निर्णय कर लिया कि मिसेज बेनटको केवल कुटुम्बके जाने का हाल बताया जाये और कुछ न कहा जाये। परन्तु इस समाचारसे भी वह घबरा उठी और बोली कि कैसे दुर्भाग्यकी बात है कि जब मित्रता गाढी हो रही थी, तभी वे लोग चल दिए। इस शोककारक घटनाके पीछे उसको इस विचारसे शान्ति हुई कि मि. बिंगले वापिस आकर उनके यहां भोजन करके विवाहका प्रस्ताव करेगा। और उसने यह निर्णय कर लिया कि उस दिन बहुत अच्छी २ चीजें पकाई जायेंगी।'

बाईसवां परिच्छेद

बेनट कुटुम्बका भोजन ल्यूकस कुटुम्बमें था, और उस दिन भी मिस ल्यूकस मि.कालिंससे बातचीत करती रही। एलिजाबेथने मिस ल्यूकसको धन्यवाद करते हुए कहा आज तुमने मुझको बचालिया। शारलोटने अपनी सखीको सान्त्वना देते हुए उत्तर दिया- मैं अपनेको भाग्यवान समझती हूँ कि मैं

तुम्हारे काम आई। एलिज़ाबेथ यह न समझती थी कि शारलोंट कितना आगे बढ चुकी है। एलिज़ा. का प्रयोजन तो केवल यह था कि शारलोटसे बातें करनेके कारण वह मेरी ओर ध्यान न देगा परन्तु मिस ल्यूकसकी चाल और ही थी। वह मि. कालिंसको अपनी ही ओर आकर्षित करना चाहती थी। और जब रात्रिको वह बिदा हुआ तो मिस ल्यूकसको सफलताकी पूर्ण आशा होचुकी थी। केवल संदेहकी बात यह थी कि वह बहुत शीघ्र ही वहांसे जानेवाला था। परन्तु मिस ल्यूकसने ऐसा विचार करनेमें मि. कालिंसकी स्वतन्त्रता और प्रेमकी अग्निके साथ घोर अन्याय किया। दूसरे दिन प्रातःकाल वह छिपकर ल्यूकसलाज पहुंचा ताकि वह अपनेको मिस ल्यूकसके चरणोंमें अर्पित करदे। उसे चिन्ता थी कि बेनट कुटुम्बवाले इस बातको तब तक न जानें जब तक पूर्ण सफलता न हो जाय। यद्यपि सफलताकी उसको पूर्ण आशा थी परन्तु मिस एलिजाके अनुभवने उसको निरुत्साहित कर दिया था। मिस ल्यूकसने खिडकीमेंसे उसको घरकी ओर आते हुए देखा। वह तुरन्त ही गलीमें जाकर उससे मिली। परन्तु उसको यह आशा न थी कि इसी समय सब कुछ ठीक हो जायगा।

थोडी ही देरमें जब मि. कालिंस की लम्बी वक्तृतायें समाप्त हुईं। सब बातोंका दोनोंके लिए सन्तोषजनक निर्णय हो गया। जब वे घरमें घुसे तो कालिंसने उससे प्रार्थना की कि किस दिन हमारा तुम्हारा विवाह होगा। मिस ल्यूकसने कहा कि कुछ दिन ठहर जाओ। उसने मि. कालिंसको उसके गुणों के कारण नहीं चुना था परन्तु वह किसीसे भी विवाह करनेको अधीर हो रही थी। सर विलियम और लेडी ल्यूकसको तुरन्त ही सूचना दी गई और उन्होंने अपनी सहमति प्रगट कर दी। मि. कालिंसकी वर्तमान दशा अच्छी थी और उन्नति करनेकी आशा थी। लेडी ल्यूकस गम्भीरतासे सोचने लगी कि मि. बेनट कब मरेंगे। सर विलियमने कहा कि जब कभी भी मि. कालिंस को लॉंगबोर्नकी सम्पत्ति मिले, उचित होगा कि हम लोग भी सेंट जेम्स चलें। सारा कुटुम्ब प्रसन्न था। छोटी लडकियोंको यह आशा थी कि हमारी भी एक दो साल पहले शादी हो जायेगी। और लडकों की यह चिन्ता, कि शारलोट

कुमारी ही मरेगी, जाती रही। शारलोट शान्त थी, वह सोच रही थी कि मि. कालिंस न तो समझदार हैं। उनके संग बैठना कष्टदायक है और मुझको उनसे सच्चा प्रेम नहीं,परन्तु फिर भी वे मेरे पति होंगे। मिस ल्यूकसका उद्देश्य विवाह था। इसलिए उसने इस बात की चिन्ता न की कि उसका पति कैसा था। २७ वर्षकी अवस्था हो चुकी थी, सुन्दरता बिलकुल न थी इसलिए उसने अपना विवाह होना ही एक भाग्य की बात समझी। उसको केवल कष्ट यह था कि एलिजाबेथसे यह बात कैसे कहूँगी क्योंकि एलिजा· अवश्य ही इस विवाह के विरुद्ध कहेगी। परन्तु उसका निश्चय पक्का था। इसलिये उसने सोचा कि मैं स्वयंही जाकर उसको इस बात की सूचना दूंगी। मि· कालिन्स से उसने प्रार्थना की कि आप अभी इस बातको लॉंगबोर्नमें प्रकाशित न कीजियेगा। कालिंन्सने वचन दे दिया। परन्तु उस वचनका पालन करना बहुत कठिन होगया क्योंकि घर पहुँचनेपर उससे बहुतसे प्रश्न हुए जिनको उसे टालना पड़ा, फिर वह अपने प्रेमकी सफलताको भी प्रकट करने के लिए उत्सुक हो रहा था। दूसरे दिन प्रातःकाल ही उसको जाना था इस लिए रातको ही उसने सबसे विदाई ली। मिसिज बेनटने बहुत ही नम्रतासे कहा कि जब आपको छुट्टी मिले आप अवश्य ही मिलें। हम लोग आपकी संगतमें बहुत प्रसन्न हुए।

कालिंस–'देवि! इस निमन्त्रणसे मैं बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझको ऐसी ही आशा थी। आप विश्वास रखें कि जितना शीघ्र संभव होगा मैं आऊंगा।'

सबको आश्चर्य हुआ और मि. बेनट जो उसका आना पसन्द नहीं करता था बोला। क्या आपके बार २ आनेसे लेडी कैथरीन तो क्रुद्ध न होंगी। अपने नातेदारोंके यहां नम्रता दिखाना तो कोई बात नहीं परन्तु अपनी संरक्षिकाको क्रोधित न करना चाहिए।

कालिंस–'श्रीमन्, आपके इस मित्रभावका मैं बहुत धन्यवाद करता हूँ. और बिना संरक्षिकाके पूछे मैं यहां कभी न आऊंगा।'

मि० बेनट–'आपको इस बातका बहुत ध्यान रखना चाहिए। सब बात कीजियेगा, परन्तु अपनी संरक्षिकाको क्रोधित न कीजियेगा। और यदि यहां आनेमें इस बातकी संभावना हो—जैसी कि अवश्य होगी– तो आप घरपरही ठहरें हम लोग बुरा न मानेंगे।'

कालिंस–'श्रीमन्! मैं आपका बहुत धन्यवाद करता हूँ, और मैं आपको इस अच्छे परामर्शके लिये और सब बातोंके लिए धन्यवादका पत्र भजूं।। और युवतियोंके लिए तो मेरी यही इच्छा है कि वे स्वस्थ और सुखी रहें। एलिजाबेथ भी सुखी रहें।

सब दिनमें फिर सोने गईं। सबको आश्चर्य था कि वह फिर शीघ्रही आयेगा। मिसिज बेनटका विचार था कि अब किसी छोटी लडकीसे वह प्रेम करेगा और उसको आशा थी कि मेरी उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लेगी। उसने मेरीकी बडी प्रशंसा मनमें की और यह सोचा कि मेरी इतनी चतुर तो नहीं परन्तु यदि पढने लिखनेमें उत्साह मिले तो वह भी बहुत चतुर हो जायेगी। दूसरे ही दिन प्रातःकाल इस आशापर पानी फिर गया। मिस ल्यूकस खाना खानेके बाद यहां आई और उसने चुपकेसे एलिजाबेथसे सब कुछ कह दिया।

एलिजाबेथ को यह विचार तो एक दो दिनसे हो रहा था कि मि. कालिन्स का खयाल है कि वह शारलोट को चाहते हैं परन्तु यह आशा उसको न थी कि शारलोट उसको उत्साहित करेगी। इसलिए आश्चर्य में आकर वह चिल्लाउठी—मि० कालिन्स से मंगनी। मेरी प्यारी शारलोट, असम्भव।"

मिस ल्यूकस के गंभीर भाव में इस प्रकार की बात सुनकर कुछ परिवर्त्तन होगया। परन्तु फिर शान्तिपूर्वक उसने कहा–इसमें आश्चर्य की बात क्या है। क्या मि. कालिन्स इतने गये गुजरे हैं कि कोई स्त्री भी उनसे प्रेम नहीं करसकती ?

एलिजाबेथ अब संभलगई थी और बहुत प्रयत्न करनेपर वह बोली कि अब हमारा तुम्हारा नाता होजायेगा और मैं इच्छा करती हूँ कि यह विवाह सुख-मय हो।

शारलोट–"मैं समझती हूँ कि तुम्हारे भाव क्या हैं ? तुमको आश्चर्य होगा कि अभी मि. कालिन्स तुमसे विवाह करना चाहते थे और फिर मैंने उनका प्रस्ताव कैसे स्वीकार करलिया परन्तु मेरे विचार तुम्हारे से नहीं। मैं केवल एक घर चाहती हूँ। और मि. कालिन्स का स्वभाव संबंध और आर्थिक दशा देखते हुए मुझको पूर्ण आशा है कि मेरा जीवन सुखमय होने की उतनी ही आशा की जासकती है जितनी किसी और की।

एलिजाबेथने धीरेसे कहा–'निस्संदेह। शारलोट अधिक देर न ठहरी। और एलिजाबेथ तब सोचने लगी कि कैसी आश्चर्यजनक घटना है कि तीन दिनके अन्दर दो-दो स्त्रियोंसे विवाहका प्रस्ताव। वह जानती थी कि मेरी और शारलोटकी बिवाहके विषयमें एक सम्मति नहीं है परन्तु वह फिर भी यही समझती थी कि इस प्रकारके सांसारिक सुखके लिए शारलोट प्रत्येक भाव का बलिदान कर देगी। उसकी दृष्टिमें शारलोट गिर गई और उसको यह भी दुःख था कि शारलोट कभी भी कालिंसके साथ विवाह करके प्रसन्न नहीं हो सकती।'

——

तेईसवां परिच्छेद

एलिजाबेथ अपनी मां और बहनोंके साथ बैठी सोच रही थी कि यह बात सच है या नहीं कि इतनेमें सर विलियमने घरमें प्रवेश किया। मिस ल्यूकसने मंगनीका समाचार सुनानेके लिए उन्हें भेजा था। अपने आपको बधाई देते हुए, उन्होंने सब बातें कह सुनाईं। सब लोग आश्चर्यमें आ गये और अविश्वास की दृष्टिसे उनको देखा। मिसिज बेनटने कहा कि आपकी कुछ भूल है और लीडिया चिल्ला उठी, आप ऐसी कहानी कैसे कह सकते हैं। मि. कालिंस तो लिजीसे विवाह करना चाहते हैं। सर विलियमने इस अपमानको सहन करते हुए कहा कि यह बात बिलकुल सच है और उनकी

असभ्यतापर बिलकुल ध्यान न दिया। एलिजाबेथने उचित समझा कि सर विलियम की इस कठिन अवस्थामें कुछ सहायता करे। इसलिए उसने कहा कि शारलोट इस मंगनीकी बात पहले ही मुझे सुना गई थी। उसकी मां और बहनें चिल्लाने लगीं, परन्तु लिजीने सर विलियमको बधाई दी। जेनने भी उसका अनुसरण किया और मि· कालिंसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि अवश्य ही विवाह सुखमय होगा।

मिसेज बेनट सर विलियमके सामने तो अधिक न बोली। परन्तु उसके जाते ही उन्होंने कहना आरंभ किया। प्रथम तो उन्होंने इस कहानीपर विश्वास ही नहीं किया। दूसरे उनको विश्वास था कि मि.कालिंसको धोखा दिया गया है। तीसरे उनको आशा थी कि यह बिवाह सुखमय नहीं हो सकता। चौथे उनको विश्वास था कि मंगनी छूट जायगी। इसके दो ही परिणाम निकलते थे कि इसके दुर्भाग्यका कारण एलिजाबेथ है और दूसरे मिसिज बेनटके साथ अत्याचार किया गया है। दिन भर इसीके विषयमें वह बातें करती रही। किसी प्रकारसे उसको शान्ति न मिली। दिनभरमें भी उसका क्रोध हल्का न हुआ। एक सप्ताहतक वह एलिजाबेथसे बिना घुडकी दिए नहीं बोलती थी। एक मास तक सर विलियम और लेडी ल्यूकससे अपमान किए बिना बातचीत न करती थी। और कई मासतक उसने मिस ल्यूकसको क्षमा न किया था।

मि. बेनट बिलकुल शान्त थे। उन्होंने कहा कि मेरा अनुभव बहुत अच्छा हुआ। मुझको यह जानकर प्रसन्नता है कि शारलोट जिसको मैं समझदार समझता था उतनी ही मूर्खा है जितनी मेरी स्त्री। और एलिजाबेथसे तो कहीं अधिक मूर्खा है।

जेन भी आश्चर्यमें थी, परन्तु उसकी हार्दिक इच्छा थी कि विवाह सुखमय हो। एलिजाबेथने इस बातको असम्भव नहीं समझा। किट्टी और लीडियाको मिस ल्यूकससे कोई ईर्ष्या न थी क्योंकि मि. कालिंस केवल पादरी थे। उनको तो केवल इस समाचारको मेरीटनमें फैलाना था। लेडी ल्यूकस मिसिज बेनटका जी तपाकर बहुत प्रसन्न थी, क्योंकि उनकी एक कन्याका

विवाह निश्चित हो गया था। और अब वह लँगबोर्न बहुधा अपनी प्रसन्नता प्रगट करने आया करती थी। यद्यपि मिसिज बेनटकी कडवी दृष्टि और असभ्य बातें प्रसन्नता दूर भगानेके लिए पर्याप्त थीं। शारलोट और एलिजाबेथके बीच में कुछ पर्दासा आगया था और वे परस्पर अधिक बातचीत न करतीं थी। एलिजाबेथको शारलोटकी समझमें बहुत संदेह होगया था और अब वह अपनी बहिन जेनको बहुत अच्छा समझती थी और उसके सुखके लिए चिन्तित थी। क्योंकि मि. बिंगलेको गए एक सप्ताह हो चुका था, और अभी उसके वापिस आनेका कोई समाचार न था।

जेनने मिस बिंगलेके पत्रका उत्तर तुरन्त ही दे दिया था, और उसके उत्तरकी आशामें दिन गिन रही थी। मि. कालिंसका धन्यवादका पत्र मंगलको आया। जिसमें उन्होंने ऐसी कृतज्ञता प्रगट की थी कि जैसी कोई सालभर रहनेपर प्रगट करें। इसके अनन्तर उन्होंने यह भी सूचना दी थी कि आपकी पडोसिन मिस ल्यूकससे मेरा विवाह स्थिर होगया है। मैं आजके पन्द्रहवें दिन वहां उपस्थित हूँगा। लेडी कैथरीनने इस विवाहसे सहमति प्रगट कर दी है और तुरन्त ही होनेके पक्षमें है। इसलिए मुझे आशा है कि शारलोट तुरन्त ही दिन नियत करके मुझको सुखी करेगी।

मि. कालिंसका हर्डफोर्डशायरमें आना मिसेज बेनटको अच्छा न लगा। अपने पतिके समान वह भी अब इस बातकी शिकायत करने लगी। बडे आश्चर्यकी बात है कि लँगबोर्नमें वह क्यों आता है और ल्यूकसलाजमें क्यों नहीं ठहरता। हम लोगोंको बडा कष्ट होता है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं, हमारे यहां जगह नहीं। यह सब मिसिज बेनट जब तब बडबडाने लगी। मि. बिंगलेकी अनुपस्थितिने उसके दुःखको और बढा दिया। जेन और एलिजाबेथ को भी अब इस बातकी चिन्ता होने लगी थी क्योंकि यह समाचार मेरिटनमें फैल गया था कि सरदीमें वह नीदरफील्ड वापिस नहीं आयेगा। मिसिज बेनट यह समाचार सुनकर आपेसे बाहर हो गई, और कहने लगी कि यह लज्जा-जनक सफेद झूट है।

एलिजाबेथको भी अब भय होने लगा था। बिंगलेको तो वह उदासीन न समझती थी परन्तु उसको भय यह था कि उसकी दोनों बहनें उसको यहां आनें न देंगी। यद्यपि यह विचार उसको भला न लगता था क्योंकि इससे जेनके सुखमें बाधा पडनेका भय था और प्रेमकी सत्यतामें संदेहजनक था। फिर भी उसे बार बार यह विचार आने लगा। उसकी दोनों बहनोंके संयुक्त प्रयत्नसे, उसके शक्तिमान मित्र डारसीके भयसे, मिस डारसीके आकर्षणसे, तथा लंदनके खेल-तमाशोंके मोहसे शायद वह जेनसे विरक्त हो जाये।

जेनको तो यह समय बहुत ही दुःखमय था। जो कुछ उसकी इच्छायें थीं, उनको वह छिपाना चाहती थी। इस विषयमें वह एलिजाबेथसे भी कुछ बातचीत न करती थी। परन्तु उसकी मां कहां रुकनेवाली थी। वह प्रत्येक घण्टे बिंगले ही की बातचीत करती थी। उसके आगमनके लिए अधीरता प्रगट करती थी। जेनसे कहती थी कि यदि वह न आया तो तुम्हारे वास्ते बडा अत्याचार होगा। परन्तु जेन सब आक्रमणोंको शान्ति-सहित सहन कर रही थी।

मि. कालिंस सोमवारको आ डटे। लांगबोर्नमें अबकी बार उनका वह सत्कार न हुआ जो पहले हुआ था। वह भी खुश थे कि अब मुझपर कोई ध्यान नहीं देता। और सब भी खुश थे क्योंकि वह दिनका अधिक भाग ल्यूकसलाज में बिताते थे और बहुत रात गए वह लांगबोर्न वापिस आकर अनुपस्थितिकी क्षमा मांगते थे।

मिसेज बेनटकी अवस्था करुणाजनक थी। इस विवाह की बातचीत सुनकर वह पागलसी हो जाती थी। जहां कहीं वह जाती थी यही चर्चा थी। मिस ल्यूकस तो उसकी दृष्टिमें कांटा हो रही थी, क्योंकि वही उसके पतिके मरनेके अनन्तर उसके गृहकी अधिकारिणी होगी। जब कभी शारलोट उनसे मिलने आती थी, मिसेज बेनट यही समझती थी कि इस मकानपर कब्जा करनेके वह घण्टे गिन रही है। और जब कभी मिस ल्यूकस मि, कालिंससे धीरेसे बात करती थी, तो मिसिज बेनट यही समझती थी कि वे परस्पर

परामर्श कर रहे हैं कि मि. बेनटके मरनेके बाद कैसे इन सबको यहांसे निकालेंगे। इन सब बातोंका रोना उसने अपने पतिसे खूब रोया।

मिसिज बेनट–"मि.बेनट बडेही दुःखकीबात है कि शारलोट इसघरकी मालाकिन होगी। मैं यहांसे निकाली जाऊंगी और वह मेरा स्थान लेगी।"

मि. बेनट– "मेरी प्यारी! इन बातोंपर क्यों विचार करती हो, संभव है कि तुम मेरे पहलेही मर जाओ।" मिसिज बेनटको यह बात अच्छी न लगी और वह पहलेके ही प्रकार बोलती रही। "मैं इस बातको सहन नहीं करसकती कि वह सब सम्पत्ति ले जाये। यदि यह बात न होती तो मुझे कोई चिन्ता न थी।"

मि. बेनट–"किस बात की चिन्ता।"

मिसिजबेनट–"किसी बात की नहीं।"

मि. बेनट–"ईश्वर को धन्यवाद है कि तुम इतनी मूर्ख नहीं हो।"

मिसिज बेनट–"मैं धन्यवाद नहीं दे सकती। हमारी सब सम्पत्ति दूसरा लेजाए यह मैं नहीं समझ सकती। मि. कालिंस कौन है जो वह सब ले जाये।"

मि. बेनट–"तुम्हीं सोचो।"

चौबीसवां परिच्छेद

मिस बिंगलेके पत्र ने आकर सब संदेहका अन्त कर दिया। आरंभ ही में लिखाथा कि सर्दीके लिये हम लोगोंने लन्दनहीमें रहना नियत किया है। और हमारे भाईको इस बातका शोक है कि चलतेंहुए वह आप लोगोंसे मिल न सके। आशा सर्वथा भंग हो गई और जब जेनने पूरा पत्र पढा तो उसमें कोई विशेष बात न थी, जिससे उसको कुछ सुख मिलता। मिस डारसी की

प्रशंसा बहुत थी। उसके गुणों का वर्णन था,और यह लिखा था कि बिंगलसे उसका अनुराग हो गया है। आशा है कि शीघ्र ही हम लोगों की इच्छा पूर्ण होगी। मि॰ डारसी से हमारे भाई से बहुत प्रेम है, और आजकल हम लोग मि॰ डारसी के लिये नया फर्नीचर मोल लेने में लगे हुए हैं।

एलिजासे जेनने पत्रका सब हाल कहदिया। एलिजाबेथके हृदय में अपनी बहनकेलिये चिन्ता और उनलोगोंके लिये घृणा उत्पन्न हुई। इस बातका वह विश्वास न करती थी कि बिंगलेसे मिस डारसीका अनुराग हो गया है। अब भी उसको इस बातमें तनिकसा भी सदेह न था कि बिंगले यथार्थमें जेनसे प्रेम करता है। यद्यपि वह बिंगलेको अच्छा समझती थी, परन्तु इस समय इसको उसपर क्रोध था। कुछ घृणा भी थी कि कैसा बिना सिद्धान्तका आदमी है। चालबाज मित्रोंका दास हो रहा है। और उनको प्रसन्न करनेकेलिये अपने सुखका बलिदान कर रहा है। यदि उसने अपनेही सुखका बलिदान किया होता तो उसको अधिकार था, परन्तु उसको समझना चाहिये कि उसके सुखके साथ मेरी बहनका सुखभी जारहा है। इस विषयपर सोचनेकेलिये बहुत समय चाहिये परन्तु सोचकर भी क्या हो सकता है। चाहे बिंगलेका प्रेम अब न रहा हो। चाहे उसके मित्रोंकी उदासीनताने उसको दबा दिया हो। चाहे उसको यह विदित हो कि जेन उससे प्रेम करती है। जो कुछ भी हो मुझे उसके विषय में अपनी सम्मति बदलनी पड़ेगी। और मेरी बहन को फिर शान्ति प्राप्त न होगी।

एक दो दिन बीतनेके बाद जेनने अपने दिलका हाल एलिजाबेथ से कहा। जब मिसिज बेनट मिस बिंगले की जी खोलकर बुराई करके गई तो उसने कहा अच्छा होता यदि मेरी प्यारी माताको अपनी जबान पर काबू होता। मेरी माता नहीं समझती कि उनको बुरा कहनेसे मुझको कितना दुःख होता है। परन्तु मैं मरूंगी नहीं। अधिक दिन यह दशा नहीं रहसकती। मैं उसको भूल जाऊंगी और फिर हम पहले की भाँति रहेंगे।

एलिजाबेथ ने अपनी बहनकी ओर अविश्वासकी दृष्टि से देखा।

जेनके मुखका रंग बदल गया और वह बोली। तुम मेरी बातको सच क्यों नहीं मानतीं, सम्भव है कि वह मेरे ध्यानमें रहे। मैं उसको बहुत अच्छा समझूं परन्तु इससे अधिक कुछ नहीं। मुझको कोई आशा और कोई भय नहीं है। मैं उसको बुरा नहीं समझती। ईश्वरको धन्यवाद है कि मुझे कोई कष्ट नहीं। थोडे दिनोंमें मैं ठीक हो जाऊंगी। मुझको यह सन्तोष है कि मेरी ओरसे जो भूल हुई इससे मेरे अतिरिक्त किसीको हानि न पहुँची।

एलिजा०—"मेरी प्यारी जेन! तुम देवी हो, तुम्हारी उदासिनता, तुम्हारा भोलापन स्वर्गीय है। मैं तुमसे क्या कहूं? मैंने कभी तुम्हारे साथ न्याय नहीं किया। जैसा तुमसे प्रेम करना चाहिए वैसा नहीं किया।

जेन—मुझमें कोई असाधारण गुण नहीं। यह तुम्हारा प्रेम है, जो तुम मेरी इतनी प्रशंसा करती हो।

एलिजा०—नहीं, यह बात ठीक नहीं। तुम सारे संसारको अच्छा समझती हो। और यदि मैं किसीकी बुराई करूं, तो तुमको बुरा लगता है। मैं चाहती हूँ कि तुम्हारा दृष्टिकोण ठीक हो, परन्तु तुम नहीं मानतीं। मैं नहीं चाहती कि तुम सारे संसारको अच्छा न समझो। बहुतही थोडे आदमी हैं, जिनसे मैं प्रेम करती हूँ। और उनसे भी कम हैं जिनको मैं अच्छा समझती हूँ। जितना ही संसारको देखती हूँ, उतना ही मुझको असन्तोष होता है। मानवचरित्रमें असम्बद्धता है; इस बातका विश्वास होता जाता है। मुझको यह विदित होता है कि मनुष्यपर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। मुझको इस समय दो उदाहरण मिले हैं। एक के विषयमें तो कुछ न कहूँगी। दूसरा शारलोटका विवाह है। कुछ समझमें नहीं आता!

जेन—"मेरी प्यारी लिजी! इन बातोंसे तुमको सुख प्राप्त न होगा। कुछ तो दूसरोंकी दशाका भी ध्यान रखा करो। मि० कालिन्स की प्रतिष्ठित नौकरी और शारलोटकी समझका ध्यान करो। वह एक बडे कुटुम्बमें उत्पन्न हुई है। उसको अधिक रुपया पिताके यहांसे नहीं मिल सकता और संभव है कि वह मि० कालिंससे प्रेम भी करती हो।"

एलिजा—" तुमको खुश करने को जो चाहे कह दूं। परन्तु मैं भले प्रकार समझती हूँ कि शारलोट को तनिक भी उससे प्रेम नहीं। यदि ऐसा होता तो मैं उसको न समझ सकती ? मि० कालिंस एक घमंडी, पाखंडी मूर्ख हैं। तुम भी समझती हो मैं भी समझती हूँ। तुम समझ सकती हो कि उससे विवाह करके कोई स्त्री सुखी नहींहो सकती। शारलोट ल्यूकसके लिये तुम अपना सिद्धांत नहीं बदल सकतीं। स्वार्थको तुम समझ नहीं कह सकतीं।"

जेन—" तुम्हारी भाषा जरा कटु है, और मुझको आशा है कि जब तुम उन दोनोंको सुखी देखोगी तो तुम्हारे भावमें परिवर्तन हो जावेगा। तुमने दो उदाहरणोंकी चर्चा की थी। ईश्वरके लिये उस मनुष्यकी बुराई न करना, और न यह कहना कि तुम्हारी दृष्टिमें वह गिर गया है। हमको यह न समझना चाहिए कि जानबूझकर हमको हानि पहुँचाई गई है। हंसमुख मनुष्य बहुधा विनाकुछ समझेहुए सीमासे बाहर हो जाते हैं। हमारा अभिमान हमको धोखा देता है, और स्त्रियाँ साधारण बातको प्रेम समझ लेती हैं।"

एलिजा—" और पुरुष यही चाहते हैं।"

जेन—" यदि ये बातें जानबूझकर की जायें तो अन्याय है, परन्तु मेरी समझमें संसारमें इतनी चालबाजी नहीं, जितना लोग समझते हैं।"

एलिजा—" मैं मि० बिंगलेको चालबाज नहीं कहती। बिना किसी हानि पहुंचानेका विचार किएहुए भूल भी हो सकती है। भूलसे दूसरोंके भावोंको समझनेकी उदासनितासे और सिद्धांतके पक्के न होनेसे भी ऐसी बात हो सकती है।"

जेन—" तो तुम इस बातका क्या कारण समझती हो ?"

एलिजा—"अन्तिम बात ही इसका कारण है। यदि मैं अधिक कहूँगी तो तुमको बुरा लगेगा।"

जेन-"तो तुमसमझती हो कि उसकी बहनोंने ही उसको रोकलिया है?"

एलिजा—" हाँ, उसके मित्रसे मिलकर यह काम हुआ है।"

जेन—मैं इसपर विश्वास नहीं करती; उनको इससे क्या लाभ ? वे

उसका सुख चाहती हैं। और यदि वह मुझसे प्रेम करता है तो दूँसरी स्त्री उसका प्रेम प्राप्त नहीं कर सकती।"

एलिजा—तुम्हारी भूल है, उसके सुखके अतिरिक्त वह और भी बातें चाह सकती हैं। संभव है वे चाहती हैं कि उसका धन बढे इसलिए वह मिस डारसी से उसका विवाह करना चाहती हैं जिससे कि अच्छे कुटुम्ब से उनका नाता हो।"

जेन—उनकी इच्छा तो मिस डारसीसे विवाह कराने की है। परन्तु उनके भाव अच्छे होंगे। विवाहका कारण केवल धन न होगा। मिस डारसी को वह अधिक समयसे जानती हैं इसीलिये वह मुझसे अधिक उससे प्रेम करती हैं। परन्तु उनकी इच्छा जो कुछ हो वह कभी भी अपने भाई की इच्छा का विरोध न करेंगी। कौन बहन है जो इस मामलेमें अपने भाईको स्वाधीनतासे काम न करने देगी? यदि वे समझतीं कि वह मुझसे प्रेम करता है तो वे हम दोनोंको अलग न करतीं। और यदि वह प्रेम करती होता तो उनको सफलता न होती। तुम्हारे विचारसे तो यही परिणाम निकाला जा सकता है कि सब लोग अस्वाभाविक प्रकारसे काम करते हैं। मुझको अपनी भूलपर लज्जा नहीं आती, परन्तु उसकी बहनोंको बुरा समझने में दुःख होता है।

एलिजाबेथने इसका कुछ विरोध न किया और इसके अनंतर फिर कभी बिंगलेका नाम उनकी बात-चात में न आया।

मिसेज बेनट सर्वदा उसीकी बातें करती थी और रोज ही एलिजाबेथ समझाती थी कि जेनसे वह प्रेम नहीं करता था। साधारण अनुराग था जो सामने न होनेके कारण चलागया। परन्तु मिसेज बेनट की तो प्रति-दिन वही कहानी थी। मिसेज बेनटको यही विचार संतोष देता था कि गर्मीमें वह फिर यहाँ आयेगा।

मि. बेनट इस बातको दूसरी दृष्टिसे देखते थे। उन्होंने एकदिन लिजी से कहा—"तुम्हारी बहनको प्रेममें असफलता हुई इसलिए मैं उसको बधाई

देता हूँ। विवाह होनेमें बहुत सुख और उससे कुछ कम सुख प्रेममें असफलता होनेसे स्त्रियोंको होता है। कुछबात विचार करनेकोलिये मिलजाती है। और सखियों में उसका आदर बढ़जाता है। अब तुम्हारी बारी कब है? जेनसे तुम पीछे नहीं रहसकतीं। अब तुम्हारा समय है। मेरीटनमें इतने अफसर आये हुए हैं, जो इस ग्रामकी सब युवतियोंको निराश कर सकते हैं। तुम विकमको चुनो, वह सुंदर है और तुमको शीघ्रही छोड़ देगा।"

एलेजा–"धन्यवाद, परन्तु मुझको साधारणही मनुष्यसे सन्तोष हो जायेगा। हम सब जेनके समान भाग्यशाली नहीं हो सकेत।"

मि. बेनट–सच है, परन्तु तुम्हारी माता वहुत अच्छी है, और जब कभी तुमको ऐसा अवसर आयेगा उसका खूब ढिंढोरा पीटेगी।

मिस्टर विकमकी संगतिने लॉंगबोर्न-कुटुम्बपर इन पिछली घटनाओं का रहस्य प्रगट करदिया। जो कुछ एलिजाबेथसे उसने मि. डारसीके विषयमें कहा था अब प्रत्येक घरमें उसीकी चर्चा थी। सब लोग कहते थे कि हम कितने समझदार हैं कि विना कुछ सुनेही डारसीसे पहलेही घृणाकरते रहे।

केवल जेन ही थी जो समझती थी कि कोई बात ऐसी है जो हम लोगोंको नहीं मालूम है। डारसी इतना बुरा मनुष्य नहीं हो सकता। कोई भूल अवश्य है। परन्तु सबने मि. डारसी को सबसे बुरा आदमी हीसमझा।

पच्चीसवां परिच्छेद

एक सप्ताह प्रेमके सुखका आनन्द लूटकर मि०कालिन्स को शारलोटसे विदा लेनी पड़ी। वियोगके दुःखमें कुछ इस बातसे कमी होगयी थी कि मि० कालिन्सको दुलहिनके स्वागतका प्रबंध करना था। क्योंकि उसको आशा थी कि हर्टफोर्डशायरमें पहुंचकर वह दिन नियत होगा जिस दिन विवाह होकर वह परम सुखी हो जायगा। लांगबोर्नके नातेदारोंसे

उसने गंभीरतासे बिदा मांगी और बेनट कुटुम्बकी युवतियोंको सुखी और स्वस्थ रहनेकी इच्छा प्रगट की और उनके पिताको धन्यवादका पत्र भेजनेका वचन देकर चलते हुए।

दूसरे सोमवारको मिसिज बेनटके भाई और भावज अपना क्रिसमस गुजारनेके लिये लाँगबोर्न आए। मि. गार्डनर समझदार सज्जन थे। अपनी बहनसे स्वभाव और शिक्षामें बहुत बढे हुए थे। नीदरफील्डकी स्त्रियोंको आश्चर्य होता था कि व्यवसायी पुरुषभी इतना समझदार हो सकता है मिसिज गार्डनर जो मिसिज बेनट और मिसिज फिलप्ससे बहुत छोटी थी बहुत समझदार और सुन्दर स्त्री थी। लांगबोर्नकी युवतियाँ उसको बहुत चाहती थीं। वे दोनों उसपर विशेष अनुराग रखती थीं। कभी २ वे उसके संग शहरमें भी रह आती थीं।

मिसिज गार्डनरका पहला काम तो यह हुआ कि उन्होंने उपहार बांटे। उसके बाद सबसे नये फैशनका चर्चा किया। इसके अनन्तर उसकी बारी भी सुननेकी आई। मिसिज बेनटने अपने दुखोंकी कहानी कहनी प्रारम्भ की कि उसकी दो लडकियोंका विवाह किस तरह होते होते रह गया।

मिसिज बेनट– मैं जेनको अपराधी नहीं ठहराती। क्योंकि जेन तो विवाह करने को तत्पर थी, भाग्य ही ने साथ न दिया। परन्तु हे बहिन ! लिजी को तो देखो। यही हठ न करती तो इस समय तक मि० कालिन्सकी पत्नी होगई होती। इसी कमरेमें उसने विवाहका प्रस्ताव किया था, परन्तु इसने नांही कर दी। उसका परिणाम यह हुआ कि मेरी पुत्रियोंसे पहले लेडी ल्यूकसकी पुत्रीका विवाह हो जायगा और लाँगबोर्नकी सम्पत्ति तो चली ही जायगी। बहिन ये ल्यूकस बडे चालबाज हैं। "जो कुछ मिले सब हडप कर जायें" यह कहते हुए मुझे दुःख होता है। परन्तु सच बात कहनी ही पडती है।: मेरे कुटुम्ब वालोंने ही मुझको दुःखी किया और मेरे पडौसी ऐसे हैं जो अपने भले के सामने किसीकी चिन्ता नहीं करते। तुम्हारे आनेसे इस समय बडी शांति मिली। और मुझको लंबे आस्तीनोंका फैशन सुन कर बडी खुशी हुई।

मिसिज गार्डनरको यह समाचार जेन और एलिजाबेथके पत्र द्वारा पहले ही मालूम हो चुका था। उसने अपनी भतीजियों पर दया करके इस विषयको टाल दिया।

जब एलिजाबेथसे वह अकेलेमें मिली तो उसने कहा-जेन के लिए वर अच्छा था मुझको उसके चले जानेका शोक है परन्तु ऐसा बहुधा हुआ करता है। मि० बिंगलेके समान युवक एक सुन्दरी कन्यापर बडी ही जल्दी आसक्त हो जाते हैं। परन्तु यदि अलग हो जायें तो जल्दी भूल भी जाते हैं।

एलिजा-" दिलके बहलानेके लिये तो यह विचार अच्छा है, परन्तु यहाँ तो युवक भूल नहीं गया है। यहां तो मित्रोंने उसको बहकाया है। ऐसा बहुत कम होता है कि मित्रोंके कहनेसे एक स्वतंत्र युवक उस कन्याको भूल जाये जिससे थोडेही दिन पहले वह अत्यन्त प्रेम करता था।"

मिसिज गार्डनर-" अत्यन्त प्रेम, यह वाक्य तो बहुत पुराना हो गया है। इसके कुछ अर्थ नहीं। यह तो आधे घण्टेकी जानपहचानके लिए भी और सच्चे प्रेमकेलिए भी प्रयोगमें लाया जाता है। कृपया बताओ मि. बिंगले का प्रम कैसा 'अत्यन्त' था।

एलिजा-" मैंने तो ऐसा प्रेम नहीं देखा। वह तो दूसरे मनुष्योंसे उदासीन था और इसीमें लिप्त था। अपने ही नाचमें उसने दो तीन युवतियोंको क्रोधित कर दिया, क्योंकि उनके संग नाचने की प्रार्थना न की। मैंने स्वयं दो बार उनसे कहा पर कोई उत्तर न मिला। क्या इससे अच्छे लक्षण भी हो सकते हैं? क्या सब लोगोंसे रूखापन बर्तना एकसे ही प्रेम करने का सार नहीं है।"

मिसिज गार्डन-" हां, उसी प्रकारके प्रेमका सार है, जैसा मैं समझती हूँ। मुझको शोक है कि जेनका स्वभाव ऐसा है कि वह उसको न भूलेगी। अच्छा होता कि तुम्हारे सँग ऐसा व्यवहार हुआ होता। तुम उसको बहुत जल्दी भूल जातीं। मैं चाहती हूँ कि जेनको अपने साथ लेती जाऊं। हृदयके परिवर्तनसे और घरसे निश्चिंत होनेपर कदाचित् उसे कुछलाभ हो।

एलिजाबेथ प्रस्ताव सुन कर बहुत प्रसन्न हुई। उसको आशा थी कि जेन भी इसको स्वीकार कर लेगी।

मिसिज गार्डनर-"मुझको आशा है कि इस युवाके विचारसे वह मेरे संग जानेसे नाहीं न करेगी। हम लोग नगरमें इतनी दूर रहते हैं। हमारे सम्बन्धियोंसे और उनके सम्बन्धियोंसे कोई सम्बध नहीं है। हम लोग इतना कम बाहर निकलते हैं कि वहां इसके मिलनेकी कोई संभावना नहीं हो सकती यदि वह स्वयं उससे मिलने न आवे।"

एलिजा०-और यह बात बिलकुल असंभव है क्योंकि वह अपने मित्रकी संरक्षा में है। मि० डारसी कभी भी उसको जेनसे मिलने न देगा। मेरी प्यारी मामी तुमने यह बात कैसे कह दी! मि० डारसीने ग्रेस चर्च स्ट्रीट का नाम अवश्य सुना होगा परन्तु वह वहां प्रवेश करके वहांकी अपवित्रता से शुद्ध होनेके लिये एक महीनेका प्रायश्चित्त करना उचित समझेगा। और मि. बिंगले कभी उसके बिना चौखट से बाहर पैर नहीं निकालते।"

मिसिज गार्डनर—"यह तो अच्छा ही है, तो फिर वे कभी न मिलेंगे। पर क्या जेनका मिस बिंगलेसे पत्रव्यवहार नहीं है? वह तो अवश्य आयेगी।"

एलिजाबेथ-"वह तो यह सुनकर पहचानकी ही इतिश्री कर देगी।"

एलिजाबेथने कहनेको तो कह दिया पर उसकी समझमें न आता था कि यह कैसे होसकता है कि वे एक दूसरेसे न मिलें। संभव है उसका प्रेम फिर उमड़ पड़े और जेनकी सुन्दरता, उसके मित्रके प्रभावपर विजय प्राप्त करले। जेनने अपनी मामीका निमन्त्रण स्वीकार किया। और उसने सोचा कि जब मि. बिंगले घरपर न होंगे तो कभी २ उनकी बहनोंसे मिल आया करूंगी।

गार्डनर कुटुम्ब लॉंगबोर्न में एक सप्ताह ठहरा। प्रतिदिन ही निमन्त्रण रहता था। कभी फिलिप्स कुटुम्ब में, कभी ल्यूकसकुटुम्ब में भोजन होता था। मिसिज बेनटने अपने भाईबहनके भोजनका ऐसा प्रबन्ध किया कि उनको कभी अपनेही घरके लोगोंके संग अकेले बैठकर खानेको न

मिला। जब घरपर भोजन होता था तो कुछ फौजी अफसर भी बुलाये जाते थे। विकम तो अवश्य ही आता था। मिसिज गार्डनरने देखा कि एलिजाबेथ और विकममें कुछ अनुराग है। पर उसको कुछ बेचैनी न हुई क्योंकि वह अनुराग प्रेमकी श्रेणी तक न पहुचा था। उसने सोचा कि हर्डफोर्डशायरसे विदा होनेके पहले वह एलिजाबेथको इस विषयमें समझाती जायेगी कि इस अनुरागको बढाते जाना उचित नहीं।

मिसिज गार्डनरको विकमसे एक और आनन्द प्राप्त होता था। दस या बारह वर्ष हुए विवाहके पहले मिसिज गार्डनर डारबीशायरके उसी भाग में रहतीं थी जहां विकमका निवासस्थान था। इसलिये वह वहांकी चर्चा किया करते थे। यद्यपि विकम डारसीके पिताके मरनेके अनन्तर अर्थात् पांच वर्षसे वहां नहीं गया था, फिर भी वह अपने पुराने मित्रोंके विषयमें नये समाचार दे सकता था।

मिसिज गार्डनर पैम्बरले देख चुकी थी; और मि० डारसीके पिताको भली प्रकार जानती थीं। इसीलिये उसीपर बहुधा बात-चीत हुआ करती थी। विकम पैम्बरलेकी छोटीसी छोटी वस्तुका वर्णन कर सकता था और डारसीके पिताकी प्रशंसा करता था। मि० डारसीके वर्त्तमान व्यवहारको सुनकर मिसिज गार्डनरने यह स्मरण करनेका प्रयत्न किया कि जब यह बच्चा था तो इसकी प्रसिद्धि कैसी थी। उसको याद पडा कि उस समय भी लोग इसको अहंकारी और मुंहचटा कहा करते थे।

छब्बीसवां परिच्छेद

मिसेज गार्डनरने अवसर मिलनेपर एलिजाबेथसे कहा—"लिजी! तुम समझदार युवती हो इसलिये मुझे भय नहीं कि मेरे समझानेके उलटे अर्थ लगाकर तुम विकमसे प्रेम करने लगो। मैं गम्भीरतासे कहती हूँ कि

तुमको होशियार रहना चाहिये। कोई ऐसा प्रेम न कर बैठना कि फिर धन का अभाव होनेके कारण तुम्हें पश्चात्ताप करना पड़े। मुझे विकमके विरुद्ध कुछ नहीं कहना है। वह भला मानस प्रतीत होता है। यदि उसके पास धन होता तो अच्छाही था कि तुम उससे विवाह करतीं। परन्तु इस दशामें तुमको अपनेको रोकना ही चाहिए। तुम समझदार हो और मुझे आशा है कि तुम उस समझका उपयोग करोगी। तुम्हारा पिता तुम पर बहुत भरोसा रखता है। तुम्हें चाहिये कि उसे निराश न करो।"

एलिजा-"मेरी प्यारी मामी। यह विषय अवश्य गंभीर है।"

मिसिज गार्डनर—"हाँ, और मैं आशा करती हूँ कि तुम भी गम्भीरतासे ही इस पर विचार करोगी।"

एलिजा—"अच्छा तो आप न डरें। मैं अपनेको रक्षित रखूंगी और जहाँ तक हो सकेगा विकमको भी अपनेसे प्रेम न करने दूंगी।"

मिसेज गार्डनर-"एलिजाबेथ ? तुम गम्भीर नहीं हो।"

एलिजाबेथ-"कृपा करें। मैं फिर प्रयत्न करूंगी। इस समय तो मैं मि. विकमसे प्रेम नहीं करती, परन्तु उसका सा मनुष्य मैंने आजतक नहीं देखा। और यदि वह मुझसे आकर्षित हो जाये तो ? मैं चाहती तो हूँ कि वह प्रेम न करे क्योंकि मैं उसका ऊंच-नीच समझती हूँ। घृणित मि. डारसी। मुझको बडा दुःख होगा यदि मेरे पिता मुझमें विश्वास करना छोड दें। मेरे पिता भी मि. विकमके पक्षपाती हैं। संक्षेपमें यह है कि मुझको बडा दुःख होगा यदि मेरे कारण आप लोगोंमेंसे किसीको अप्रसन्नता हो। परन्तु जब हम रोज देखते हैं कि युवक और युवती धन के अभावका विचार न करके परस्पर प्रेममें फंस जाते हैं तो मैं किस प्रकार से आपको कोई वचन दे सकती हूँ कि मैं अपनी और साथिनोंसे अवसर आने पर अधिक बुद्धि दिखाऊंगी। मैं यह भी कैसे समझूं कि बढतेहुये प्रेम की लहरको रोकना ही बुद्धि है। केवल मैं इतना कहसकती हूँ कि मैं

शीघ्रता न करूंगी। जब मैं उसके साथ रहूँगी, तो मैं कुछ इच्छा न करूंगी जहाँतक हो सकेगा अपनेको रोकूँगी।"

मिसेज गार्डनर—"अच्छा होगा कि हम उसका यहाँ आना जाना कम कर दें और लिजी तुम अपनी माँको यह याद न दिलाओ कि वह भी बुलाया जाये।"

एलिजाबेथ ने हंसते हुये कहा—"जैसे मैंने उसदिन किया था। अच्छा मैं अब याद न दिलाऊंगी। परन्तु वह यहाँ बहुत नहीं आता। आपके कारण इन दिनों कुछ उसका आना–जाना रहा क्योंकि मेरी माता आप लोगोंके मन बहलानेकेलिये लोगोंको बुलाती है। अच्छा मैं आपसे सत्य कहती हूँ कि मैं बुद्धिसे काम लूंगी, आशा है कि आप अब निश्चिन्त हो गई होंगी।"

उसकी मामीने कहा कि "हाँ" और एलिजाबेथने उसका धन्यवाद किया।

मि॰ कालिंस जेन और गार्डनर कुटुम्बके जानेके अनन्तर हर्डफोर्डशायर पहुंचे। परन्तु अबकी उनके आनेसे मिसिज बेनटको कोई कष्ट न हुआ, क्योंकि वे ल्यूकस कुटम्ब में ठहरे। उनके विवाहका दिन पास आरहा था और मिसेज बेनट उसको निश्चित समझकर उदासीन होगई थी। वह चिढकर यह भी कह देती थी कि मेरी इच्छा है कि ये सुखी रहें। बृहस्पतिवार को विवाह होना था, और बुधवारको मिस ल्यूकस बेनट कुटुम्बमें मिलने आई। एलिजाबेथको अपनी माँका व्यवहार अच्छा न लगा और वह चलतेहुए शारलोटके संग नीचे न गई।

शारलोट—"मुझको आशा है कि तुम पत्र लिखती रहोगी।"

एलिजा.—"अवश्य।"

शारलोट—"एक और मेरी इच्छा हैं। तुम हमारे यहां आओगी।"

एलिजा—"हर्डफोर्ड शायरहीमें हमलोग मिलते रहेंगे।"

शारलोट—"बहुत दिन मुझको वहाँ रहना पडेगा, इसलिए बचन दो कि तुम हंसफोर्डमें आओगी।"

एलिजाबेथ उससे नांही न कर सकी। परन्तु उसको उसके यहाँ जानेमें कोई विशेष आनन्द नहीं था।"

शारलोट-'मेरिया और मेरे पिता मार्चमें मेरे यहाँ आवेंगे, तुमभी उनके साथ आ जाना। तुम मुझको उनसे कम नहीं हो।"

विवाह हो गया। दूल्हा और दुलहिन गिरिजेसे हंसफोर्डकी ओर चले गये। और लोगोंमें परस्पर बातचीत होती रही। एलिजाबेथको अपनी सखीके पत्र मिलते रहे, परन्तु वह उत्तरमें अपने दिलका सच्चा हाल न लिख सकती थी, क्योंकि वह समझती थी कि अब सब प्रेम हवा होगया होगा। और वह पत्र केवल अपने पुराने अनुरागके विचारसे लिख देती थी। अब तो एलिजा-बेथको उससे कोई प्रेम नहीं रहा था। उसको शारलोटके पत्र पानेकी बड़ी उत्सुकता थी, क्योंकि वह जानना चाहती थी कि उसका नया घर कैसा है, लेडी कैथरीन कैसी स्त्री है और उसको कितना सुख है। एलिजाबेथको जैसी आशा थी वैसेही पत्र मिले। शारलोट सुखी थी उसकी प्रसन्नताका अच्छा प्रबंध था और प्रत्येक बात प्रशंसनीय थी। मकान, फरनीचर, पड़ौस, सड़कें सभी अच्छी थीं। लेडी कैथरीनकी मित्रता प्रशंसनीय थी। उसका वर्णन मि० कालिंसने जो चित्र वहाँका खींचा था उसके अनुसार था। एलिजाबेथने सोचा कि अब मैं स्वयंही वहाँ चलकर सब देखूंगी।

जेनने लंदन पहुंचकर कुशलका पत्र एलिजाबेथको भेजा था। एलिजा-बेथको आशा थी कि दूसरे पत्रमें कुछ बिंगलेका समाचार होगा। परन्तु ऐसा न हुआ। एक सप्ताह रहकरभी जेनको उनका समाचार न मिला। जेनने लिखा था कि कदाचित् मेरा पत्र मिस बिंगलेको नहीं मिला। मेरी भाभी कल उसी ओर आयगी। मैंभी ग्रीसबेनौर स्ट्रीटमें जाकर उससे मिलूंगी।"

पत्र फिर आया। उसमें इस मिलनेका हाल था। मिस बिंगले मुझको देखकर अत्यन्त सुखी तो नहीं हुई, परन्तु प्रसन्न अवश्य थीं। और उसने मुझे डांटा कि मैंने लंदन पहुंचनेकी सूचना उसको पहले क्यों नहीं दी। मेरा पत्र

उसको नहीं मिला था। मैंने उनके भाईके विषयमें पूछा, वह अच्छा है परन्तु मि॰ डारसीमें इतना लित है कि बहनोंसे अधिक नहीं मिलता। मिस डारसीका आज भोजन वहीं था। मेरी इच्छा थी कि मैं उसको देखूं परन्तु मिस बिंगले और मिसेज हर्स्टको कहीं बाहर जाना था, इसलिए हम अधिक न ठहर सके। मुझको आशा है कि अब वह हमारे घर आवेंगी।"

एलिजाबेथने सिर हिलाकर पत्र रख दिया। उसको विश्वास होगया कि मि॰ बिंगलेको जेनके लंदन पहुंचनेकी सूचना नहीं दी जावेगी।

चार सप्ताह होगए परन्तु जेनने मि॰ बिंगलेको नहीं देखा। मिस बिंगलेकी उदासीनताभी उसपर अब प्रगट होने लगी। पंद्रह दिन प्रतीक्षा करनेके अनन्तर मिस बिंगले वहां पहुंची परन्तु थोडी देर ठहरने और भावके अन्तरने जेनकी आँखें खोल दीं। जेनके भाव इस पत्रसे प्रगट हैं जो उसने एलिजाबेथको लिखा।

—पत्र—

" मेरी प्यारी लिजी !

तुम अपनी समझको मेरी समझसे अधिक न समझोगी जब मैं तुमको सच २ लिखूं कि मिस बिंगलेके प्रेममें मैंने बडा धोखा खाया। मेरी प्यारी बहन, तुम्हारा विचार ठीक था। परन्तु उसके भाव और उसके व्यवहारसे मैं जिस परिणामपर पहुँची थी वहभी स्वाभाविक था। मैं नहीं समझती कि वह क्यों मुझसे इतना प्रेम प्रगट करती थी और यदि वह फिर वैसाही प्रेम प्रगट करे तो फिर मुझको धोखा हो जायगा। पंद्रह दिनके अनन्तर कल वह आई और इस बीचमें एक पत्रभी न भेजा। और जब आई तो ऐसे रूखेपनसे मिली कि मैंने अब निश्चय कर लिया है कि मैं अब इस मित्रताको स्थिर न रखूंगी। मुझको उसपर दुःख होता है कि उसको अवश्यही इस बातका ज्ञान होगा कि उसने मेरे संग बुरा व्यवहार किया। परन्तु उस बुरे व्यवहारका कारण अपने भाईको मुझसे पृथक् रखनेकी इच्छा है। इसलिए मैं उसको अधिक दोष नहीं देती। क्योंकि ऐसी दशामें उसका रूखापन स्वाभाविक है। परन्तु

आश्चर्य यह है कि अब उसको भय करनेका कोई अवसर नहीं। क्योंकि यदि मि. बिंगलेको मुझसे तनिकभी प्रेम होता तो वे मुझसे अबतक मिल चुके होते। मि. बिंगले जानते हैं कि मैं लंदनमें हूँ। यह उनकी बहिनसेही मुझको मालूम हुआ। वह मुझको विश्वास दिलाना चाहती है, कि उसका भाई मिस डारसीसे प्रेम करता है। मेरी समझमें कुछ नहीं आता। मैं तो यहीं समझती हूँ कि इसमें कुछ धोखा है। परन्तु अब मैं कोई दुःखदाई विचार अपने मनमें आने न दूंगी। तुम्हारा प्रेम और मामू और मामीका अनुराग मेरेलिये पर्याप्त है। पत्रका उत्तर शीघ्र देना। बातचीतमें मिस बिंगलेने कहा कि अब उनका विचार नीदरफील्डमें जानेका नहीं है और उस घरको छोड देगें। पर इसका भेद अभी तुम किसीसे न कहना। हंसफोर्डके समाचार पढकर मुझको बडी प्रसन्नता हुई। तुम अवश्य वहां जाना। मिसेज कालन्स तुम्हारा बहुत आदर सत्कार करेंगी।"

तुम्हारी बहिन

जेन

पत्र पढकर एलिजाबेथको थोडासा कष्ट हुआ, परन्तु फिर वह संभल गई और उसको इस बातका विश्वास हो गया कि अब मिस बिंगले जेनको धोखा नहीं दे सकती ! सब आशाओंमें धूल मिल गई। मिस्टर बिंगलेका चरित्र निन्दनीय है और एलिजाबेथने सोचा कि उसको अच्छा दण्ड मिलेगा, यदि वह मिस डारसीसे विवाह कर ले। क्योंकि विकमके कथानुसार मिस डारसी अच्छी युवती न थी।

मिसेज गार्डनरने एलिजाबेथसे विकमके विषयमें समाचार चाहा और उसके वचनकी याद दिलाई। एलिजाबेथका पत्र पाकर उसकी मामी निश्चिन्त हो गई। उसका बनावटी प्रेम हवामें उड गया और वह किसी और युवतीसे प्रेम करने लगा। एलिजाबेथ समझदार थी और उसको इस बातके देखने या लिखनेसे कोई कष्ट न हुआ। उसके अहंकारने उसको संतोष दिया कि यदि वह धनवान होता तो अवश्यही मुझसे विवाह करता। अब वह जिस कन्यासे प्रेम करता था उसके साथ दस हजार पौंड मिलनेकी आशा थी। ऐसी दशामें

उसका उससे प्रेम करना स्वाभाविकही था। एलिज़ाबेथ जो शारलोटके मामलेमें बड़ी दूरदर्शिनी थी अपने विषयमें अन्धी हो गई थी। उसको विश्वास था कि मुझको छोड़नेमें विकमको बहुत दुःख हुआ होगा। परन्तु हम दोनोंके लिये यही अच्छा था। उसने हृदयसे चाहा कि विकम सुखी रहे।

यह सब उसने मिसेज गार्डनरको लिखा और फिर पीछेसे यह लिखा कि मेरी प्यारी मामी! मुझको पूर्ण विश्वास है कि मैं उससे प्रेम नहीं करती थी। क्योंकि यदि ऐसा होता तो मैं उसके नामसे उसको देखनेसे क्षमा करती परन्तु ऐसा नहीं है। मैं मिस किंगसे भी उदास नहीं हूं। मैं उसे क्षमा नहीं करती। मैं उसको अच्छी कन्या समझती हूं। परन्तु आपसमें प्रेम नहीं है। आपके समझाने ने मुझे बचा लिया और यदि मैं उसके प्रेममें होती तो इस समय लोगोंको बड़ा तमाशा हाथ आता। किटी और लीडिया इससे बहुत दुखी हैं। परन्तु वे बच्ची हैं। और संसारके व्यवहारको नहीं समझतीं। वे नहीं समझतीं कि सुन्दर मनुष्योंके निर्वाहके लिये उतनेही धनकी आवश्यकता है, जितनी साधारण मनुष्योंके लिये।

सत्ताईसवां परिच्छेद

जनवरी और फरवरीमें लाँगबोर्नमें कोई विशेष बात नहीं हुई। मार्चमें एलिजाबेथ हंसफोर्ड जायेगी। पहले तो एलिजाबेथका जानेका विचार न था। परन्तु शारलोटके बहुत बुलानेपर उसके जानेका निश्चय हुआ। उसको शारलोटसे मिलनेकी इच्छा थी, और मि॰ कालिंससे घृणाभी कुछ कम होगयी थी। ऐसी माँ और ऐसी बहनोंके संग रहते २ उसका दिलभी ऊब गया था। रास्तेमें उसको जेनसे मिलनेकी भी आशा थी और ज्यों २ जानेका समय पास आता गया उसके जानेकी इच्छा प्रबल होती गई। उसके जानेमें कुछ

बाधा न पडी और वह सर विलियम और उनकी पुत्रीके संग जानेको उद्यत होगई। एक रात लंदनमें ठहरना था, यह बहुतही अच्छी बात थी। केवल पिताको छोडते हुए उसे कुछ कष्ट होता था। पिताने चलते हुए उससे कहा कि मुझको अवश्य पत्र लिखना और मैं उसका उत्तर दूंगा।

विकमसे बहुतही मित्र भावसे विदाई हुई। उसके वर्तमान प्रेमने उसको यह बात न भुला दी थी कि एलिजाबेथसे उसने पहले पहल यहाँ प्रेम किया। उसके विदा करनेके ढंगमें एक निरालापन था जिससे मित्रता टपकती थी। उसने कहा कि तुम लेडी कैथरीनसे मिलोगी और मुझे आशा है कि तुम्हारी और मेरी सम्मति उस स्त्रीके विषयमें और संसारके सब विषयोंपर एकही होगी। एलिजाबेथ जब उससे विदा हुई तो उसको यह विश्वास होगया था कि चाहे विवाहित रहूँ या अकेली मि०विकम मेरेलिए एक आदर्श पुरुष रहेंगे।

साथके यात्रियोंमें कोई भी ऐसा न था जो विकमकी यादको भुला देता। सर विलियम और उनकी हंसमुख लडकी मेरिया दोनों दिमागसे खाली थे, और उनकी बातचीत वैसेही आँनन्ददायिनी होती थी जैसी कि गाडीकी खटखट। सर विलियमकी बातें पुरानी हो चुकी थीं और उनको कोई नई बात कहनी नहीं आती थी।

केवल चौबीस घण्टेकी यात्रा थी, और वे दोपहरतक ग्रेस चर्च स्ट्रीट पहुंच गये। जब वे मि० गार्डनरके द्वारपर पहुँचे, जेन खिडकीमेंसे झाँक रही थी। जब वह अन्दर घुसे तो वह राहमें उनका स्वागत करनेको आ पहुँची। एलिजाबेथने ध्यानपूर्वक उसके मुखकी ओर देखा जो सदाके समान सुन्दर और प्यारा था। जीनेमें छोटे बच्चे खडे थे जिनको अपनी फुफेरी बहनसे मिलनेकी उत्सुकताने ड्राइंग रूममें ठहरने न दिया। उन्होंने सालभरसे उनको न देखा था इसलिए वे लज्जासे आगे न बढ सके। घरमें सबने खुशी मनाई, और दिन भले प्रकार बीत गया। शामको सब लोग थियेटर गए।

रातको एलिजाबेथ अपनी मामीके पास बैठी और अपनी बहनके विषयमें बातचीत आरम्भ की। मिसेज गार्डनरने कहा कि "यद्यपि जेन प्रसन्न

रहनेका प्रयत्न करती है, परन्तु फिर भी कभी २ उदास हो जाती है। आशा है कि थोड़े दिनोंमें यह उदासी जाती रहेगी।" मिसेज गार्डनरने मिस बिंगलेके आनेका भी हाल सुनाया कि तुम्हारी बहनकी बातोंसे मालूम होता है कि मिस बिंगले अब उससे परिचय रखना नहीं चाहती।

मिसेज गार्डनरने फिर विकमकी बात चलाकर उससे पूछा कि तुमने किस प्रकारसे इस बातको सहन किया कि वह दूसरी कन्यासे प्रेम करने लगे। मेरी प्यारी एलिजाबेथ यह मिस किंग किस प्रकारकी कन्या है। मुझको शोक होगा यदि यह मालूम हो कि विकम केवल धनके लोभसे उससे प्रेम करता है।"

एलिजा–"मेरी प्यारी मामी! समझके विवाह करनेमें और लोभसे विवाह करनेमें क्या अन्तर है? समझका कहांपर अन्त होता है और लोभ कहाँसे आरम्भ होता है। अभी पिछले क्रिसमसमें उसने मुझे परामर्श दिया था, कि उससे विवाह करना नासमझी होगी। और अब जब वह दसहजार पौंडकी सम्पत्तिवाली कन्यासे विवाह करनेका प्रयत्न करता है, तो आप उसे लोभी बताती हैं।"

मिसेज गार्डनर–' यदि तुम मुझको बताओ कि मिस किंग किस प्रकारकी कन्या है, तो मैं कुछ बता सकूंगी।'

एलिजा—' मेरे विचारमें तो अच्छी कन्या है। मैं उसके विरुद्ध कुछ नहीं जानती।'

मिसेज गार्डनर–'परन्तु विकमने उसकी ओर तभी ध्यान दिया जब उसके दादाकी मृत्यु होगई और वह इतनी बड़ी सम्पत्तिकी अधिकारिणी हुई।'

एलिजा–' ठीक है। परन्तु यदि मेरे धनहीन होनेके कारण मुझसे प्रेम करना उसके लिये उचित न था तो वह क्यों मिस किंगका ध्यान करता। जब न तो वह मिस किंगसे प्रेम करता था और तब वह मेरे समानही धनहीन थी।'

मिसेज गार्डनर–' परन्तु दादाके मरनेके उपरान्त इतने शीघ्र प्रेम करने लग जाना भी तो बुरा मालूम देता है।'

एलिजा–' भूखा मनुष्य क्या नहीं करता ? वह क्या करना चाहिए या क्या करना न चाहिए इसपर ध्यान नहीं देता। यदि मिस किंगको इसमें आपत्ति ही नहीं है, तो विकमको उसमें क्या बाधा हो सकती है।'

मिसेज गार्डनर–' मिस किंगका आपत्ति न करना विकमको निर्दोष नहीं ठहरा सकता इससे प्रगट होता है कि मिस किंगमें समझकी कमी है।'

एलिजाबेथ–' अच्छा योंही सही, पुरुष लोभी है, और स्त्री मूर्खा है।'

मिसेज गार्डनर–' मैं यह सुनना नहीं चाहती। डरबीशायरके किसी युवककी बुराई सुननेसे मुझे दुःख होता है।'

एलिजा–' यदि ऐसाही है तो सच तो यह है कि डरबीशायरके किसी भी आदमीको मैं अच्छा नहीं समझती। और उनके मित्र हर्डफोर्डशायरके निवासी भी कुछ अच्छे नहीं। मैं इन सबसे ऊब गई हूँ। कल मैं एक ऐसे मनुष्यके यहां जा रही हूँ जिसमें रत्तीभर भी समझ नहीं। नासमझ मनुष्योंसेही जान पहचान करना अच्छी बात है।'

मिसेज गार्डनर–' लिज़ी! तुम्हारी बातोंसे निराशा टपकती है।'

विदा होनेके पहले उसके मामा और मामीने उसको निमंत्रण दिया कि गर्मीमें हमारे संग घूमने चलना। हमलोग सैर करने जायेंगे। अभी जानेका स्थान तो निश्चित नहीं हुआ है, परन्तु सम्भवतः झीलोंतक जायेंगे। एलिजाबेथने निमंत्रणको स्वीकार करते हुए कृतज्ञतापूर्वक कहा ' मेरी प्यारी मामी कैसा अच्छा प्रस्ताव है। तुम मुझमें नवीन जीवनका संचार करोगी। निराशा और क्रोधकी इतिश्री होगी। मनुष्यों और पर्वतोंका क्या मुकाबिला। कैसा सुखकर समय होगा। और जब हम लौटेंगे तो और यात्रियोंकी तरह नहीं। परन्तु ठीक २ सब बातोंका वर्णन कर सकेंगे। हमको याद रहेगा कि हमने क्या २ देखा है। झीलें, पर्वत और नदियां हमारे मास्तिष्कमें पृथक् २ रहेंगी। जब हम उनका वर्णन करेंगे तो किसी विशेष दृश्यका वर्णन करनेमें परस्पर कोई झगडा न होगा।'

— —

अठाईसवां परिच्छेद

दूसरे दिनकी यात्रामें एलिजाबेथने बहुतसी बातें नई और रुचिकर देखीं। वह बहुतही प्रसन्न थी, क्योंकि उसने अपनी बहनको सर्वथा स्वस्थ पाया था। और गर्मीकी यात्राने और भी उसके हृदयको प्रफुल्लित कर दिया था।

जब वह चौडी सडक छोडकर हंसफोर्डकी गलीमे घुसे तो हर मोडपर उनको पादरीके निवासस्थानके देखनेकी आशा होती थी। एक ओर तो रोजिंगपार्ककी सीमाबन्दी थी, जिसको देखकर एलिजाबेथको हंसी आगयी। अन्तमें पादरीका घर दीखा। मि. कालिंन्स और शारलोट द्वारपर खडे थे उन्होंने इनका स्वागत किया। सब लोग गाडीसे उतर पडे और एक दूसरेको देखकर प्रसन्न हुए। मिसेज कालिन्सने एलिजाबेथकी बहुत आवभगत की और एलिजाबेथको यह देखकर प्रसन्नता हुई कि उसका स्वागत प्रेमसे किया गया। उसको तुरन्तही मालूम हो गया कि मि. कालिंसकी चालढालमें विवाहसे कुछ अंतर नहीं हुआ। उसकी नियमित सभ्यता ठीक वैसेही थी। उसने फाटकही पर उसको रोककर सारे परिवारका कुशल पूछा। फिर उसने द्वारकी सफाई दिखायी और कमरेमें पहुँचकर दूसरी बार स्वागत करते हुए कहा, यही मुझ दरिद्रीका घर है और फिर अपनी पत्नीके प्रस्तावका समर्थन करते हुए उसने प्रातराश खानेको कहा।

एलिजाबेथ इन बातोंके लिए तैयार थी और वह समझ गई कि कमरेकी लम्बाई चौडाई उसका फर्नीचर उसको विशेषतया इसलिये दिखाया जा रहा है कि वह दुखी हो कि क्यों मैंने मि. कालिन्सके प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया। यद्यपि सफाई खूब थी परन्तु फिरभी एलिजाबेथको अपने कियेपर कोई पश्चात्ताप न हुआ। प्रत्युत उसको आश्चर्य था कि शारलोट ऐसा पति पाकर कैसे प्रसन्न थी। जब मि. कालिंस कोई ऐसी बात कहता था जिससे

उसकी पत्नी लज्जित हो तो वह शारलोटकी ओर देखती थी। एक दोबार तो शारलोटके कपोलोंपर हल्कीसी लालिमा आगई, परन्तु ऐसा विदित होता था कि उसने सुनाही नहीं। कमरेमें बैठकर फर्नीचरकी प्रशंसा करके यात्राका हाल सुनकर मि. कालिंसने उनको बागमें घूमनेके लिये निमंत्रण दिया और कहा कि बागमें काम करना मेरेलिए बड़ा सुखकर है। एलिजाबेथको आश्चर्य हुआ कि जब उसने शारलोटके मुखसे यह सुना कि यह बहुत अच्छा व्यायाम है और मैं उनको ऐसा करनेमें उत्साहित करती रहती हूँ। चारों ओर घूमकर सब खेतोंकी प्रशंसा सुनकर मि. कालिंसने उनसे कहा कि उसके बागके सब दृश्योंसे या यों कहिये सारे राज्यके दृश्योंसे रोजिंगके दृश्य कहीं बढ़चढ़कर हैं।

अपने बागसे मि. कालिन्स उनको अपने खलियान दिखाने ले जाते, परन्तु स्त्रियोंके पैरमें ऐसे जूते न थे जो पड़े हुये पालेपर आराम देते, इसलिये वे लोग पीछे लौट पड़े। सर विलियम मि. कालिंसके संग चला गया। शारलोटने अपनी बहिन और अपनी सखीको सारा घर दिखाया। घर कुछ छोटा था परन्तु अच्छा बना हुआ और सुखदायक था। अत्यन्त सफाई थी। और इसके लिये एलिजाबेथने शारलोटको बधाई दी। जब मि. कालिंस कहीं इधर उधर चले जाते थे, तो सब लोग प्रसन्न होते थे। और शारलोटके ढंगसे यह प्रतीत होता था कि वह उनका इधर उधर चला जानाही अच्छा समझती है। एलिजाबेथको यह मालूम हो चुका था कि लेडी कैथरीन ग्रामहीमें हैं। खाते हुए मि. कालिन्सने फिर कहा—' मिस एलिजाबेथ ! आपको लेडी कैथरीनसे मिलनेका सौभाग्य रविवारको गिर्जेमें होगा। मुझको विश्वास है कि आप उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न होंगी। वे बहुतही दयालु और मिलनसार हैं। मुझको संदेह नहीं है कि प्रार्थना हो जानेके अनन्तर अन्तमें तुमसे वे अवश्य मिलेंगी। यहभी मुझको पूर्ण आशा है कि जब हम वहां निमन्त्रित किए जायेंगे तो तुम्हारा और मेरियाका भी निमन्त्रण वहां होगा। मेरी शारलोटके संग उसका व्यवहार बहुत अच्छा है। सप्ताहमें दो बार हमारा खाना वहीं होता है और लौटते हुए हमें पैदल नहीं आना पड़ता। हमारे लिये कैथरीन अपनी गाड़ी

जुतवा देती हैं। या यों कहिये कि अपनी एक गाडी, क्योंकि उनके पास बहुतसी गाडियां हैं।

शारलोट—'लेडी कैथरीन आदरके योग्य समझदार देवी हैं और बहुत अच्छी पडोसिन हैं।'

मि. कालिंस—'मेरी प्यारी! बहुत ठीक, यही मेराभी कहनेका अर्थ था। वह ऐसी देवी हैं कि उनका जितनाभी आदर किया जाय उतनाही थोडा है।' संध्याको हर्डफोर्डशायरके समाचारोंपर बातचीत होती रही, और जब वह समाप्त हुई तो एलिजाबेथ अपने अकेले कमरेमें इस ध्यानमें मग्न हो गई कि शारलोट कितनी सुखी है। उसने यह भी सोचा कि मेरा समय कहां कैसे बीतेगा। मि. कालिंस किस प्रकार बीच बीचमें बोल उठेंगे और रोजिंगसमें कैसी हंसी खुशी होगी।

दूसरे दिन दोपहरको जब एलिजाबेथ कपडे पहन रही थी तो नीचे गोलमाल होने लगा। कुछ देर उस गोलमालको सुनकर उसने किसीको जीनेमें चढते हुये और उसे पुकारते हुये सुना। द्वार खोलकर देखा तो मेरिया हांफती हुई बोली—मेरी प्यारी एलिजा, जल्दी करो। देखो नीचे कमरेमें क्या तमाशा है। मैं तुमको कुछ न बताऊंगी।

एलिजाबेथने बहुतसे प्रश्न किए परन्तु मेरियाने एकका भी उत्तर न दिया। और दोनोंने नीचे उतरकर सडकके किनारेवाले कमरेमें जाकर देखा कि दो स्त्रियें एक फिटनमें बैठी हुई हैं जो द्वारपर खडी हैं।

एलिजा—बस यही तमाशा था।

मैं तो समझी थी कि बागमें सुअर घुस आये हैं यहाँ तो केवल लेडी कैथरीन और उनकी पुत्री हैं।

मेरिया—हैलो! यह लेडी कैथरीन नहीं, बुढिया स्त्री मिसेज जेनकिन्सन है जो उनके संग रहती है और दूसरी मिस डी. बारो है। उसकी ओर देखो कैसी दुबली पतली है।

एलिजा—वे शारलोटको इस आंधीमें क्यों बाहर रोके हुए हैं अन्दर क्यों नहीं आतीं?

मेरिया—वे अन्दर बहुत कम आतीं हैं उनका अन्दर आना तो बड़ा सौभाग्य समझा जाता है।

एलिजा-मुझको इसकी आकृति अच्छी मालूम होती है। यह रोगिणी और चिड़चिड़ी उसके लिए अत्यन्त उचित पत्नी होगी।

मि. कालिंस और शारलोट द्वारपर खड़े स्त्रियोंसे बातें कर रहे थे और सर विलियम चौखटके अन्दरसे बड़े ध्यानपूर्वक उनको देख रहे थे और बार बार जब मिस डी. बारो उधर देखती तो वह सिर नवाते थे।

बातचीत समाप्त होगई। स्त्रियें चली गयीं और वे लोग अन्दर घुसे। मि. कालिंसने दोनों युवतियोंको देखकर बधाई दी और शारलोटने समझाया कि कल हम लोगोंका खाना रोजिंग्समें होगा।

—— ——

उनतीसवां परिच्छेद

इस निमन्त्रणसे मि० कालिंस की प्रसन्नता की सीमा न रही। अतिथियोंको अपनी संरक्षिकाकी शान दिखानेका अवसर मिलगया और वह यह भी दिखानेकेलिए खुश था कि लेडी कैथरीन मुझसे कैसी सभ्यताका व्यवहार करती हैं।

मि० कालिंस—"सचतो यह है कि मैं समझता था कि रविवारको वे हमको चाय पर बुलाएंगी, परन्तु इतने अच्छे व्यवहार की मुझे आशा न थी कि आप लोगोंके आते ही हम सबको भोजनका निमंत्रण होगा।"

सर विलियम—'मुझको इसमें कुछ आश्चर्य नहीं। क्योंकि मुझको बड़े आदमियोंके संग रहनेका अवसर मिला है। और उनमें इस प्रकारके गुणों का पायाजाना असाधारण नहीं। मि० कालिंस उस दिन और दूसरे दिन सुबह सबको समझाते रहे कि कहीं वह सजेहुये कमरों, अत्यधिक नौकरों और अच्छे

भोजनोंको देखकर घबरा न जायें। जब स्त्रियां मुंहहाथ धोनेको जानेलगीं, तो मि० कालिंस ने एलिजाबेथसे कहा—एलिजाबेथ ! तुम अपने कपडोंके विषय में चिन्तित मत हो। लेडी कैथरीन यह नहीं चाहती कि तुम बहुत तडक-भडकके कपडे पाहिनो, जो उसको और उसकी पुत्रीको ही शोभा देते हैं। जो सबसे अच्छे कपडे तुम्हारे पास हों वही पहनलो उससे अच्छे पहनने की आवश्यकता नहीं। सादे कपडोंमें देखकर लेडी कैथरीन तुम्हें बुरा न समझेंगी वह हैसियतके अनुसार कपडे पहिनना अच्छा समझती है।

जब स्त्रियां कपडे पहरही थीं, मि० कालिंसने द्वारपर आकर खट-खटाया कि "जल्दी करो", लेडी कैथरीन प्रतीक्षा करना बुरा समझती हैं। लेडी कथरीनके हाल सुनकर बेचारी मेरिया जो इधर उधर कम निकलती थी, घबरा गई थी, वह रोजिंगसमें जानेसे उतनी ही भयभीत थी, जितना उसका पिता था, जब कि वह अपनी उपाधि लेने सेंटजेम्स गया था।

आकाश निर्मल था। इसलिये आधा मील पैदल चलना कुछ न खला। प्रत्येक बागमें कुछ न कुछ अच्छाई होती ही है और एलिजाबेथको यह बाग अच्छा लगा। परन्तु इतना अच्छा नहीं जितना कि कालिंसको आशा थी। मि० कालिंस खिडकियोंकी संख्या बताते जारहे थे, और कभी कभी उनकी बनवाईका व्यय भी बताते जाते थे।

जब वे जीनेपर चढने लगे तो मेरिया बहुत घबरा रही थी और सर विलियम भी शांत न थे। पर एलिजाबेथ शाँत थी। लेडी कैथरीनमें कोई ऐसी असाधारण बात न थी कि वह घबरा जाती। केवल धनसे वह घबराने वाली न थी। मि. कालिन्स ने द्वारपरसे ही उनको कमरेकी सुन्दरता बतानी आरम्भकी। नौकर उनको उस कमरेमें ले गया जहां लेडी कैथरीन उनकी पुत्री और मिसेज जिनकिन्सन बैठे थे। लेडी कैथरीनने खडे होकर उनका स्वागत किया और चूंकि मिसेज कालिन्सने अपने पतिसे यह तय करालिया था कि परिचय करानेका संस्कार वह स्वयं करायेगी, तो वह संस्कार उचित प्रकारसे होगया। परन्तु उस संस्कारमें धन्यवाद और क्षमाकी आधिकता न थी जैसी कि यदि मि० कालिंन्स करते तो होती।

सर विलियम यद्यपि सेंटजेम्स हो आये थे फिरभी इस तडकभडकको देखकर घबरा गये। नम्रतापूर्वक सिर नवाकर बिना कुछ बोले अपने स्थान में गये। मेरियाके तो होश-हवास जाते रहे थे और वह कुरसीके कोने पर बैठगयी उसकी यह समझमें न आया कि किधर देखूं। एलिजाबेथने बिना घबराये हुए तीन स्त्रियोंको अपने सामने देखा। लेडी कैथरीन लंबी, बडी-सी स्त्री थी, किसी जमानेमें शायद सुन्दर हो। उसका ढंग शायद अच्छा न था। और स्वागत करनेके ढगसे विदित होता था कि वह अपनेको बडा समझती है। चुप रहनेपर तो कुछ प्रतीत न होता था, परन्तु वाणीमें बहुतशान थी। एलिजाबेथको मि० विकम की याद आई और मि० विकमने जैसा लेडी कैथरीनका वर्णन किया था, वैसा ही एलिजाबेथने उसको पाया। लेडी कैथरीन की आकृति और ढंग कुछ कुछ मि० डारसीसे मिलते थे। उसकी पुत्री बहुत ही दुबली पतली थी। मां बेटियोंमें बिलकुल समानता न थी। मिस डी. बारो का रंग पीला था और उसकी आकृति साधारण थी। वह बहुत कम बोलती थी। मिसेज जिनकिन्सन की आकृतिमें कोई विशेष बात न थी। उसका काम केवल मि० डी. बारो की बातें सुनना था। थोडी देरके अनन्तर सब एक दृश्य देखने केलिए एक खिडकी पर गये। मि० कालिन्स दृश्य की सुन्दरता बतानेकेलिए पीछे पीछे गये और लेडी कैथरीनने कृपा करके बताया कि गरमीमें यह दृश्य बहुत ही सुहावना होता है।

भोजन बहुत ही अच्छा था, सब नौकर और खाने की चीजें मि० कालिंसके कथनानुसार ही थीं। वह मेजकी सबसे अन्तिम कुरसीपर बैठा था और प्रसन्न प्रतीत होता था जैसे संसारमें उसे सबकुछ मिलगया। मि०कालिन्स खाताजाता था और प्रत्येकवस्तुकी प्रशंसा करता जाता था। उस प्रशंसाका अनुमोदन सर विलियम करते थे, जिनकी घबराहट अब कम होगई थी। प्रशंसा का ढंग ऐसा था कि एलिजाबेथको विदित हुआ कि लेडी कैथरीन कुपित हो जावेंगी। परन्तु लेडी कैथरीन बहुत ही खुश थीं। विशेष करके उस समय जब कोई नई चीज मेजपर आती थी। बातचीत बहुत कम हुई। एलिजा-

बेथ बोलनेको तत्पर थी, परन्तु वह शारलोट और मिस डी. बारौके बीचमें बैठी थी, इसलिए उसे बोलने का अवसर नहीं मिला। शारलोट तो लेडी कैथरीनकी बातें ध्यानसे सुनरही थी, और मिस डी· बारौ खानेके समय कुछ न बोली। मिसेज जिनकिन्सनका काम यह था कि वह देखे कि मिस-डि·बारौ ने बहुतकम खाया, उसको और खानेको आग्रह करे। मेरियाने बोलना उचित न समझा, और पुरुष खाते रहे और प्रशंसा करते रहे।

जब स्त्रियाँ ड्रायंगरूममें आईं, तो लेडी कैथरनिकी बातचीत सुननेके अतिरिक्त उन्हें और कोई काम न था। और वह कहवेके आने तक बराबर बोलती रहीं। प्रत्येक विषयपर अपनी सम्मति इस प्रकार देती रहीं कि जिससे यह प्रमाणित होता था कि उसको इस बातका अभ्यास नहीं हैं कि कोई उसका प्रतिवाद करे। शारलोटके गृहस्थीके धन्धोंके विषयमें उसने बहुत कुछ पूछताछ की। उसको बहुत कुछ शिक्षादी। गाय और मुर्गियों की रक्षा करना भलीभांति बताया। कभी २ बीच २ में वह मेरिया एलिजाबेथसेभी कुछ प्रश्न करलेती थी। मिस एलिजाबेथसे उसने बहुतसे प्रश्न किये क्योंकि वह उसके विषयमें बहुत कम जानती थी। उसने कईबार पूछा कि तुम्हारी कितनी बहनें हैं। तुमसे छोटी हैं या बड़ी। किसीके विवाह होने की संभावना है या नहीं। सुन्दर हैं या नहीं। शिक्षा कहांतक पाई है। तुम्हारा पिता कैसी गाडी रखता है। तुम्हारी मां का कुमारी अवस्थामें क्या नाम था? एलिजाबेथने इन प्रश्नोंको असभ्यता समझा, परन्तु शाँतिपूर्वक उनका उत्तर देदिया।

लेडी कैथरीन—"तुम्हारे पिताकी संपत्तिके अधिकारी मि० कालिंस होंगे। शारलोट! तुम्हारेलिए तो मुझको इस कारण खुशी है, परन्तु मैं यह बात बहुत अनुचित समझती हूँ। हमारे कुटुम्बमें ऐसा कभी नहीं हुआ। मिस बेनट! तुम गाना बजाना जानती हो?"

एलिजा—"हां थोडा सा।"

कैथरीन—"तो फिर हमलोग कभी तुम्हारा गाना सुनेंगे। हमारा बाजा बहुत ही अच्छा है। संभवतः तुम्हारे यहांसे—"किसी दिन उसको बजाना। तुम्हारी बहनें गाना बजाना जानती हैं?

एलिज़ा—"एक जानती है।"

कैथरीन—"अन्य कोई बहन भी नहीं ?"

एलिज़ा—"नहीं।"

कैथरीन-"बडे आश्चर्यकी बात है। कदाचित् तुमको सीखनेका अवसर नहीं मिला। तुम्हारी मांको चाहिए था कि लंडन लेजाकर तुम्हें सिखलाती।"

एलिजा--"मेरी मांको तो उसमें कुछ आपत्ति न थी परन्तु मेरा पिता लंडनसे घृणा करता है।"

कैथरीन—"क्या तुम्हारी गवर्नेस अब चली गई है ?"

एलिज़ा—"हमारे यहां कोई गवर्नेस न थी।"

कैथरीन-'यह कैसे संभव है। पाँच लडकियोंका पालन पोषण बिना गवर्नेसके कैसे हुआ ? मैंने तो ऐसा कभी नहीं सुना। तुम्हारी माँ तो तुम्हें हर समय पढाने ही में लगी रहती होगी।"

एलिजा [हंसकर]-"ऐसा तो नहीं है।"

कैथरीन-"तो फिर तुमको किसने पढाया? किसने देखभाल की ? गवर्नेसके बिना तुम्हारा पढना लिखना नहीं हो सका होगा ?"

एलिजा-"कुछ कुटम्बोंको देखतेहुए तो अवश्य हमारी शिक्षा अच्छी नहीं हुई। परन्तु हममेंसे जिसने पढना चाहा उसको कभी कोई बाधा भी न पडी। हमें पढनेकेलिये सदा उत्साह मिलता रहा। जिन्होंने आलसी रहना चाहा वे आलसी रहे।"

कैथरीन-इसीलिये तो गवर्नेसकी आवश्यकता है कि कोईआलसी न रहे। यदि मेरा तुम्हारी मांसे परिचय होता तो मैं उनको गवर्नेस रखनेको जोर देती। न मालूम कितने कुटुम्बोंमें मैंने गवर्नेस रखवाई है। युवातियोंको पढाना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ। मिसेज जिनाकिन्सन की चार भतीजियाँ मेरे ही प्रयत्नसे अब अच्छी हो गई हैं। अभी थोडे ही दिन की बात है कि एक और युवतीको मैंने एक कुटुम्बमें गवर्नेस रखवा दिया। वे लोग उससे बहुत प्रसन्न हैं। मिसेज मेटकाफ कल मुझे धन्यवाद देने

आई थीं। वे कहती थीं कि आपकी गवर्नेस तो एक खजाना है। तुम्हारी छोटी बहनें तो पुरुषोंसे मिलती हैं ?

एलिजा०-'हाँ सब।'

कैथरीन-क्या पाँचों ? बडे आश्चर्यकी बात है कि बडी कन्याओंका विवाह हुए बिनाही छोटी बहनें बाहर पुरुषोंसे मिलने लगें। तुम्हारी छोटी बहनें तो बहुत छोटी होंगी ?'

एलिजा०-हाँ, सबसे छोटी सोलह वर्षकी है और मेरी समझमें बाहर जानेके योग्य नहीं है। परन्तु यह बहुतही छोटी युवतियोंके लिये कठिन व्यवहार होगा, यदि उनको समाजमें मिलने-जुलनेके सुखसे वञ्चित रखा जाय। विशेषकर जब बडी लडकियोंका विचार शीघ्र विवाह करनेका न हो। यौवनका सुख उठानेका सबसे छोटी कन्याको भी उतनाही अधिकार है जितना सबसे बडीको। और उनको उनसे वञ्चित रखनेमें बहनोंमें उचित प्रेम नहीं हो सकता।

कैथरीन—'तुम अपनी सम्मति बेधडक प्रगट करती हो। कृपया यह बताओ कि तुम्हारी अवस्था क्या है '

एलेज-(मुस्कराकर ' जब मेरी तीन छोटी छोटी बहनें बडी होगई है, तो कदाचित् मैं अपनी अवस्था ठीक-ठीक न बताऊंगी।

लेडी कैथरीन इस उत्तरको सुनकर चकित होगई और एलिजाबेथको ऐसा प्रतीत हुआ कि कदाचित् मैं पहलाही जीव हूँ, जिसने इस प्रकारसे इस स्त्रीके प्रश्नोंका उत्तर दिया हो।'

कैथरीन-तुम्हारी अवस्था २० वर्षसे अधिक नहीं हो सकती। इसलिये आयु छिपानेकी कोई आवश्यकता नहीं।

एलिजा—'मैं इक्कीसकी भी नहीं हूँ।'

चाय पीनेके उपरान्त ताश खेलनेकी मेज लगाई गई। लेडी कैथरीन, सर विलियम, मिस्टर और मिसेज कालिन्स एक ओर जुट गये। और दूसरी मेजपर मिस बारो और दोनों युवातियाँ मिसेज जिनकिन्सनके साथ खेलने लगीं। इनकी मेजपर कभी कोई नहीं बोलता था। कभी-कभी मिसेज जिन-

किन्सन मिस बारोसे पूछ लेती थी कि बहुत सरदी या गर्मी तो नहीं लग रही है या प्रकाश कम या अधिक तो नहीं है ? दूसरी मेजपर खूब बातें हो रही थीं। लेडी कैथरीनही अधिक बोलती थी। उन तीनोंकी भूलें बताती थी या और कुछ गल्प सुनाती थी। मि० कालिन्सका काम लेडी कैथरीनसे सहमत होना था, धन्यवाद करना और क्षमा मांगना था।

सर विलियम अधिक न बोले। वे पुरानी कहानियाँ याद कर रहे थे।

जब लेडी कैथरीन और उनकी पुत्री खेल चुकी, तो मेजें उठा दी गईं। मिसेज कालिन्सके लिये गाडी तैयार करनेकी आज्ञा हुई। फिर सब लोग अग्निके चारों ओर बैठे और लेडी कैथरीनसे पूछने लगे कि कल कैसा मौसम होगा ? इतनेमें सूचना मिली कि गाडी तैयार है। मि० कालिन्स धन्यवाद देते हुये और सर विलियम सिर नवाते हुये विदा हुये। ज्योंही गाडी चली मि० कालिन्सने एलिजाबेथसे पूछा कि तुम्हारी रोजिंग्सके विषयमें क्या सम्मति है। मनके भावको छिपाकर एलिजाबेथने कुछ प्रशंसाकी परन्तु उसकी प्रशंसासे सन्तुष्ट न होकर मिस्टर कालिन्सने यह काम अपनेही हाथोंमें ले लिया।

तीसवां परिच्छेद

सर विलियम हँसफोर्डमें एक सप्ताह ठहरे। यह समयभी उनको यह विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त था कि उनकी पुत्री सुखी है और उसको अच्छा पति और पडोसी मिल गये हैं। मि० कालिन्स प्रतिदिन प्रातः सर विलियमको घुमाने अपनी टमटममें ले जाते थे। उनके जानेके उपरान्त घरवाले अपने अपने काममें लग जाते थे। एलिजाबेथ खुश थी कि अब उसको मि० कालिन्ससे इतना व्यवहार नहीं पडता था, क्योंकि अब वह कभीतो बागमें काम करता था, कभी लिखता पढता था और कभी अपने कमरेसे सडकपर झाँका करता था। जिस कमरेमें स्त्रियाँ बैठती थीं, वह पीछेको था। पहले

एलिजाबेथको आश्चर्य होता था कि शारलोटने खानेवाले कमरेको बैठनेका कमरा क्यों नहीं बनाया। क्योंकि वह बडा और अधिक अच्छा था। परन्तु उसे तुरन्तही मालूम होगया कि शारलोटने बडी बुद्धिसे काम लिया है क्योंकि यदि वह वहाँ उठती बैठती तो मि० कालिन्स हर समय वहाँही डटे रहते। वह कमरा अच्छा था।

इस स्त्रियोंके बैठनेवाले कमरेसे सडक नहीं दिखाई देती थी और मि० कालिन्स बारबार आकर बता जाते थे कि कौन-कौन गाडियां गईं, कितनी बार मिस डी. बारो फिटनपर उधरसे निकली। मिस डी बारो कभी कभी पादरीके घरके द्वारपर ठहरकर शारलोटसे कुछ बातें कर लेती थी, परन्तु अन्दर आनेकी कसम खाई हुई थी।

शायदही कोई दिन ऐसा होता हो जब मि० कालिन्स रोजिंग्स न जाते हों। उनकी पत्नीभी वहाँ बहुधा जाती थी। एलिजाबेथने याद दिलाया कि वहाँ और कुटुम्बभी रहते है। परन्तु शारलोटने और कुटुम्बोंपर अपना समय व्यर्थ नष्ट करना उचित न समझा। कभी कभी इनके यहाँ लेडी कैथरीनभी आती थी और प्रत्येक बातको बडे ध्यानसे देखती थीं। उसको दूसरी प्रकारसे करनेकी शिक्षा देती थीं फरनीचरके प्रबंधमें दोष निकालती थी या नौकरानीको आलसी बताती थीं या जब कभी कुछ खाना खाती थी तो केवल इसलिये कि मिसेज कालिन्स अपने कुटुम्बको देखते हुये अधिक बडे मांसके टुकडे बनाती हैं।

एलिजाबेथको थोडेही दिनमें मालूम होगया कि यद्यपि यह स्त्री स्वयं कुटुम्बोंमें अशान्ति फैलानेवाली है परन्तु अपने ग्राममें मजिस्ट्रेटीका काम खूब करती है। मि० कालिन्स ग्रामके उनको सब समाचार सुना जाते थे और वह जब सुनती थी कि कहीं झगडा हुआ है या अशान्ति है या दरिद्रता है तो वह स्वयं गांवमें जाकर उनके झगडोंको निबटा आती थी और उनको डाँटडपटकर आती थी कि मिलजुल कर रहा करो।

सप्ताहमें दो बार रोजिंग्समें खाना होता था। प्रत्येक खानेमें पहलेके समानही सब बात होती थी। केवल यह अन्तर था कि अब सर विलियम नहीं थे और ताश खेलनेकी एकही मेज थी। मन बहलानेका कोई प्रबन्ध

न था। क्योंकि किसी और कुटुम्बमें मि० कालिन्सका जाना उचित न था। एलिजाबेथका समय अच्छे प्रकार बीत रहा था। शारलोटसे प्रेमकी बातें हो जाती थी। ऋतु इतनी अच्छी थी कि वह बहुधा बाहर घूमा करती थी। जब सब लोग लेडी कैथरीनके यहाँ जाते थे तो वह पार्कके उस ओर घूमती थी जहां बहुतही अच्छा छायादार पथ बना हुआ था और इस पथको उसके अतिरिक्त कोईभी पसन्द न करता था। यहाँपर वह लेडी कैथरीनकी दृष्टिसे बची रहती थी। इस प्रकारसे एक पक्ष बीत गया। ईस्टर आ रहा था। और रोजिंग्समें कुछ लोग आनेवाले थे। एलिजाबेथने सुना कि मि० डारसीभी आनेवाले हैं। यद्यपि मि० डारसीसे उसकी कुछ विशेष मित्रता न थी परन्तु उनके आनेसे उसको इस बातकी प्रसन्नता हुई कि उसको यह देखनेका अवसर मिलेगा कि मिस बिंगलेकी चालें कैसी असफल हो रही हैं। क्योंकि यहाँ आकर वह मिस डी. बारोसे प्रेम करेगा जिससे विवाह होना लेडी कैथरीनने निश्चित कर दिया हैं। लेडी कैथरीन उसकी बड़ी प्रशंसा करती थी और उसको इस बातका क्रोध था कि मिस ल्यूकस और एलिजाबेथ मि० डारसीको पहलेसे ही क्यों जानती हैं। उसको आगमन की सूचना पहलेही से मिल गई क्योंकि मि० कालिन्स उस दिन प्रातः हीसे गलियोंमें यही जाननेके लिये घूमते रहे और नम्रतापूर्वक प्रणाम करके घर आकर यह समाचार सुनाया। दूसरे दिन प्रातः ही मि. कालिन्स सलाम करनेके लिए रोजिंग्समें लेडी कैथरीनके जब गये तो वहां उनके दो भानजे आये हुए थे एक तो मि० डारसी और दूसरे कर्नल फिट्स विलियम थे। मि० कालिन्सके साथ दोनों आते हुए दिखाई दिए। शारलोटने दौडकर युवतियोंको सूचना दी और एलिजाबेथसे कहा कि मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ। तुम न होतीं तो मि. डारसी यहां कृपा न करते। एलिजाबेथ कुछ उत्तर भी न देने पाई थी कि उनके आगमन की सूचना घंटीने दी और तीन मनुष्य कमरेमें घुसे। कर्नल फिट्स विलियम जो सबसे आगे थे, तीस वर्षके होंगे। सुन्दर न थे परन्तु भलेमानस प्रतीत होते थे। मि०डारसी ठीक वैसेही थे, जैसे हर्डफोर्डशायरमें थे। बहुत धीरेसे उन्होंने मिसेज कालिन्सको नमस्ते किया। उनके भाव एलिजाबेथकी ओर जो कुछ

भी हों, परन्तु वह शान्तिपूर्वक उससे मिले। एलिजाबेथने बिना मुँहसे बोले सिर नवाया।

कर्नल फिट्स विलियम भले मानसके समान बातें करने लगे, परन्तु मि० डारसी चुपचाप बैठे रहे। फिर उनको कुछ सभ्यताका ध्यान आया, और उन्होंने एलिजाबेथसे उसके कुटुम्बका कुशल पूछा। एलिजाबेथने साधारण प्रकारसे उत्तर देते हुए कहा कि 'मेरी बडी बहन तीन महीनेसे लंदनमें है, क्य आप उससे वहां नहीं मिले ?'

वह जानती थी कि वह नहीं मिले होंगे, परन्तु वह यह जानना चाहती थी कि उनको बिंगले और जेनके विषयमें जो कुछ हुआ है, उसकी सूचना है या नहीं। उनके मुंहका रंग बदल गया। उन्होंने उत्तर दिया कि नहीं मुझको मिस बिंगलेसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इस विषयपर अधिक बातचीत फिर न हुई और थोडी देर बाद वे लोग चले गये।

——

एकतीसवां परिच्छेद

कर्नल फिट्स विलियमकी प्रशंसा स्त्रियोंने बहुत की। कुछ दिनके अनन्तर उनको रोजिंग्ससे बुलानेका अवसर आया। क्योंकि आगन्तुकोंके होते हुए उनकी वहाँ कुछ आवश्यकता न थी और आगन्तुकोंके आनेके एक सप्ताह बाद वे बुलाये गए। इस सप्ताहमें लेडी कैथरीन और उनकी पुत्री बहुत कम दिखाई दी। कर्नल फिट्स विलियम मि० कालिंसके घर दो एक बार आये परन्तु मि० डारसी केवल गिरजेहीमें दिखाई दिए।

निमंत्रण स्वीकृत हो गया और वे लोग ठीक समयपर लेडी कैथरीनके ड्रायंगरूममें पहुँचे। लेडीने सभ्यतापूर्वक उनका स्वागत किया। परन्तु यह स्पष्ट था कि उनकी संगति लेडीको इस समय उतनी अच्छी न लगती थी, जितनी कि तब जब वहाँ कोई न होता था। वह अपने भानजोंहीसे बातोंमें लगी रही, विशेषकर मि० डारसीसे।

कर्नल फिट्स विलियम इन लोगोंके आनेसे प्रसन्न था क्योंकि रोजिंग्समें उसे कुछ अच्छा न लगता था। मिसेज कालिन्सकी सुन्दर सखीने उसका मन खींच लिया था। वह एलिजाबेथके पास बैठकर प्रेमसे बातें करने लगा। इतना प्रेम तो एलिजाबेथको उस कमरेमें कभी प्राप्त नहीं हुआ था। उनके बातें करनेके ढंगने लेडी कैथरीन और मिस्टर डारसीका ध्यान उस ओर आकर्षित किया। डारसीने तो कईबार उस ओर देखा, परन्तु चुप रहा। लेडी कैथरीन चुप न रह सकीं और बोलीं–

'फिट्स विलियम! तुम मिस बेनटसे क्या कह रहे हो मैं भी सुनूं?'

फिट्स विलियम जब उत्तर दिये बिना न रह सका तो बोला-'हम संगीतपर वार्तालाप कर रहे हैं।'

कैथरीन–'संगीतपर। तो जोर २ से बोलो कि मैं भी सुनूं। संगीतका विषय मुझे बड़ा रोचक है। विलायतमें मुझसे अधिक संगीतको समझनेवाला शायदही दूसरा हो। यदि मैंने गाना सीखा होता, तो मैं बहुत चतुर होती और यदि ऐन (मिस डीबारो) को स्वास्थ्यने आज्ञा दी होती तो वह भी संगीत विद्यामें बहुत निपुण होती। वह अवश्यही बहुत अच्छा बजाती। डारसी! तुम्हारी बहन ज्यौज्यीनाने कुछ उन्नति की है?'

मि. डारसीने अपनी बहनकी बहुत प्रशंसा की।

कैथरीन-'मुझको यह सुनकर बहुत खुशी हुई। उससे कह देना कि बिना अभ्यास किये हुए वह संगीत विद्यामें दक्ष नहीं हो सकती।

डारसी—'देवी! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उससे यह कहनेकी कोई आवश्यकता नहीं, वह स्वयंही बहुत अभ्यास करती है।'

कैथरीन–'अच्छी बात है। जब मैं उसको पत्र लिखूंगी तो लिख दूंगी कि कुछ आलस्य न करे। मैं युवतियोंसे बहुधा कहती रहती हूँ कि बिना अभ्यासके संगीत विद्यामें निपुण होना कठिन है। मैंने मिस बेनटसे कईबार कहा है, बिना अभ्यासके वह अच्छा न बजा सकेंगी। और मिसेज कालिन्ससे बहुधा कहा करती हूँ कि रोज यहाँ आकर मिसेज जिनकिन्सनके कमरेमें बाजा बजाया करे। वहाँ बजानेसे हमको कुछ बाधा न होगी।'

मि० डारसीको अपनी मासीकी असभ्यतापर लज्जा आई, और उसने कुछ उत्तर न दिया।

कहवा पीनेके बाद कर्नल फिट्स विलियमने एलिजाबेथको याद दिलाया कि अब अपना बजानेका बचन याद करो और वह बाजेके पास बैठ गई। कर्नलने अपनी कुरसी बाजेके पास खींच ली। लेडी कैथरीनने आधा गीत सुनकर फिर डारसीसे बातचीत प्रारंभ की। परन्तु डारसी भी धीरे धीरे एलिजाबेथकी ओर चला गया, और बजानेवाली सुन्दरीकी आकृति देखने लगा। एलिजाबेथने देखा कि वह क्या कर रहा है, कुछ देर ठहरकर हंसकर बोली-'मिस्टर डारसी! आप मुझको डराना चाहते हैं। यद्यपि आपकी बहन बहुत अच्छा बजाती हैं, परन्तु मैं घबरानेवाली नहीं। जब कोई मुझको डराता है तो मेरा साहस और बढ जाता है।'

डारसी—'मैं यह न कहूँगा कि यह आपकी भूल है, क्योंकि आप स्वयंही जानती हैं कि मैं आपको डराने नहीं आया हूँ और मैं यह भी जानता हूँ कि आप बहुधा ऐसी बात कहती हैं, जो वास्तवमें आपकी सम्मति नहीं होती।'

एलिजाबेथ अपना चित्र इस प्रकार खिंचता हुआ देखकर हंसी और कर्नलसे बोली-'मिस्टर डारसी मेरे विषयमें आपको विचित्र बातें सुनायेंगे और बतायेंगे कि मेरी एक बातमें भी आप विश्वास न करें। मेरा बडा दुर्भाग्य है कि यहां भी जहाँ मैं समझती थी कि मुझको कोई नहीं जानता-मेरे चरित्रकी पोल खोलनेके लिए मि०डारसी आ पहुँचे। मि० डारसी यह बहुतही निर्दयता है कि आप मेरे सब दोषोंको यहां प्रगट करें। और यह आपके लिए उचित भी नहीं है, क्योंकि संभव है कि उत्तरमें मैं भी कुछ आपके विषयमें कहूँ, जो आपके नातेदारोंको अच्छा न लगे।'

डारसीने हंसकर कहा-मैं आपसे नहीं डरता।

कर्नल-'कृपा करके डारसीके दोष मुझे बताइये। मैं जानना चाहता हूँ कि ये अनजान मनुष्योंसे कैसा व्यवहार करते हैं।'

एलिजा०—सुनिए। पहलीबार मैं इनसे फोर्डशायरमें एक नाचमें मिली। केवल चारबार इन्होंने वहाँ नाचा। यद्यपि वहाँ पुरुषोंकी कमी थी, और मि० डारसी इस बातसे विरोध नहीं कर सकते कि बहुतसी स्त्रियाँ खाली बैठी हुई थी।

डारसी—"मैं उस समय वहांकी एकत्रित स्त्रियोंमेंसे किसीसे भी परिचित न था।"

एलिजा०—सच है परन्तु कदाचित् नाचके कमरेमें तो किसीसे परिचय हो ही नहीं सकता। अच्छा कर्नलसाहब अब क्या बजाऊं। मेरी उंगलियाँ आपकी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रही हैं।'

डारसी—अच्छा होता यदि मैं किसीसे परिचय कर लेता। परन्तु मैं अनजान आदमियोंसे परिचय करनेमें बहुत घबराता हूँ।'

एलिजाबेथने कर्नलकी ओर देखकर कहा—'क्या मैं आपके भाईसे इसका कारण पूछ सकती हूं कि वह बताए कि एक समझदार पढा लिखा आदमी, जिसने संसारको खूब देखा हुआ है, क्यों अपरिचित आदमियोंसे बोलनेमें घबराता है।'

फिट्स विलियम—'मैं आपका उत्तर देता हूं क्योंकि वह इतना कष्ट उठाना नहीं चाहता।'

डारसी—"मुझमें वह योग्यता नहीं है, जो कुछ लोगोंमें होती है। जो बिना जाने पहचाने हुए लोगोंसे बातें करने लगते हैं। मुझे तो अपरिचित मनुष्योंकी बात समझही में नहीं आती, उनके मामलोंमें रुचि नहीं होती।"

एलिजा—"मेरी उंगलियां इस बाजेपर उतनी अच्छी नहीं चलतीं जितनी कुछ और स्त्रियोंकी। परन्तु यह मेरा ही अपराध है, क्योंकि मैं अभ्यास करनेका कष्ट नहीं उठाती। मैं भी उतना ही अच्छा बजा सकती हूं जितना कोई स्त्री, यदि अभ्यास करूं।

डारसीने हंसकर कहा—"आप बिलकुल ठीक कहती हैं। आपने अपना समय बजानेसे अधिक अच्छी बातोंमें बिताया है।

इतनेमें लेडी कैथरीन आकर पूछने लगीं कि क्या बातचीत हो रही है, और एलिजाबेथने फिर बजाना आरम्भ करदिया। लेडी कुछ देर तक तो सुनती रहीं और फिर डारसीसे बोलीं-- "मिस बेनट यदि अभ्यास करे तो अच्छा बजा सकती है। उसकी उंगलियाँ अच्छी चलती हैं, परन्तु बजानेके ढंग ऐनके समान नहीं। यदि स्वास्थ्य आज्ञा देता तो ऐन बहुत अच्छा बजाती।

एलिजाबेथने डारसी की ओर देखा परन्तु उसको यही विदित हुआ कि डारसी मिस डीबागोसे प्रेम नहीं करता है और मिस बिंगले यदि नातेदारिन होती तो संभावना थी कि वह उससे विवाह करता।

लेडी कैथरीन एलिजाबेथके बजानेके ढंग पर आक्षेप करती रहीं और शिक्षा देती रहीं। एलिजाबेथ चुपचाप सब सुनती रही और पुरुषों की प्रार्थनानुसार उस समय तक बजाती रही जबतक उनको घर वापिस लेजानेको गाडी तैयार न हुई।

——

बत्तीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथ दूसरे दिन प्रातःकाल अकेली बैठी हुई जेनको पत्र लिख रही थी। मिसिज कालिन्स और मेरिया गांवमें किसी कामसे गई हुई थीं कि एलिजाबेथने किसी आगन्तुककी घण्टी सुनी। उसका विचार हुआ कि असम्भव नहीं है कि लेडी कैथरीन आई हों। उसने अपना आधा लिखा पत्र छिपानेका प्रयत्न किया ताकि उसको बहुतसे बेहूदा प्रश्नोंका उत्तर न देना पडे। इतनेमें द्वार खुला और उसने देखा कि मि० डारसी अकेले कमरेमें घुसे। एलिजाबेथके आश्चर्यकी सीमा न रही। मि० डारसी भी आश्चर्यमें थे कि वह अकेले कैसे बैठी है। उन्होंने क्षमा माँगते हुये कहा कि मैं समझा था कि सब स्त्रियाँ अन्दर होंगी।

वह तब बैठ गये और रोजिंग्सका कुशलक्षेम पूछनेके बाद एलिजाबेथ चुप होगई। यह परम आवश्यक था कि किसी विषयपर बात-चीत हो, इस-

लिये एलिजाबेथने सोचा कि इनसे पूछना चाहिए कि हर्डफोर्ड शायरसे इन्होंने भागनेकी क्यों जल्दी की?'

एलेज—'मि० डारसी ! आपने कैसी शीघ्रतामें पिछले नवम्बरमें नीदरफील्डको छोड दिया। आपके लन्दनमें अपने आनेके एकही दिनके अनन्तर पहुँचनेपर मि० बिंगलेको बडा आश्चर्य हुआ होगा। मैं आशा करती हूँ कि जब आप लन्दनसे चले थे मि० बिंगले और उनकी बहनें कुशलसे थीं।'

डारसी—'सब कुशलपूर्वक थे। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ।'

इसके अनंतर कुछ उत्तर न पाकर वह फिर बोली—'मैं सुनती हूँ कि मि० बिंगलेका विचार फिर नीदरफील्ड जानेका नहीं है।'

डारसी—'मैंने तो कभी नहीं सुना। परन्तु संभव है कि अब वह वहाँ बहुत कम समय बितावे। उसके मित्रोंकी संख्या बहुत है, और उसकी अवस्था ऐसी है कि मित्रोंकी संख्या बढतीही जाती है।'

एलेजा-'यदि नीदरफील्डमें उनको इतना कम रहना है, तो अच्छा होगा कि वह उसको छोडही दें। ताकि कोई स्थिर रहनेवाला परिवार वहाँ आजाये। पडोसियोंके लिये तो यही अच्छा होगा परन्तु कदाचित् मि. बिंगलेने पडोसियोंके सुखके लिये मकान नहीं लिया था। इसलिए उनको अधिकार है कि जब चाहें आयें, और जब चाहें चले जायें।'

डारसी-'मुझे आश्चर्य न होगा यदि वह उचित किरायेदार पानेपर उसको छोड देवे।

एलिजाबेथने कुछ उत्तर न दिया। वह अब मि० बिंगलेके विषयमें अधिक बातचीत करना न चाहती थी। और उसने अब किसी बातचीत करनेके विषयको आरम्भ करनेका भार डारसीही पर छोड दिया।

डारसी-'यह मकान तो अच्छा मालूम होता है। लेडी कैथरीनने इसमें बहुत कुछ परिवर्तन किया है।

एलेज-'मेरा भी ऐसाही विश्वास है। लेडी कैथरीनको मि० कालिन्ससे अधिक कृतज्ञ मनुष्य कृपाका पात्र नहीं मिल सकता था।'

डारसी-' मि. कालिन्सके भाग्यसे पत्नी तो अच्छी मिल गई।

एलेज-' हाँ अवश्य। मि. कालिंसके मित्रोंको प्रसन्नता होनी चाहिये कि बहुत थोडी समझदार स्त्रियोंमेंसे एकने उनसे विवाह किया है, और उनको प्रसन्न रखनेकी चेष्टा करती है। शारलोट बहुत समझदार युवती है। यद्यपि मेरी सम्मतिमें उसने मि. कालिंससे विवाह करनेमें समझसे काम नहीं लिया, परन्तु वह अत्यन्त प्रसन्न है और सांसारिक सुख देखते हुये तो उसको अच्छाही पति मिला।

डारसी—' उसको इस बातसे भी तो सुख होगा कि उसका विवाह अपने परिवार और मित्रोंसे इतना समीप हो गया।'

एलेजा-' आप इसको समीप कहते हैं ! पचास मीलका अंतर है।'

डारसी-' अच्छी सडकपर पचास मील क्या बात है ! आधे दिनमें मनुष्य पहुँच सकता है ! मैं इसको समीपही कहता हूँ।'

एलेज-' विवाहकी अच्छाइयोंमें मैं यह तो न कहूँगी कि परिवारसे समीप होना भी एक है और मैं यह भी न मानूँगी कि मिसिज कालिंस अपने परिवारके समीप है।

डारसी-'यह तुम्हारे हर्टफोर्ड शायरके प्रेमका एक प्रमाण है। लाँगबोर्नके पडोससे आगे सभी स्थान तुम्हें दूर प्रतीत होंगे।'

यह कहते हुए एलिजाबेथने डारसीके होठोंपर मुस्कराहट पाई। उसका विचार हुआ कि मि. डारसी इस समय जेन और नीदरफील्डकी बात सोच रहा है। उसने लज्जा भावसे कहा- दूर और समीप तो मनुष्योंकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओंपर निर्भर है।

जहां रुपया है, और यात्राके व्ययका कुछ विचार नहीं वहां कोई स्थान दूर नहीं। परन्तु मिस्टर और मिसिज कालिन्सकी आय ऐसी नहीं है कि वे बार २ यात्रा कर सकें। और शारलोटका स्वयं विचार है कि इस दूरीसे आधे फासलेके होनेपर भी वह अपनेको अपने परिवारके समीप नहीं कह सकती।

मि० डारसीने अपनी कुरसी उसके पास खिसकाई और कहा- 'तुमको

हर्डफोर्ड शायरसे इतना प्रेम करनेका अधिकार नहीं। सदा तुम लांगबोर्नमें न रहोगी।'

एलिजाबेथ चकित होगई। डारसीके भावमें परिवर्तन हुआ। उसने अपनी कुरसी पीछे हटाई, मेजपरसे अखबार उठाकर उसपर देखते हुए रूखे भावसे कहा-' तुमको कैन्ट अच्छा लगा कि नहीं।' थोडी देर इसीपर बात-चीत होती रही और इतनेमें शारलोट और उसकी बहिन लौटकर आगये। इस वार्त्तालापसे वे भी चकित होगये। मि. डारसीने कहा कि मुझसे भूल होगई मैं समझा था कि आप सब यहां होंगे, और फिर कुछ मिनिट बिना बोले-चाले बैठकर वह चल दिया।'

शारलोट-' इसका क्या अर्थ है? अवश्यही मि० डारसी तुमसे प्रेम करते हैं नहीं तो इस प्रकारसे न आते। परन्तु जब एलिजाबेथने उनको विश्वास दिलाया कि ऐसा नहीं हो सकता तो उन्होंने सोचना आरम्भ किया कि क्या बात है। उनका विचार हुआ कि यहाँ कुछ करना नहीं है आजकल शिकार भी नहीं होता। पादरीका घर समीप है रास्ता भी अच्छा है इसीलिए दोनों पुरुष बहुधा यहां आते हैं। रोजही दोनों आते थे, कभी साथ, कभी अकेले। कभी अपनी मौसीके साथ। यह तो प्रत्यक्ष था कि कर्नल फिट्स विलियमको उनकी संगति अच्छी लगती थी। एलिजाबेथको उसके आनेपर सन्तोष होता था क्योंकि वह उसकी प्रशंसा करता था। उसने कर्नलका ज्यौर्ज विकमसे मुकाबिला करते हुए सोचा कि कर्नलमें वैसी मनमोहनेवाली चाल तो नहीं है। परन्तु अवश्यही यह उससे अधिक पढा लिखा है।

परन्तु मि० डारसी क्यों बार २ यहां आते हैं। संगतिके लिए तो आते नहीं। क्योंकि जब आते हैं, तो चुपचाप बैठे रहते हैं। बोलते हैं तो खुशीसे नहीं परन्तु मजबूर होकर। ऐसा विदित होता है कि बातचीत करनेमें उनको आनन्द नहीं आता, परन्तु उनके सिद्धान्तका बलिदान होता है। मिसिज कालिन्सके कुछ समझमें न आया। कर्नल डारसीकी मूर्खतापर बहुधा हँसा करता था। शारलोटकी इच्छा हुई कि डारसीके भावमें यह परिवर्तन एलिजा-

बेथके प्रेमसे हो तो अच्छा है। इसलिए उसने यह जाननेका प्रयत्न आरंभ किया। डारसी उसकी सखीकी ओर हंसफोर्ड और रोजिंग्समें देखा करता है, परन्तु उसकी दृष्टिके भावसे कुछ पता न चलता था। उस दृष्टिमें प्रेमका भाव तनिक भी न था, एक या दो बार शारलोटने एलिजाबेथसे कहा—'कि तुमको मि० डारसी चाहते हैं, परन्तु एलिजाबेथने इसको हंसकर टाल दिया। मिसिज कालिंसने इस विषयपर अधिक बातचीत करना उचित न समझा। क्योंकि कहीं पीछे निराश न होना पड़े। उसको पूर्ण विश्वास था कि एलिजाबेथ जो डारसीसे घृणा करती है तुरन्तही हवामें उड़ जायेगी यदि एलिजाबेथको यह मालूम हो कि डारसी उसके वशमें है।

एलिजाबेथ केलिए उसने यही सोचा कि कर्नल फिटस विलियम से विवाह हो तो अच्छा है। वह अत्यंत ही हंसमुख है। एलिजाबेथको चाहता भी है, और उसकी जीवन-अवस्था भी अच्छी है। परन्तु इन सब बातें को देखते हुए भी मि. डारसी उससे अधिक अच्छा है क्योंकि डारसी का प्रभाव गिरजेपर अधिक है और कर्नलका कुछ भी नहीं।

——

तेंतीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथको घूमने में बार २ मि. डारसी मिलने लगे। उसने समझ कि योंही अचानक इधर आ पड़े और उनके मिलनेकी रोकनेकेलिये उसने उनसे कहा कि यहीं वह घूमा करती है। परन्तु फिर भी वह दूसरी बार मिले फिर तीसरी बार मिले। उसने समझा कि मुझको चिढानेकेलिये ऐसा करते हैं। क्योंकि इन अवसरों पर वह साधारण बात चीत करके कुछ ठहरकर चले न जाते थे, परन्तु उसके साथही चलने लगते थे। अधिक तो न बोले और न एलिजाबेथही कुछ बोली; परन्तु तीसरीबार मिलनेपर एलिजाबेथका विचार हुआ कि वह कुछ बहके २ प्रश्न करते हैं। कभी तो हंसफोर्डके सुखकी बात,

कभी अकेले घूमनेके आनन्दकी बात, कभी मिस्टर और मिसिज कालिंसके सुखकी बात पूछते हैं। डारसीने रोजिंगसकी बात करते हुए उससे कहा कि मैं समझता हूँ कि अब जब भी तुम वहां आओगी तो वहाँही ठहरोगी। उसका अर्थ वह बिलकुल न समझी। क्या कर्नल फिट्ज विलियमसे इस बातसे कुछ सम्बन्ध है। सम्भव है कि यह बात करनेसे इनका प्रयोजन यह हो कि मेरा कर्नलसे विवाह होनेकी संभावना है। यह सुनकर उसको कुछ खेद हुआ। इतनेमें वे फाटकपर पहुँच गए।

एक दिन एलिजाबेथ जेनका पत्र पढ रही थी। जिससे जेनका हृदय दु:खित प्रतीत होता था कि कोई पुरुष आगया। मि. डारसी न थे, परन्तु कर्नल थे। पत्रको जेबमें रखकर हंसते हुये उसने कहा—'मैं नहीं जानती थी कि आप भी इस ओर घूमने आते हैं।'

कर्नल--'प्रत्येक वर्ष मैं पार्कमें चक्कर लगाता हूँ, और अब चक्कर लगाकर पादरीके घर जा रहा था। क्या आप कुछ दूर और जायेंगी ?'

एलिजा-'नहीं मैं तो लौटनेही को थी। वह लौट पडी और दोनों पादरीके घरकी ओर चले।'

एलिजा-'तो क्या आप सनीचरही को चले जायेंगे ?'

कर्नल-'हाँ, यदि डारसी फिर जानेकी तिथिको बढा न दे। मैं तो उसीकी इच्छानुसार काम करूंगा, जैसे चाहे वह काम करे।'

एलिजा—'मि. डारसीको दूसरोंको अपनी इच्छाके अनुसार चलानेमें बडा आनन्द प्रतीत होता है।'

कर्नल—'हाँ, उसको अपनी इच्छाके अनुसार काम करनेमें बडा आनन्द प्राप्त होता है। परन्तु हम सब भी तो यही चाहते हैं। केवल इस इच्छाको पूर्ण वही कर सकते हैं, जिनके पास धन है। मैं यह बात व्यथित होकर कहता हूँ। क्योंकि छोटा लडका होनेके कारण मुझको बहुतसी इच्छाओंको दबाना पडता है और दूसरोंका मुख देखना पडता है।'

एलिजा—'मेरी सम्मतिमें एक लार्डके छोटे लडकेको भी अपनी इच्छा-

ओंको दमन करना नहीं पडता। आपही बताइये कि आपको कब इच्छानुसार रुपया नहीं मिला ? कौनसी वस्तु आपने लेनी चाही जो आपको नहीं मिली।'

कर्नल-'यह तो घरकी बातें हैं। मुझको ऐसी कठिनाइयाँ तो कभी सहना करनी नहीं पड़ी। इससे अधिक आवश्यक बातोंमें धनके अभावके कारण मुझको दुख उठाना पड़ेगा। छोटे लडके जहां चाहे विवाह नहीं कर सकते।'

एलिजा-'परन्तु यदि धनवान स्त्रीसे चाहें तो करही सकते हैं, और बहुधा आप लोग धनवान स्त्रीही से चाहते हैं।'

कर्नल-हमंको बहुत व्यय करनेका स्वभाव बाधित करता है कि हम धनवान स्त्रीही से विवाह करें।

एलिजाबेथने मनमें सोचा कि क्या यह मुझको सुनानेके लिएही कहा गया है, परन्तु फिर अपनेको संभालकर हँसकर कहा-'बताइए एक लार्डके छोटे लडकेका विवाहकी हाटमें क्या मूल्य है ? यदि बडा भाई बहुत रोगी न हो तो आप पच्चास हजार पौंडसे क्या अधिक माँगेंगे ?'

उसने भी हँसीही में उत्तर दिया और बातचीत इस विषयमें समाप्त हुई। फिर एलिजाबेथ यह सोचकर कि कहीं चुप के अर्थ यह न लगाये जायें कि इस बातचीतका प्रभाव कुछ और मेरे ऊपर पडा है, वह बोली-'मेरा विचार है कि आपको मिस्टर डारसी इसलिये अपने संग लाये हैं कि किसीपर राज्य करें। न मालूम विवाह क्यों नहीं कर लेते कि एक स्त्रीपर उनका स्थायी राज्य स्थापित हो। परन्तु अभी शायद उनका यह काम बहिनसे निकल जाता है क्योंकि वह केवल उन्हींकी रक्षामें है, इसलिये वे अपनी इच्छाके अनुसार उसको चलाते होंगें।'

कर्नल—"नहीं, मैं भी उसके साथ मिस डारसीका संयुक्त अभिभावक हूँ।

एलिजा०-"अच्छा, आप लोग किस प्रकारके अभिभावक हैं। मिस डारसी आपको बहुत कष्ट तो नहीं देतीं। उसकी अवस्था की युवतियोंको बस में रखना जरा कठिन होता है। और यदि उसका स्वभाव अपने भाईका सा है, तो वह आप लोगों की बात कुछ भी न सुनती होगी।"

जब वह यह कह रही थी कर्नल उसकी ओर गम्भीरतासे देख रहा था। और तुरन्त ही उसने प्रश्न किया कि आपने यह प्रश्न कैसे किया कि मिस डारसी हमको कुछ कष्ट पंहुचाती है। उस प्रश्न करनेके ढंगसे वह समझ-गई कि उसका अनुमान ठीक है।

एलिजा— 'आप डरें' नहीं। मैं ने उसकी कोई बुराई नहीं सुनी। मेरा विश्वास है कि वह संसारके बहुत अच्छे जीवोंमें हैं। मेरी परिचित मिसिज हर्स्ट और मिस बिंगले उसकी बड़ी प्रशंसा करती हैं। मेरा विश्वास है कि आप उन युवतियोंको जानते होंगे।'

कर्नल-'हाँ थोडासा जानता हूँ। उनका भाई बहुत ही भला मनुष्य है और मि० डारसीका परम मित्र है।'

एलिजा-'हाँ, मि० डारसी मि० बिंगले पर बहुत कृपालु हैं, और सदा उन की रक्षा किया करते हैं।'

कर्नल-'रक्षा! हाँ, मिस्टर डारसी उसकी रक्षा करता है विशेषकर उन बातोंमें जिनमें उसको रक्षाकी आवश्यकता है। यात्रामें जो कुछ मि० डारसीने मुझसे कहा है उससे विदित होता है कि बिंगले उसका बहुत अनुगृहीत है। परन्तु मुझको कोई अधिकार इस बातका नहीं है, कि मैं यह अनुमान करूँ कि डारसीका प्रयोजन उस बातचीतसे बिंगले ही का था।'

एलिजा-'आपका ऐसी बातसे क्या प्रयोजन है।'

कर्नल-'यह एक ऐसी बात है जिसे डारसी जनतामें फैलाना नहीं चाहता। क्योंकि यदि यह बात फैली तो एक युवतीके कुटुम्ब वालोंको बहुतही बुरा मालूम होगा।'

एलिजा-'मैं किसीसे न कहूँगी।

कर्नल- 'परन्तु यह याद रखिये कि उसने बिंगलेका नाम नहीं लिया था, यह केवल मेरा अनुमान था। उसने केवल मुझसे यह कहा था कि अभी थोडे दिन हुए मैंने एक मित्रको एक अनुचित विवाह करनेसे रोका परन्तु नाम और कोई बात उसने नहीं बताई। मेरा संदेह हुआ कि बिंगले ही ऐसा

मनुष्य है जो भूल कर सकता है, और पिछली गरमीमें दोनों साथ रहे भी थे इससे वह अनुमान और दृढ हो गया।'

एलिजा-' मि० डारसीने अपनी टाँग बीचमें अड़ानेका कोई कारण बताया ?'

कर्नल-'मेरा विचार है कि उस युवतीके विरुद्ध बहुत सी बातें थीं।'

एलिजा-' और किस कलासे उसने उनको पृथक् किया।'

कर्नल-'उसने अपनी कला की बात तो नहीं बताई, जो कुछ कहा था वह मैंने कह दिया।

एलिजाबेथने कुछ उत्तर न दिया और चलती रही। उसका हृदय घृणा और क्रोधसे भर रहा था। कुछ देर उसको चुप देख कर कर्नल ने कहा कि आप किस ध्यानमें हैं।

एलिजा-" मैं आपके कथन पर विचार कर रही हूँ। मि० डारसी की बात मुझको अच्छी नहीं लगी। वह क्यों न्यायकर्त्ता बन बैठे ?"

कर्नल-" उसके बीचमें पड़ने को आप बुरा समझती हैं ?"

एलिजा- " मेरी समझमें नहीं आता कि मि० डारसीको क्या अधिकार था किवह अपने मित्रकी इच्छाका उचित या अनुचित होना निर्णय करें। और अपनी ही बुद्धिसे वह यह निर्णय करें कि उनका मित्र किस प्रकारके विवाह में सुखी होगा। फिर एलिज़ाबेथने अपनेको संभालते हुए कहा ' क्योंकि हम सब बातें नहीं जानते इस कारण मि० डारसीके विरुद्ध कहना अन्याय होगा संभव है कि पुरुषको युवतीसे प्रेम भी न हो।"

कर्नल-" हो सकता है। परन्तु ऐसा समझनेसे मि० डारसी की विजय का आदर कम हो जाता है।"

यह बात हंसीमें कही गई थी, परन्तु यह उसको मिस्टर डारसीका ठीक चरित्र प्रतीत हुआ। उत्तर देनेमें उसके मुंहसे कुछ निकल न जाये, इस-लिये वह इस विषयको बदलकर और विषयोंपर बातचीत करने लगी। आगन्तुकके जानेके उपरान्त वह अपने कमरेमें बैठकर निर्विघ्न इस पर सोचने

लगी। अवश्य ही यह मि॰ बिंगले होंगे। संसारमें दो मनुष्य ऐसे नहीं होसकते, जिन पर मि॰ डारसीका अनन्त प्रभाव हो। यह तो वह पहले ही से समझती थी कि बिंगलेको जेनसे पृथक् करनेमें डारसीका भी हाथ है। परन्तु अभी तक उसका विचार था कि इसमें मुख्य भाग मिस बिंगलेका होगा। मि॰ डारसी का अभिमान जेनके दुःखोंका कारण है। उसने संसार की एक उदारहृदया युवतीका सर्वनाश करादिया। ईश्वर जाने किस प्रकारसे जेन इस दुःखको सहन करेगीं। कर्नलके शब्द ये थे कि युवतीके विरुद्ध बहुत सी बातें हैं। ये बातें अवश्य ही ये हैं कि उसका पिता देहातका वकील है, और उसका मामा लंदन में व्यवसाय करता है। जेनमें कोई दोष नहीं हो सकता। कैसी प्यारी भोली युवती है समझदार है और उसके ढंग मनको लुभानेवाले हैं। मेरे पिताके विरुद्ध भी कोई अपत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि मि॰ डारसीको स्वंय ही मानना पड़ेगा कि वे योग्य हैं, और इतने भलेमानस हैं, कि डारसी आजीवन उतने नहीं हो सकते। परन्तु मांका विचार आते ही एलिज़ाबेथका दिल टूट गया। उसने सोचा कि मि॰ डारसीने मांकी कुछ चिंता न की होगी। उनके घमंडको इसी बातसे चोट लगी होगी कि जेनके सम्बंधी धनवान नहीं हैं। और अन्तमें उसको पूर्ण विश्वास हो गया कि मि॰ डारसीने घृणित घमंड होनेके कारण और बिंगलेको अपनी बहनकेलिये रोकनेके कारण ऐसा किया है।

उत्तेजना और आंसुओं ने उसके सिरमें दर्द उत्पन्न करदिया। शाम तक इतना अधिक हो गया कि वह सबके संग रोजिंग्स न जा सकी जहाँ चाय पीनेकेलिये उन सबका बुलावा था। उसका वहाँ न जानेका कारण यह भी था कि वह मि॰ डारसीका मुख देखना नहीं चाहती थी। मिसिज॰ कालिन्स ने यह देखकर कि एलिजाबेथ की तबीयत अच्छी नहीं है, उसको जानेको बाधित न किया और अपने पतिको भी मना किया कि उसको बाधित न करे। परन्तु मिस्टर कालिन्स अपने भावको न छुपासके और कहते ही रहे कि लेडी कैथरीन तुम्हारे घर पर ठहरनेसे क्रोधित होंगी।

चौतीसवां परिच्छेद

उनके जानेके उपरान्त मि. डारसीके विरुद्ध अपना क्रोध बढानेके लिए उसने जेनके पत्र जो उसे यहाँ आकर मिले थे,पढने आरंभ किये। उनमें कोई विशेष शिकायत न थी। न कोई भूत या वर्तमान दुःखोंका वर्णन था। परन्तु प्रत्येक पृष्ठपर प्रत्येक पंक्तिसे यह झलक रहा था कि उसका वह हंसमुखपन जो सदा उसके साथ रहता था नहीं रहा। उसकी प्रसन्नतापर बादल छा गए। प्रत्येक वाक्यसे दुःख टपकता था। मि. डारसीकी लज्जाजनक शेखीपर उसको और भी क्रोध आया और बहिनके दुःख और भी अधिक प्रतीत होने लगे। उसको यह जानकर सांत्वना हुई कि मि. डारसी परसोंही यहाँसे चले जायेंगे, और मैं भी एक पक्षके अन्दरही जेनसे जाकर मिलूंगी, और प्रेमसे उसकी व्यथाको कम करूंगी।

डारसीके जानेके साथही उसको कर्नलके जानेका भी ध्यान आया। परन्तु अब मुझे कर्नलसे क्या, जब उसने स्पष्ट कह दिया कि उसके विचार क्या हैं। भला हुआ करे। उसके बिना मैं दुःखी न हूँगी।

इस बातपर वह सोच रही थी कि इधर घंटी बजी। उसका विचार हुआ कि कर्नलही होंगे क्योंकि एक बार पहले भी वह शामको आये थे और अब भी उसकी तबियतका हाल पूछने आए होंगे। परन्तु उसको बडा आश्चर्य हुआ कि जब मि० डारसी कमरेमें घुसे। घबराते हुए उन्होंने उसके स्वास्थ्यके विषयमें पूछा और कहा कि मैं इसीलिए आया था। एलिजाबेथने रूखे भावसे उत्तर दिया। कुछ क्षण बैठकर वह कमरेमें टहलने लगा। एलिजाबेथको आश्चर्य हुआ परन्तु वह चुप रही। कुछ मिनिट चुप रहनेके अनंतर डारसी उत्तेजित अवस्थामें एलिजाबेथके पास आकर बोला-

व्यर्थही मैंने दुःख सहे। अब मुझसे नहीं रहा जाता। मेरा मन नहीं मानता, मुझको आज्ञा दो कि मैं तुमसे कहूँ कि मैं तुमको बहुत चाहता हूँ और तुमसे बहुत प्रेम करता हूँ।

एलिजाबेथके आश्चर्यकी सीमा न रही। उसने उसकी ओर देखा, उसके मुखका रंग बदल गया और वह चुप रही। इससे डारसीको पर्याप्त उत्साह मिला, और उसने अपने भावोंको कहना आरंभ किया। वह अच्छी प्रकारसे बोला, परन्तु हृदयके भावोंके अतिरिक्त और भी भावोंको वह कहता था। और उसकी बातोंमें प्रेमकी अपेक्षा घमँड अधिक टपकता था। एलिजाबेथको वह अपनेसे नीचा समझता था। उसका कुटुम्ब प्रेममें बाधा डालता था। उसके मस्तिष्कने सर्वदा उसके हृदयका विरोध किया। इन बातोंको उसने कह डाला।

यद्यपि एलिजाबेथ उससे अत्यन्त घृणा करती थी, परन्तु ऐसे मनुष्यका प्रेम प्राप्त करके उसने अपनेको आदरका पात्र समझा। और यद्यपि उसके भावोंमें एक क्षणके लिए भी परिवर्तन नहीं हुआ, उसको यह कष्ट था कि मैं कैसे इसको दुःख पहुँचाऊं। परन्तु उसकी भाषाने एलिजाबेथको इतना उत्तेजित किया कि क्रोधने दयाको दबा लिया। वह धैर्यसे सब सुनती रही। डारसीके अन्तिम वाक्य ये थे 'कि मेरा प्रेम इतना प्रबल है कि बहुत प्रयत्न करनेपर भी मैं उसपर विजय न प्राप्त कर सका। मैं आशा करता हूँ कि अब उस प्रेमके उपहारमें आप मुझसे विवाह करना स्वीकार करेंगी।' वह चिन्ता तो प्रगट करता था परन्तु उसके मुखके भावसे यह प्रगट होता था कि उसको इस बातका संदेह नहीं था कि एलिजाबेथ उसके प्रस्तावको अस्वीकार करेगी। इस भावको देखकर एलिजाबेथके क्रोधकी मात्रा और बढ गई। उसके कपोल लाल हो गए। वह बोली—

'ऐसी अवस्थामें परम्परासे चला आता है कि मैं आपके भावोंके लिए आपका धन्यवाद अदा करूं। चाहे मेरे भाव कुछ भी हों। स्वाभाविक है कि मैं आपका अनुग्रह मानूं, और अब मैं आपको कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद देती हूँ। परन्तु मुझको आपका प्रेम प्राप्त करनेकी कभी इच्छा न थी और न कभी हो सकती है। और आपने भी अपनी इच्छाके विरुद्ध मुझसे प्रेम किया है। मुझको दुःख होता है कि मेरे कारण आपको कष्ट पहुँचा परन्तु मैं क्या करूं। मैं आशा करती हूँ कि इस दुःखपर आप शीघ्र विजय प्राप्त करेंगे। और जिन

भावोंने आजतक आपको प्रेम प्रगट करनेसे रोका है, वे ही आपका दुःख भुलानेमें आपकी सहायता करेंगे।

मि० डारसी, जो कार्निसपर सहारा दिये हुए उसकी ओर देख रहा था, यह सुनकर क्रोध और आश्चर्यसे भर गया। उसके मुखका रंग क्रोधसे पीला पड गया, और उसकी मानसिक वेदना उसके प्रत्येक अंगसे प्रगट होने लगी। वह शांति प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा था, और अन्तमें बडी कठिनाईसे बोला—'यही उत्तर पानेकी क्या मैं प्रतीक्षा कर सकता था? मैं जानना चाहता हूँ कि क्यों इस प्रकार असभ्यतासे मेरा प्रस्ताव अस्वीकार किया गया। परन्तु इससे कोई लाभ नहीं।'

एलिजा—'मैं भी जानना चाहती हूँ कि मुझको अपमानित करनेके लिये आपने क्यों यह कहना उचित समझा कि आपने अपनी समझके विरुद्ध अपनी इच्छाके विरुद्ध, अपने स्वभावके विरुद्ध मुझसे प्रेम किया। इस बातको सुननेके अनन्तर क्या मुझको असभ्य होनेका कोई अधिकार नहीं है? परन्तु इससे अधिक मैं और बातोंसे आपपर क्रोधित हूँ। यदि और भाव आपके विरुद्ध न होते, यदि मैं उदासीन होती, या मैं आपको चाहती भी होती, तो क्या आप यह प्रतीक्षा कर सकते थे कि मैं किसी कारण भी उस मनुष्यसे विवाह करना स्वीकार करूंगी, जिसने सदाके लिए मेरी प्यारी बहनकी आशाओंपर पानी फेर दिया?'

मि० डारसीके मुखका रंग बदल गया। परन्तु अपने भावोंको दबाकर वह सुनते रहे। वह बोलती रही—'मैं आपको बुरा समझती हूँ। कोई कारण भी आप नहीं बता सकते कि आपने ऐसा अन्याय क्यों किया। आप यह अस्वीकार करनेका साहस नहीं कर सकते कि आपही मुख्य मनुष्य हैं, जिन्होंने उन दोनोंको पृथक् किया। एकको संसारकी दृष्टिमें, अस्थिरपतिका होनेके लिए निन्दनीय बनाया। दूसरेको निराश करके संसारमें हंसीका पात्र बनाया और दोनोंको अत्यन्त मानसिक वेदना पहुँचाई।'

वह ठहर गई। उसने देखा कि मि० डारसीके मुखपर पश्चात्ताप करनेका कोई भाव नहीं था। वह हंस रहा था।

एलिजाबेथने दोहराया-' क्या आप कह सकते हैं कि आपने ऐसा नहीं किया ?'

डारसीने बनावटी शांतिसे कहा-' मुझको यह अस्वीकार करनेकी कोई इच्छा नहीं, कि मैंने अपनी शक्तिभर प्रयत्न किया कि मैं तुम्हारी बहनसे अपने मित्रको पृथक् करूं। अपनी सफलतापर मुझे अभिमान है। अपने मित्रके साथ मैं न्याय कर सका, परन्तु अपने साथ नहीं।

एलिजाबेथ इसका अर्थ समझ गई, परन्तु उसको कोई शांति नहीं हुई। वह फिर बोली-' मेरी घृणाकी नींव केवल इस बातपर नहीं है। इस बातके होनेके बहुत पहलेही मुझको आपके चरित्रका हाल मि० विकमसे मालूम हो चुका था। आप इस विषयमें क्या कह सकते हैं ? किस मित्रताके भावने आपको मि० विकमके साथ अन्याय करनेपर बाधित किया था ? आप उस विषयमें समझको कैसे धोखा दे सकते हैं ?'

डारसीके मुखपर क्रोधकी झलक दिखाई दी, परन्तु उसने शांत भावसे कहा, आपको उस पुरुषकी बातोंमें बहुत दिलचस्पी प्रतीत होती है।'

एलिजा-' प्रत्येक मनुष्य, जो उसकी विपत्तियोंको जानता है, उसके मामलेमें दिलचस्पी लेगा।

डारसीने घृणित भावसे कहा-' उसकी विपत्तियां ! हां उसकी विपत्तियाँ बहुत दुःखदायी हैं।'

एलिजा—' और आपही उसके कारण हैं। आपही ने उसको वर्तमान दरिद्रावस्थामें पहुंचाया है। आपही ने अपने पिताकी इच्छाके विरुद्ध कार्य करके उसके जीवनका नाश कर दिया है। आपही ने यह सब किया है, और फिरभी आप उसकी बात चलानेपर घृणा प्रगट करते हैं।'

डारसीने कमरेमें तेजीसे चलते हुए कहा—' तो आपकी सम्मति मेरे विषयमें यह है। सब बातोंको खुलकर कहनेके लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मेरे अपराध बहुत भारी हैं, परन्तु (एलिजाबेथकी ओर मुख करके) इन बातोंपर आप ध्यान न देतीं यदि मैं आपके अहंकारको यह कहकर धक्का न पंहुचाता कि मैंने आपसे अपनी इच्छाके विरुद्ध प्रेम किया है। यह कडवे घूंट

आप निगल जातीं यदि मैं चालसे काम लेता। अपने सच्चे भावोंको छिपाता और आपको खुश करनेके लिये यह प्रगट करता कि मैं आपसे बहुत प्रेम करता हूँ। सोच समझकर मैंने देख लिया आप इसी योग्य हैं। परन्तु धोखा देनेको मैं बडा घृणित समझता हूँ। अपने भावोंसे मैं लज्जित नहीं हूँ। वे स्वाभाविक थे। क्या आप आशा कर सकती थीं कि आपके नीच सम्बन्धियोंसे संबंध करके मैं प्रसन्नता प्रगट करता। आपकी जीवन अवस्था, जो मुझसे कहीं नीची हैं का ध्यान करके मैं अपनेको बधाई देता ?'

एलिजाबेथका क्रोध प्रतिक्षण बढ रहा था, परन्तु उसने शांतिपूर्वक उत्तर दिया–मि० डारसी ! आपकी भूल है। प्रेम प्रगट करनेके ढंगने मुझको आपसे क्रोधित नहीं किया। यदि आप भले मनुष्यके समान प्रेम प्रगट करते, तो मुझको आपका प्रस्ताव अस्वीकार करनेमें थोडासा कष्ट होता। डारसी चौंक पडा, परन्तु कुछ न बोला।

एलिजा—' परन्तु आपका किसी प्रकार भी यह प्रस्ताव स्वीकार करना असम्भव था कि मैं आपसे विवाह करनेपर सहमत होती।'

डारसीके मुखपर आश्चर्य प्रगट होने लगा और वह दुःखके भावसे उसकी ओर देखने लगा।

एलिजा–' आरम्भही से, पहले क्षणसे जबसे आपको जाना, आपके स्वभावने मुझको विश्वास दिलाया कि आप अहंकारी, घमण्डी, स्वार्थी और दूसरोंके भावोंपर घृणा करनेवाले हैं। आपके विरुद्ध हृदयमें नींव पड गई, और उसके अनन्तर आपकी चेष्टाओंने हृदयमें आपके विरुद्ध स्थिर घृणाका स्थान बनाया। और एक मासहीके अन्दर मैंने यह निर्णय कर लिया था कि संसारमें आप अन्तिम पुरुष होंगे, जिनसे विवाह करनेपर मैं सहमत हूँगी।'

डारसी—' आप पर्याप्त कह चुकीं। आपके भावोंको मैंने भली भाँति समझ लिया, अपने भावोंपर मुझे लज्जा आती है। व्यर्थ समय नष्ट करनेके लिये मुझे क्षमा करें और मेरी इस इच्छाको आप स्वीकार करें कि आप सदा स्वस्थ और सुखी रहें।

यह कहकर वह कमरेसे बाहर निकल गया, और एलिजाबेथने उसको घरसे बाहर जाते हुए देखा

एलिजाबेथके हृदयमें विचित्र वेदना थी। वह खडी न रह सकी। निर्बलतासे बैठकर रोने लगी। ज्यों २ वह सोचती थी उसका आश्चर्य बढता जाता था। मि० डारसी मुझसे विवाहकी इच्छा प्रगट करे। प्रेमकी मात्रा इतनी अधिक हो कि वह सब बाधाओंको, जिन बाधाओंने उसको मजबूर किया कि वह अपने मित्रको मेरी बहनसे विवाह करनेसे रोके, दूर करके मुझसे प्रेम प्रगट करें। यह विचार करके उसको कुछ खुशी हुई। परन्तु मि.डारसीका घमंड, जेनकी ओर उसका लज्जाजनक व्यवहार, उसका मि० विकमके साथ अन्याय, जो उसने अस्वीकार नहीं किया, ये ऐसी बातें थी कि जो एलिजाबेथके हृदयमें डारसीके लिए करुणा उत्पन्न न होने देती थीं।

वह इसी उत्तेजित अवस्थामें थी कि लेडी कैथरीनकी गाडीकी घंटी सुनाई दी। अपने मनके भावोंको शारलोटसे छिपानेके लिए वह अपने कमरेमें जाकर लेट रही।

——

पैंतीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथ जब दूसरेदिन सुबह उठी तो उसके विचार वही थे, जो रातको सोते हुए थे। अभीतक उसको आश्चर्य था। वह और किसी बातका विचार कर ही न सकती थी। काम करनेको दिल नहीं चाहता था। इसलिए उसने सोचा कि जलपान करके जरा खुली हवामें घूम आऊं। वह जहाँ रोज घूमने जाती थी उधर चली। परन्तु उसको ध्यान आया कि मि० डारसी कभी कभी उधर ही घूमने आते हैं। वह रुक गई और पार्कमें प्रवेश न करके वह गलीमें घुसी। पार्कका कटहरा एक ओर था। दो तीनबार उधर घूमकरके उसको इच्छा हुई कि सुहावने प्रभातका दृश्य फाटक परसे देखे। पाँच सप्ताह उसको

यहाँ आए हुए थे और इस समय यहाँ की शोभा बहुत बढ़गई थी। हरियाली बहुत फैलगई थी। वह बढना ही चाहती थी कि उसने एक मनुष्यको पार्क के किनारे एक झाडीमें देखा। यह सोचकर कि कहीं मि० डारसी न हों वह लौटने लगीं। परन्तु उस मनुष्यने अब इसको देख लिया था और उसने नाम पुकारकर आगे बढ़नेकेलिए पग बढाये। वह मुंह मोड चुकी थी, परन्तु अपना नाम सुनकर और मि० डारसीकी आवाज पहचानकर वह फाटक की ओर लौटी। पुरुष भी वहाँ तक पहुँचगया था और एक पत्रको निकालकर उसने अभिमानपूर्ण शान्तिसे कहा "मैं इस कुञ्जमें घूमरहा था कि तुमसे भेंट हो जाय। क्या तुम कृपाकरके इस पत्रको पढने की कृपा करोगी!" एलिजाबेथ ने पत्र ले लिया। डारसी सिर नवाकर दृष्टिसे ओझल हो गया।

किसी सुख की संभावना न करके परन्तु बड़ी उत्सुकतासे एलिजाबेथने लिफाफा खोला। अश्चर्यसे उसने देखा कि लिफाफेमें दो पत्र लिखनेके कागज पूरे भरे हुए और महीन लिखे हुए थे। लिफाफा भी भरा हुआ था। गलीमें चलते-चलते वह पत्र पढने लगी। रोजिंग्ससे ८ बजे प्रातः पत्र लिखा गया था। और निम्न लिखित प्रकारसे था—

"पत्र"

"देवि,

इस पत्रको पाकर आप इस भयसे न घबारायें कि इसमें वही भाव और प्रस्ताव दोहराया जायेगा, जो कल रात्रिको आपको बडा घृणित प्रतीत हुआ था। मेरा प्रयोजन पत्र लिखनेसे आपको कष्टदेना या अपनेको विनीत बनाना नहीं है। मैं इनमें उन इच्छाओंको नहीं लिखना चाहता, जो हम दोनोंके सुखकेलिये थीं। और जिनको मैं चिरकालतक नहीं भूल सकता।

मैं यह पत्र कभी न लिखता, यादि मेरा चरित्र मुझको लिखनेकेलिये बाधित न करता। इसलिये मेरी पत्र लिखने की स्वतंत्रताको क्षमा करके आप इस पत्रको ध्यान पूर्वक पढें। मैं जानता हूँ कि आपका दिल इसको पढने को न चाहेगा। परन्तु मैं आपकी न्यायबुद्धि पर विश्वास करता हूँ कि आप इसको अवश्य पढेंगी।

कल रात्रिको आपने मुझ पर दो अपराध भिन्न २ प्रकारके लगाये हैं। पहला तो यह है कि मैंने मि० बिंगले और आपकी बहनके भावोंपर ध्यान न देकर उन दोनोंको पृथक् करदिया। दूसरा यह है कि मैंने मनुष्यता और धर्म को छोडकर मि० विकमके सुख और उनके आगामि आनन्दको नष्ट करदिया। जान बूझकर अपने बचपनके साथीको फेंकदेना, अपने पिताके प्रियको धक्का देना, उस युवकको जिसका हमारे अतिरिक्त कोई संरक्षक नहीं हानि पहुँचाना, यह अपराध दो मनुष्योंको पृथक् करनेसे [जिनका अनुराग केवल कुछ सप्ताह में उत्पन्न हुआ हो] कहीं घोर है। उस अपराधके विषयमें मैं सब बातें आपको लिखूंगा जिससे कि फिर कभी आप मुझपर यह अपराध न लगाएं। अपनेको निर्दोषी प्रमाणित करनेमें यदि मैं कुछ ऐसे भाव प्रगट करूं, जो आपको बुरे लगें तो मुझको क्षमा करें। अधिक बात न लिखकर पहले अपराधके विषयमें मैं यह कहना चाहता हूँ कि हर्टफोर्ड-शायरमें थोडे ही दिन रहनेके अनन्तर मुझको और अन्य लोगोंको यह प्रतीत हुआ कि बिंगले उसग्राम की और युवतियोंसे तुम्हारी बहनको अच्छा समझता है। नीदर-फील्डके नाच के पहले मेरा विचार ऐसा न था कि उनमें परस्पर कुछ प्रेम हो गया है। उस नाचमें जिसमें मुझको तुम्हारे संग नाचनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मुझको अकस्मात् सर विलियमके मुंहसे यह बात सुनाई पडी कि ग्राममें ऐसा विचार है कि बिंगलेका विवाह जेनसे होगा। केवल समय नियत नहीं हुआ है। उस क्षणसे मैंने अपने मित्रके भावोंपर ध्यान देना आरम्भ किया। मुझको प्रतीतहुआ कि बिंगले जेनको प्रेम करता है। तुम्हारी बहनके भावों पर भी मैंने ध्यान दिया। सदाके समान उसकी आदत और चाल मन मोहनेवाली थी, परन्तु उसमें प्रेमका लक्षण न था। मुझको इस अध्यायनसे विश्वास हो गया कि यद्यपि जेनको बिंगलेके अनुरागमें आनन्द प्राप्त होता है परन्तु उसको बिंगले केलिए कोई प्रेमके भाव नहीं हैं। यदि तुम्हारा विचार ठीक है तो मेरी ही भूल है। संभावना यही है कि तुम अपनी बहनके स्वभावको मुझसे अधिक जानती हो। यदि ऐसा है और मैंने अपनी भूलसे उसको कष्ट पहुंचाया है, तो तुम्हारा क्रोधित होना अनुचित नहीं है। परन्तु मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ कि

तुम्हारी बहनकी चाल और ढंग ऐसे थे कि प्रत्येक मनुष्यको यही परिणाम निकालना पड़ता कि वह हंसमुख अवश्य है परन्तु किसीके लिए उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न होना कठिन है। मैं चाहता भी यही था। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं इस परिणाम पर इसीलिए पहुंचा कि मैं ऐसा ही चाहता था। यह मेरा निष्पक्ष विश्वास था और इच्छा भी यही थी। इस विवाहमें मुझे केवल यही आपत्तियाँ नहीं थीं जो कल रात्रिमें मैंने स्वीकार कीं। अच्छे संबंधका प्रभाव मेरे मित्रकेलिये उतना आवश्यक नहीं, जितना मेरेलिए। परन्तु घृणाके और भी कारण हैं, जो अबतक वर्तमान हैं और तुम दोनोंमें वे समान हैं। परन्तु मैंने उनको भूलनेका प्रयत्न किया क्योंकि मैं तुमसे अत्यन्त प्रेम करता हूँ। उन कारणोंको मैं यहाँ संक्षेपमें लिखना चाहता हूँ। तुम्हारी माताके नातेदार यद्यपि आपत्ति करने योग्य हैं, परन्तु ऐसी आपत्तियाँ नहीं हैं कि जिन पर बहुत ध्यान दिया जाय।

परन्तु तुम्हारी माँकी बेहूदगियाँ, तुम्हारी तीनों छोटी बहनोंकी बत्तमीजियाँ और कभी-कभी तुम्हारे पिताकी नासमझी बहुत बडी आपत्तियाँ हैं। तुमको दुःख पहुंचानेमें मुझे कष्ट होता है। परन्तु मैं क्या करूं? कमसे कम तुमको यह साँत्वना तो होनी चाहिये कि ऐसे नातेदारोंमें पलकर उनके दोषोंका भागी न होना—यह तुम्हारे और तुम्हारी बडी बहनके लिए प्रशंसनीय है। मुझको यह विश्वास उस सन्ध्याके व्यवहारसे और भी दृढ होगया और मुझको इच्छा हुई कि इस विवाहसे अपने मित्रको रोकूं। दूसरे दिन मेरा मित्र लंदनके लिए रवाना हुआ। उसका शीघ्र लौटनेका विचार था। अब जो कुछ मैंने किया वह यह था। मुझको मालूम हुआ कि उसकी बहनोंका विचार भी मेरेही प्रकार है और उनकी भी इच्छा यही है कि जितने शीघ्र हो सके बिंगलेको जेनसे छुडाना चाहिए। इसलिए हम भी लंदनको रवाना हुए। वहाँ पहुंचकर मैंने अपने मित्रको इस विवाहकी बुराइयाँ बताईं। सम्भव था कि मेरी बातोंका विचार न करके वह तुम्हारी बहनसे विवाह करता। परन्तु, जब मैंने उसको विश्वास दिलाया कि तुम्हारी बहन उसकी ओरसे सर्वथा उदासीन है, तो उसने विचार छोड दिया। बिंगले मेरी सम्मतिको अपनी सम्मतिसे अधिक

समझता है। इसलिये उसको ऐसा विश्वास दिला देनेका कठिन नहीं था। ऐसा विश्वास दिलाकर हर्डफोर्डशायरमें लौटकर आनेसे रोक देना एक क्षणका काम था। ऐसा करनेके लिए मैं अपनेको दोषी नहीं ठहराता। एक बात मैंने ऐसी अवश्य की है, जो मेरे चरित्रके विरुद्ध है, और जिसको मेरा हृदय बुरा कहता है। वह बात यह है कि मैंने बिंगलेसे तुम्हारी बहनका लंदनमें होना छिपाया है। मुझको यह बात मालूम थी परन्तु बिंगले नहीं जानता। सम्भव था कि मिलकर कोई बुराई न होती। परन्तु मेरा विचार है कि बिंगलेके हृदयमें अब भी कुछ प्रेमकी अग्नि है। जिससे कुछ भय होना संभव है। यह बात छिपाना मैं नीचोंका काम समझता हूँ। परन्तु जो होना था हो गया। और जो कुछ मैंने किया, अच्छेहीके लिए किया। इस विषयपर अब मुझे कुछ नहीं कहना है। यदि मैंने तुम्हारी बहनको दुःख पहुँचाया है तो अनजानमें और यदि, मैंने जो कुछ ऐसा करनेके लिए कारण तुम्हारे सामने वर्णन किए हैं, तुमको पर्याप्त विदित न हों—तो मै केवल यह कहना चाहता हूँ कि अभीतक मैं उनको पर्याप्त समझता हूँ।

दूसरा अपराध भारी है। उसकेलिए मैं मि० विकमका अपने कुटुम्बके साथ सब सम्बन्ध लिखना उचित समझता हूँ। मैं नहीं जानता कि उसने मुझ पर क्या अपराध लगाया है। परन्तु इतना कह सकता हूँ कि जो कुछ मैं लिखता हूँ उसकी सत्यता विश्वसनीय गवाहों द्वारा प्रमाणित कर सकता हूँ। मि० विकम एक भले मनुष्यका पुत्र है। इसका पिता हमारी सम्पत्तिका प्रबन्धकर्ता चिरकालतक रहा है। उसके पिताकी इमानदारीने मेरे पिताका अनुराग उसकी ओर आकर्षित किया और मि विकमको उसने स्कूलमें केम्ब्रिजतक पढवाया। उसको शिष्ट बनाया। मेरा पिता मि. विकमसे बहुत प्यार करता था और उसका विचार था कि उसको गिरजेमें स्थान दिया जाय परन्तु मैं बहुत वर्षोंसे इसको बुरा समझता था। उसकी दुश्चरित्रता सिद्धांतहीनता, मुझसे न छिप सकी। क्योंकि मैं उसीकी अवस्थाका था और उसको अरक्षित समयपर भी देख सकता था, जो मेरे पिता नहीं कर सकते थे। सम्भव है कि यह सुनकर तुमको कष्ट हो। मैं नहीं जानता कि मि. विकमकी ओर तुम्हारे भाव कैसे हैं परन्तु उसका सच्चा

चरित्र मैं तुम्हारे सामने खोलना उचित समझता हूँ। पाँच वर्ष हुए मेरे पूज्य पिताका देहान्त हुआ। अन्त समयतक उनका अनुराग मि० विकमसे स्थिर रहा। अपनी वसीयतमें मेरे पिताने यह इच्छा प्रगट की थी कि जैसे हो सके मैं उसकी सहायता करूं। और यदि वह गिरजेमें नौकरी करना स्वीकार करे तो उसको एक अच्छी नौकरी दूं। और एक हजार पौंड उसको नकद दूं। मि० विकमका पिता भी थोडेही दिनमें चल बसा और छः मासके अन्दरही मि० विकमने मुझको एक पत्र लिखा कि वह गिरजेमें नौकरी करना नहीं चाहते। इसलिये उसने यह आशा प्रगट की कि मैं उसको कुछ और अधिक नकद दूं। उसने लिखा कि मैं वकालत पढना चाहता हूँ। और एक हजार पौंड उसके लिए पर्यात नहीं है। मैं समझता था कि वह झूठ बोल रहा है परन्तु मैंने उसके प्रस्तावको स्वीकार किया। मेरा विचार था कि मि०विकमको पादरी न होना चाहिये। इसलिये यह निर्णय हुआ कि वह अपना दावा गिरजेमें छोड दे और उसके बदलेमें मैं उसको तीन हजार पौंड नकद दूं। मैंने अब समझा कि मेरा उसका संबन्ध टूट गया। उसको मैं बुरा समझता था इसलिए पैम्बरलेमें बुलाना और शहरमें उससे मिलना मुझको अनुचित प्रतीत हुआ। शहरहीमें वह रहता रहा। परन्तु कानून पढनेका तो केवल बहाना था। वहाँ वह अपना धन वेश्यागमनमें लुटाता रहा। तीन वर्ष तक उसका मुझको कुछ समाचार न मिला। परन्तु एक पादरीके मरनेपर उसने मेरे पास उस जगहको पानेके लिए एक प्रार्थनापत्र भेजा। उसने लिखा कि मेरी अवस्था खराब है, वकालतका अध्ययन हानिकारक प्रमाणित हुआ और अब मैंने गिरजेकी नौकरी करनेका निश्चय कर लिया है। उसने यह विश्वास प्रगट किया कि उसको मैं वह नौकरी दे दूंगा क्योंकि मुझको और किसी मनुष्यकी सहायता नहीं करनी थी और मेरे पूज्य पिताकी भी इच्छा ऐसीही थी। तुम मुझको दोषी न ठहराओगी जब मैं यह लिखूं कि मैंने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी। उसके क्रोधकी मात्रा उसकी विपत्तिके साथ बढती गई और इधर उधर उसने मुझे गालियाँ देनी आरम्भ की। इसके अनन्तर मुझे विदित नहीं कि वह कैसे रहता रहा। पिछली गरमीमें फिर उसने मुझे कष्ट

दिया। अब मैं एक ऐसी बात लिखता हूँ जिसको मैं भूल जाना चाहता हूँ। और आशा करता हूँ कि तुम इसे गुप्त रखोगी। मेरे पिताने मेरी बहनके (जो मुझसे दशवर्ष छोटी है) दो अभिभावक नियत किये थे। एक मैं और दूसरे कर्नल फिट्स विलियम।'

एक वर्ष हुआ उसको स्कूलसे निकालकर, हमने लंदनमें एक घरमें रखा। वहाँसे वह अपनी मास्टरनीके संग रॉसगेट गई। मि.विक्रम भी वहाँ पहुँचे। उस मास्टरनीसे मि. विक्रमका पहलेहीसे परिचय था। हमको यह बात विदित नहीं थी। उस मास्टरनीकी सहायतासे विक्रमने मेरी बहनसे मिलना आरम्भ किया और उससे इतना प्रेम प्रगट किया कि वह उसके संग भागनेपर तत्पर हो गई। उस समय मेरी बहनकी अवस्था केवल १५ वर्षकी थी। अकस्मात् भागनेके दो दिन पहले मैं वहाँ जा पहुंचा। मेरी बहन जो मुझको पितातुल्य समझती है,मुझे दुःखित करनेके बिचारको सहन न कर सकी। उसने सब बात मुझको बता दी। तुम समझ सकती हो कि मैंने फिर क्या किया। बातको खोलनेमें बहनकी बदनामी थी इसलिए मैंने मि० विक्रमको चिठ्ठी लिखी और वह तुरन्तही वहाँसे चले गये। मास्टरनी निकाली गई। मि० विक्रमका मुख्य अभिप्राय मेरी बहनकी संपत्ति लूटना था जिसकी संख्या तीस हजार पौंड है। परन्तु इसके अतिरिक्त मुझसे बदला भी वह लेना चाहता था। वह बदला वास्तवमें मुझको कहीं का न रखता। देवि! यह सच्चा हाल मैंने लिख दिया। यदि तुम इसको झूठ नहीं समझतीं, तो मुझको अब मि० विक्रमके साथ निर्दयता करनेका अपराध न लगाना। मैं नहीं जानता कि उसने क्या कहकर तुमको धोखा दिया है। परन्तु उसकी सफलतापर मुझे आश्चर्य नहीं होता क्योंकि तुम इन बातोंको नहीं जानती थीं। तुमको आश्चर्य होगा कि कल रात्रिको मैंने यह सब बात क्यों नहीं कही। परन्तु उस समय मैं अपने होशमें नहीं था,और यह नहीं जानता था कि कितना कहना चाहिए हमें और कितना नहीं। इन बातोंको सच प्रमाणित करनेका गवाह कर्नल फिट्स विलियम है जो मेरी बहनका संयुक्त अभिभावक होनेके कारण सब कुछ जानता है। यदि तुम क्षमाके कारण मेरी बातोंको न मानों तो तुम कर्नलसे

सब पूछ सकती हो, और यह अवसर तुमको देनेके लिये मैं यह पत्र किसी प्रकार तुम्हारे हाथमें प्रातःकालही पहुँचा दूंगा। बस यही लिखना है कि ईश्वर तुमको सुखी रखे।

'फिट्स विलियम डारसी।'

——

छत्तीसवां परिच्छेद

यद्यपि डारसीका पत्र पानेपर एलिजाबेथको यह आशा न थी कि विवाहका प्रस्ताव फिर दोहराया गया होगा, परन्तु तब भी उसमें क्या होगा, यह वह नहीं समझ सकती थी। बड़ी उत्सुकतासे उसने वह पत्र समाप्त किया और उस समयके भावोंका वर्णन करना असंभव है। वह यह समझती थी कि डारसीके पास इन अपराधोंका कोई उत्तर नहीं है, और यदि कोई हैं तो वह लज्जासे उनको प्रगट नहीं कर सकता। उसके विरुद्ध अपने मनोभाव करके उसने पत्र आरम्भ किया। उसने इतनी उत्सुकतासे पत्रको पढा कि समझनेकी शक्ति जाती रही। आगेके वाक्यको जाननेकी उत्सुकताने पिछले वाक्यके अर्थ भुला दिये। डारसीका यह विचार कि जेन बिंगलेकी ओरसे उदासीन थी झूठा था और उस विवाहमें जो आपत्तियाँ डारसीने वर्णन की थीं, उन्होंने उसे क्रोधित कर दिया। डारसीने अपने कार्यके लिए कोई शोक नहीं किया। उसके लिखनेके ढंगमें पश्चात्तापका भाव नहीं था। वह पत्र अहंकारसे पूर्ण था।

परन्तु जब इस विषयके अनंतर मि० विकमकी बातें आईं, तो उसका दिमाग कुछ काम करने लगा था। और यदि वे बातें सच थीं तो विकमकी ओर उसके भावोंमें बडा परिवर्तन होना चाहिये। और विकमका इतिहास विकमके स्वयं वर्णित किये हुए इतिहाससे इतना मिलता जुलता था कि उसको कष्ट होने लगा। आश्चर्य और भयके भाव उत्पन्न हुए। उसकी इच्छा हुई कि यह बिलकुल झूठ निकले। वह बार २ चिल्लाने लगी, यह झूठ है

ऐसा कभी नहीं हो सकता। जब वह पूरा पत्र पढ़ चुकी। अन्तिम एक या दो पृष्ठ तो उसकी समझमेंही न आये। उसने पत्रको पृथक् धर कर कहा कि मैं उसको फिर न देखूंगी।

इस उत्तेजित अवस्थामें उसके मनकी दशा चंचल हो रही थी। और वह घूमती २ आगे चली गई। आधे मिनटमें पत्र फिर खुल गया, और उसने विक्रमकी कहानी फिर पढ़नी आरंभ की और प्रत्येक वाक्यके अर्थ समझनेका फिर प्रयत्न किया। पैम्बरले कुटुम्बसे जो इसका सम्बन्ध था, पहले विक्रमके बयान करनेकेही अनुसार लिखा था। मि० डारसीके पिताकी दयाका हाल भी वैसाही था। परन्तु वसीयतके विषयमें बहुत अन्तर था। विक्रमने जो कुछ इस वसीयतके विषयमें कहा था उसको अच्छी प्रकार याद था। इन दोनोंमेंसे एक बड़ा झूठा है। और उसने डारसीहीको झूठा ठहराया परन्तु जब उसने कई बार पत्रको ध्यानसे पढ़ा, तो तीन हजार पौंड नकद पाकर गिरजेकी नौकरीपर अधिकार छोड़ देना, वह यह पढ़ते २ रुक गई। पत्रको रख दिया और निपक्ष भावसे प्रत्येक भावको तोलने लगी। परन्तु कोई सफलता न हुई। दोनों ओरसे केवल दोनोंके बयान थे। फिर उसने पढ़ना आरंभ किया। प्रत्येक पंक्तिसे यह स्पष्ट होने लगा कि पहले जो मैं मि० डारसीके इस व्यवहारको बहुत बुरा समझती थी, वह दूसरी दृष्टिसे देखनेसे बिलकुल उसको निर्दोषी प्रमाणित करता है"। बहुत रुपया उड़ानेकी बात जो मि० विक्रमके विषयमें डारसीने लिखी थी उसको बुरी लगी। परन्तु उसके विरुद्ध उसके पास कोई प्रमाण न था। मि० विक्रमको वह पहलेसे नहीं जानती थी और उसने अपना जीवन यहाँपर कैसे गुजारा है इसके विषयमें हैर्डफोर्ड शायरमें कोई कुछ नहीं जानता था। विक्रमके चरित्रके विषयमें उसको कुछ जाननेकी इच्छाही कभी नहीं हुई। उसकी आकृति, ढंग और आवाजनेही उसको सद्गुणसे भरा हुआ प्रमाणित कर दिया था। उसने प्रयत्न किया कि विक्रमकी उदारताकी कोई अच्छी बात स्मरण आए कि जिससे मि० डारसीकी बात झूठी प्रमाणित हो, परन्तु कोई भी बात स्मरण नहीं आई। उसके सामने विक्रमका सुन्दर चित्र आया। उसका मन मोहनेवाला ढंग और आकृति स्मरण आई, परन्तु उसके

गुणकी रेखाकी झलक कहीं भी न दिखाई दी। केवल उसके ढंग और आकृतिहीकी प्रशंसा उसने इधर उधर सुनी थी। थोडी देर ठहरकर फिर उसने पत्र पढना आरंभ किया। मिस डारसीपर जो विकमने डोरे डालनेका प्रयत्न किया और जिसका वर्णन डारसीने लिखा था उसका समर्थन कर्नल फिट्स विलियमकी गत प्रातःकालकी बातचीतसे मिलता था। पत्रोंमें यह भी लिखा था कि कर्नलसे इस बातकी सच्चाई प्रमाणित हो सकती है। कर्नलके चरित्रके विरुद्ध वह कुछ नहीं कह सकती थी। इसलिए उसको एक बार विचार हुआ कि वह कर्नलसे पूछे, परन्तु फिर वह रुक गई कि यह बडी भद्दी बात होगी और फिर उसने सोचा कि मि० डारसी कभी भी ऐसा प्रस्ताव न करते यदि उनको यह पूर्ण आशा न होती कि उनके कथनका समर्थन कर्नल करेगा।

अब उसको वे बातें याद आने लगीं जो विकमसे उससे पहले दिन हुई थी। अब उसकी समझमें आया कि विकमका वे बातें एक अनजान स्त्रीसे कहना बहुतही अनुचित था। उसको आश्चर्य हुआ कि पहले मुझको यह बात क्यों नहीं समझमें आई। अब उसको ध्यान आया कि उसको इस प्रकारसे नहीं कहना चाहिए था। और उसको यह भी स्मरण हुआ कि मि. विकम कहता कुछ था और करता कुछ था। उसको स्मरण हुआ कि वह कहता था कि मैं मि. डारसीके सामनेसे नहीं डरता। मि. डारसी ग्राम छोडकर चले जांये, परन्तु मैं न जाऊंगा। परन्तु फिर भी दूसरेही सप्ताहमें नीदरफील्डके नाचमें वह सम्मिलित नहीं हुआ। उसको अब यह भी याद आया कि जब तक मि० डारसी ग्राममें थे तो मि. डारसीकी क्रूरताकी कहानी केवल मुझसेही कही गई थी। परन्तु उनके चले जानेके अनन्तर स्थान स्थानपर विकमने यह बात फैलानी आरंभ की और मि. डारसीके चरित्रको लोगोंकी दृष्टिमें गिरानेका प्रयत्न किया। यद्यपि मुझको यह विश्वास दिलाया था कि पिताके खयालसे मैं पुत्रकी पोल कभी न खोलूंगा।

अब सब बातें दूसरेही प्रकाशमें दिखने लगी। मिस किंगसे जो वह प्रेम प्रगट करता है, वह केवल रुपयेके लोभसे, और मुझसे जो प्रेम उसने प्रगट किया था, वह केवल दिल बहलानेके लिये था। उसने मेरे संग बुरा व्यवहार

किया तो उसको मेरे धनके विषयमें धोखा हुआ और या मैंने जो उससे अनुराग प्रकट किया था उसको बढ़ानेके लिये वह मुझसे प्रेम प्रगट करता रहा। धीरे २ मि० विकमका पक्ष कम होता गया। उसको याद आया कि मि० बिंगलेने जेनके पूछनेपर कहा था कि डारसी बिलकुल निर्दोषी है। मि० डारसीके ढंगसे, बातचीतसे अहंकार टपकता है। परन्तु इतने दिनके परिचयमें मैंने उसको अन्यायी या सिद्धान्तोंके विरुद्ध काम करनेवाला कभी नहीं पाया। अधर्म या दुराचारकी कोई बात नहीं देखी। उसके सम्बन्धी उसकी प्रशंसाही करते है। विकम तकने कहा कि वह बहनसे बहुत प्रेम करता है। और डारसी भी बहनकी बात करते हुए कैसा प्रेमसे गद्‌गद् हो जाता है। इन सब बातों-पर ध्यान करके उसने निर्णय किया कि यदि डारसीके कर्म ऐसे होते जैसे विकमने कहे थे तो संसारसे कभी यह बात छुपी न रहती और मि० बिंगलेके समान सज्जनसे उसकी कभी मित्रता न होती।

उसको अब अपनेहीसे लज्जा आने लगी। मि० डारसी और मि० विकमका ध्यान आतेही उसको यह विचार होता था कि मैं अन्धी थी, पक्ष-पातिनी थी और हठी थी। कैसा बुरा मैंने काम किया। अपनी समझपर मुझको घमंड था। मैंने अपनी उदारहृदया बहनका कहना नहीं सुना, और व्यर्थही एक मनुष्यको दोषी ठहराया। यदि मुझे प्रेम होता तो मैं इससे अधिक अन्धी नहीं हो सकती थी, परन्तु घमण्डने मेरा नाश किया। आरंभहीसे एकको अच्छा समझ लिया दूसरेको बुरा। समझसे कभी काम न लिया। आज तक मैंने अपनेको बिलकुल न जाना।

अपनेसे जेनपर, जेनसे बिंगलेपर उसका ध्यान गया। इस सम्बन्धमें मि. डारसीका उत्तर सन्तोषप्रदायक नहीं है। फिर उसने पत्र पढा। इस बार उसके भाव दूसरेही थे। एक बार डारसीको सच्चा मानकर दूसरी बातमें उसको कैसे झूठा मानूं। डारसीने लिखा है कि मैं नहीं समझता था कि जेन बिंगलेसे प्रेम करती है, उसको अब यह भी याद आया कि शारलोटकी भी यही सम्मति थी। डारसीने जो जेनका वर्णन किया था, वह न्यायपूर्ण था। जेनका गांवोंमें प्रेम अवश्य था, परन्तु प्रेमका व्यवहार न था।

जब वह पत्रके उस भागपर पहुँची जहाँपर उसके कुटुम्बका वर्णन था, उसको बडी लज्जा आई। बात सच थी और नीदरफील्डके नाचका जो हाल लिखा था उसके विषयमें एलिजाबेथकी भी वही सम्मति थी जो डारसीने लिखी थी।

जेनकी और उसकी जो प्रशंसा लिखी थी, उससे कुछ उसको सन्तोष हुआ। परन्तु सांत्वना न हुई क्योंकि और सब कुटुम्बका उसने घृणित चित्र खींचा था। उसको जब यह विचार आया कि जेनकी असफलताका कारण हमारे सबके समीपके नातेदारोंही की बेसमझी है और मेरे और जेनके आगामी सुखमें सर्वदा हमारे नातेदारोंका अनुचित व्यवहारही धक्का पहुँचाता रहेगा। तब उसकी लज्जाकी सीमा न रही।

दो घंटे तक गलीमें भटकते भटकते उसको ध्यान आया कि मैं बहुत दूर आगई हूँ, और थक गई हूँ। वह घर लौटी और अपने सब भावोंको दबाकर उसने यह प्रयत्न किया कि मैं अपनी आकृति हंसमुख बनालूं, और इन बातोंको भूलकर बातचीत करनेके योग्य हो जाऊं।

प्रवेश करतेही उसको मालूम हुआ कि मि॰ डारसी उस कुटुम्बसे विदा होनेकेलिये कुछ मिनटोंकेही लिए आये थे और कर्नल घंटाभर उसकी प्रतीक्षा करके हारकर चल गया। एलिजाबेथने उससे न मिल पानेका शोक प्रगट किया। परन्तु वास्तवमें वह सुखीही हुई क्योंकि अब कर्नल फिट्स विलियम उसके लिये कोई पदार्थ नहीं था। इस समय तो वह पत्रहीके ध्यानमें मग्न थी।

सैंतीसवां परिच्छेद

दोनों पुरुष दूसरे प्रातःकाल रोजिंग्ससे विदा हो गये। मि॰कालिंसने अपने द्वारपर खडे होकर उनको झुककर सलाम किया और फिर घर आकर यह समाचार सुनाया कि दोनोंका स्वास्थ्य अच्छा है, और दोनोंही हंसते खेलते गये हैं। फिर वह लेडी कैथरीन और उसकी पुत्रीको सांत्वना देनेके लिये गया। वहाँसे लौटकर समाचार सुनाया कि लेडी कैथरीन अकेले मनसे उकता रही हैं, और हम सबको आज भोजनपर बुलाया है। एलिजाबेथको लेडी कैथरीनके

पास पहुँचकर यह विचार आया कि यदि मैं चाहती तो इस समय मेरा परिचय मि० डारसीकी भावी पत्नी कहकर किया जाता। उसको सोचकर हंसी आई कि लेडी कैथरीन कितनी क्रोधित होती और क्या कहतीं।'

लेडी कैथरीनेंने पहले रोजिंग्ससे लोगोंके चले जानेकी बात चलाई, उसने कहा कि मुझको बडा दुःख है। मित्रोंका प्रभाव मुझसे अधिक कोई अनुभव नहीं करता। इन युवकोंसे मुझको बहुत प्रेम है और वे भी मुझसे प्रेम करते हैं। वे दोनों भी बडे दुःखी थे। प्यारे कर्नलने तो अपनेको सम्हाल लिया, परन्तु डारसी अत्यन्त दुःखी था। गतवर्षसे अधिक उदास था। रोजिंग्ससे उसका प्रेम बढता जाता है। मि० कालिंसने इस समय प्रशंसामें कुछ कहा और मां और बेटी दोनों मुस्कराईं।'

खानेके अनन्तर लेडी कैथरीनने यह कहा कि मिस बेनट कुछ उदास मालूम होती है कदाचित् घर जाना नहीं चाहती। ऐसी दशामें अपनी मांको लिख दो कि कुछ दिन यहाँ और ठहरना चाहती हूँ, मिसिज कालिंस तुमको भले प्रकार रखेगी।'

एलिजा—'मैं आपकी कृपाकी बहुत अनुगृहीत हूँ परन्तु मुझको सनीचरतक घरमें पहुंच जाना चाहिये।'

कैथरीन—'तुम तो यहाँ छः सप्ताहही ठहरीं, मैं समझती थी कि दो मास ठहरोगी। मिसिज कालिंससे मैंने तुम्हारे आनेसे पहलेही यह कहा था। न मालूम तुम्हें जानेकी इतनी जल्दी क्या है। तुम्हारी मां तुम्हारे बिना पंद्रह दिन और रह सकती है!

एलिजा—'परन्तु मेरे पिताजी नहीं रह सकते। उन्होंने मुझे शीघ्र लौटनेको लिखा है।'

कैथरीन—'तुम्हारे पिताजी नहीं रह सकते। पिताको पुत्रियोंसे बहुत प्रयोजन नहीं होता! और यदि तुम एक मास यहाँ ठहरो तो मैं तुममेंसे एकको लंदनतक पहुँचा दूंगी। और यदि ऋतु ठंडी हुई तो दोनों मेरे संग चल सकती हो क्योंकि तुममेंसे कोई भी मोटी नहीं।'

एलिजा—'आपकी असीम कृपा हमपर है, परन्तु शोक है कि हम ठहर नहीं सकते।'

लेडी कैथरीन उदासनि होकर बोली—मिसिज कालिंस एक आदमी इनके संग कर देना। मैं अपने मनकी बात कह देती हूँ। दो युवतियोंका अकेले यात्रा करना मुझे अच्छा नहीं लगता। किसी न किसीको इनके संग कर दो। युवतियोंकी रक्षा भले प्रकार करनी चाहिये। जब मेरी भानजी मिस डारसी गत गरमीमें रेम्सगेट गई थी तो मैंने दो नौकरोंको उसके संग भिजवाया था। मुझको इन बातोंका बहुत ध्यान रहता है। जानको इनके संग भेज देना। अच्छा हुआ कि मुझको याद पड गया! इन दोनोंका अकेले जाना तुम्हारे लिये बडे अपमानका कारण होता।'

एलेज-'मेरे मामू हमारे संग जानेके लिये एक नौकर भेजेंगे।'

कैथरीन-'तुम्हारा मामू? क्या उसके पास नौकर है? मुझको यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा! एक नातेदार ऐसा है, जो इन बातोंका खयाल रखता है। घोडे कहाँ बदलोगी। ब्रौम्लेमें। यदि वहाँ तुम मेरा नाम ले दोगी तो वहाँ तुम्हारा सत्कार अच्छी प्रकार होगा। लेडी कैथरीनने और भी बहुतसे प्रश्न यात्रा संबंधमें कर डाले कुछ प्रश्नोंका उत्तर तो स्वयंही दे देती थी और कुछ एलिजाबेथको देने पडते थे।'

मि० डारसीका पत्र एलिजाबेथको कण्ठस्थ हो गया था। एक२ वाक्यका अध्ययन कर चुकी थी और डारसीकी ओर उसके भाव भिन्न २ समयमें भिन्न २ प्रकारके होते थे। जब उसको उसके प्रस्तावकी याद आती थी, तो क्रोधसे भर जाती थी जब यह ध्यान आता था कि मैंने बिना समझे बूझे उसको बुरा भला कहा तो उसको अपने ऊपर क्रोध आता था। डारसीकी निराशाने उसको दयाका पात्र बना दिया। एलिजाबेथके हृदयमें डारसीके प्रेमके लिए कृतज्ञता थी। उसके स्वभावके लिए आदर था, परन्तु वह उसको चाहती न थी। एक क्षणके लिये भी उसको यह शोक न होता था कि मैंने क्यों उसका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। न उसको डारसीसे फिर मिलनेकी इच्छा थी। डारसीके संग अपने गत व्यवहारके लिये उसको लज्जा थी और

अपने परिवारके दोषोंपर दृष्टि डालनेसे उसको अपने ऊपर शर्म आती थी। इन बातोंका कुछ इलाज न था। उसके पिताने छोटी युवतियोंकी मूर्खताओंपर हंसनेके अतिरिक्त आजतक कुछ न किया और उसकी माता जिसके ढंग स्वयं ठीक थे इस बुराईको समझतीही न थी। जेनके साथ सम्मिलित होकर एलिजाबेथने कई बार कैथरीन और लीडियाको सुधारनेका प्रयत्न किया। परन्तु माताके सामने उन्नतिकी कोई आशा न थी। कैथरीन निर्बल चिडचिडी और लीडियाके कहनेमें थी और इनकी शिक्षाकी बात कभी न सुनती थी। लीडिय जिद्दन, लापरवाह थी और इनकी बातोंको हंसीमें टाल देती थी। दोनों आशिक्षित, आलसन और घमण्डिन थीं। जब तक मेरिट्नमें एक अफसर भी रहता तो वे उसके संग हंसी मजाक करती थीं, और वहाँ सदा जाया करती थीं।

जेनकी चिन्ताने उसको और घेर रक्खा। मि० डारसीके पत्रसे बिंगलेके विषयमें उसकी सम्मति और अच्छी होगई थी। उसका चरित्र निर्दोष प्रतीत होने लगा था। जेनका दुर्भाग्य था कि बिंगले उसके हाथसे जाता रहा। यह बिचार कितना दुःखदाई है कि जेनका सारा सुख उसीके परिवारकी मूर्खता और बेहूदगियोंके कारण नष्ट हो गया।

जब उसको विकमका चरित्र याद पडता था तो एलिजाबेथ जो सदा हंसमुख रहनेवाली थी, उदास हो जाती थी, और अब उसके मुंहपर हंसीकी रेखा कभी नहीं दिखाई देती थी।

रोजिंग्समें पहलेकेही प्रकार आना जाना रहा। अन्तिम संध्या वहीं बिताई और लेडी कैथरीनने यात्राके विषयमें बहुतसी बातें फिर पूंछीं। असबाब बाँधनेका ढंग बताया। गाऊन किस किस प्रकारसे रखनी चाहिये यह बताया। यहाँ तक कि मेरियाने लौटकर अपना ट्रूंक फिर संभाला।

बिदा होते हुए लेडी कैथरीनने बडी कृपा करके कहा—' कि ईश्वर करे यात्रा सकुशल समाप्त हो और पारसाल फिर तुम यहाँ आना। मिस डी.बारोने इतनी कृपा की कि दोनोंसे हाथ मिलानेको अपना हाथ बढाया।

——

अडतीसवां परिच्छेद

शनिश्चरको प्रातःकाल औरोंके आनेके पहले मि० कालिंस और एलिजाबेथ कुछ क्षणके लिये मिले। मि० कालिंसने सौभ्यताके अनुसार यह कहना उचित समझा, मिस एलिजाबेथ! मैं नहीं जानता कि मिसिज कालिंसने आपको यहाँ आनेके लिये धन्यवाद दिया या नहीं। परन्तु मुझको विश्वास है कि इस घरको छोडनेसे पहले वह ऐसा अवश्य करेगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी संगतिसे हम लोगोंको बहुत सुख प्राप्त हुआ। हमारी साधारण कुटियामें कोई वस्तु ऐसी नहीं जो सुखकर हो। हमारे रहनेका सादा ढंग, हमारे छोटे कमरे, गृहस्थीका थोडा सामान, संसारसे कम परिचय, आपकीजैसी युवतीको बहुतही दुःखदायी प्रतीत हुए होंगे। परन्तु मुझको आशा है कि आप हमारी कृतज्ञताको स्वीकार करेंगी, और यह विश्वास करेंगी कि आपका समय सुखकर बनानेके लिए जितना हमसे हो सकता था हमने किया।

एलिजाबेथने धन्यवाद किया और कहा कि मैंने छः सप्ताह अच्छे प्रकार बिताये। शारलोटकी संगति और आपकी कृपाके लिये मैं कृतज्ञ हूँ। मि.कालिंस अत्यन्त प्रसन्न होकर फिर बोले, मुझको यह सुनकर बडी प्रसन्नता होती है कि आपका समय कष्टसे नहीं बीता। हमने यथाशक्ति सब कुछ किया और आपको बहुत बढिया लोगोंसे मिलाया। रोजिंग्ससे सम्बन्ध होनेके कारण हमारी विनम्र कुटियाके दृश्यमें परिवर्तन हो जाता है, और मैं कह सकता हूँ कि आपकी हंसफोर्डकी यात्रा आपको खली न होगी। लेडी कैथरीनके परिवारसे जो हमारा संबंध है वह बहुत कम लोगोंके भाग्यमें होगा। आपने देखा होगा कि हमारा उस परिवारसे क्या संबंध है। कितनी बार हम वहाँ जाते हैं और सच तो यह है कि यद्यपि मेरी नौकरी छोटी है परन्तु रोजिंग्सवालोंसे परिचय होनेके कारण मैं करुणाका पात्र नहीं हो सकता।

कालिंसके पास अपने भावोंके प्रगट करनेको शब्द न थे। अब वह कमरेमें टहलने लगा और बोला–' मेरी प्यारी फुफेरी बहन! मुझको आशा है

कि हँसफोर्ड शायरमें तुम हमारे विषयमें अच्छी सम्मति दोगी। लेडी कैथरीन मिसिज कालिंसपर कितनी कृपा करती हैं, यह तुमने स्वयं देखा है। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि मुझसे विवाह करके तुम्हारी सखीने-इस बातपर चुपही रहना अच्छा है। मिस एलिजाबेथ! मेरी हृदयसे इच्छा है कि तुमको भी विवाह करके इतनाही सुख प्राप्त हो। मेरी प्यारी शारलोटका और मेरा दिल मिल गया है। हमारे विचार एकही से हैं। हम दोनों एक दूसरेके लिये बनाये गये थे।" एलिजाबेथने प्रशंसा प्रगट करते हुए कहा कि मुझको आपका सुखी दाम्पत्यजीवन देखकर बडी खुशी हुई। इतनेमें शारलोटने प्रवेश किया। बिचारी शारलोटको अकेले मि० कालिंसके पास छोडनेमें एलिजाबेथको दुःख हुआ। परन्तु उसने आँखे खोलकर अपना पति चुना हैं। यद्यपि उसको आगन्तुकके जानेका शोक था परन्तु फिर भी उसका मन बहलानेके लिये उसका घर उसका मुर्गीखाना और ऐसीही चीजें पर्याप्त थीं।'

गाडी आ गई, ट्रंक बंध गये, विदाई हो गई। मि० कालिंस एलिजाबेथको गाडी तक पहुँचाने आये। और बागमें चलते हुए कहते रहे कि अपने परिवारमें सबको यथायोग्य कहना। मिस्टर और मिसिज गार्डनर यद्यपि अपरिचित थे, उनको भी नमस्ते कह देनेको कहा एलिजाबेथको गाडीमें चढाया। मेरिया भी चढ गई और द्वार बंद होनेही को था कि कालिंसने व्यथित होकर कहा कि तुमने रोजिंग्सकी देवियोंके लिये तो कोई संदेश नहीं छोडा।

परन्तु मेरा विश्वास है कि तुम्हारी यह इच्छा है कि मैं तुम्हारी ओरसे उनकी कृपाका धन्यवाद करूँ और तुम्हारी कृतज्ञता प्रगट करूं।

एलिजाबेथने कोई आपत्ति न की। द्वार बंद किया गया और गाडी चल पडी।'

कुछ देर चुप रहकर मेरियाने कहा 'मालूम होता है कि अभी दो ही दिन हमको यहाँ आये हुए हुए हैं परन्तु इस बीचमें कितनी बातें हो गईं। नौबार रोजिंग्समें हमने खाना खाया। दो बार आपकी...। कितनी बातें मुझे कहनी होंगी।'

एलिजाबेथने मनमें कहा और कितनी बातें मुझको छिपानी होंगी।'

यात्रा सकुशल समाप्त हो गई, और चार घण्टेमें वे मि० गार्डनरके घर पर पहुँच गये जहाँ कुछ दिन उनका ठहरनेका विचार था।'

जेन स्वस्थ थी। और यह तय हुआ था कि जेन उन्हींके संग लांग बोर्न वापिस जावेंगी। डारसीकी बातोंको जेनसे कहनेके लिये एलिजाबेथ अधीर हो रही थी। परन्तु उसने लांगबोर्नके लिए उन बातोंको उठा रखा क्योंकि उसकी समझमें अभीतक यह नहीं आया था कि कितना कहूँ और कितना छिपाऊं। मुंहसे कहीं बिंगलेके विषयमें कोई बात न निकल जावे जिससे उसकी बहनको और दुःख हो।'

——

उनतालीसवां परिच्छेद

मईके दूसरे सप्ताहमें युवतियाँ हर्डफोर्ड शायरको रवाना हुईं। और उस होटलमें पहुंचीं जहाँ मि० बेनट की गाडी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। किटी और लीडिया खानेके कमरेसे झाँक रहीं थीं, और दूध उधर दूकानोंसे लाकर सलाद और खीर तैयार कर रहीं थीं। अपनी बहनोंका स्वागत करते हुए उन्होंने मेजपर जो खाना सजाया हुआ था दिखाया, और कहा कि तुमको इससे आश्चर्य हुआ कि नहीं।

लीडिया— और हम आज तुम्हारी दावत करेंगे, परन्तु रुपया तुम उधार दो क्योंकि हमने अपना सब काम करदिया। यह देखो मैं ने एक बौनट खरीदा है। यद्यपि यह सुन्दर नहीं है, परन्तु मैंने खरीद ही लिया और घर जाकर मैं इसको फिरसे उधेडकर बनाऊंगी।

और जब उसकी बहनोंने कहा कि वह बहुत भद्दा है तो लीडियाने उत्तर दिया कि दूकानमें इससे भी भद्दे थे। किसी अच्छे रंगकी साटिन लेकर इसको फिरसे बनाऊंगी, तब यह अच्छा हो जायगा। फिर इस गर्मीमें अच्छे

कपडोंकी अवश्यकता ही नहीं क्योंकि एकपक्षमें फौज मैरिटनसे चली जायगी।

एलिजाबेथने सन्तुष्ट होकर कहा 'क्या सच चली जायेगी' ?

लीडिया—हाँ, ब्राईटन जायेंगे। मैंने पिताजीसे कहा है कि, हमको भी गरमीमें वहीं ले चलें। कैसा अच्छा होगा। माताजी भी जाना चाहेंगी। यहाँ तो गरमी काटना बडा कठिन है।

एलिजा-' हाँ, बडा अच्छा होगा। अभी तो हमने एक ही फौज देखी थी और मासमें एक ही बार नाचमें सम्मिलित हुए हैं। ब्राईटन तो फौजोंसे भारा होगा।

लीडियाने बैठकर कहा—अब मुझे एक बडी अच्छी खबर एक ऐसे पुरुष के विषयमें सुनानी है जिसको हम सब पसन्द करते हैं।

जेन और एलिजाबेथने एक दूसरेकी ओर देखकर बैरासे बाहर जानेको कहा। लीडियाने हँसकर कहा, ' तुम्हारी समझके बलिहारी, तुम दोनोंका विचार हुआ कि बैरा हमारी बातें न सुने। जैसे वह सुननेके लिये चिन्तित था। वह इससे भी बुरी बातें सुन चुकाहोगा। परन्तु वह बडा भद्दा है अच्छा हुआ चला गया। इतनी लंबी ठोडी तो मैंने किसी की नहीं देखी। अच्छा अब मेरी खबर सुनों। प्यारे विकमके विषयमें है। अब कोई भय नहीं कि वह मिस बिंगलेसे विवाह न करें। क्योंकि मिस किंग लिवरपूलमें अपने मामूके यहाँ चली गई और वहाँ ही रहेगी। विकम अब सुरक्षित है।

एलिजा० —' और मिस किंग भी बहुत बची ऐसे धनहीनसे विवाह करना अच्छा न होता।

लीडिया—' वह बडी मूर्खा है। यदि वह विकमको चाहती थी तो उसको जाना न चाहिये था।

जेन-मेरे विचारमें दोनोंको एक दूसरेसे कुछ प्रेम न था।

लीडिया —विकमको तो बिलकुल न था यह मैं शर्त बाँधकर कह सकती हूँ। वह कौडी भर भी उसकी परवाह न करता था। ऐसी भद्दी युवती को कौन चाहेगा।

खानेके अनन्तर गाडी तैयार कराई गई और बडी कठिनाईसे उनका असबाब और सब उसमें लदे। लीडिया बोली, कैसे हम सब जकडे हुए हैं। अच्छा हुआ मैंने बौनट खरीद लिया। एक कागजका डिब्बा ही मिला। अच्छा अब आओ आरामसे बैठकर घर तक हंसते बोलते चलें। अच्छा अब यह तो बताओ कि इतने दिनतक तुम लोगोंको कोई सुन्दर पुरुष मिले। कुछ किसीसे हंसी मजाक हुआ। मैं तो समझती थी कि तुम अवश्य ही अपने पतिको संग लाओगी। जेन तो बुढिया हो चली। २३ वर्ष की हो चली। मैं अविवाहित २३वर्ष तक नहीं रह सकती, मासी चाहती हैं कि अब तुम लोगों का विवाह हो जाये। उसका विचार है कि लिजीको कालिन्ससे विवाह कर लेना चाहिए था परन्तु मेरे विचारमें वह अच्छा न होता।' मैं ईश्वरसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम सबसे पहले मेरा विवाह होजाये और फिर मैं नाच में तुमको नेत्री बनकर लेजाऊंगी। अरे, अभी थोडे दिन हुए कर्नल फास्टर के यहाँ बडा तमाशा हुआ। मैं और किटी वहाँ गये थे। शामको वहाँ छोटासा नाच था। मिसिज फास्टरसे और मुझसे बडी मित्रता हो गई है। वहाँ पैनभी आई थी। और हमलोगोंने क्या तमाशा किया कि शैम्बरलेनको स्त्रियोंके कपडे पहनाये। कर्नल और मिसिज फास्टर और मेरे और किटीके अतिरिक्त कोई भी यह नहीं जानता था। जब डेनी प्रैंट और विकम आये उन्होंने उसको नहीं पहचाना। हंसते २ हम लोगोंके पेट फूलगये और इससे पुरुषोंको कुछ संदेह हुआ और वे सब समझगये। ऐसी ही कहानियां सुनाती हुई लीडिया अपनी बहनोंको खुश करनेका प्रयत्न करती रही। एलिजाबेथने बहुत कम सुना, परन्तु बार २ विकमका नाम उसको सुनाई देता था। घरपर उनका अच्छा स्वागत हुआ। मिसिज बेनट जेनको देखकर बहुत खुश हुई। और खाते हुए मि०बेनटने कई बार कहा, लिजी! मैं तुम्हारे आनेसे बहुत खुश हूँ।"

खानेमें बहुतसे लोग सम्मिलित थे। ल्यूकस कुटुम्बके लोग मेरियासे मिलने और शारलोटके समाचार पूछने आये थे। लेडी ल्यूकस शारलोटके मुर्गी खानेका हाल पूछरही थी। मिसिज बेनट एक ओर तो उनसे वर्तमान फैशनकी बात सुनती थी और दूसरी ओर ल्यूकस परिवारकी युवतियोंको वही

बात सुनाती थी। लीडिया जोर २ से अपने प्रातः कालके आनन्दका समाचार सुना रही था।

'अरी मेरी ? क्या अच्छा होता कि तुम भी हमारे संग चलतीं। रास्तेमें जाते हुए हमने सब खिडकियाँ चढा दीं और ऐसेही चले जाते, यदि किटीको चक्कर न आता। होटल पहुँचकर हमने बडा अच्छा खाना खिलवाया और यदि तुम जातीं तो तुमको भी खिलाते। रास्तेभर हंसते २ चले गये। लौटते हुए तो इतने जोरसे हंस और बोल रहे थे कि दस मील तक हमारी आवाज सुनाई देती होगी।'

मेरीने गंभीरतासे उत्तर दिया मैं इन बातोंको बुरा तो नहीं कहती। क्योंकि स्त्री जातिको इनमें बडा मन लगता है, परन्तु अपनी पुस्तकोंको इन खेल-तमाशोंसे अच्छा समझती हूँ।

लीडियाने मेरीका एक शब्द भी नहीं सुना। वह दूसरेंकी बात तो सुनना जानती ही न थी। दोपहरके अनन्तर लीडियाने प्रस्ताव किया कि चलो मेरिटन चलें, और वहाँके हालचाल देखें। एलिजाबेथने इसका विरोध किया, और कहा कि ऐसी बात न करो कि जिससे लोगोंको यह कहनेका अवसर मिले कि बेनट कुटुम्बकी युवतियाँ आधे दिन भी घरमें न ठहर सकीं, और अफसरोंके पीछे दौडने लगीं। एलिजाबेथने इस प्रस्तावका विरोध एक और कारणसे भी किया। वह विकमसे भी नहीं मिलना चाहती थी। और इसीलिये उसको फौजके वहाँसे जानेके समाचारसे खुशी थी। १५ दिनमें फौज चली जायेगी और फिर उसको कोई कष्ट न रहेगा।'

घरमें आये थोडेही घंटे हुए थे कि उसने सुना कि ब्राईटन जानेके प्रस्तावपर बहुत बहस होती है। पिता तो जानेके विरोधमें थे, परन्तु उनके उत्तर कुछ ऐसे अस्पष्ट होते थे कि उसकी माता अभी निरास नहीं हुई थी।

–०–

चालीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथ सब हाल जेनसे कहनेको अधीर हो रही थी। फिर यह सोचकर कि जेनको सम्बन्धवाली बातोंको छिपाकर और सब कह देना उचित है। उसके दूसरे दिन अपना और डारसीका हाल जेनको कह सुनाया। जेनको अधिक आश्चर्य हुआ। क्योंकि वह एलिजाबेथको इतना अच्छा समझती थी कि डारसीका उससे प्रेम करना सर्वथा स्वाभाविक प्रतीत हुआ। उसको इस बातका शोक था कि मि० डारसीने अपने भावोंको अच्छे प्रकार प्रगट नहीं किया। और उसको इस बातका दुःख हुआ कि एलिजाबेथका उत्तर पाकर डारसीको बडा कष्ट हुआ होगा।

जेन—'डारसीकी भूल थी कि उसने ऐसा समझा कि तुम उसे अवश्य स्वीकार कर लोगी और इससे उसको और भी निराशा हुई होगी।'

एलिजा-'मुझको इस बातका दुःख है परन्तु उसके और भावोंने उसके कष्टपर विजय प्राप्त की होगी। विवाह अस्वीकार करनेके लिये तुम मुझको दोष तो नहीं देती ?'

जेन-'कदापि नहीं।'

एलिजा०-'विकमका इतना पक्ष लेनेके लिये तो दोष देती हो।'

जेन—'नहीं, क्योंकि मैं नहीं जानती कि तुमने ऐसा करनेमें कोई भूल की है।'

एलिजा-'अभी तुम जानोगी जब मैं दूसरे दिनका समाचार सुनाऊंगी।'

फिर उसने पत्रका हाल सुनाया। विकमके विषयमें जो कुछ लिखा था बतलाया। बेचारी जेन सहम गई क्योंकि उसको विश्वास नहीं था कि संसार-भरमें भी उतनी शठता है जितनी विकममें है। डारसीका चरित्र स्पष्ट होनेकी प्रसन्नता तो उसे हुई परन्तु इसका भी उसे बहुत दुःख था। उसने प्रयत्न किया कि वह प्रमाणित करें कि किसकी भूल है। और दोनोंही अच्छे हैं।'

एलिजा०-'दोनोंको तुम अच्छा नहीं कह सकतीं। जिसको चाहो पसंद

कर लो। मैं देरी दुविधामें रही और अब मेरा विश्वास है कि डारसीही सच्चा है। तुम जो जी चाहे कहो।'

बडी देरके अनन्तर जेनको हंसी आई।

जेन–'मैं तो सहम गई थी। विक्रम इतना बुरा है यह बात अविश्वसनीय मालूम देती है। बिचारे मि० डारसी तो अत्यन्त दुःखी होंगे। एक तो निराशा, दूसरे तुमने उनको बुरा कहा, तीसरे अपनी बहनके विषयमें उनको सब बातें लिखनी पडी। इन सबने उनको बहुत दुःखी कर दिया होगा। लिजी ! तुमको क्या डारसीपर दया नहीं आती।

एलिजा०—'नहीं, मेरी दया तुम्हारी दयाको देखकर काफूर हो गई। और जितनी तुम उसपर दया करोगी मैं उदासीन होती जाऊँगी। यदि तुम उसके लिये बहुत दुःखी हुई, तो मेरा हृदय बिलकुल हलका हो जायेगा।'

जेन–'बिचारा विक्रम देखनेमें तो इतना भला है, बातें करनेमें चतुर, परन्तु वास्तवमें कैसा बुरा है।'

एलिजा०–'इन दोनों युवकोंकी शिक्षामें कोई बडी भूल हुई है। एक तो वास्तवमें भला है दूसरा देखनेमें भला है।'

जेन–'मैं तो मि०डारसीकी आकृतिको इतना बुरा नहीं समझती, जितना तुम समझतीं थीं।'

एलिजा०–'और अकारणही उससे घृणा करनेमें मैं अपनेको बहुत चतुर समझती थी।'

जेन—'लिजी ! जब तुमने पहली बार यह पत्र पढा होगा, तो तुम्हारे भाव वे न होंगे जो अब हैं।'

एलिजा०–'नहीं, मैं परेशान हुई, दुखी हो गई। मेरी मुझको साँत्वना देनेको वहाँ न थी। तुम्हारी उस समय मुझे बडी याद आई।'

जेन–'तुमने विक्रमके विषयमें जो मि० डारसीको इतना सख्त कहा वह सर्वथा अन्याय था।'

एलिजा०–'अवश्य, परन्तु मुझको मि० डारसीके विरुद्ध ऐसी चिढ थी कि इतना कठोर कहना स्वाभाविकही था। अब मैं एक बात तुमसे पूछती

हूँ कि विकमके चरित्रको परिचित लोगोंमें खोल देना चाहिये या नहीं।'

जेनने कुछ देर ठहरकर उत्तर दिया—'उसकी पोल खोलनेकी कोई आवश्यकता नहीं। क्यों तुम्हारी क्या सम्मति है?'

एलिजा०—'मैं भी ऐसाही समझती हूँ। मि० डारसीने इस बातको सबमें फैलानेका अधिकार मुझको नहीं दिया है। दूसरे अपनी बहिनके विषयमें तो उसने सब गुप्तही रखनेको लिखा है। लोग मि० डारसीके इतने विरोधी हैं कि उसको अच्छा प्रमाणित करना बडा कठिन है। विकम थोडे दिनमें चला जायेगा, इसलिये यहाँ किसीको उसका सच्चा हाल न जाननेसे हानि न होगी। थोडे दिनोंमें सबको हाल मालूम हो जायेगा, और फिर हम सब उनपर हंसेंगे। इस समय मै चुपही रहूँगी।'

जेन—'बिलकुल ठीक हैं। विकमके दोषोंको प्रकाशित करनेसे उसका सर्वनाश हो जायेगा। कदाचित् अपने कियेपर उसको पश्चात्ताप है, और वह अपनेको सुधार रहा है।'

यह बात-चीत करके एलिजाबेथके हृदयका बोझ कुछ हल्का हुआ। उसको विश्वास था कि जब कभी भी मैं इस बातको चलाऊं, जेन ध्यानसे सुनेगी। परन्तु इस विषयपर चुपही रहना उसने उचित समझा। कहीं उसके मुंहसे पत्रके दूसरे भागका कुछ अंश निकल गया तो बडी बुराई होगी। वह रहस्य उस समयतक नहीं खोला जा सकता जबतक कि आपसमें ठीक समझौता न हो जाय। और यदि कभी वह असम्भव बात संभव हुई तो बिंगलेही स्वयं सब सुना देगा और मुझको कुछ कहनेकी आवश्यकता न होगी।

अब एलिजाबेथने जेनके भावोंका अध्ययन करना आरम्भ किया। जेन प्रसन्न न थी। बिंगलेके लिये उसके हृदयमें अनुराग था। वह अब भी बिंगलेको सब पुरुषोंसे अच्छा समझती थी। और उसकी समझ और उसकी सखियोंके समझाने ने ही उसके स्वास्थ्य और शांतिको बिगडने न दिया।

मिसिज बेनटने एक दिन कहा—'लिजी! जेनके विषयमें तुम्हारी क्या सम्मति है। मैं तो इसकी चर्चा अब किसीसे कभी न करूंगी। मैंने

फिलिपसे भी ऐसाही कहा है। मुझे नहीं मालूम कि जेन उससे लंदनमें मिली या नहीं। बिंगले बडाही दुष्ट निकला। और अब कदाचित् जेनसे उसका विवाह होनेकी कोई संभावना नहीं। गरमीमें उसकी नीदरफील्ड आनेकी कोई चर्चाही नहीं है।'

एलिजा०—'मेरी समझमें वह अब नीदरफील्डमें रहने नहीं आयेगा।'

मिसिज बेनट—' उसका जो जी चाहे करे, परन्तु उस प्रकारसे मेरी पुत्रीके साथ दुर्व्यवहार करना अनुचित था। मैं जेनके स्थानमें होती तो कभी भी यह बात सहन न करती। खैर मुझको यही साँत्वना है कि जेन कुढ २ कर मर जायेगी और तब बिंगलेको पश्चात्ताप होगा।'

एलिजाबेथको इस सांत्वनामें कोई आनन्द नहीं था, इसलिये उसने कोई उत्तर न दिया।

मिसिज बेनट थोडी देरके अनन्तर फिर बोली—' तो कालिंस बडे सुखसे रहते हैं। अच्छा रहें। खाना कैसा पकता है ? शारलोट तो बडी अच्छी प्रबन्धक है। यदि वह अपनी माँसे आधी भी चतुर है, तो अवश्य रुपया बचाती होगी। व्यर्थ व्यय तो न होता होगा।'

एलिजा०—'नहीं।'

मिसिज बेनट-' वह कभी भी अपनी आयसे अधिक न खर्चेंगे। धनका उनको कभी अभाव न होगा। और यह बात तो वहाँ बहुधा होती होगी, कि तुम्हारे पिताके मरनेके अनन्तर वह इस सब सम्पतिके स्वामी होंगे। वह इस सारी सम्पत्तिको अपनाही समझते हैं।'

एलिजा०—' भला मेरे सामने इस विषयपर कैसे बातचीत होती ?'

मिसिज बेनट—' हां, यदि ऐसा करते तो आश्चर्य होता, परन्तु परस्पर अवश्य बातें करते होंगे। यदि जिस सम्पत्तिपर उनको अधिकार नहीं है, उसको लेनेमें उनको मानासिक वेदना नहीं होती, तो अच्छाही है। यदि मैं उनके स्थानमें होती तो लज्जासे गड जाती।'

———

एकतालीसवां परिच्छेद

पहला सप्ताह बीत गया, दूसरा आरम्भ हुआ। मेरिटनसे फौज इसी सप्ताहमें चली जायगी। वहाँकी युवतियाँ इस कारण बहुत उदास थीं। केवल जेन और एलिजाबेथ अपना काम कर सकती थीं। उनके इस व्यवहारसे किटी और लीडिया क्रुद्ध होकर कभी २ कहती थीं कि किस प्रकारसे तुम ऐसी कठोरहृदया हो। लिजी आजकल तुम हंसती कैसे रहती हो ?'

माँको अपनी छोटी युबतियोंसे पूर्ण सहानुभूति थी। उसको याद था कि पच्चीस वर्ष पूर्व उसकी भी यही दशा हुई थी। उसने कहा— 'जब कर्नल मिलिरकी फौज गई थी तो दो दिनतक मैं रोती रही। मैं समझती थी कि मेरा दिल बैठ जायेगा।'

लीडिया—'अवश्यही मेरा हृदय बैठ जायेगा।'

मिसिज बेनट—'क्या अच्छा होता, यदि हम ब्राईटन जाते।'

लीडिया–'अत्यन्तही अच्छा होता, परन्तु पिताजी तो सहमत नहीं हैं।

मिसिज बेनट—'समुद्रमें स्नान करनेसे मुझे बहुत लाभ होगा।'

किटी—'और मेरी मासी कहती है कि मुझको भी बहुत लाभ होगा।'

इस प्रकारके शोक लांगबोर्नमें प्रतिदिन प्रगट किये जाते थे। एलिजा· बेथ अपना मन बहलाना चाहती थी परन्तु लज्जाने उसको ऐसा करने न दिया। मि० डारसीका आक्षेप उसको न्यायपूर्ण विदित हुआ यहाँ तक कि वह बिंगलेको विवाह करनेसे रोकनेके उसके अपराधको भी क्षमा करनेको उद्यत हो गई।'

लीडियाकी उदासी यह बात जानकर जाती रही कि मिसिज फार्स्टर (जो फौजके कर्नलकी पत्नी है) ने उसको ब्राईटन चलने के लिए निमंत्रित किया है। मिसिज फार्स्टर एक युवती थी जिसका विवाह थोड़े दिन हुए अभी हुआ था। लीडियासे उसका स्वभाव बहुत मिलता जुलता था, इस कारण तीनही मासके परिचयमें उनमें परस्पर बहुत स्नेह हो गया था।

लीडियाकी खुशी, उसका मिसिज फार्स्टरकी प्रसंशा करना, मिसिज बेनटकी प्रसन्नता और किटीका दुःख इन सबका वर्णन करना कठिन है। अपनी बहिनके भावोंसे उदासीन लीडिया एक कमरेसे दूसरे कमरेमें दौडती फिरती थी। और अधिक बोलती और हंसती थी। अभागिनी किटी अपने कमरेमें बैठी अपने भाग्यको रो रही थी। मेरी समझमें नहीं आता कि मिसिज फार्स्टरने मुझको निमंत्रित क्यों नहीं किया ? यह मैं मानती हूँ कि लीडियासे उसकी विशेष मित्रता है। परन्तु निमंत्रित होनेका मुझको उतनाही अधिकार है, जितना लीडियाको। और फिर मैं दो वर्ष लीडियासे बडी भी हूँ। व्यर्थही एलिजाबेथने उसको समझाया और जेनने उसको उदासीन करनेका प्रयत्न किया। एलिजाबेथ अपनी माँ और लीडियाके सदृश इस निमंत्रणसे प्रसन्न न थी। परन्तु उसका विचार था कि लीडियाकी समझकी अब इतिश्री हो गई। और वह चुपके २ अपने पितासे कहती थी कि लीडियाको जाने न दे। उसने अपने पिताको लीडियाके स्वभावकी ओर ध्यान दिलाया। मिसिज फार्स्टरकी ऐसी स्त्रीसे मित्रता करके उसको कुछ लाभ न होगा। संभावना है कि ब्राईटनमें ऐसी सखीके संग रहकर वह और बिगड जाये।

पिताने कहा, जबतक लीडिया अपनेको जनताके सामने प्रदर्शित न कर देगी, वह शान्त न होगी। वर्तमान दशामें कुटुम्बको अधिक असुविधा पहुंचाये बिना वह ऐसा कर सकती है।'

एलिजा – ' यदि आप जानते कि लीडियाकी मूर्खता जनतापर प्रकाशित होनेसे हम सबको कितनी हानि पहुंचनेकी संभावना है—नहीं नहीं कितनी हानि पहुंच चुकी है, तो आप कभी ऐसा न कहते।'

बेनट–'पहुँच चुकी है ? क्या लीडियाने तुम्हारे प्रेमियोंको तुमसे भगा दिया ? प्यारी लिजी ! उदास मत हो, ऐसे युवक जो इन बातोंसे भडक जाते हैं प्रेम करनेके योग्य नहीं। अच्छा मुझे उन प्रेमियोंकी सूची बताओ जो लीडियाकी मूर्खताके कारण भडक गये।'

एलिजा—' यह आपकी भूल है। मुझको ऐसी कोई हानि नहीं पहुँची है। किसी विशेष बातके विषयमें नहीं कह रही हूँ परन्तु हमारा सन्मान हमारा

आदर संसारकी दृष्टिमें लीडियाके जंगलीपन और उसके स्वभावसे कम होनेकी संभावना है। आप क्षमा करें मैं साफ २ कहना चाहती हूँ, यदि आप उसको न रोकेंगे और उसको यह न समझायेंगे कि उसका वर्तमान ढंग आपत्तिजनक है, तो फिर उसके सुधारकी कोई आशा नहीं हो सकती। उसके चरित्रका गठन हो जायगा और सोलह वर्षकी अवस्थामें वह बहुतही नीच और घृणा योग्य युवती होगी। प्रत्येक युवकके संग हंसी खेल करेगी, और नासमझीके कारण उस घृणाको न समझेगी जो मनुष्य उससे करते होंगे। किटी उसका अनुसरण करेगी। मेरे प्यारे पिता ! क्या आपकी समझमें यह नहीं आता कि उनके ऐसे स्वभावसे प्रत्येक स्थानमें उसकी निन्दा होगी, और उसकी बहनें भी उसके संगही अनादरका पात्र बनेंगी।

मि० बेनटने प्यारसे एलिजाबेथका हाथ पकडकर कहा—'प्यारी पुत्री। तुम न घबराओ। तुम्हारा और जेनका आदर हर स्थानमें होगा। तीन २ मूर्खा बहनें होते हुए भी तुम्हारी कहीं निन्दा न होगी। यदि लीडियाको मैं ब्राईटन न जाने दूँ, तो घरमें अशान्तिका राज्य होगा, इसलिये उसको जाने देनाही अच्छा है। कर्नल फार्स्टर समझदार आदमी है, और वह उसको कोई बुराई न करने देगा। सौभाग्यसे लीडिया इतनी दरिद्र कुटुम्बकी कन्या है कि कोई पुरुष उसको अपने शिकारका पात्र न बनायेगा। ब्राईटनमें तो उसकी इतनी पूछ भी न होगी जितनी यहाँ थी। अफसरोंको हंसने बोलनेके लिए उससे अच्छी युवतियाँ मिलेंगी। इसलिए आशा करो कि ब्राईटनमें जाकर वह अपनी हीनताको समझ ले। कमसे कम और अधिक बुरी तो नहीं हो सकती।

एलिजाबेथ चुप होगई परन्तु उसकी सम्मति नहीं बदली। उसकी प्रकृति ऐसी थी कि वह अपने दुःखोंको नहीं बढाना चाहती थी, इसलिये उसको यह संतोष था कि मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है। इसलिए अब जो होना है वह होगा।

यदि लीडिया और उसकी माताको इस बातका पता चलता तो उनके क्रोधकी सीमा न रहती। लीडियाके विचारसे तो ब्राईटनसे अधिक सांसारिक सुखकी कहीं सामग्री न थी। उसने सोचा कि वहाँ सडकें अफसरोंसे भरी

होंगी । न मालूम मैं कितनोंको आकर्षित करूँगी । तंबू लगे होंगे । झल झल करते होंगे, और मैं एक तंबूके नीचे बैठी आधीदर्जन अफसरोंसे एकही समयमें हंसबोल रही होऊँगी।

यदि वह जानती कि मेरी बहन मुझको इस आनन्दसे वंचित रखना चाहती है. तो उसके भावोंकी क्या दशा होती। केवल उसकी माँही उसको समझ सकती थी। क्योंकि उसके भाव भी वैसेही होते। परन्तु उन दोनोंको इस बातचीतका पता न था।

एलिजाबेथकी मि० विकमसे आज अन्तिम भेंट थी, वापिस आनेके अनन्तर कईबार वह मिल चुकी थी, इसलिए उसकी उत्तेजना कम होगई थी। विकमकी नम्रताने उसको पहले आकर्षित किया था, परन्तु अब वही नम्रता उसको बनावटी और घृणित प्रतीत होती थी।

फौजके जानेके दिन लांगबोर्नमें कई अफसरोंके संग उसका खाना था। और अब उसने एलिजाबेथसे पूछा कि आपका समय हंसफोर्डमें किस प्रकार बीता, तो एलिजाबेथने उसे चिडानेके लिए कहा कि वहाँ मि० डारसी और कर्नल फिट्स विलियम भी आये थे जो तीन सप्ताह वहाँ रहे। क्या आप कर्नलको जानते हैं ?

विकम चकित और अप्रसन्न हुआ और घबरा गया, परन्तु फिर मुस्कराते हुए बोला कि हाँ जानता हूँ। बडा भला मनुष्य है। तुम्हारी सम्मति उसके विषयमें क्या है ? एलिजाबेथने उसकी बडी प्रशंसा की। फिर उदासीन भावसे विकमने पूछा—'हाँ. तो वे लोग कितने दिन वहाँ रहे।

एलिजा—,तीन सप्ताह।,

विकम—'तुम्हारी उनसे बहुत भेंट होती थी ?'

एलेज-'हाँ, प्रायः प्रतिदिन।'

विकम—'उसकी चाल-ढाल तो डारसीसे बहुत भिन्न है।'

एलेज-'हाँ, परन्तु मि० डारसीको अधिक जाननेसे उनकी चाल-ढाल बुरी प्रतीत नहीं होती।'

विक्रम–' हूँ, परन्तु क्या मैं पूछ सकता हूँ (फिर अपनेको रोककर हँसते हुए कहा) क्या कुछ शिष्टाचार उसमें आगया है। हृदय तो उसका कालाही है, इसमें कुछ उन्नति नहीं हो सकती।'

एलिजा–' नहीं, स्वभाव तो उसका पहले जैसे था वैसेही है।'

यह उत्तर सुनकर विक्रमके समझमें नहीं आया कि वह प्रसन्न हो या उदासीन। एलिजाबेथकी आकृतिसे वह चिन्तित था। एलिजाबेथने फिर कहा कि मेरा प्रयोजन यह नहीं है कि मि० डारसीने शिष्टाचार या स्वभावमें कुछ उन्नति की है, परन्तु बात यह है उनको अधिक जाननेसे उनका चरित्र अच्छी तरह समझमें आता है।

विक्रमकी घबराहट बहुत बढ गई थी और कुछ मिनिटतक वह चुप रहा। फिर घबराहटको दूर करके वह बहुतही नम्रतासे बोला–' तुम जानती हो कि मि० डारसीकी ओर मेरे भाव कैसे हैं। इसलिए तुम समझ सकती हो कि मुझको यह जानकर कितनी प्रसन्नता हुई कि वह कमसे कम दिखलावेमें तो भला बनने लगा है। यदि ऐसा दिखलावा करता रहा तो कुछ दिनोंमें उसका अभिमान उसको ऐसा दुर्व्यवहार करनेसे रोकेगा जैसा उसने मेरेसाथ किया है। मेरा बिचार है कि उसकी शिष्टता लेडी कैथरीनही तक रहती है क्योंकि वह उनसे बहुत डरता है और उनकी पुत्रीसे विवाह करना चाहता है।

एलिजाबेथ कठिनतासे हंसीको रोक सकी और उसने सिर हिला दिया। उसने समझ लिया कि विक्रम फिर अपने दुःखोंकी कहानी कहना चाहता है, और यह उसको सुनना नहीं चाहती थी। इसके अनन्तर विक्रमने एलिजा-बेथसे कुछ बात-चीत न की और विदा होते हुए उन दोनोंकी हार्दिक इच्छा यह थी कि अब एक दूसरेका मुख देखनेको न मिले।

लीडिया मिसिज फार्स्टरके साथ मैरिटन चली गई, क्योंकि दूसरे दिन ब्राईटन जाना था। उसकी विदाईपर कोई कुटुम्बी दुःखी न था केवल किटी ईर्ष्यासे रो रही थी। मिसिज बेनट अपनी पुत्रीको यह शिक्षा दे रही थी कि भलीभांति इस अवसरपर आनन्द उठाना और लीडिया शोर मचाती हुई वहाँसे चल दी।

——

बयालीसवां परिच्छेद

यदि एलिजाबेथ अपने कुटुम्बसे गृहस्थीके सुखका अनुमान करती तो उसको वैवाहिक जीवनका चित्र अत्यन्त दुःखमय प्रतीत होता। उसके पिताने सौंदर्यसे आकर्षित होकर ऐसी स्त्रीसे विवाह कर लिया था जो सर्वथा मूर्ख थी और इस कारण वह कभी उससे प्रेम न कर सका। मि० बेनटको अपनी स्त्रीके लिए न आदर था न प्रेम था। गृहस्थीके सुखकी आशापर पानी फिर चुका था। परन्तु मि० बेनट निराशासे दुःखी होनेवाले न थे, और वे समझते थे कि यह मेरीही करतूतोंका परिणाम है।

उसको पुस्तकोंसे बड़ा प्रेम था और यही उसके विशेष आनन्दका कारण था। उसकी स्त्रीकी मूर्खता इतनी थी कि उसीमें वह आनंद उठाया करता था। साधारण प्रकारसे मनुष्य ऐसा आनन्द नहीं चाहता, परन्तु सच्चा मनोविज्ञानका ज्ञाता इसीमें आनन्द उठाता है।'

एलिजाबेथ अपने पिताके अपनी माताके साथके अनुचित व्यवहारसे अनभिज्ञ न थी। उसको यह देखकर कष्ट होता था परन्तु अपने पिताकी योग्यताके आदरके कारण और उसके स्नेहके कारण वह इस व्यवहारको भूलना चाहती थी। परन्तु प्रतिक्षण वह यह देखती थी कि उसका पिता किस प्रकारसे बच्चोंके सामने उसकी माँकी हँसी उडाता है, जो कि बहुतही निन्दनीय है। परन्तु इस समय उसको इस बेमेल विवाहपर बहुतही दुःख हो रहा था। उसको इस बातका भी दुःख था कि उसका पिता अपनी योग्यताका व्यवहार बुरे प्रकारसे करता था। और अपनी पुत्रियोंके सुधार और स्त्रीकी बुद्धि तीव्र करनेका कोई प्रयत्न नहीं करता था।

एलिजाबेथको विकमकी विदाईसे बहुत प्रसन्नता हुई थी, परन्तु फौजके जानेसे कोई सन्तोष नहीं था। क्योंकि अब उसको बाहर जानेको अवसर नहीं मिलता था। और घरमें प्रतिक्षण माँ और बहनका सामना था जिनके प्रतिक्षण दुःखका वर्णन करनेके कारण घरमें उदासी छाई रहती थी। यद्यपि किटी

कुछ २ सुधर रही थी परन्तु लीडियाके बहुत बिगडनेका भय था। अन्तमें वह इसी परिणामपर पहुँची कि जितना सुख मैं समझती थी कि फौजके चले जानेसे मुझको होगा वह नहीं प्राप्त हुआ। अब वह झीलोंपर जानेका विचार किया करती थी, और यही एक ध्यान उसको उस उदासीमय घरमें प्रसन्न रक्खे हुए था। यदि जेनको मैं अपने साथ ले जाती तो बहुतही अच्छा होता।

उसने सोचा कि इस इच्छाहीपर मैं अपना दिन व्यतीत कर सकती हूँ। उस इच्छाके पूर्ण होनेपर तो निराशाही होगी। क्योंकि जिस बातमें पूर्ण सुखकी संभावना होती है, उसमें कभी सफलता नहीं होती। जब लीडिया जा रही थी तो उसने अपनी माताको बता दिया था, कि वह जल्दी २ लम्बे २ पत्र भेजेगी। परन्तु उसके पत्र बहुत देरमें और छोटे २ आते थे। माँके नाम तो बहुतही थोडा होता था। मैं अभी पुस्तकालयसे आ रही हूँ जहाँ अमुक २ अफसर थे। वहाँ स्त्रियें ऐसे २ गहने पहनी थीं, जिनको देखकर मैं पागल हो गई। अमुक स्त्री ऐसी गाउन पहने थी कि जिसका वर्णन मैं करना चाहती हूं परन्तु समयकी कमीके कारण मैं नहीं कर सकती, क्योंकि मिसिज फार्स्टर मुझको पुकार रही है। और मुझको तंबूमें जाना है। किटीको पास कुछ लंबे पत्र आते थे परन्तु उनमें कुछ ऐसी गुप्त बातें होती थीं जिनको किटी सबके सामने नहीं कहती थीं। एक पक्ष बीतनेके अनन्तर लांगबोर्नमें फिर प्रसन्नताकी झलक दिखाई दी। कुटुम्ब सरदियोंके लिए लंदन वापिस आ गये। गरमीमें चहल-पहल होने लगी। मिसिज बेनट फिर बक-बक करने लगी और जूनके मासमें किटी इतनी सुधर गई थी कि बिना आँसू बहाये मैरिटन चली जाती थी। और एलिजाबेथको आशा थी कि क्रिसमसतक उसकी बुद्धि इतनी ठिकाने आ जायेगी कि दिनमें एक बारसे अधिक अफसरोंका नाम न लेगी। यदि दुर्भाग्यसे फिर मैरिटनमें कुछ फौज आकर न ठहरी।

अब एलिजाबेथके अपनी मामीके यहाँ जानेका समय आ रहा था, और केवल एक पक्ष रह गया था कि मिसिज गार्डनरकी चिट्ठी आई, जिसमें यह लिखा था कि कामकी अधिकताके कारण मि० गार्डनर पन्द्रह जुलाईसे

पहले बाहर नहीं जा सकते और एक माससे अधिक बाहर नहीं रह सकते। इसलिये झील जानेका विचार छोड दिया है। केवल डारबीशायरही तक जानेका विचार है। उस स्थानमें तीन सप्ताह अच्छे प्रकार बितानेकी अच्छी सामग्री है। क्योंकि मिसिज गार्डनरने अपने जीवनका प्रथम अंश वहाँ बिताया है, इसलिये वहाँ जानेकी उनको अधिक उत्सुकता थी। एलिजाबेथको पत्र पढकर निराशा हुई क्योंकि वह तो झीलोंकी सैर करना चाहती थी। परन्तु क्योंकि उसका स्वभाव सन्तुष्ट रहनेका था, इसलिए वह फिर प्रसन्न रहने लगी।

डारबीशायरके नामसे उसको पैम्बरलेके मालिकका विचार आया। अब प्रतीक्षाका समय दुगना हो गया था, और चार सप्ताहके बाद उसके मामू और मामी उसको लेने आनेवाले थे। परन्तु समय बीतही गया और मिस्टर और मिसिज गार्डनर अपने चारों बच्चों सहित लांगबोर्न आ पहुँचे। बच्चोंको पढाने उनमें खेलने और प्यार करनेका भार जेनपर छोडा गया।

एक रात रहकर दूसरे दिन प्रातःकाल तीनों आदमी सैर करनेको रवाना होगये। और चाहे कुछ वहाँ भला प्रतीत हो या न हो यह तो पूर्ण विश्वास था कि संगतिका आनन्द तो अवश्य प्राप्त होगा।

इस समय डारबशिायरके वर्णन करनेका प्रयोजन नहीं है। डारबशिायरके एक छोटेसे भागसे इनका सम्बन्ध है। लैम्पटनके छोटेसे नगरकी ओर वे लोग चले। और सब अच्छे दृश्य देखते चले। एलिजाबेथको मालूम हुआ कि वहाँसे पाँच मीलपर पैम्बरले है। मिसिज गार्डनरने पैम्बरले देखनेकी इच्छा प्रगट की। मि० गार्डनर राजी हो गये। और मिस एलिजाबेथसे चलनेको कहा गया। उसकी मामीने कहा मेरी प्यारी एलिजाबेथ! क्या तुम पम्बरले देखना न चाहोगी जहाँके विषयमें तुम बहुत कुछ सुन चुकी हो, और जिस स्थानसे तुम्हारे बहुतसे परिचित मनुष्योंका सम्बन्ध है। और जहाँ विकमने अपना बचपन व्यतीत किया है।

एलिजाबेथको कष्ट हुआ। उसको पैम्बरलेके देखनेकी अभिलाषा न थी। और अनिच्छा प्रगट करते हुए उसने कहा। मुझे बडे २ घर देखनेकी अब

कोई इच्छा नहीं है। मुझको अच्छे कालीन और रेशमी पर्दे देखकर आनन्द नहीं होता।'

मिसिज गार्डनरने उसपर लांछना करते हुए कहा यदि एक बडे घरको देखना होता तो मैं तुझसे न कहती। परन्तु पैम्बरलेका बाग अनुपम है और वैसा बाग कहीं होना कठिन है।,

एलिजाबेथ कुछ न बोली, परंतु उसको जानेकी कुछ इच्छा न थी। क्योंकि उसको भय था कि कहीं मि० डारसीसे भेंट न हो जाये। भाभीसे खोलकर बात कहनेकी इच्छा हुई परन्तु उसमें भी आपत्ति थी। अन्तमें उसने यह तय किया कि यदि मि० डारसी यहाँ हुए तो भाभीसे सब हाल खोलकर कह दूंगी।

रातको सोनेसे पहले उसने होटलकी नौकरानीसे पूछा कि पैम्बरलेका मालिक है या नहीं, और यह जानकर उसको बडा आनन्द हुआ कि मि० डारसी वहाँ नहीं हैं। अब उसको स्वयं भी पैम्बरले देखनेकी उत्सुकता हुई। और दूसरे दिन प्रातःकाल जब वहाँ चलनेके लिये कहा गया तो उदासीन भावसे वह सहमत होगई। वह पैम्बरलेके लिये रवाना होगई।

—*०*—

तेतालीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथने पैम्बरलेके बागको पहले तो घबराते हुए देखा, परन्तु थोडी देरमें उसकी घबराहट दूर होगई। बाग बहुत बडा था और नानाप्रकार की वस्तुऐं वहां थीं। नीचेसे प्रवेश करके चढते हुए वे लोग चले गये। दृश्य अत्यन्त सुन्दर था। एलिजाबेथ ध्यानपूर्वक प्रत्येक स्थानको देख रही थी, और प्रत्येक स्थानकी प्रशंसा कर रही थी। धीरे धीरे वे आध मील चढकर बहुत ऊंचाईपर पहुंच गए। और वहांसे उन्होंने पैम्बरले प्रासाद भली प्रकार देखा। पत्थरकी बनी हुई बहुत बडी सुन्दर इमारत थी। प्रासादके पीछे

उंची २ पहाडियाँ थीं और सामने एक छोटीसी नदी बह रही थी। उसके किनारोंपर कोई बनावटी बात न थी। एलिजाबेथ इसको देखकर प्रसन्न हो उठी। उसने प्रकृतिका ऐसा अच्छा दृश्य नहीं देखा था। सब लोग इस दृश्यकी प्रशंसा कर रहे थे। उसी क्षण एलिजाबेथको यह विचार आया कि पैम्बरलेकी मालिकिन होना भी एक बडी बात है।

पहाडीसे उतरकर, पुलको पार करके वे लोग द्वारपर पहुंचे। एलिजाबेथको फिर भय होने लगा कि कहीं डारसीसे भेंट न होजाय, और कहीं होटलकी नौकरानीने झूठही कह दिया हो कि डारसी वहाँ नहीं है। मकान देखनेकी प्रार्थना करनेपर वे लोग हालमें बिठाये गये। और दिखलानेवालीके जानेतक, एलिजाबेथ सोच रही थी कि मैं कहां हूं। मकान दिखलानेवाली भली सभ्य और अधिक अवस्थावाली स्त्री थी। उसके पीछे २ सब लोग खानेके कमरेमें गये। यह पर्याप्त बडा और सुन्दर सजा हुआ कमरा था। एलिजाबेथ खिडकीमें जाकर बाहरका दृश्य देखने लगी। जिस पहाडीपरसे वे अभी उतरकर आये थे, वह यहाँसे बडी सुन्दर प्रतीत होती थी। सारा दृश्य अर्थात नदीके किनारेसे वृक्ष और घाटीकी मोड देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई। दूसरे कमरेमें जाकर उसने और बहुतसे सुन्दर दृश्य देखे। कमरे बडे और सुन्दर थे, उनका फरनीचर बहुमूल्य था, परन्तु दिखावटी और फूल-बूटेदार न था।

एलिजाबेथने सोचा—इस स्थानकी मैं मालकिन हो सकती थी। इन कमरोंसे मैं भलीभाँति परिचित होती। इन कमरोंको इस समय अपरिचितकी दृष्टिसे न देखकर अपने मामा और मामीका यहाँ मैं स्वागत करती। नहीं, नहीं ऐसा कभी न होता। मुझको अपने मामू मामीसे नाता तोडना पडता। उनके स्वागत करनेकी आज्ञा न मिलती। इस विचारके आनेसे वह शोक करनेसे बच गयी। मकान दिखलानेवालीसे वह पूछना चाहती थी कि क्या मि० डारसी वास्तवमें यहाँ नहीं हैं। परन्तु पूछनेका साहस न कर सकती थी। अन्तमें उसके मामूने यह प्रश्न पूछा। एलिजाबेथका दिल धडकने लगा।

मिसिज रेनाल्डसने उत्तर दिया—'कल वह अपने मित्रोंके संग यहाँ पहूंचेगें एलिजाबेथको वह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि यदि हम लोगोंको एक दिनकी देर हो जाती, तो फिर यह घर देखनेको न मिलता ?

उसकी मामीने उसको बुलाकर उसका ध्यान एक चित्रकी ओर आकर्षित किया। वह चित्र और बहुतसे चित्रोंके साथ अंगीठीके कानसपर रखा था। चित्र मि॰ विकमका था। उसकी मामीने मुस्कराते हुए पूछा कि, 'यह चित्र तुमको अच्छा लगा। मकान दिखलानेवालीने आगे बढकर कहा—'यह चित्र मेरे स्वर्गीय मालिकके दारोगाके पुत्रका है। जिसको मेरे स्वर्गीय मालिकनेही पाला था। वह अब फौजमेंही भरती हो गया है, और मुझको भय है कि वह बडा बदमाश निकला है।

मिसिज गार्डनरने एलिजाबेथकी ओर देखकर मुस्कराया। एलिजाबेथ कुछ उत्तर न दे सकी। मिसिज रेनाल्डसने एक दूसरा चित्र दिखाते हुए कहा- 'यह चित्र मेर मालिकका है। यहभी उसी समय खिंचा गया था आठ वर्ष हुये।'

मिसिज गार्डनरने चित्रको देखकर कहा—'मैंने तुम्हारे मालिककी सुन्दरताकी बडी प्रशंसा सुनी है। लिजी! तुम बताओ यह चित्र उससे मिलता जुलता है या नहीं।'

मिसिज रेनाल्डस यह जानकर कि एलिजाबेथ उसके मालिकको जानती है, एलिजाबेथकी ओर आदरकी दृष्टिसे देखकर बोली-'क्या यह युवति मि॰ डारसीको जानती है ?'

एलिजाबेथके मुखपर लालिमा आ गई, उसने कहा-'हाँ थोडा जानती हूँ।'

मिसिज रेनाल्डस-'तो क्या आपके विचारमें वह बहुत सुन्दर मनुष्य नहीं हैं।'

एलिजा-'अत्यन्त सुन्दर।'

मिसिज रेनाल्डस—मैंने तो इनता सुन्दर पुरुष नहीं देखा। ऊपर चल कर मि॰ डारसीका एक और इससे बडा चित्र तुम देखोगी। यह कमरा मेरे

स्वर्गीय मालिकके बैठनेका कमरा था और ये चित्र इसी प्रकारसे उस समय भी यहाँ थे, उसको इनसे बहुत प्रेम था।'

मि० विक्रमका चित्र यहाँ होनेका कारण अब एलिजाबेथकी समझमें आया।

मिसिज रेनाल्डसने तब मिस डारसीका चित्र दिखाते हुए कहा—'कि यह तब खींचा गया था जब वह आठ वर्षकी थी।'

मि०गार्डनर-'क्या मिस डारसी भी अपने भाईके समानही सुन्दर है ?'

मिसिज रेनाल्डस-'हाँ, ऐसी सुन्दर स्त्री मैंने नहीं देखी। सब कलाओंमें निपुण है। दिनभर गाती-बजाती है। दूसरे कमरेमें उसका अभी नया बाजा आया है। कल वह भाईके संग यहाँ आयेगी।'

मि० गार्डनर-'सालभरमें क्या तुम्हारा मालिक पेम्बरलेमें अधिक दिन नहीं रहता है।'

मिसिज रेनाल्डस-'जितना मैं चाहती हूँ उतना तो नहीं रहता, परंतु छः महीने तो रहताही है। मिस डारसी तो गर्मियोंमें सदाही यहाँ रहती है।'

मि० गार्डनर-'यदि तुम्हारा मालिक विवाह करले तो अधिक दिन यहाँ रहेगा।'

मिसिज रेनाल्डस--'यह तो ठीक है, परन्तु ऐसा होना कठिन है, क्योंकि उसको अपने योग्य स्त्री मिलतीही नहीं।' मिस्टर और मिसिज गार्डनर मुस्कराये। एलिजाबेथने कहा-'यह तो उसके लिये बड़ी प्रशंसा की बात है। क्या तुम्हारा यह विचार ठीक है ?'

मिसिज रेनाल्डस-'मैं सचही कहती हूँ, और जो मनुष्य उसको जानता है, वह भी ऐसाही कहेगा। आज तक उसने मुझसे कभी कोई कठोर बात नहीं कही और मैं उसको चार वर्षकी अवस्थासे जानती हूँ।'

एलिजाबेथको यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसका यह बड़ा दृढ विश्वास था कि डारसी अच्छे मिजाजका नहीं है। उसको और कुछ सुननेकी उत्सुकता नहीं थी कि इतनेमें उसके मामूने कहा- मैंने तो इस प्रकारसे

नौकरोंको प्रशंसा करते हुए नहीं सुना। ऐसा मालिक पाकर तुम बड़ी सौभाग्यवती हो।'

मिसिज रेनाल्डस--' जी हाँ, संसारभरमें ऐसा मालिक नहीं मिल सकता। मेरा विश्वास है कि जो बचपनमें सीधे होते हैं. वे बढकर भी भलेही निकलते हैं। बचपनमें भी मि० डारसी अत्यन्त उदार और अत्यन्त मधुर स्वभावका था।'

एलिजाबेथ आश्चर्यमें आकर उसकी ओर घूरने लगी और सोचने लगी 'क्या वह मि० डारसीके विषयमें कहा जा सकता है ?'

मिसिज गार्डनर—' इनके पिता भी तो बहुत सज्जन थे।'

मिसिज रेनाल्डस—' हाँ, देवी! और उनका पुत्र भी उन्हींके सदृश होगा। दरिद्रोंपर उतनीही दया करेगा।'

एलिजाबेथ सुनकर आश्चर्यमें आ गई और सुननेको अधीर होने लगी। मिसिज रेनाल्डसकी और बातोंमें उसका मन न लगा। व्यर्थही मिसिज रेनाल्डसने चित्रोंके विषयपर, कमरेकी लंबाई चौडाईपर, फरनीचरके मूल्यपर बात-चीत की। मिस्टर गार्डनरने यह समझा कि यह अपने मालिककी प्रशंसा पक्षपातके कारण करती है और फिर उन्होंने उसी विषयपर चर्चा चलाई।

मिसिज रेनाल्डस—' मि० डारसी बहुतही अच्छा जमींदार और बहुतही अच्छा मालिक हैं। उन आजकलके विषयीं युवकोंमें नहीं, जो अपने अतिरिक्त किसीका ध्यान नहीं रखते। आपको उसका एक कृषक और एक व्यक्ति भी ऐसा न मिलेगा, जो उसकी प्रशंसा न करे। कुछ मनुष्य उसको अभिमानी कहते हैं, परन्तु मैं दृढतासे कह सकती हूँ कि यह दोष उसमें नहीं है। मेरे विचारमें यह और युवकोंकी तरह अपना समय गपशपमें नष्ट नहीं करता, इसीलिए लोग अभिमानी समझते हैं।

एलिजाबेथने मनमें सोचा, यह वर्णन तो उसको सज्जनही प्रमाणित करता है। उसकी मामीने उसके कानमें कहा—' कि इस वर्णनको सुनकर समझमें नहीं आता कि उसने विकमके साथ क्यों दुर्व्यवहार किया ?'

एलिज़ाबेथ-'. कदाचित् हमको घोखा हुआ हो।'

मिसिज गार्डनर–'ऐसा तो नहीं हो सकता। क्योंकि हमको सूचना देनेवाला बहुतही विश्वासयोग्य मनुष्य था।'

ऊपर पहुँचकर उनको एक बहुतही अच्छा सजाहुआ कमरा दिखलाया गया। यह मिस डारसीको प्रसन्न करनेकेलिए अभी अभी सजाया गया था। क्योंकि पिछलीबार जब वह आई थी तो उसने इसी कमरे को पसंद किया था।

एलिजाबेथने एक खिडकीकी ओर जातेहुए कहा— 'वह बहुत ही अच्छा व्यवहार बहनके साथ करते हैं।'

मिसिज रेनाल्डसने कहा कि मिस डारसी इसको देखकर बहुत प्रसन्न होगी। जिस बातसे मिस डारसीको आनंद प्राप्त हो, वह मिस्टर डारसी क्षणभरमें करवा डालते हैं कोई बात ऐसी नहीं है जो वह उसके लिए न करें।

अब चित्रशाला और दो तीन कमरे और देखने को रह गए थे। एलिजाबेथ को चित्रकला नहीं आती थी, इसलिए उसको इसमें कुछ विशेष आनंद प्राप्त न हुआ। मिस डारसीके खींचे हुए चित्र उसको पसंद आए। बहुत से परिवार वालों के चित्र थे। उसमें एक अपरिचित मनुष्य को कोई आनंद नहीं आ सकता था। अंतमें उसका मन एक चित्र ने अपनी ओर आकर्षित किया। यह मि· डारसी का चित्र था जिसके मुख पर ऐसी मुस्कराहट थी, जैसी जब वह एलिजाबेथको देखा करता था, तो उसके मुखपर होती थी। कई मिनिट तक वह इस चित्रको ध्यानपूर्वक देखती रही। चलते हुए फिर उसने उसकी ओर देखा। मिसिज रेनाल्डस ने उनको बताया कि यह चित्र डारसीके पिताके जीवन कालमें ही खींचा गया था। एलिजाबेथ के हृदय में मि. डारसी के लिए इस समय ऐसे उत्तम भाव थे, जैसे आज तक कभी नहीं हुए थे। बुद्धिमान नौकरकी प्रशंसासे बढकर अधिक मूल्य की प्रशंसा नहीं हो सकती। जमींदार और धनाढ्य होनेके कारण कितने मनुष्योंका भाग्य उसके हाथमें है। कितना भला और बुरा वह कर सकता है। मिसिज रेनाल्डसके वर्णन से उसका चरित्र कितना भला प्रतीत होता है। इन बातोंका ध्यान आनेपर जब उसने उनके चित्रकी

ओर देखा, तब उसको डारसीके प्रेमकी ओर कृतज्ञता उत्पन्न हुई और उस प्रेम के प्रगट करने के बुरेढंग की ओर क्रोध कम हुआ। घर को देखकर वे लोग नीचे उतरे और मिसिज रेनॉल्डस ने बिदा करते हुए उनको माली के सँग कर दिया कि उनको सब बाग दिखा दे।

जब वे नदीकी ओर चले जा रहे थे, एलिजाबेथने फिरकर देखा मामू और मामी भी ठहर गए। इस इमारतकी बननेकी तिथि पर वे लोग अनुमान कर रहे थे कि सामनेसे अस्तबलकी ओरसे मकानका मालिक आता हुआ दिखाई दिया। बीचमें बीस गजका अंतर था। उसकी दृष्टि से ओझल होना असंभव था। आँखे चार होते ही दोनोंके कपोलोंपर लालिमा आ गई। डारसी आश्चर्यमें आ गया, और अपने स्थान ही में जैसे गड गया। फिर अपनेको संभालकर एलिजाबेथकी ओर बढा और सभ्यता से उससे बोला। एलिजाबेथ उसकी बात सुनकर घबरा गई। माली भी अचम्भेमें आ गया था। मामू और मामी थोडी दूर पर खडे थें। एलिजाबेथको साहस न होता था कि डारसी से आंख मिलाए। उसकी समझमें नहीं आता था कि उसने मि॰ डारसीके प्रश्नोंके क्या उत्तर दिये। मि॰ डारसीके भावमें परिवर्तन देखकर यह और अचम्भेमें थी। डारसीका प्रत्येक वाक्य उसकी घबराहटको बढा रहा था। डारसीके बागमें इस प्रकार से आया जाना उसको अत्यन्त ही अनुचित प्रतीत हो रहा था। वे कुछ मिनट एलिजाबेथ के लिये बहुत ही कठिन थे। डारसी भी आश्चर्यमें था। उसकी बाणीमें भी धीरता नहीं थी। इतनी जल्दी जल्दी वह बोल रहा था कि स्पष्ट होता था कि वह घबराया हुआ है। अन्त में उसको कुछ समझमें नहीं आया। कुछ क्षण चुपचाप खडा रहकर उसने बिदा माँगी।

मामू आए। मामीने मि॰ डारसीकी प्रशंसा की परंतु एलिजाबेथने कुछ न सुना, क्योंकि वह अपने ही ध्यान में मग्न थी। लज्जासे वह गडी जाती थी। मैं यहां क्यों आई। डारसी अपने मन में क्या समझेगा। वह समझेगा कि मैंने फिर अपनेको उसकी राहमें डाला। यह ही क्यों एक दिन पहले

आगया। बार बार उसके मुख पर लालिमा आती थी। यदि हम दस मिनिट पहले चले आते तो डारसी का सामना न होता, क्योंकि यह अभी अभी गाड़ी से उतरा है। बड़े आश्चर्यकी बात है कि उसने मेरे परिवार के विषय में बातचीत की। आज तक इतनी सभ्यता, इतनी मधुरतासे बोलते तो उसको मैंने नहीं देखा। एलिजाबेथ के कुछ समझमें न आता था।

अब वे लोग नदीके किनारे चल रहे थे। बहुत ही सुन्दर रहस्य सामने आ रहे थे। एलिजाबेथ अपने मामू और मामीके प्रश्नोंका उत्तर देदेती थी, परंतु उसका चित्त कहीं और ही था। वह सोच रही थी कि मि० डारसी अपने मन में क्या समझते होंगे! क्या अब भी वह मुझसे प्यार करते हैं। उनकी वाणीमें अधीरता थी। मालूम नहीं मुझको देखनेसे उनको कष्ट हुआ या आनन्द।

अंतमें उसके मामू और मामीके यह कहनेपर कि तुम किस ध्यानमें मग्न हो उसको होश आया और उसने अपनेको संभालने की आवश्यकता समझी।

बागमें घुस कर वे लोग ऊपरको चढे, जहाँसे घाटीका सुन्दर दृश्य दीखता था। सामने पहाड वृक्षों से ढके हुए थे। मि० गार्डनर ने सारे पार्कमें घूमने की इच्छा प्रगट की। उनको मालूम हुआ कि कुल दस मील का चक्कर है। चलते चलते वे फिर नदीके किनारे पहुँचे गये। यहाँ मार्ग बहुत तंग था। छोटे से पुल पर से होकर उन्होंने देखा कि यह स्थान अधिक शोभायमान नहीं है। यहाँ पर केवल वह नदी थी और तंग मार्ग था। एलिजाबेथ आगे जाना चाहती थी। परंतु धीरे धीरे जा रहे थे। क्योंकि मि० गार्डनरको मछलीके शिकारका अत्यंत शौक था। और वह नदीमें मछ-लियों का फुदकना देखकर बार बार रुक जाते थे। इस प्रकार से धीरे धीरे चलते चलते उनका फिर मि० डारसीसे सामना हो गया। एलिजाबेथ को आश्चर्य तो अवश्य हुआ परन्तु अब उसने निश्चय कर लिया था कि मैं शाँति से उससे मिलूंगी। कुछ क्षण तक तो उसका विचार हुआ कि दूसरी मोड पर मुड चलें। परन्तु इतने में मि० डारसी पास आ गए? एलिजाबेथने बागकी प्रशंसा करनी आरम्भ ही की थी कि उसको ध्यान आया कि पैम्बरले

की प्रशंसा करने से मि० डारसी कोई और अर्थ न निकालें। इसलिये वह चुप हो गई और उसके मुखपर लालिमा छा गई।

मिसिज गार्डनर कुछ पीछे खड़ी थी। इतनेमें मि० डारसीने मिस एलिजाबेथसे कहा 'अपने मित्रोंसे मेरा परिचय कराओ।' इस सभ्यताके लिये एलिजाबेथ तैयार न थी। उसको हंसी आ गई कि अब मि० डारसी उन्हीं लोगोंसे परिचय करना चाहते हैं, जो लोग उनका मुझसे विवाह करने के प्रस्तावकी राहमें बाधा थे। उसने सोचा कि यह जानकर कि ये लोग कौन हैं, डारसीको बड़ा आश्चर्य होगा। इस समय तो वह उनको फैशनेबल आदमी समझता है।

परिचय हो गया। और अपना नाता बताते हुए, एलिजाबेथने डारसी की ओर कनखियांसे देखा कि वह किस प्रकारसे इसको सहन करता है। उसको कुछ आशा यह भी थी कि ऐसे नातेदारोंसे मिलकर वह अवश्य भाग जायेगा। डारसीको आश्चर्य तो अवश्य हुआ, परन्तु वह भागा नहीं और उन्हींके साथ चलते चलते मि० गार्डनरसे बातें करने लगा। एलिजाबेथ यह देखकर अपनी विजय पर प्रसन्न हुई। उसको संतोष हुआ कि मेरे कुछ नातेदार ऐसे हैं, जिनके कारण लज्जित होनेकी कोई आवश्यकता नहीं। वह उनकी बातचीतको बहुत ध्यान पूर्वक सुन रही थी और प्रत्येक बातसे वह प्रसन्न होती थी क्योंकि उससे उसके मामू की बुद्धि, ज्ञान और अच्छे विचार प्रगट होते थे।

मछलीके शिकारपर बात चल पड़ी। डारसीने सभ्यतासे मि० गार्डनर को अपने यहाँ नदीमें मछलीके शिकार खेलनेको निमंत्रित किया। मिसज गार्डनरने एलिजाबेथ की ओर आश्चर्य से देखा। एलिजाबेथ कुछ न बोली। समझगई कि यह सब सभ्यता मेरेही कारण है। परन्तु वह आश्चर्य में आ गई थी और बार बार यह सोचती थी कि डारसीमें इतना परिवर्तन क्यों हो गया। क्या मेरी अस्वीकृति ने उसको इतना सीधा कर दिया है! असंभव है कि वह मुझसे अब भी प्रेम करता हो।

आगे आगे दोनों स्त्रियाँ और पीछे पीछे दोनों पुरुष चले जा रहे थे। कि मिसिज गार्डनरने रुककर कहा कि एलिजाबेथका हाथ मुझको पूर्ण सहायता नहीं दे सकता, इसलिये पति से प्रार्थना की कि वह उसको सहारा दे। मि० डारसी अब एलिजाबेथ के साथ चलने लगे। कुछ देर चुप रहकर एलिजाबेथ बोली आप की प्रतीक्षा तो कल थी आज कैसे आगए। आपकी गृहरक्षिकाने कहा था कि कल आवेंगे। और यही बात हमको होटल में भी मालूम हुई थी। डारसी ने उत्तर दिया· "हाँ" बिलकुल ठीक है। सबलोगों से पहले कामके कारण मैं आगया। शेष मनुष्य कल आयेंगे। उनमें कुछ ऐसे हैं जिनसे तुम परिचित हो। मि० बिंगले और उसकी बहनें।

एलिजाबेथने सिर नवा दिया। मि० बिंगलेका नाम सुनकर उसको अपनी वही बात मि०डारसीसे अंतिम बातचीत की सुध आई। मि० डारसीको भी ध्यानमें थी।

कुछ देर ठहर कर मि० डारसी बोले उस टोली में एक व्यक्ति है। जो तुम से परिचित होने की इच्छा रखती है। क्या तुम मुझको आज्ञा दोगी कि यहाँ मैं अपनी बहनसे तुम्हारा परिचय कराऊं।

एलिजाबेथको यह प्रार्थना सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उसने समझा कि मिस डारसी की यह इच्छा मिस्टर डारसीही ने उत्पन्न कराई होगी। उसको सन्तोष हुआ कि मि० डारसी मुझको अभी भी बुरानहीं समझते हैं।

वे चुप-चाप विचारोंमें मग्न चले जा रहे थे। एलिजाबेथ प्रसन्न थी, क्योंकि मि० डारसीका अपनी बहनसे उसका परिचय कराना यह प्रमाण देता था कि मि० डारसी उसको बहुत अच्छा समझते हैं। वे बहुत आगे निकल गये और जब वे गाडीके पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि मिस्टर और मिसिज गार्डनर चौथाई मील पीछे रह गये हैं।

डारसीने उससे प्रार्थना की कि घर में चलकर बैठो। परन्तु उसने कहा कि मैं थकी नहीं हूँ; और वे पासके मैदानमें खडे हो गये। इस अवसर में बहुत कुछ कहा जा सकता था, और चुप रहना भद्दा प्रतीत होता था। वह कुछ बोलना चाहती थी परन्तु विषय समझमें नहीं आता था।

अन्तमें एलिजाबेथने अपनी यात्रा की चर्चा छेडी। परन्तु समय और उस की मामी इतने धीरे २ चल रहे थे कि उसका धीरज और उसके विचार उनके आने के पहले ही समाप्त हो गये। मिस्टर और मिसिज गार्डनरके पहुंचनेपर मि० डारसीने अन्दर चलकर कुछ खानेके लिये निमंत्रण दिया। परन्तु उन लोगोंने इसको अस्वीकार कर दिया और बहुत नम्रता से विदाई हुई। मि० डारसीने स्त्रियोंको गाडीमें चढनेमें सहारा दिया। और जब गाडी चल पडी तो एलिजाबेथ ने देखा कि मि० डारसी धीरे २ घर की ओर जा रहे हैं। अब मामू और मामी की बाताचित आरम्भ हुई। दोनों इस बात में सहमत थे कि मि० डारसी अत्यन्त भला मनुष्य है। मामू ने कहा, मि०डारसी सभ्यतम और अहंकाररहित है।

मिसिज गार्डनर-उसकी चालढालसे कुछ रईसी टपकती है, जो बुरी नहीं मालूम होती। मैं गृहरक्षिकासे सहमत हूँ, कि मनुष्य चाहे उस को अभिमानी कहे परन्तु मैंने उसमें कोई अभिमान नहीं देखा।

मि० गार्डनर-मुझको उसके व्यवहारसे बडा ही आश्चर्य हुआ। यह सभ्यता से भी अधिक था. उसका परिचय एलिजाबेथ से बहुत ही थोडा है, उस पर ऐसा अच्छा व्यवहार चकित कर देता है।'

मिसिज गार्डनर-लिजी! तुम क्या कहती थीं, वह विकम जैसा सुन्दर तो नहीं, परन्तु उस की आकृति बहुत अच्छी है। तुम तो कहती थीं कि वह बहुत बुरा है। एलिजाबेथने कहा कि अब वह कुछ सुधर गया है और आजके समान सभ्य तो मैंने उसको कभी नहीं देखा।

मि० गार्डनर-कदाचित् कुछ झक्की हो। बडे आदमी बहुधा ऐसे होते हैं। उस ने मुझ से कहा है कि मछली का शिकार खेलने आना, मैं न जाऊं गा। कहीं झक में आकर मुझको निकाल ही न दे।

एलिजाबेथने समझा कि इन लोगों ने अभी उसके स्वभाव को नहीं समझा है। परन्तु उसने चुप रहना ही उचित समझा।

मिसिज गार्डनर- 'उसका आजका स्वभाव देखकर समझमें नहीं आता कि विकमसे क्यों उसने दुर्व्यवहार किया है। उस की दृष्टि में बुराई नहीं।

कुछ ऐसी शानसे वह बोलता है जिससे विदित होता है कि उसका दिल काला नहीं है। उसकी गृहरक्षिकाने तो उसकी बहुतही प्रशंसा की। मुझे तो हंसी रोकना कठिन हो गया था। वह उदार मालिक है, और उदारता नौकरकी दृष्टिमें मालिकको सर्व गुणसम्पन्न बना देती है।

एलिजाबेथने डारसीके विकमकी ओर व्यवहारको उचित बताते हुए कहा कि कुछ बातें मुझको ऐसी मालूम हुई हैं कि जिनसे मि० डारसीका व्यवहार अनुचित नहीं कहा जा सकता, और न विक्रम ही ऐसे भलेमानस हैं, जैसे हर्डफोर्ड शायरमें वे समझे जाते हैं। मुझको यह बहुत ही विश्वसनीय सूत्रसे मालूम हुआ है कि विकमने जो कुछ कहा था वह बिलकुल सच न था।

मिसिज गार्डनर आश्चर्यमें आगई परन्तु अब वह ऐसे स्थानमें पहुंच गई थी, जहाँ उसको अपने बचपनकी याद आगई। इसलिये वह अपने पतिको प्रत्येक स्थानके सम्बन्धमें अपने बचपनकी बातें बताने लगी। यद्यपि वह थकी हुई थी, परन्तु खाना खाकर वह अपने बचपनके मित्रोंसे मिलनेके लिये निकली और सन्ध्या इसी काममें व्यतीत होगई। एलिजाबेथको इन नये मित्रोंसे मिलनेमें आनन्द न आया। और वह तो मि०डारसी ही के विषयमें सोच रही थी कि उसने कैसे सभ्यताका व्यवहार किया और मुझे अपनी बहनसे क्यों परिचित कराना चाहता है।

—०—

चौवालीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथको विश्वास था कि मि० डारसी अपनी बहनको पहुंचनेके दूसरे दिन लेकर मुझसे मिलानेको आयेंगे। परन्तु वह तो पहुंचतेही यहां आ पहुचे। अभी अभी ये लोग घूम फिर कर आये थे कि गाडीकी घरघराहटने उनका ध्यान आकर्षित किया और उन्होंने देखा कि एक पुरुष और एक युवती उसमें बैठी हैं। साईस और कोचबानकी वर्दीसे एलिजाबेथने जान

लिया कि कौन आ रहा है, और उसने अपने नातेदारोंको उस बातकी सूचना दी। उसके मामू और मामीको बडा आश्चर्य हुआ। और एलिजाबेथकी घबराहटको देखकर और पिछले दिनकी बातोंको याद करके उनको एक नया विचार आया। हो न हो मि. डारसीकी इतनी भलमन्सीका कारण एलेजाबेथसे प्रेम तो नहीं है। ये विचार उनके मनमें आही रहे थे कि उन्होंने देखा कि एलेजाबेथ बहुत घबरा रही है। एलेजाबेथ अपनी घबराहट पर अतिचकित थी। उसकी घबराहटका कारण यह भी था कि मि.डारसीने अपनी बहिनसे मेरी बहुत प्रशंसा की होगी। अब कहीं मि. डारसीने मुझको उस प्रशंसाका अधिकारी न पाया तो बुरा होगा। वह मिस डारसीको प्रसन्न करनेके लिये अत्यंत चिन्तित थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता था कि प्रसन्न करनेकी सब शक्तियां उसका साथ छोड रही हैं।

वह खिडकीसे हटकर आ गई और अपनेको शान्त करनेको कमरेमें टहलने लगी। उसके मामू और मामीने उसकी ओर ऐसी दृष्टिसे देखा कि वह और घबरा गई।

मिस डारसी और उसका भाई आगए और परिचय कराया गया। एलिजाबेथने देखा कि मिस डारसी भी उतनी ही घबराई हुई है जितनी कि वह। यहां आकर उसने सुना था कि मिस डारसी अत्यंत अहंकारिणी है, परन्तु कुछही मिनिटमें मिस एलिजाबेथको यह विदित होगया, कि वह अत्यंत लज्जाशीला है। कठिनतासे वह एक शब्द मुंहसे निकालती थी।

मिस डारसी लंबी और एलिजाबेथसे डीलडौलमें बडी थी। अवस्था यद्यपि सोलहही वर्षकी थी परन्तु उसका उठान अच्छा था। अपने भाईसे कम सुन्दर थी। उसके मुखपर समझ और हंसमुख लिखा हुआ था। उसका स्वभाव नम्र और विनीत था। एलिजाबेथ समझती थी कि अपने भाईके सदृश वह बडी तीक्ष्ण समालोचक होगी, परन्तु उसके भिन्न भावको देखकर उसको संतोष हुआ।

अभी इनको आए थोडी देर हुई थी। डारसीने कहा था कि बिंगले भी तुमसे मिलने आनेवाला है। वह अभी अपनेको तैयार भी न कर पाई

थी कि बिंगलेके पैरकी आहट सुनाई दी और बिंगलेने कमरेमें प्रवेश किया। एलिजाबेथका क्रोध तो पहलेही दूर हो चुका था, और यदि कुछ शेष भी होता तो बिंगलेके नम्रभावसे वह भाग जाता। बिंगलेने उसको कुटुम्ब की कुशल पूछकर सदाकी भांति शिष्टाचारसे बातचीत की।

मिस्टर और मिसेज गार्डनरको भी बिंगले एक मनोहर पुरुष प्रतीत हुआ। वह मि० बिंगलेको देखना चाहते थे। अभी जो उनको मि० डारसी और एलिजाबेथके विषयमें संदेह हुआ था, उस संदेहको पुष्ट करनेके लिए उन्होंने उन दोनोंकी ओर ध्यानपूर्वक देखा, और उनको पूर्ण विश्वास हो गया कि उनमेंसे एक यह जानता है कि प्रेम करना किसे कहते हैं ? एलिजाबेथके भावोंको तो वे न समझ सके, परन्तु डारसीके हृदयमें प्रेमकी नदी बह रही थी यह उनको स्पष्ट हो गया।

एलिजाबेथको भी बहुत कुछ करना था। वह आगन्तुकोंको प्रसन्न करना चाहती थी और अपने भावोंको शांत रखना चाहती थी। उसको सफलताकी आशा न थी परन्तु उसकी सफलतामें कुछ संदेह न था क्योंकि जिन लोगोंको वह प्रसन्न करना चाहती थी वे पहलेहीसे उसके पक्षमें थे। बिंगले प्रसन्न होनेको उद्यत था। मिस डारसी प्रसन्न होनेको उत्सुक थी और मि. डारसी तो पहलेहीसे प्रसन्न होनेका निश्चय कर चुके थे।

बिंगलेको देखकर एलिजाबेथको अपनी बहनका ध्यान आया। वह जानना चाहती थी कि बिंगलेके भी वेही विचार हैं कि नहीं। कभी तो उसका विचार होता था कि बिंगले पहले बहुत बोलता था अब कम बातचीत करता है। कभी वह समझती थी कि वह मेरी ओर देखकर किसी औरकी आकृतिको स्मरण करनेका प्रयत्न कर रहा है। जो कुछ हो उसने यह भली भांति समझ लिया कि मिस डारसी और मि. बिंगलेमें परस्पर प्रेम नहीं है। दोनोंमें कोई ऐसी बात नहीं हुई जिससे अनुराग मालूम हो। दो तीन बार बिदा होनेके पहले मि. बिंगलेने जेनके विषयमें बातचीत करते हुए करुणाके भाव प्रगट किए। उसने एकबार एलिजाबेथसे कहा कि कितना समय हो

गया कि हम लोग नहीं मिले। आठ महीने हो गए। २६ नवम्बरको नाचके अवसरपर हम लोगोंकी अन्तिम भेंट हुई थी।

यह जानकर एलिजाबेथको बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसको तारीख भले प्रकारसे याद है। एकबार जब सब लोग बातोंमें लगे हुए थे तो उसने पूछा कि तुम्हारी सब बहनें लांगबोर्नहीमें हैं या नहीं। इस प्रश्नमें कोई विशेष बात नहीं थी, परन्तु पूछनेके ढंगसे और बिंगलेकी आकृतिसे कुछ अर्थही निकलता था।

वह डारसीकी ओर देखनेका साहस नहीं रखती थी। परन्तु जब कभी आंखें मिल जाती थीं, उसको विदित होता था कि डारसीके मुखपर सन्तोषकी रेखा है, और उसकी बातोंको वह पसन्द करता है। उसको विश्वास होगया कि डारसीकी सभ्यता आज तक स्थिर है। जब उसने देखा कि डारसी उन्हीं लोगोंको प्रसन्न करना चाहता है, जिनसे कुछ दिन पहले मिलना वह घृणित समझता था। जब उसने देखा कि डारसीकी सभ्यताकी सीमा वही नहीं है, परन्तु वह उसके उन नातेदारोंसे भी जिनको उसने अभी थोड़े दिन हुए नीच कहा था सभ्य है तो उसको डारसीका स्वभाव अत्यंत आश्चर्यजनक प्रतीत हुआ। नीदरफील्डमें अपने मित्रोंमें कभी भी उसे इतना प्रसन्न नहीं देखा था, और न कभी प्रसन्न करनेका इतना प्रयत्न करतेही देखा था।

आगंतुक आधे घण्टे तक बैठे रहे और जब जाने लगे तो मि० डारसीने अपनी बहनसे कहा कि मिस्टर और मिसिज गार्डनर और मिस बेनटको यहांसे जानेके पहले पैम्बरलेमें भोजके लिये निमन्त्रित करनेमें मेरा साथ दो। मिस डारसीने बहुत विनीत भावसे उसकी आज्ञाका पालन किया। मिसिज गार्डनरने एलिजाबेथकी ओर देखा कि स्वीकार करना चाहिए या नहीं। परन्तु एलिजाबेथने अपना मुख मोड़ लिया। यह समझकर कि मुख अपने भावोंको छिपानेके लिए मोड़ा गया है और अपने पतिकी ओरसे संकेत पाकर उसने निमंत्रण स्वीकार किया। परसोंका दिन नियत होगया।

बिंगलेने एलिजाबेथसे फिर मिलनेका अवसर जानकर प्रसन्नता प्रगट की और कहा कि मुझे तुमसे बहुतसी बातें करनी हैं और हर्टफोर्डशायरके

मित्रोंके बारेमें पूछना है। एलिजाबेथ यह जानकर कि मेरी बहन जेनके विषयमें कुछ पूछना होगा, प्रसन्न हुई। आगन्तुकोंके जानेके अनन्तर वह अकेला बैठना चाहती थी. क्योंकि अपने मामू और मामीके प्रश्नोंका उत्तर देना उसके लिए असम्भव था। उनके मुखसे बिंगलेकी प्रशंसा सुनकर वह कपडे पहन कर चली गई।

मिस्टर और मिसिज गार्डनरसे उसको व्यर्थही भय था। वे जबरदस्ती कुछ पूछना नहीं चाहते थे। उनको यह स्पष्ट हो गया कि एलिजाबेथसे डारसीका अच्छा परिचय है। यह भी वे समझ गये कि डारसी उससे प्रेम करता है। परन्तु कुछ पूछना उन्होंने उचित न समझा।

मि० डारसीमें उन्होंने कोई दोष न पाया। उसका विनय उनसे छिपा न रहा। और यदि वह अपने अनुभवसे, और गृहरक्षिकाके वर्णनसे मि० डारसीके चरित्रका चित्र खेंचते तो हर्डफोर्ड शायरमें उसको कोई भी डारसीका चित्र न समझता। उनको विश्वास हुआ कि गृहरक्षिका जिसने उसको चार वर्षकी अवस्थासे देखा है, अवश्यही ठीक कहती होगी। लैम्पटनके निवासियोंने भी अभिमानके अतिरिक्त मि. डारसीको कोई दोष नहीं लगाया। अभिमान संभव है, उसको हो और यह भी सम्भव है कि इस छोटीसी नगरीके रहनेवाले, जहां वह बहुत कम रहता था उसको व्यर्थही अभिमानी समझते हों। यह तो सब स्वीकार करते थे कि मि० डारसी बहुतही उदार पुरुष हैं, और गरीबोंकी सहायता करता है।

विकमके विषयमें इन लोगोंको यह मालूम हुआ कि यहां कोई उसका आदर नहीं करता। मि. डारसीके और विकमके मामलोंको तो लोग नहीं जानते थे, परन्तु यह सबको मालूम था कि डारबीशायरसे जाते हुए वह बहुत कर्जा छोड गया था जो मि० डारसीने अदा किया था।

एलिजाबेथको तो आज पैम्बरलेके आतिरिक्त और किसी चीजका ध्यान न था। डारसीकी ओर उसके क्या भाव हैं इसी सोचमें वह दो घण्टे तक पडी रही। क्या वह उससे घृणा करती है। नहीं घृणा तो बहुत दिन हुए दूर

हो चुकी है और अब उसको उस घृणाके लिए लज्जा भी आती थी। उसके अमूल्य गुणोंको पहले तो उसने कठिनतासे स्वीकार किया, परन्तु अब उसके भावोंमें घृणाका अंश नहीं था। वह उसका आदर करने लगी थी। आदरके अतिरिक्त वह इस बातकी कृतज्ञ भी थी कि मि. डारसीने एक समय मुझसे प्रेम किया था। और मेरे बुराभला कहनेपर भी मुझसे अब भी प्रेम करते हैं। वह समझती थी कि अस्वीकृतिके अनंतर मि. डारसी मुझको अपना जानी दुश्मन समझेंगे। परन्तु इस अकस्मात् भेंटने उसको बतलाया कि वह परिचय स्थिर रखनेके लिए बहुत उत्सुक है और मेरे मित्रोंको प्रसन्न करना चाहता है। मिस डारसीसे मेरी मैत्री कराना चाहता है। इतने अभिमानी पुरुषमें इतना परिवर्तन होना आश्चर्यजनक है और मुझको उसका कृतज्ञ होना चाहिये। क्योंकि इन सब बातोंका कारण मेरा प्रेम है। वह डारसीका आदर करती थी सम्मान करती थी उसकी कृतज्ञ थी। चाहती थी कि वह प्रसन्न रहे। वह केवल इतना जानना चाहती थी कि मेरे साथ विवाह करके वह सुखी होगा या नहीं और उसके प्रेमको फिर जागृत कर देनेमें मुझको सुख होगा या नहीं।

मामी और भानजीने यह स्थिर कर लिया था कि मिस डारसीकी सभ्यताका अनुकरण करना चाहिये। कल प्रातः काल हम सब लोग पैम्बरले चलें। एलेजाबेथ प्रसन्न थी। परन्तु उसको यह समझमें नहीं आता था कि उसकी प्रसन्नताका कारण क्या है ?

मि. गार्डनर कुछ जलपान करके प्रातःकालही चले गये। उनको आज दिनको पैम्बरलेमें मछलीका शिकार खेलना था।

—०—

पैंतालीसवां परिच्छेद

एलिजाबेथको यह विश्वास होगया कि मिस बिंगले मुझसे ईर्ष्या करती है। वह जानना चाहती थी कि पैम्बरलेमें देखें उसके क्या भाव होते हैं, और वह किस प्रकारसे मुझसे व्यवहार करती है। पैम्बरले पहुंचनेपर वे लोग एक कमरेमें बिठाए गए जिसके द्वार उत्तर की ओर थे, और इस कारण कमरा गर्मीमें बहुत आनन्ददायक था। उसकी खिडकियोंसे वृक्षोंसे ढकी हुई पहाडियोंका बहुत सुहावना दृश्य दिखता था। सामने बाण के पेड थे।

इस कमरेमें मिस डारसीने उनका स्वागत किया। मिसिज हर्स्ट और मिस बिंगले भी यहां बैठीं थीं। मिस डारसीने बहुत ही सभ्यतासे व्यवहार किया। परन्तु लज्जाके कारण वह बहुत खुल न सकी। इसी लज्जा को लोग अभिमान समझते थे। मिसेज हर्स्ट और मिस बिंगलेने तो जैसे इन्हें पहचाना ही नहीं, और बैठनेपर सब लोग थोडी देर चुपचाप रहे। मिसिज एन्स्ले जो मिस डारसीकी देखभालके लिए रखी गई थी सबसें पहले बोलीं। मिसिज गार्डनर और उनमें बात होने लगी। कभी कभी मिस एलिजाबेथ भी बीचमें बोल देती थी। मिस डारसी भी बातचीतमें सम्मिलित होना चाहती थी परन्तु साहस नहीं था। कभी बीचमें एक छोटासा वाक्य कह देती थी, जो इतने धीमेसे कहती थी कि कदाचित् ही कोई सुन पावे।

एलिजाबेथने देखा कि मिस बिंगले उसकी सब बातें बडे ध्यानपूर्वक सुनती है, और जब वह मिस डारसीसे बातें करती है तो वह कान लगाकर सुनती है। परन्तु इस कारण एलिजाबेथ मिस डारसी से बातें करना न छोड देती, यदि यह उससे इतनी दूर न बैठी होती। वह अपने ही विचारों में मग्न थी। उसकी इच्छा थी, उसको भय था कि कहीं मालिक मकान न आजावे। यह निर्णय करना कठिन था कि इच्छा अधिक थी या भय अधिक था। इस

प्रकार से १५ मिनिट बैठने के बाद मिस बिंगलेने बहुत ही रूखे भाव से एलिजाबेथ और उसके परिवार की कुशल-क्षेम पूछी। एलिजाबेथ ने भी उदासीन भाव से उत्तर दे दिया। दोनों चुप हो रहीं। थोड़ी देर के अनन्तर नौकर मांस रोटी और अच्छे २ फल लेकर आए। मिसिज एन्स्ले ने मिस डारसी को संकेत किया। अब सबके लिये कुछ काम निकल आया। सब बातें तो न कर सकते थे, परन्तु खा सब सकते थे। अंगूरों की मीनारों ने, नाशपातियों के ढेर ने, आडुओं के समूह ने उनको मेज पर निमंत्रित किया। खाते हुए एलिजाबेथ को यह निर्णय करने का अवसर मिला कि मिस्टर डारसी के आने की उसको इच्छा थी या भय था। इतने में मिस्टर डारसी कमरे में घुसे। पहले तो उसको इच्छा ही की जीत प्रतीत हुई परन्तु थोड़ी ही देर में उसके आने से एलिजाबेथ को दु:ख हुआ।

वह मि०गार्डनर के साथ मछली का शिकार खेल रहा था। इस समय वह यह सुन कर अन्दर आया कि एलिजाबेथ आई हुई है। उसको देखकर एलिजाबेथ शान्त रहना चाहती थी परन्तु रहना कठिन था, क्योंकि उसने देखा कि वहां की सब एकत्रित स्त्रियां उसीको संदेह की दृष्टि से देख रही थीं। मिस बिंगले तो अत्यन्त उत्सुक थी। अभी तक ईर्ष्याने उसको निराश नहीं कर दिया था और वह मिस डारसीका मन अपनी ओर आकर्षित करना चाहती थी। मिस डारसी अपने भाई के आने पर एलिजाबेथ से बातचीत करने लगी, और एलिजाबेथने देखा कि वह उनको मित्र बनाने के लिए चिन्तित था, और बातचीत स्थिर रखने के लिए बीच बीच में आपभी बोल उठता था। मिस बिंगले ने भी वह सब कुछ देखा, और क्रोध में आकर सभ्यता को भूल कर वह बोली-क्यों मिस एलिजा! फौज वाले तो मैरिटन से चले गये होंगे; उनके जाने से तुम्हारे परिवारको बहुत हानि होगी।'

डारसीकी उपस्थितिमें विकमके नाम लेने का साहस मिस बिंगले को न था परन्तु एलिजाबेथ समझ गई कि उसका क्या प्रयोजन है। एक क्षण के लिए व्याथित होकर इस आक्रमण को दूर करने के लिए उसने साधा-

रण भाव से उत्तर दे दिया। उत्तर देते समय उसने अचानक डारसी की ओर देखा। डारसीका मुख लाल हो गया था, और वह ध्यानपूर्वक एलिजाबेथ को देख रहा था। मिस डारसीकी दृष्टि लज्जा के मारे जमीन में गड़ गई थी। यदि मिस बिंगले जानती कि विकमका नाम लेने से उसके प्रियमित्र डारसीको कितना दुःख होगा तो वह कदापि ऐसा न करती। उसका प्रयोजन तो यह था कि एलिजाबेथको परेशान करे और ऐसे मनुष्यका नाम लेकर जिसको वह पक्ष करती थी, डारसी की दृष्टि में उसको गिरादे। उसका यह भी प्रयोजन था कि डारसीको एलिजाबेथके परिवारके कुछ सभासदोंकी मूर्खतायें और बेहूदगियां स्मरण कराये। मिस डारसी के भागने की कहानी वह नहीं जानती थी। एलिजाबेथके अतिरिक्त यह बात किसीको डारसीने न बतलाई थी। और बिंगलेके कुटुम्बसे तो इसको बहुत ही गुप्त रखा था। क्योंकि उसका विचार अपनी बहनका विवाह बिंगलेसे कराने का था। परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि जेन से बिंगले को अलग करने का कारण वही विचार था। सम्भावना है कि इस विचारके कारण वह अपने मित्रके मामलों में अधिक मनोयोग देता हो।

एलिजाबेथके शान्त भावने डारसीको भी शान्त करदिया और क्यों कि मिस बिंगले निराश होकर विकमका नाम लेनेका साहस न रखती थी, तो मि० डारसीने भी अपने को संभाला। यद्यपि बोलनेके योग्य वह अभी नहीं हुई थी तो भी मि० डारसीसे आंख मिलानेकी उसमें शक्ति न थी। जो प्रयत्न मिस बिंगलेने डारसीके विचार एलिजाबेथकी ओरसे हटानेके लिए किया, वह उल्टा पड़ा।

इस प्रश्न और उत्तरके बाद अधिक देरतक वे लोग न ठहरे और जब मिस्टर डारसी उन लोगोंको गाड़ी तक पहुंचाने गए तो मिस बिंगले एलिजा-बेथ के शरीर की गठन पर, उसके स्वभावपर और उसके वस्त्रों पर कटाक्ष कर रही थी। मिस डारसी इन बातों में सम्मिलित न हुई क्योंकि उसके लिए तो उसके भाई की सम्मतिही पर्याप्त थी। भाई भूल नहीं कर सकता। जब भाई ने एलिजाबेथ की प्रशंसा कर दी तो मिस डारसी के लिए असम्भव था

कि वह उसे प्रशंसित न समझे। जब मि० डारसी उनको पहुंचाकर वापिस आया तो मिस बिंगलेने उन्हीं बातों को दोहराना आरंभ किया।

मिस बिंगले—"मिस डारसी, एलिजाबेथ कैसी बीमार मालूम होती है। मैंने तो इतना परिवर्तन किसी में आजतक नहीं देखा। वह तो बहुत भद्दी और काली हो गई है। मुझको और मेरी बहन को उसको पहचानने में कठिनता हुई।

मि० डारसी को यह बात अच्छी न लगी, परन्तु उसने शांतिपूर्वक केवल इतना ही कहा कि मैंने तो उसमें कोई परिवर्तन नहीं पाया। हां, गरमी में यात्रा करने के कारण उसका रंग अवश्य कुछ मध्यम पड़ गया है।

मिस बिंगले- 'मैं तो उसको कभी सुंदर न समझती थी। उसका चेहरा बहुत पतला है। उसके रंगमें चमक नहीं, उसके नक्शेमें सुन्दरता नहीं, उसकी नाक ठीक नहीं। उसके दांत-खैर सहे जा सकते हैं, परन्तु असाधारण नहीं, उसके नेत्र जिनकी मैंने बहुधा प्रशंसा सुनी है बिलकुल साधारण हैं। मुझको उसकी निगाह अच्छी नहीं लगती और उसका ढंग तो सर्वथा असहनीय है।

मिस बिंगले समझती थी कि डारसी एलिजाबेथ की प्रशंसा करता है। इस कारण यह बातचीत सर्वथा अयोग्य थी। परन्तु क्रोधमें मनुष्य बुद्धि से काम नहीं लेता और डारसीको जालमें फंसा हुआ देखकर वह समझी कि मेरी विजय हुई। मिस डारसी चुप रही उसको बुलवानेकेलिये मिस बिंगलेने फिर कहा, "मुझको याद पडता है कि जब पहले पहल हमने एलिजाबेथ को हर्डफोर्ड शायर में देखा, तो हमको आश्चर्य हुआ था कि लोग उसको सुन्दर किस प्रकार कहते हैं। मुझको भलीभांति स्मरण है कि नीदरफील्डमें भोजन के अनन्तर आपने कहा था कि एलिजाबेथ सुन्दर हैं। यदि एलिजाबेथ सुन्दर है तो उसकी मां में भी हास्यरस बहुत है। परन्तु उसके अनन्तर उसने आप पर कुछ रंग जमाया। और मेरा विश्वास है कि एक समय आया जब आप उसको सुन्दर समझने लगे।

मि० डारसी अपने आवेगको न रोकसके और बोले-"हां, जब मैंने पहले पहल उसको देखा तो वही सम्मति थी, परन्तु अब कई माससे मैं उसकी गणना अपनी परिचित अत्यन्त सुन्दरी स्त्रियोंमें करता हूँ।"

यह कहकर वह चला गया। मिस बिंगलेने उसको बाधित करके यह बात कहलवाई, जिससे कि उसके अतिरिक्त और किसी को कष्ट न हुआ।

मिसिज गार्डनर और एलिजाबेथ अपने दिनकी भेंटकी बातें करती रही। प्रत्येक मनुष्यके आचार की आलोचना हुई, परन्तु उस विशेष पुरुष की कोई बातचीत न चली। उसकी बहन, उसके मित्रों, उसके घर, उसके फलोंकी बातें हुईं, परन्तु उसकी नहीं। एलिजाबेथ जानना चाहती थी कि मिसिज गार्डनर की उसके विषयमें क्या सम्मति है, और मिसिज गार्डनर चाहती थी कि स्वयं एलिजाबेथ इस विषय को छेडे।

छयालीसवां परिच्छेद

लैम्पटनमें पहुंचकर जेनका कोई पत्र न आनेके कारण एलिजाबेथ निराश थी। तीसरे दिन उसको दो पत्र एकही समय मिले और उसे विदित हुआ कि एक कहीं भूलसे इधर-उधर हो गया था इस कारण देरसे पहुंचा। एलिजाबेथको कोई आश्चर्य न हुआ, क्योंकि पता ही बहुत भद्दा लिखा हुआ था। वह घूमने जा रहे थे कि पत्र पहुंचे। एलिजाबेथको पत्र पढनेके लिये छोडकर मामू और मामी घूमने चले गये। पहले वह पत्र जो घूम फिरकर आया था, खोलकर पढना आरम्भ किया। यह पांच दिन पहले लिखा गया था। आरम्भमें तो उसमें साधारण बातोंकी चर्चा थी। परन्तु अन्तका भाग जो एक दिन बाद लिखा गया था, बहुत घबराहटमें लिखा गया प्रतीत होता था वह इस प्रकार था :-

"यह सब लिखनेके अनन्तर अभी-अभी विदित हुआ है कि एक बहुतही दुर्घटना हो गई है। प्यारी लिज़ी ! घबराओ नहीं। हम लोग सब अच्छे हैं। बिचारी लीडियाके विषयमें कुछ लिखना है। कल रातको बारह बजे जब हम लोग सब सो रहे थे, कर्नल फार्स्टरका तार आया कि वह एक अफसर अर्थात् विकमके साथ भाग गई है। कैसे आश्चर्यकी बात है। बहुत शोकमय घटना है। परन्तु किटी तो जैसे इसकी प्रतीक्षाही कर रही थी। दोनों ओरसे यह विवाह विवेकहीन प्रतीत होता है। मेरा विश्वास है कि विकमका हृदय बुरा नहीं है, और वह उससे विवाह करलेगा। माताजी बहुत दुःखी हैं। पिताजीने कुछ अच्छे प्रकारसे इस आपत्तिको सहन किया है। अच्छा हुआ कि हमने विकमके चरित्रके विषयमें पहले उन्हें कुछ नहीं बताया। हमको भी अब सब बातें भूल जानी चाहियें। वे लोग सनीचरको बारह बजे गये, परन्तु उनके जानेका हाल कल सुबह आठ बजे मालूम हुआ। उसी समय हमको तार दिया गया। कर्नल फार्स्टरने हमको विश्वास दिलाया है कि विकम शीघ्रही यहां आवेगा। लीडिया एक पत्र उसकी स्त्रीके नाम छोड गई है। अब मुझको पत्र समाप्त करना चाहिये, क्योंकि मांको भी सान्त्वना देनी है। मुझे भय है कि तुम इस पत्रका आशय न समझोगी। मैं स्वयं भी नहीं जानती कि मैंने क्या लिखा है ?"

बिना सोचे समझे एलिजाबेथने दूसरा पत्र खोलकर पढना आरम्भ किया। यह पत्र एक दिन बादका था :—

'मेरी प्यारी बहन ! इस समय तक तुमको मेरा पहला पत्र मिल गया होगा। मेरे सिरमें इतने चक्कर आ रहे हैं। मेरी समझमें नहीं आता कि मैं क्या लिख रही हूँ। खबर बुरी है। मि० विकम और लीडियाका विवाह विवेकहीन होता, परन्तु अब तो इस बातकी चिन्ता है कि विवाह हुआ भी या नहीं। कर्नल फार्स्टर कल यहां आये थे। उनसे विदित हुआ कि वे लोग स्काटलैंड नहीं गये हैं। लीडियाके छोटेसे पत्रमें जो उसने मिसिज फार्स्टरके लिये छोडा था, लिखा था कि वे लोग ग्रेटनाग्रीन जा रहे हैं। डेनीकी बात-चीतसे मालूम हुआ कि विकम लीडियासे विवाह न करेगा। यह जानकर

कर्नल फार्स्टरने उनका पीछा किया। क्लैफम तक तो पता मिला उसके अनन्तर केवल इतना विदित हुआ कि वे लन्दनकी सडकपर गये हैं। लन्दनके बागमें भी पूछताछ की परन्तु पता न चला। फिर कर्नल फार्स्टर हर्डफोर्ड-शायरमें आये। बहुतही सज्जनताके साथ उन्होंने अपना भय प्रगट किया। मिसिज फार्स्टर और उनको कोई दोष नहीं दे सकता। मेरी प्यारी लिजी! हमारी बिपत्ति बडी कठोर है। माता और पिता तो बहुतही दुःखी हैं, परन्तु मैं विकमकी इतना बुरा नहीं समझती। बहुतसी बातोंके कारण संभव है कि वे लन्दनमें चुपकेसे विवाह कर लें। और यदि लीडियाको खराबही करनेकी उसकी इच्छा है तो लीडियाको मैं इतना विवेकहीन नहीं समझती। परन्तु कर्नल फार्स्टर कहते हैं कि विकमपर कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। और वह कदापि लीडियासे विवाह न करेगा। मां कमरेमें बमिार पडी है। पिता बहुत दुःखी हैं। लिजी! तुम इन दुःखित करनेवाले दृश्योंसे दूर हो, मेरी इच्छा है कि तुम वापिस आ जाओ। मैं स्वार्थी नहीं हूँ परन्तु मैं फिर तुमको यही लिखूंगी कि तुम लोग सब यहां आजाओ। मुझे मामूसे बहुतसी प्रार्थना करनी है। पिताजी कर्नल फार्स्टरके साथ उनको ढूंढने लंदन जा रहे हैं। वह किस प्रकारसे ढूंढेंगे मैं नहीं जानती। मैं समझती हूँ कि वह अच्छे प्रकार नहीं ढूंढ सकते। कर्नल फार्स्टरको कल शामको फिर ब्राईटन पहुंचना हैं। ऐसी दशामें मेरे मामूकी सहायता अत्यन्त आवश्यक है। मुझको पूर्ण विश्वास है कि वे अवश्य आवेंगे।

एलिजाबेथ चिल्लाती हुई उठी, मेरी मामी मेरे मामू कहां है। द्वार तक पहुँची थी कि नौकरने द्वार खोला और मि० डारसीने प्रवेश किया। एलिजा-बेथके पीलेमुख और घबराये हुए भावने डारसीको घबरा दिया। वह बोल भी न पाया था कि एलिजाबेथने कहा-"क्षमा करें, मैं इससमय आपसे कुछ बात नहीं कर सकती। एक क्षणभी व्यर्थ नष्ट नहीं कर सकती। इसी क्षण मि. गार्डनरसे अत्यन्त आवश्यक काम है।"

डारसी—'हे ईश्वर! क्या बात है। मैं आपको एक क्षणभी न रोकूंगा। परन्तु आपकी दशा ऐसी नहीं है कि आप मिस्टर और मिसिज गार्डनरको ढूंढें।

मैं ढूंढे लाता हूँ या नौकरको भेज दीजिए।'

एलिजाबेथ रुक गई, उसके पैर लडखडा रहे थे और वह जानेमें असमर्थ थी। नौकरको बुलाकर उसने हांपते २ कहा कि मिस्टर और मिसिज गार्डनरको तुरन्त बुला लाओ। नौकरके जानेके अनन्तर एलिजाबेथ बैठ गई। उसकी दशा ऐसी हो रही थी कि डारसीने वहांसे जाना अनुचित समझा। बहुत नम्रतासे उसने कहा कि क्या मैं नौकरानीको बुला दूं? आप कुछ लें। एक गिलास शराबहीका सही। क्या मैं ले आऊं, आप बहुत बीमार मालूम होती हैं।

एलिजाबेथने अपनेको संभालते हुए उत्तर दिया, नहीं २, मैं अच्छी हूँ। लांगबोर्नसे अभी एक पत्र आया है, जिसमें बहुत दुःखका समाचार लिखा है, उसीसे घबरा गई हूँ।

यह कहकर उसके आंसू भर आए और वह थोडी देरतक एक शब्द भी न बोल सकी। डारसीने कुछ कहा जो भलीप्रकार सुनाई न दिया, और वह चुपचाप खडा उसको देखता रहा। अन्तमें एलिजाबेथ फिर बोली, अभी २ मुझको जेनका पत्र मिला है, जिसमें दुःखमय समाचार लिखे हैं। उसको छिपानेसे कोई लाभ नहीं। मेरी सबसे छोटी बहन अपने मित्रोंको छोडकर भाग गई है। उसने अपनेको मि० विकमके हाथोंमें दे दिया है। साथ २ दोनों ब्राईटनसे भागे है। आप मि० विकमको भलीभांति जानते हैं। आप समझ सकते हैं कि इसका परिणाम क्या होगा? लीडियाके पास धन नहीं अच्छे सम्बन्धी नहीं। वह कभी भी उससे विवाह न करेगा। लीडियाका सर्वनाश हो गया।

डारसी आश्चर्यमें खडा रहा। वह फिर उत्तेजित बाणीमें बोली—'जब मैं सोचती हूँ कि मैं इस बातको रोक सकती थी। मैं विकमको जानती थी। यदि उसका कुछ अंश अपने परिवारको बता देती। यदि विकमका चरित्र पहलेसे सबको मालूम होता, तो यह दुर्घटना न होती, परन्तु अब क्या, अब तो चिडियां खेत चुग गईं।'

डारसी—'मुझको दुःख है, शोक है। क्या यह बात सर्वथा सत्य है?'

एलिजा०—सर्वथा सत्य है। रविवारको वे ब्राईटनसे रवाना हुए। लन्दनतक उनका पता लगा है, उसके आगे नहीं। स्काटलैण्ड तो वे कदापि नहीं गए।'

डारसी—'क्या किया गया है? अब तक उनको ढूंढनेके लिए क्या प्रयत्न किया गया है?'

एलिजा—''मेरे पिता लंदन गये हैं। जेन ने मामू को बुलाया है, और हमलोग आधे घंटेमें यहांसे रवाना हो जायेंगे। परन्तु कुछ नहीं हो सकता! वैसे मनुष्य को राजी करना असंभव है। उनका पता ही कैसे लगेगा। मुझको कोई ख्याल आया नहीं। हाय! कैसी भयानक दृढता है।" डारसीने सिर हिलाया और खड़ा रहा।

एलिजा०—''जब मुझको उसका सच्चा चरित्र मालूम हुआ, हाय! मैंनें क्यों नहीं सबको बता दिया, ओफ! बड़ी भूल हुई।'

डारसीने कुछ उत्तर न दिया। उसने कदाचित् एलिजाबेथकी बातें सुनी ही नहीं। वह ध्यानमें मग्न कमरेमें इधर-उधर घूम रहा था। उसकी भौंहें चढी हुईथी उसके मुखपर उदासी थी। एलिजाबेथ सब समझ गई। उसका दिल बैठा जा रहा था। अपने परिवार की ऐसी निर्बलता करा प्रमाण देखकर वह अपनी दृष्टिम आप घृणित प्रतीत हो रही थी। अब वह क्या करसकती थी, अपनी जयका ध्यान करके उसको कुछ सांत्वना न हुई। अब क्या हो सकता था? मैं चाहती तो डारसीसे प्रेम कर सकती थी, परन्तु अब सब व्यर्थ है।

लीडियाने हमारे कुटुम्ब पर धब्बा लगा दिया। एलिजाबेथ अपना मुंह रूमालसे ढक कर चुपचाप बैठ गई। थोडी देरके अनन्तर डारसीने करुणाकी वाणी में उससे कहा:—'मैं समझता हूँ कि आपकी इच्छा है कि मैं यहांसे चला जाऊं। मेरे ठहरनेका भी कोई कारण नहीं। मुझको दुःख है परन्तु अब दुःख से क्या लाभ? मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूँ कि मैं ऐसी बात कहूँ या करसकूं जिससे आपकी विपत्ति कुछ कम हो। परन्तु अब इस व्यर्थ की इच्छा प्रगट करनेका क्या प्रयोजन? इस दुर्घटना के कारण मुझको भय है कि आप आज पैम्बरले भोजनमें न आसकेंगी।

एलिजा०–'जी हां कृपया मिस डारसीसे मेरी ओरसे क्षमा प्रार्थना करें। उससे कहें कि आवश्यक कामके कारण मैं घर जारही हूँ। जहांतक होसके इस दुर्घटनाको गुप्त रखें। यद्यपि मैं समझती हूँ कि अधिक दिन तक यह बात छिपाई नही जा सकती।

गुप्त रखनेका विश्वास दिलाकर और अपनी सहानुभूति प्रगट करके और यह इच्छा प्रगट करके कि इस दुर्घटनाका परिणाम अच्छाही हो एक गंभीर विदाई की दृष्टि डालकर डारसी चलता हुआ।

उसके कमरेसे निकलने के अनन्तर एलिजाबेथने सोचा कि अब इतनी मित्रता और नम्रतासे डारसी मुझसे नहीं मिलेगा। अब उसने अपने और डारसीके सम्बन्ध में पिछली बातें सोचनी आरम्भ कीं तो उसको अपने हठपर दुःख हुआ। यदि कृतज्ञता और आदर अनुराग की नींव हैं, तो एलिजाबेथ के भावमें परिवर्तन कोई अस्वाभाविक नहीं थे। परन्तु यदि इन बातोंसे उत्पन्न हुआ अनुराग उसके मुकाबिलेमें अस्वाभाविक है कि जो अनुराग पहली दृष्टिमें दो बातें किये बिनाही होता है. तो हम एलिजाबेथ की कोई प्रशंसा नहीं कर सकते। कदाचित् विकम की पक्षपाती होने के कारण उसनें डारसीसे पहले प्रेम न किया। डारसीको जाता हुआ देखकर उसको दुःख हुआ। हाय! लीडियाने हम सबका ही सर्वनाश कर दिया। जेनका दूसरा पत्र पढकर उसको विश्वास था कि विकम लीडियासे विवाह कदापि न करेगा। पहले पत्र को पढकर तो उसको आश्चर्य था कि विकम लीडियासे विवाह करे। लीडियाके पास धन नहीं लीडिया उसको अपनी ओर आकर्षित भी नहीं कर सकती। अब सबबात स्पष्ट थी। थोडी देरको सुख भोगनेके लिए लीडियाको वह लेगया है। लीडिया यह समझती होगी कि अंतमें विवाह हो जायेगा। परन्तु न तो लीडियामें इतनी समझ है, न इतना सतीत्व का विचार है कि वह अपनी रक्षा कर सके।

जब फौज हर्डफोर्डशायर में थी, तो एलिजाबेथ को कभी यह विदित न हुआ था कि लीडिया विकमसे प्रेम करती है। परन्तु उसका यह विश्वास था कि लीडिया उन स्त्रियोंमें से है जो तनिक सा उत्साह पाने पर प्रत्येक मनुष्य

से प्रेम कर सकती है। कभी एक अफसर, कभी दूसरा उसका प्रिय होता था। हाय, ऐसी युवती की हमलोगों ने देख भाल न की।

घर का दृश्य स्मरण करके वह पागल हो उठी। पिता अनुपस्थित,माता मूर्खा, जेन चिन्तित परन्तु घर जाना भी आवश्यक था। इतने में मिस्टर और मिसेज गार्डनरने प्रवेश किया। उनको समाचार बताये गए और कांपते हुए पत्र पढकर सुनाए गये। यद्यपि मिस्टर और मिसिज गार्डनर लीडियासे स्नेह नहीं करतेथे परन्तु फिरभी वे बहुत दुखी हुए।लीडियाही की नहीं सारे कुटुम्बकी बद-नामी थी। मि० गार्डनर ने कहा कि मैं अपने भरसक सहायता करूंगा। तीनों व्यक्तियोंके एकही भाव होनेके कारण यात्राका निर्णय हो गया।

मिसिज गार्डनरने कहा-'परन्तु आज तो पैम्बरले में भोजन को जाना था जौन मुझसे कहता था कि जब वह मुझे बुलाने गया तो, मि.डारसी यहां थे।'

एलिजा०-'हां, और मैंने उनसे कह दिया है कि हम आज खाना खाने नहीं आसकते। वह सब तय हो गया है।'

मिसिज गार्डनर मनमें सोचन लगी, क्या तय हो गया है। क्या मिस्टर डारसी और एलिजाबेथमें इतनी घनिष्ठता है कि इसने सब हाल डारसी को बता दिया।

असबाब बंधने लगा। सब मित्रोंको झूठे बहाने लिखे गए कि हम तुरन्त आरहे हैं। होटलका हिसाब चुकाया गया। घंटे भरमें सब हो गया और वे लोग लांगबोर्न की सडकपर गाडी में रवाना हो गए।

—०—

सैंतालीसवां परिच्छेद

गाडीमें जाते हुए मामू ने कहा एलिजाबेथ बहुत सोचने पर मेरी समझ में तो यही आता है कि तुम्हारी बहनका विचार ठीक है। कोई युवक एक

ऐसी कन्या के विरुद्ध जिस कन्याके मित्र और रक्षक उपस्थित हों, ऐसा काम न करेगा। और फिर वह कन्या उसी कर्नैल के कुटुम्बमें रह रही थी। क्या वह समझता है कि उसके मित्र और रक्षक उसकी खोज न करेंगे। क्या ऐसी कुचेष्टा करके वह फिर कर्नल फार्स्टर के सामने आ सकता है।'

एलिजाबेथ खुश होकर बोली क्या आपका ऐसा विचार है?'

मिसिज गार्डनर–'मेरी सम्मति भी तुम्हारे मामू के समान ही है। मैं विकम को इतना बुरा नहीं समझती। लिजी क्या तुम विकम को इतना बुरा समझती हो ?

एलिजा०–'यदि उसकी अपनी कुछ हानि हो तो वह ऐसा न करेगा। परन्तु दूसरे की हानिकी चिन्ता करने वाला वह नहीं। यदि उनको विवाह ही करना था तो वे स्काटलैंड क्यों नहीं गये !'

मि० गार्डनर–इसका क्या प्रमाण है, कि वे स्काटलैंड नहीं गये ?'

एलिजा०–क्योंकि बारनट रोड पर उनका कोई पता नहीं चला।

मि० गार्डनर–अच्छा समझलो कि वह लंदन ही गये हैं। सभव है कि वहां किसी प्रकारसे बिवाह करलें। उनके पास धनका अभाव है। लन्दनमें सस्ते में काम हो जायगा।

एलिजा–परन्तु फिर इस गुप्त प्रकारसे भागने से क्या प्रयोजन ! पकड़े जाने का क्या भय ? विवाह को गुप्त रखनेका क्या लाभ ? नहीं२ऐसा कदापि नहीं हो सकता। उसका विशेष मित्र स्वयं कहता है कि वह लीडियासे विवाह न करेगा। बिकम धनहीन स्त्री को कभी न अपनायेगा। वह ऐसा करनेमें बिलकुल असमर्थ है। लीडियाके पास क्या धरा है ? केवल यौवन, स्वास्थ्य और हंसमुखपन। इन बातोंके लिए विकम कभी भी अपने आगामी जीवनको नष्ट न करेगा। इस भाग जानेसे विकमके ऊपर फौजसे क्या आपत्ति आयेगी, यह बह नहीं कह सकती। लीडियाके कोई भाई नहीं कि वह उससे बदला लें। और पिताके स्वभावसे तो उसने भलींभांति समझ लिया होगा कि न वह कुछ कहेंगे, न कुछ करेंगे। विषयमें सोचेंगे।

मि० गार्डनर-'परन्तु क्या तुम लीडियाको इतना गया गुजरा समझती हो कि वह अविवाहित रहकर भी उसके संग रहेगी ?

एलिजाबेथकी आंखोंमें आंसू भर आये। वह बोली-'बड़े दुखकी बात है कि अपनी बहनके सतीत्वमें मैं संदेह करूं। मेरी समझमें नहीं आता कि क्या कहूँ। कदाचित् मैं उसके साथ अन्याय कर रही हूं। परन्तु उसकी अवस्था कम है। कभी गम्भीर विषयों पर उसने नहीं सोचा है। साल भरसे तो वह खेलकूद,नाच तमाशेके अतिरिक्त और कुछ नहीं जानती। वह बिलकुल नासमझ है। जबसे फौज मेरिटनमें आई है, उसका काम प्रेम करना, मनुष्योंसे हंसी मजाक करनाही रहा है। और हम सब जानते हैं कि विकमम वे सब गुण मौजूद हैं जिनसे स्त्रियोंके हृदयको वह अपने वशमें कर सकता है।"

मिसिज गार्डनर-''परन्तु जेन तो विकमको इतना बुरा नहीं समझती।''

एलिजा-''जेन कभी किसीको बुरा नहीं समझती। और कौन मनुष्य ऐसा होगा जो किसी पुरुषका पुराना चरित्र जाने बिना उसको बुरा समझेगा। परन्तु जेन और मैं दोनों जानते हैं कि विकम वास्तवमें क्या है ? हम जानते हैं कि वह रुपया उड़ाऊ है। उसमें न सचाई है, न ईमानदारी। वह झूठा धोखेबाज और चुगलखोर है।"

मिसिज गार्डनर यह जाननेके लिए उत्सुक होने लगी कि एलिजाबेथ ये बातें कैसे जानती है। वह बोली "सचमुच तुम सब जानती हो ?"

एलिजा—'हां,मैंने अभी तुमसे थोड़े दिन हुए कहा था कि उसने डारसी के संग कैसा अमानुषिक व्यवहार किया है। तुमने सुना है कि विकम किस प्रकारसे उस मनुष्य की जिसने उसके साथ उदारता और क्षमाका बर्ताव किया है, निन्दा करता है। और बहुतसी बातें हैं, जिनको मैं कहना नहीं चाहती परन्तु पैम्बरले परिवारके विषयमें वह अत्यन्त झूठ बात है। मिस डारसीको उसने अभिमानिनी, घमण्डी और घृणित युवती बताया था, परन्तु यह सब बिलकुल झूठ है। हमने स्वयं उसको देखा है, वह कैसी निरभिमानिनी और स्नेहमयी युवती है।"

मिसिज गार्डनर—"परन्तु क्या लीडिया यह सब नहीं जानती ? क्या

लीडिया इन सब बातोंसे अनभिज्ञ है ?"

एलिजा—"हां, यही तो बुराई है। मैं स्वयं पहले कुछ न जानती थी। कैंटमें रहकर ये सब बातें मुझे मालूम हुईं। जब मैं घर वापिस आई, तो फौज एक पक्षमें जाने वाली थी। इस लिए मैंने और जेनने जिसको सब हाल मैंने बता दिया था, उसकी पोल खोलना अनुचित समझा। उससे किसीको कोई लाभ न होता। जब लीडियाका मिसिज फार्स्टरके साथ जांना निश्चित हो गया, तब भी मुझे यह न सूझा कि लीडियाको उसका सच्चा चरित्र बता दूं। सच बात तो यह है कि मैं समझतीही न थी कि लीडियाको वह धोखा देसकेगा मेरे मस्तिष्कमें यह कभी नहीं आया कि लीडियाका ब्राईटन जाने का यह परिणाम होगा।"

मिसिज गार्डनर—"तो क्या मैं यह समझूँ कि ब्राईटन जानेके पहले लीडिया और विकममें कोई अनुरागके लक्षण तुमने नहीं देखे।"

एलेज-"नहीं, यादि ऐसा होता तो तुम जानती ही हो कि हमारे कुटुम्बमें हलचल मच जाती। जब वह मेरिटन आया तो लीडियाने उसकी प्रशंसा की, हम सबने भी की। दो मास तक मेरिटनके आसपास की युवातियां तो उसपर मोहित होकर अपने होश-हवास में न थीं। परन्तु विकमने कभी कोई विशेष अनुराग उसपर प्रगट नहीं किया। लीडिया का अनुराग स्वयं भी कुछ दिनमें फीका पड गया और वह फौजके और अफसरोंके संग हंसने बोलने लगी।

एक रात राहमें रहकर वे दूसरे दिन खानेके समय लांगबोर्न पहुंचे। एलिजाबेथ को सन्तोष था कि जेनको अधिक प्रतीक्षा न करनी पडी। गार्डनर कुटुम्बके बच्चे गाडी को देखकर बाहर जीने पर आ गये और जब गाडी द्वार पर आ लगी तो उनके मुखोंपर प्रसन्नता झलक उठी, और वे उछलने--कूदने लगे। एलिजाबेथने गाडीसे निकल कर सब बच्चोंको चूमा और फिर आगे बढकर कमरेमें जेनसे मिली। दोनों की आंखोंमें आंसू थे। दोनो प्यार करके खूब रोयीं। एलिजाबेथने तुरन्त पूछा कि कोई पता लगा कि नहीं।

जेन—"कुछ नहीं, परन्तु अब मामू आगये हैं तो सब काम हो जायगा

एलिजा–"क्या पिताजी लन्दन में हैं?"

जेन–"हां वे तो मंगल ही को चले गये।"

एलिजा०–"उनका कोई पत्र आया?"

जेन–"एक आया था। कुशलपूर्वक पहुंचने की बात लिखी थी, और यह लिखा था कि जब तक कोई समाचार न मिलेगा पत्र न भेजूंगा।"

एलिजाबेथ–"माताजी कैसी हैं और तुम सब लोग कैसे हो?"

जेन–"मां अच्छी ही हैं। परन्तु बहुत घबराई हुई हैं। वे ऊपर हैं, और तुम सबसे मिलकर प्रसन्न होंगी। मेरी और किट्टी बिलकुल अच्छी हैं।"

एलिजा–"परन्तु तुम कैसी हो, बहुत पीली हो गई हो। तुमने बहुत कष्ट उठाया।"

जेनने विश्वास दिलाया कि मैं बिलकुल अच्छी हूँ। उनकी बातचीत हो रही थी कि मिस्टर और मिसिज गार्डनर अब अपने बच्चों को प्यार करके आगे आए। जेनने आगे बढकर आखोंमें आंसू भरे ही उनका स्वागत किया।

जब वे सब ड्रांयगरूममें पहुंच गये तो मामू और मामीने भी वे ही प्रश्न किये जो एलिजाबेथ कर चुकी थी, परन्तु जेन उनको कोई नया समाचार न बता सकी। जेन की अच्छी प्रकृतिने अभी उसका साथ नहीं छोडा था और वह अब भी आशा करती थी कि सब काम ठीक हो जायगा। एक ही दो दिनमें लीडिया या उसके पिताका पत्र आयेगा, जिसमें लिखा होगा कि विवाह कुशल पूर्वक हो गया।

अब सब लोग मिसिज बेनटके कमरे में गये। वह रोती चिल्लाती थी, विकम को गालियां देती थी और अपने दुखोंका वर्णन करती थी। अपने अतिरिक्त सबको अपराधी बताती थी। यद्यपि उसीने अपनी लडकीको खराब किया था। 'यदि हमलोग सब ब्राईटन गये होते तो वह कदापि न हुआ होता। बिचारी लीडियाका कोई रक्षक न था। न मालूम क्यों फार्स्टर कुटुम्बने उसे घरसे बाहर निकलने दिया। उन्होंने उसकी देख-भाल बिलकुल नहीं की। नहीं तो लीडिया ऐसी नहीं थी कि वह ऐसा दुःसाहस कर बैठती। मेरा पहले ही से विचार था कि लीडियाका उनके संग भेजना उचित नहीं था। परन्तु

मेरी बात काट दी गई। मेरी कौन सुनता है। हाय, मेरी प्यारी पुत्री! और अब मि. बेनट चले गये हैं। मुझको विश्वास है कि वे विकमसे लड़ेंगे और विकम उनको मार डालेगा। फिर हम सबका क्या होगा। मेरे पतिके कब्र में आरामसे लेटने से पहले ही कालिन्स हमको घरसे निकाल देंगे। प्यारे भाई! यदि तुम सहायता न करोगे तो हम कहीं के न रहेंगे।'

सब लोगोंने ऐसे विचारों का विरोध किया और मि० गार्डनरने अपनी बहन और सारे कुटुम्बके साथ स्नेह प्रगट करते हुए कहा कि कलही मैं लंदन जाऊंगा और लीडिया की खोजमें मि० बेनट की सहायता करूंगा। व्यर्थमें तुम मत घबराओ। हमको बुरीसे बुरी बात के लिये तय्यार रहना चाहिये। परन्तु यह न समझना चाहिये कि वह अवश्य ही होगी। संभव है कि कुछ दिनोंमें हमको उनका समाचार मिले। जब तक यह न मालूम हो कि अभी तक वे अविवाहित हैं और विवाह करनेका उनका कोई विचार नही तब तक हमें निराश नहीं होना चाहिए। लंदन पहुंचते ही मैं मि. बेनट को अपने घर ले जाऊंगा और फिर वहां सलाह करके हमलोग काम करेंगे।

मिसिज बेनट– मेरे अच्छे भाई! मुझको तुमसे यही आशा थी। लंदनमें जा कर उनको खोज निकालो। यदि अभी उनका विवाह नहीं हुआ है तो तुरन्त कर दो। लीडियाको समझा देना कि विवाहके अनन्तर कपड़ोंके लिए जितना रुपया मांगेगी मैं दूंगी। मि बेनटको लड़ने न देना। उनसे मेरी दशा बताना कि मैं कितनी सहमी हुई हूँ। मेरी दोनों ओर की पसलियोंमें दर्द है, दिल धड़कता है, सिर दुखता है। न रात को चैन है न दिन को आराम है। लीडियासे कहना कि अभी कपड़े मोल लेनेकी जल्दी न करे। क्योंकि वह नहीं जानती कि कौन बजाज अच्छे हैं। मैं समझती हूँ कि तुम ये सब करोगे।'

मि. गार्डनरने उनको विश्वास दिलाया कि जो कुछ मुझसे हो सकेगा करूंगा, परन्तु तुम अपने को संभाले रखो। अधिक आशा या अधिक भय करने की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकारसे समझा कर वे लोग बाहर खाना खाने निकले।

यद्यपि उसके भाई और बहनको फुसलाया गया कि वे अलग न रहें। तो भी उन्होंने इसका विरोध नहीं किया। क्योंकि वे जानते थे कि उनकी बहनको अपनी वाणीपर काबू नहीं है और नौकरोंके सामने भी वह खानेके समय उल्ट-पुलट बोल बैठती है। इसलिये उन्होंने कमसे कम घरके एक आदमीको उसकी रक्षार्थ रखना स्वीकार किया।

भोजनके कमरेमें उनके साथ मेरी और किट्टी भी सम्मिलित हो गईं थीं, वे अपने २ कमरोंसे आई थीं। एक पुस्तकें छोड़कर आई थी दूसरी शृंगारके कमरेसे आई थी। उन दोनोंके मुख शान्त थे। पर किटीका मुख कुछ शोकातुर भी था क्योंकि उनकी प्यारी बहन गुप्त हो गई थी। मेरी तो मेजपर बैठतेही एलिजाबेथसे गंभीर बातोंमें उलझ गई।

मेरी—यह बडी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी है, इसके विषयमें बहुत चर्चा हुई। परन्तु हमें इर्ष्या छोड़कर अपनी बहनोंके घायल हृदयोंमें शान्तिकी मल्हम लगानी चाहिये।

परन्तु जब उसने देखा कि एलिजाबेथ इसका कुछ उत्तर देना नहीं चाहती तो मेरीने फिर यों कहा,— लीडियाके लिये तो यह दुर्घटना बड़ी दुःखदायक हुई है, परन्तु हम इससे एक लाभदायक शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं कि नारी अपने सद्गुणोंको खोकर सदा हानि उठाती है। उसकी एक भी भूल उसे अनन्त दुःखोंमें डाल देती है। उसकी कीर्तिका नाश हो जाता है। उसे पुरुषकी लालसासे सदाके लिये कोई भी बचा नहीं सकता है।'

एलिजाबेथने आश्चर्यान्वित होकर अपनी आंखें ऊपर उठायीं परन्तु फिर भी वह कुछ उत्तर न दे सकी। परन्तु मेरीने इस प्रकारकी सच्छिक्षाओंको उस बुराईसे निकालकर सुनानेमेंही अपनी आत्माकी शान्ति अनुभवकी।

तीसरे पहर दोनों बडी बहनें-जेन और एलिजाबेथ-इस विषयकी अधिक जानकारीके लिये परस्पर उत्कंठित होकर आध घंटेके लिये एकान्तमें मिलीं। दोनोंने इस घटनापर शोक प्रगट किया और अन्तको एलिजाबेथने ज़ेनसे पूछा—

एलिजाबेथ– 'मुझे सब बातें इस विषयमें सुनाओ जिससे मुझे भी सारी घटनाका पता लग सके। कर्नल फार्स्टरने क्या कहा? क्या उन्हें इस घटनाके होनेके पहलेसे कोई संभावना नहीं थी? उन्होंने अवश्यही उन दोनोंको इकट्ठे देखा होगा।'

जेन- 'कर्नल फार्स्टर यह स्वीकार करते हैं कि उन्होंने उन दोनोंकी बातोंसे कुछ भांपा था। वह प्राय: लीडियाका पक्ष लिया करता था, पर इतनेसेही हम कुछ भी निश्चय न कर सकते थे। मैं उसके लिये बड़ा दु:खी हूं। उसका आचरण, अज्ञाकारी और दयापूर्ण था। वह हमें अपने निश्चयका विश्वास दिलाने आया करता था कि वे दोनों स्काटलैंड जायेंगें। ज्योंहि कि उनकी बात फैली, वह तुरन्त यहांसे खिसक गया।'

एलिजा०- क्या, डैनीको निश्चय था कि विकम विवाह नहीं करेगा? क्या वह उनके भागनेको जानता था? क्या कर्नल फार्स्टरने डैनीको स्वयं देखा था?

जेन- हां, परन्तु जब कर्नलने उससे पूछा तो डैनीने उन दोनोंके गुप्त इरादोंको जाननेसे इन्कार किया, नांहीं इस विषयमें अपनी कुछ सम्मतिही दी। नांहीं उसने उन दोनोंके विवाह न करनेके विषयमें कुछ अधिकही कहा। इन सब बातोंसे मुझे आशा होती है कि हम उसे पहले कुछ ठीक नहीं समझ सके थे।

एलि०-- क्या जब तक कर्नल फार्स्टर स्वयं नहीं आये थे, तुममेंसे किसीने भी इस विषयमें सदेह नहीं किया था। मैं समझती हूं वे दोनों वास्तवमें विवाहित हो चुके हैं।

जेन-- यह कैसे संभव हो सकता था कि एक ऐसा विचार हमारे मास्तिष्कमें आता? मैं थोड़ी बैचैन थी, कुछ डरती भी थी क्योंकि मैं समझती थी कि मेरी बहन उससे विवाह करके सुखी न हो सकेगी। क्योंकि मैं जानती थी कि उसका आचरण सदा अच्छा नहीं होता। मेरे माता-पिताको तो इन बातोंकी कुछ भी खबर नहीं थी। वे केवल यह ही अनुभव करते थे

कि इन दोनोंका विवाहित होना एक बड़ी अदूरदर्शिताका कार्य होगा। किटी मानती थी कि उसे हम सबसे अधिक इस विषयमें कुछ विदित था। क्योंकि वह कहती है कि लीडियाके अन्तिम पत्रमें ऐसी कुछ ध्वनि पायी जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे उन दोनोंके प्रेमका सप्ताहों पहले पता था।

एलिज०- परन्तु क्या ब्राइटन जानेसे पहले पता था?

जेन- नहीं! मुझे निश्चय है उसे पता नहीं था।

एलिज०- क्या कर्नल फार्स्टरने विकमके विषयमें स्वयं ऐसी बुरी बात सोची थी? क्या वह उसके दुश्चरित्रको जानता था?

जेन- मैं मानती हूं कि वह विकमके विषयमें इतनी प्रशंसा नहीं करता था जितनी पहले किया करता था। वह उसे अदूरदर्शी और खर्चीला समझता था। और जबसे यह शोकप्रद घटना हुई है, सुनते हैं, मैरिटनका उसने बहुत सा ऋण देना था। परन्तु मुझे आशा है यह सब झूठ होगा।

एलिज०- ओह जेन! यदि हम परस्पर गुप्तभेद न रखतीं, यदि हम एक दूसरेसे सब बातें खोलकर कह देतीं, तो यह सब कुछ न होता।

जेन- शायद यह अधिक उत्तम होता। परन्तु किसी मनुष्यके पहले अपराधोंको बिना उसके वर्त्तमान भावोंको जाने हुए, कहना मुझे अन्याय लगता था। हम शुभ भावनाओंके अनुसारही चल रहीं थीं।

एलि०- क्या कर्नल फार्स्टर लीडियाके उस पत्रकी विशेष २ बातोंको दुहरा सकते हैं जो कि उसने उनकी पत्नीके नाम लिखा था?

जेन- हां, वे उसे अपने साथही हमें दिखानेके लिये लाये थे? तब जेनने उस पत्रको अपनी पाकेट बुकसे निकाला और एलिजाबेथको दिया। उसमें इसप्रकार लिखा था,-

'मेरी प्यारी हैरिट,

तुम हंसोगी जब तुम्हें पता लगेगा कि मैं कहां चलीं गई हूं। और मैं अपनी हंसीको रोक नहीं सकती उस आश्चर्यपर जो कि कल प्रातः काल तुम्हें होगा, ज्यूंहि कि तुम्हें मेरे गुम हो जानेका हाल पता लगेगा। मैं ग्रेटना-ग्रीनको जा रही हूं, और यदि तुम अनुमान नहीं कर सकतीं कि मै किसके

साथ जा रही हूं. तो मैं तुम्हें एक बहुतही भोली स्त्री समझूंगी। क्योंकि इस संसारमें केवल एकही प्राणी है जिससे मैं प्रेम करती हूं, और वह एक देवता है। मैं उनके बिना कभी भी प्रसन्न नहीं रह सकती हूं। इसलिये मेरे दूर चले जानेसे मेरी कुछ भी हानि हुई है ऐसा न समझना। लाँगबोर्नमें मेरे जानेकी बात कहनेकी आपको आवश्यकता नहीं। क्योंकि चाहे आप इसे न भी पसंद करो परन्तु उन्हें बहुत अधिक आश्चर्य होगा जब मैं स्वयं अपने "लीडिया विकम" नामसे हस्ताक्षर करके उन्हें पत्र लिखूंगी। यह कितना अच्छा परिहास होगा। मैं हँसानेके लियेही लिखूंगी। कृपा करके मि. प्रैटको कह दीजिये कि उनके साथ आज जो मैंने नाचनेका वचन दिया था, वह पूरा न हो सकेगा। इसके लिये मैं क्षमा मांगती हूं। मुझे आशा है कि सब हालातका ज्योंहि कि उन्हें पता लगेगा वे मुझे अवश्य क्षमा कर देंगे। उन्हें यह भी कह दें कि अगली बार जब नाच होगा तो मैं उनके साथ बहुतही प्रसन्नतासे नाचूंगी। जब मैं लाँगबोर्न जाऊंगी तो मैं अपने कपड़े आपसे मंगवा लूंगी। परन्तु आप सैलीसे इतना कह दीजिये कि मेरी फाटी हुई मलमलकी गाऊनको जरा रफू कर दें, तब उसे तह लगाकर बंद करे। अन्तिम नमस्ते। कर्नल फार्स्टरको मेरा प्रेम कहें। मुझे आशा है हमारी मधुर यात्राके उपलक्ष्यमें तुम सुरापान भी करोगी।

तुम्हारी प्रिय सखी
लीडिया बैनेट

एलिजाबेथ चिल्लाई 'ओह! अचिन्तनीय। लीडियाने अचिन्तनीय कार्य कर डाला है। 'ऐसे समय ऐसा पत्र लिखना ? परन्तु इतना इससे पता लगता है कि वह अपनी यात्राके उद्देश्यके विषयमें गंभीर अवश्य थी। बादमें वह चाहे उसे कितनाही फुसलावे परन्तु लीडियाके मनमें यह पागलपनकी स्कीम नहीं थी। मेरे प्रिय पिताजीने इसे सुनकर कैसा अनुभव किया होगा ?'

जेन— मैंने किसीको इतना दुःखी होते नहीं देखा जितना उन्हें। वे दस मिनिट तक एक शब्द भी नहीं बोल सके। मेरी माता तो उसी समय रोगी हो गईं। और सारे घरमें हाहाकार मच गया।'

एलिजाबेथने चिल्लाकर कहा- ओह ! क्या कोई ऐसा नौकर भी था जिसे दिन छिपनेसे पहले २ इस घटनाका पता न लग गया हो?'

जेन- मैं नहीं जानती, मैं समझती हूं कि था। परन्तु ऐसे समय तक रहना कठिन होता है। मेरी माताको दौरे पड़ते हैं और यद्यपि मैं उसकी सर्व प्रकारसे सहायता करती रही तो भी मैं जितनी चाहती थी उतनी न कर सकी। क्योंकि भयने मेरी सब शक्ति नष्ट कर डाली थी।

एलिजा०-- तुमने उसकी सेवा हदसे बढ़कर की है और इससे तुम स्वयं रोगी हो रही हो। ओह ! कितना अच्छा होता मैं भी तुम्हारे साथ होती। तुम्हें अपने स्वास्थ्यका पूरा २ ध्यान रखना चाहिये।

जेन- मेरी ओर किटी भी बड़ी दया करती रही हैं। मेरे थक जानेपर वे भी मेरी सहायता करती रही हैं। पर मैं नहीं चाहती कि उन्हें कष्ट हो। किटी कमजोर और नाजुक है और मेरी इतना पढ़ती है कि उसके विश्रामके घण्टोंमें उसे पूरा २ विश्राम मिलना चाहिये। मेरी मामी फिलिप्स लॅंगबोर्न मंगलके दिन आई थी, पिताजी तो बाहर गये हुए थे। वे गुरुवार तक हमारे साथही रहीं। उन्होंने हमें बहुतही लाभ पहुंचाया और सहायता दी। लेडी ल्यूकस भी बड़ी दयालु है। वे भी बुधके प्रातः काल भ्रमण करती हुई यहां हमें शान्ति देने आई थीं। उन्होंने भी हमें अपनी तथा अपनी पुत्रियोंमेंसे किसीकी भी सेवा लेनेको बहुत कहा-।'

एलिजा०- (चिल्लाकर) अच्छा होता वे अपने घर परही रहतीं। शायद अच्छे विचार लेकर आई हों परन्तु ऐसे दुर्भाग्यके समय पड़ौसीका सुध लेने आना भी कई प्रयोजन रखता है। सहायता तो असभंवही थी, शोक प्रगट करना असह्य था। इसलिये उसे दूरसेही हमारे दुःखमें खुशी मनाना शोभा देता था, उसे इतनेसेही सन्तोष करना चाहिये था।'

अपने पिताके वहां नगरमें जाकर अपनी पुत्रीकी खोजके लिये क्या २ करनेके इरादे हैं, इस विषयको जाननेके लिये एलिजाबेथने जेनसे पूछा।

जेनने उत्तर दिया— मुझे निश्चय है कि वे एप्सम जायेंगे क्योंकि

यहांसे उन्होंने अन्तिमबार घोडे बदले थे, वहांके निवासियोंसे मिलकर कुछ पूछताछ करेंगे, उनका मुख्य काम उस गाडीकी संख्याको जानना है जिसमें वे दोनों क्रैकमसे गये थे। यह गाडी लंदनसे किरायेपर आई थी। उन्हें आशा है कि क्योंकि उन दोनोंने वहां गाडी बदली थी इसलिये शायद वहांके लोगोंने दो जनोंको गाडी बदलते हुए देखा हो और गाडीकी संख्या स्मरण करली हो। इसलिये क्रैकममें वे खोज करेंगे। यदि उन्हें यह पता लग गया कि किस मकानमें पहले कोचवान आकर बैठा था, कहां घोडा खडा हुआ था तो शायद वे गाडीकी संख्या भी वहांसे पता लगा लेंगे। इसके अतिरिक्त उनके अन्य विचारोंका मुझे कुछ भी पता नहीं। हां, वे जानेकी शीघ्रतामें थे और उनको इतना जोश चढा हुआ था कि मुझे इतना मात्र भी बडी काठिनतासेही पता लगा सका था।

—०—

अड़तालीसवां परिच्छेद

दूसरे दिन प्रातः कालही सब लोग मि. बेनटके पत्रकी प्रतीक्षा कर रहे थे परन्तु डाकमें उसके हाथकी लिखी हुई एक लाईन भी प्राप्त नहीं हुई। उसका परिवार इस बातको जानता था कि वह पत्र लिखनेंमें लापर्वाह है पर ऐसे समय सबको आशा थी कि वह अवश्यही पत्र लिखेगा। अन्तमें सबने यही परिणाम निकाला कि उसे उन दोनोंका कुछ पता नहीं मिला है। मि. गार्डनर जानेसे पूर्व उसके खतकी प्रतीक्षा करते रहे। जब वह चला गया तो सबको निश्चय हो गया कि अब हमें सब हालातका पता मिलता होगा, उनके मामाने वचन दिया था कि वह जातेही मि. बेनटको वापिस लॉंगबोर्नमें भेज देगा जिससे कि उसकी बहनको शान्ति होगी, क्योंकि यही एक उपाय था जिससे कि उसकी यह दुर्भावना दूर हो सकती थी कि मेरा पति कहीं द्वन्द्वयुद्धमें मारा न गया हो।

मिसिज गार्डनर और बच्चे हर्टफोर्डशायरमें कुछ दिन रहते रहे क्योंकि वह समझती थी कि उनका वहां रहना उनकी भानजियोंके लिये सहायक होगा। मिसिज गार्डनरने समय २ पर मिसिज बेनटकी बहुत सेवा की और इससे उसकी पुत्रियोंको कुछ आरामका समय मिलने लगा था। उनकी दूसरी मामी भी उनको प्रायः मिलने आती थी और वह सदा प्रसन्न और उत्साह-वर्धक बातें सुनानेके विचारसे आती थी क्योंकि वह ऐसा ही सदा कहती थी। परन्तु वह सदाही मि. विकमके विरुद्ध उसकी फिजूलखर्ची, उसकी उच्छृंखलताओंका ही प्रायः वर्णन करती थी। इससे वह जाते समय उन्हें पहलेसे भी अधिक उदास और दुःखी कर जाती थी।

सारे मैरिटनके लोग उसी मनुष्यकी अब निन्दा करनेमें कसर नहीं छोडते थे, जिसको कि तीन मास पहले वे सबसे उत्तम श्रेष्ठ देवता कहते थे। अब उसे सभी दुकानदारोंका कर्जदार बतलाया जाता था। और उसके दोषोंको अब सभी व्यापारियोंके परिवारोंमें फैलाया जाता था। सभी कह रहे थे कि वह सबसे अधिक शैतान नौजवान था और सभी लोग कहते थे कि हम उसकी बनावटी सचाई देखकर उसपर विश्वास नहीं करते थे। एलिजाबेथ यद्यपि इन बातोंको आधाभी सच नहीं समझतीथी तोभी उसे इतना और अधिक निश्चय हो गया था कि उसकी बहनका सर्वनाश अवश्य हो चुका है। जेन भी जो उससे भी कम इन बातोंका विश्वास करती थी, अब अधिक निराश हो चुकी थीं, क्योंकि वह ऐसा समय आ गया था कि यदि वे स्काटलैण्ड गये होते, जिसके विषयमें वह अभी तक सर्वथा निराश नहीं हुई थी, तो उसे कुछ न कुछ तो नया समाचार उनके विषयमें अवश्यही मिलता।

मि. गार्डनर लॉंगबोर्नसे रविवारको गये थे। मंगलवारको उनकी पत्नीको एक पत्र मिला। इससे पता लगा कि उसने वहां पहुंचतेही पहले अपने भाईको ढूंढ निकाला और उसे ग्रेसचर्च स्ट्रीटमें ले आनेको मना लिया। यह भी पता लगा कि मि. बेनट वहां जानेसे पहले इप्सम तथा क्लेफम भी हो आये हैं परन्तु उन्हें कोई भी सन्तोषजनक समाचार नहीं मिला है और अब वह नगरके सब बड़े २ होटलोंमें खोज करेंगे क्योंकि मि. बेनेटको निश्चय था

कि वे दोनों लंदन आकर कहीं बसनेसे पहले किसी न किसी बड़े होटलमें अवश्यही ठहरेंगें। मि. गार्डनर यद्यपि इस खोजसे कुछ सफलता मिलेगी ऐसा नहीं मानते थे, परन्तु क्योंकि उनके भाईकी ऐसी इच्छा थी इसलिये वे उसकी सब प्रकारसे सहायता करना चाहते थे। उन्होंने लिखा था कि इस-समय मि. बेनट लंदन छोडनेको सर्वथा उद्यत नहीं हैं। उन्होंने दूसरा पत्र शीघ्रही लिखनेको कहा था। इसके साथही एक और पत्रका भी उद्धरण था।

'मैने कर्नल फार्स्टरको लिखा है कि यदि समय हो तो सेनाके किसी मनुष्यसे पता करके मुझे लिखें कि क्या मि. विकमका कोई संबंधी लंदनमें है जिसके यहां कि वह अपने आपको छिपाये हुए है। यदि कोई हो तो उससे मुझे उसे खोज निकलनेमें बड़ी सहायता मिल सकेगी। इस समय तो हमें कोई खोज करनेमें सहारा नहीं है। मुझे निश्चय है कर्नल फार्स्टर हमें इस विषयमें हर प्रकारकी अवश्यही सहायता देंगें। और दूसरी शायद लिजी है जो उसके विषयमें कुछ जानती है।

एलिजाबेथ झट समझ गई कि उसके विषयमें ऐसी जानकारीकी क्यों कल्पना की गई है, परन्तु उसके वशमें ऐसी कोई सूचना नहीं थी जिससे कि सफलतापूर्वक खोज हो सके।

उसने कभी भी नहीं सुना था कि विकमके माता पिताके अतिरिक्त और कोई संबंधी भी है और वे दोनों वर्षों पहले मर चुके थे। तो भी यह संभव था कि उसके डरबीशायरके साथी इस विषयमें कुछ अधिक सूचना दे सकें यद्यपि उसे इसका पूरा निश्चय नहीं था, इसलिये इस विषयमें अधिक प्रतीक्षा करनीही आवश्यक हो गयी थी।

अब तो लॉंगबोर्नका प्रत्येक दिन चिन्तामें गुजरता था, परन्तु सबसे अधिक चिन्ता डाक आनेके समय होती थी। प्रतिदिनके असन्तोषका मुख्य उद्देश्य पत्रोंकी प्रतीक्षा मात्र रह गया था। पत्रोंमें जो कुछ भला बुरा आता था वह सबको सुना दिया जाता था और प्रत्येक आनेवाले दिनमें किसी बहुत आवश्यक समाचारकी प्रतीक्षा की जाती थी।

मि. गार्डनरके दूसरे पत्र पहुंचनेसे पहिले भिन्न स्थानसे एक पत्र मि. कालिन्स का उनके पिताके नाम आया। अपने पिताकी आज्ञानुसार उनकी अनुपस्थितिमें अन्यपत्रों की भांति जेनने उसे खोला और पढा, एलिजाबेथने भी उस मनोरंजक पत्रलेखक के पत्रको पढा, उसमें इसप्रकार लिखाथा:—

मेरे प्रिय महोदय !

सम्बन्धी होनेके कारण मुझे आपके इस नये दुःखमें बडी ही सहानुभूति है। मुझे तो कल ही हार्टफोर्ड शायरके एक पत्रसे इस घटना का पता मिला है। आप मेरी तथा मेरी धर्मपत्नी मिसिज कालिन्सकी सहानुभूति ग्रहण करें क्योंकि यह ऐसा दुःख है जिसमें आपकी अपार हानि हुई है और जिसका कोई उपाय नहीं है। ऐसे दुःखमें जिसेकि मातापिता अपना बडा ही दुर्भाग्य समझते हैं, मैं आपको शान्त करनेके लिये क्या युक्तियां दे सकता हूं। इस प्रकार की घटना की अपेक्षा तो आपकी पुत्रीकी मृत्यु हो जाना कहीं अधिक अच्छा होता। जैसाकि मेरी प्यारी शार्लोटकी भी राय है कि आपकी पुत्रीका ऐसा निर्लज्जभावसे परपुरुषोंसे मिलना, प्रेममें फंसना और भागजाना और फिर इतनी छोटी आयुमें एक अत्यन्त गर्हित बात है। कुछभी हो आपकी ऐसी शोकातुर और दयनीय दशामें मैं और मिसिज कालिन्स और लेडी कैथराइन और उसकी पुत्रियां-जिनको कि मैंने यह घटना पूरी २ सुनादी है—सबही सहानुभूति करती हैं। वे मेरे साथ इस बातमें भी सहमत हैं। कि आपकी पुत्री की यह अनुचित कर्म अन्य लडकियोंके भविष्यको भी नष्ट करेगा, क्योंकि जैसा कि लेडी कैथराइन भी कहती हैं कि इस प्रकारके बुरे कुटुम्बसे कौन मिलना पसन्द करेगा। और इस विचारसे मुझे अब उन बातोंके सत्य होनेका भी निश्चय हो जाता है जो कि पिछले नवंबरमें हो चुकी हैं। क्योंकि यदि ये घटनाएं न हो चुकी होंती तो मैंभी आपके सब दुःखों और अपकीर्ति में सहयोग देता। इसलिये मेरे प्रिय महोदय जी ! मैं आपको यह सम्मति देता हूं कि आप अपने को यथाशक्ति शान्त करें और अपनी अयोग्य पुत्रीको सदाके लिये त्याग दें। उसे अपने कुकर्म का फल स्वयं भोगने दें।

मैं हूं प्रिय महोदय
आपका इत्यादि २

कर्नल फार्स्टरसे जबतक उत्तर न आगया तबतक मि॰ गार्डनरने कोई पत्र न लिखा था। फिर उनमेंसे भी उसे कोई अच्छी बात लिखनेको न मिली थी। यह पता नहीं लगसका था कि विकम का कोई ऐसा भी संबंधी है जिसके साथ कि उसका आजतक भी संबंध बना हुआ है। प्रत्युत यह निश्चय पता लग गया था कि उसका कोई भी निकट का संबंधी जीवित नहीं है। यद्यपि पहले उसके बहुतसे परिचित थे परन्तु जबसे वह सेनामें भर्ती हुआ था तबसे उसने उनमें से कोईभी मित्र नहीं रखा था। इसलिये उसके विषयमें सूचना भी कोई नहीं दे सकता था। उसकी आर्थिकदशा क्योंकि अत्यन्त शोचनीय थी इस लिये वह अपना भेद गुप्त रखने के लिये भी इसको आवश्यक समझता था। वह लीडियाके संबंधियोंसे भी अपने इस अर्थकष्टको छिपा रखना चाहता था, क्योंकि अभी२यह भी पता लगाथा कि उसने जुएमें बहुतसा ऋण अपने ऊपर चढा लिया था। कर्नल फार्स्टर को विश्वास था कि एक हजार पौण्डसे अधिक राशि उसके ऋणको चुकानेके लिये आवश्यक थी। उसने नगरमें भी बहुत ऋण ले रखा था। पर उसका अपकीर्तिसंबंधी ऋण तो बहुत हीं अधिक हो गया था। मि॰ गार्डनरने ये सब बातें लौंगबोर्न कुटुम्बसे छिपानी उचित भी नहीं समझी थीं। जेनने भयभीत होकर यह सब सुनीं। वह एकदम चिल्लाई 'जुआरी' इनसब बातों की मैं आशा भी नहीं कर सकती थी मुझे इसका ध्यान भी नहीं आसकता था।'

मि. गार्डनरने अपने पत्रमें यह भी लिखा था कि वे अपने पिताकी दूसरे दिन शनिवार को प्रतीक्षा कर सकती हैं। क्योंकि सब प्रकारकी खोजसे निराश होकर अन्तको वह अपने सालेकी सलाह को मानकर घर लौटने को उद्यत हो गयाथा और खोजनेका काम अपने सालेकी बुद्धिमत्ता पर छोड बैठा था। जब मिसिज बेनटको यह बात सुनायी गयी तो उसने इससे उतना सन्तोष प्रकट न किया जितना कि उसकी पुत्रियोंने किया क्योंकि अपने पतिकी कुशलके लिये वही पहले बहुत चिन्तित रहा करती थी।

वह चिल्लाई—" क्या ? क्या वे घर को लौट रहे हैं। क्या वे बिचारी लीडियाके बिनाही लौट रहे हैं ?" "मुझे विश्वास है वे उसें ढूंढे बिना लंदन को नहीं छोडेंगे। विकमसे कौन लडेगा, और उसको विवाह करने को कौन मजबूर करेगा यदि वे यहां लौट आये।"

क्योंकि मिसिज गार्डनर लंदन जानेका विचार कर रही थी इसालिये यह निश्चय किया गया कि जब मि.बेनट यहां आजावें उसी समय वे अपने बच्चों सहित लंदनको रवाना हो जांय। इसलिये कोचवान गाडीमें उन्हें छोड आया और लौटते समय मि. बेनटको लैंगबोर्नमें वापिस ले आया।

मिसिज गार्डनर एलिजाबेथ और उसके डर्बीशायर वाले मित्रके विषयमें जो कि बहुत दूरसे आकर एलिजाबेथ की सेवा करता रहा था बडी चिन्तित थी। उसका नाम अपनी मामीके सामने जान बूझकर किसीनेभी नहीं बतलाया था। उसके विषयमें जो आधीसी आशा मिसिज गार्डनरके मनमें उत्पन्न हुई थी वह भी समाप्त हो गयी जब उसका पत्र भी कोई न आया। उसके लौटने के बाद उसका कोई भी पत्र एलिजाबेथ को नहीं मिलाथा यद्यपि उसे पैम्बरले से आने की आशा लगी हुई थी।

उनके परिवार की वर्तमान दुःखी अवस्थाके साथ उसके स्वास्थ्यको यह और भी अनावश्यक रूपसे धक्का लगा था, इसलिये उसके विषयमें कुछ स्पष्ट कहना बडा कठिन था। यद्यपि एलिजाबेथ इससमय तक अच्छी प्रकारसे अपने मनोभावोंको जान चुकीथी। वह जानती थी कि यदि वह डारसी के विषयमें कुछभी न जानती होती तो वह लीडियाके अपयश को अधिक अच्छी प्रकारसे सह लेती। उसने सोचा इससे दोमेंसे एक राततो मुझे कुछ सोना मिल सकेगा।

जब मि. बेनट घर पहुंचे तो सदाके समान तर्क उनके मुखपर प्रकट हो रहा था। वे सदा की भांति बहुतही कम बोले, उस बातका कि जिसके लिये वे घरसे बाहर गये थे, कथन तक नहीं किया। यद्यपि कुछ देर पहले उनकी पुत्रियोंने उस विषयकी चर्चा का साहस किया था।

तीसरे पहर वह चायपर उनके साथ बैठे, तब एलिजाबेथने उनके साथ उसी विषयको छेडनेका साहस किया। तब जब उसने दुःखी होकर आह भरी

तो उसके पिताने कहा, "उस विषय को छोडो मेरे सिवाय यह दु.ख किसने भोगना है ? यह मेरे अपने कर्मों का फल है और मैं ही इसे भोगूंगा।"

एलिजाबेथने उत्तर दिया-आप अपनेसाथ इतनी कठोरताका बर्ताव न करें।

मि. बेनट--तुम मुझें ऐसे पापसे सावधान कर सकती हो। मनुष्यका स्वभाव ही है कि वह ऐसे पापोंमें फंस जाता है। नहीं लिजी, एकबार मुझे अपने जीवनमें यह अनुभव करनेदो कि मैं कितना अपराधी हूं। मैं लोगोंकी चर्चा से डरता नहीं हूं। ये सब चर्चाएं शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी।

एलि--क्या आप उन्हें लंदनमें ही समझते हैं ?

बेनट--हां, उससे अच्छास्थान उन्हें छिपने को और कहां मिलेगा ?

किट्टीने भी साथ दिया--और लीडिया लंडन जाने की इच्छुक भी थी ?

उसके पिताने रुखाई से कहा, "तब तो वह प्रसन्न है। और उसका निवासभी कुछ देरतक वहां ही रहेगा।" फिर कुछ देर चुप रहने के बाद उसने कहा. "लिजी ! पिछली गर्मियोंमें तुमने जो सलाह मुझे दी थी, मुझे सबबातों को विचारनेके बाद, वह ठीक ही जँचती है और उससे तुम्हारे मनकी महत्ता प्रकट होती है।

मिस बेनटके उस समय वहां आनेसे उनकी बातोंमें कुछ विघ्न पड गया। वह वहां अपनी माता के लिये चाय लेने आई थी।

पिताने चिल्लाकर कहा–"यह एक परेड (व्यायाम) है जिससे एक लाभ होता है कि यह दुर्भाग्य को बढा देती है। कल को मैं भी ऐसा ही करूंगा। मैं अपने पुस्तकालयमें बैठ जाउंगा, मैं रातकी टोपी और गाऊन पहन लूंगा, और इतना कष्ट दूंगा जितना कि दे सकूंगा। अथवा मैं ऐसा ढंग भी कर डालूंगा कि किट्टीको भी भाग जाना पड़े।'

किट्टीने मधुरतासें कहा 'पापा, मैं नहीं भागूंगी। 'यदि कभी मैं ब्राइटन जाऊंगी भी तो मैं लीडियाकी अपेक्षा अच्छा बर्ताव करूंगी।'

'तुम ब्राइटन जाओगी ? मैं तुमपर सर्वथा विश्वास नहीं कर सकता। चाहे ईस्टबोर्न जो कि इतना समीप है वहां ही तुम जाना चाहो। नहीं किट्टी

मैं अब सावधान हो गया हूं और तुमपर भी इसका प्रभाव पडेगा ही। अब कभी मेरे घरमें कोई अफसर न आसकेगा, नांही वह गांवके बीचमें से ही गुजर सकेगा। नाच सर्वथा बंद रहेंगे जबतक कि तुम अपनी किसी बहनके साथ नाच में न खडी होगी। तुम अपने घरसे अब कभी बाहरभी नहीं जा सकोगी जब-तककि तुम यह प्रमाणित न करदो कि तुमने प्रतिदिन दस मिनिट अच्छे ढंग से गुजारे हैं।

किट्टी, जिसने कि इनसब धमकियोंको सच मानलिया था, चिल्लाने लगी। पिताने कहा, 'ओह अपने आपको अप्रसन्न मत करो। यदि तुम दस वर्ष तक अच्छी बनकर रहीं तो मैं तुम्हें उस अवधिके बाद फिर कुछ स्वतंत्रता दूंगा।

——

उनचासवां परिच्छेद

मि बेनटके लौटनेके दो दिन बाद, जब कि जेन और एलिजाबेथ दोनों घरके पीछेकी झाडियोंमें टहल रहीथीं, उन्होंने देखा कि घरकी रक्षिका उन्हींकी ओर चली आरही है। यह समझकर कि हमें माताके पास बुला लेजानेको आ रही है, वे उससे मिलनेको आगे बढीं परन्तु बुला ले जानेके बदले उसने उनसे कहा 'क्षमा करना, मैं आपके बीचमें बिना बुलायेही आगयी हूं। मैं आशा करती हूं कि आपको नगरसे कोई शुभ सूचना अवश्य मिलगयी होगी। इसी बातको पूछने मैं स्वयंही आगयी हूं।'

एलि०—तुम्हारा क्या अभिप्राय है हिल! हमने तो नगरसे कुछ सूचना नहीं पायी है।' मिसिज हिलने आश्चर्यसे चिल्लाते हुए कहा, 'प्यारी मैडम क्या तुम्हें पता नहीं कि एक एक्सप्रेस डिलिवरी द्वारा गृहस्वामी को मि. गार्डनरका एक पत्र आया है। वह अभी आधा घण्टा तक यहांही था और गृहस्वामीको यहीं पत्र मिला था।

लडकियां उत्सुकतासे एकदम भाग खडी हुई। वे बरामदेसे होकर चाय

पानके कमरेमें गयीं, वहांसे पुस्तकालयके कमरेमें गयीं। परन्तु वहां पिता न मिले। उन्हें ढूंढनेके लिये ऊपरकी मंजिलमें अपनी माताके साथ चलपड़ीं। यहां उन्हें खानसामा मिला जिसने उनको यह समाचार दिया "मेमसाहब ! यदि आप मेरे स्वामीको ढूंढ रही हैं तो वह सामनेके मैदान की ओर गये हैं।

यह सुनतेही वे सब तुरन्त बडे हाल रूममेंसे दोबारा होती हुई मैदानकी ओरसे भागीं। उसके पार तेजीसे जंगलको जाते हुए अपने पिताको देखकर वे उसकी ओरको भागीं।

जेन, हलके शरीरकी न थी, नांही भागनेकी अभ्यासी थी इसलिये वह एलिजाबेथसे पीछे रह गयी पर उसकी बहन हाँफते२पिताके पास पेंहुचंही गई और उत्सुकतासे चिल्लाई।

'ओह पापा ! क्या समाचार है? क्या कोई सूचना मामाजीने भेजी है?'

पिता–हां, मुझे एक्सप्रेस डिलिवरीसे एक पत्र आया है।

एलि–अंच्छा, तो इसमें कैसी सूचना आई हैं, अच्छी या बुरी?

पिताने अपनीं जेबसे पत्र निकालते हुए कहा, 'अच्छी सूचनाकी आशा ही क्या हो सकती है। पर हां तुम इसे शायद पढंना पसन्द करोगी।'

एलिजाबेथने अधीरतासे पिताके हाथसे पत्रको लेलिया ! इसी समय जेन भीं वहां आपहुंची।

उनके पिताने कहां, "इसे ऊंचे स्वरसे पढो जिससे मैं भी सारी बातको जान सकूं।"

मेरे प्यारे भाई !

ग्रेस चर्च स्ट्रीट

सोमवार २ अगस्त

अन्तमें मैं कुछ समाचार अपनी भानजीका देने योग्य हो गया हूं और मैं आशा करता हूं इससे आपको कुछ सन्तोष होगा। आप जब शनिवारको मुझे छोडकर घर लौटे थे, तो मैंने सौभाग्यसे यह पता करलिया कि वे लंदनके किस भागमें ठहरें हैं। विस्तृत बातें तो मैं मिलकर ही बतला सकूंगा। इतना जाननाही पर्याप्त होगाकि वे पहचाने गये हैं। मैंने उनदोनोंको देख लिया हैं।

जेन चिल्ला उठी, 'तो, जैसेकि मैं सदा आशा करती रही हूं, वे विवाह-कर चुके हैं।'

एलिजाबेथ पढती जा रही थी–'मैंने उन दोनोंको स्वयं देखा हैं। उन्हों ने विवाह नहीं किया हैं। नांही मुझे उनका इस विषयमें कुछ इरादाही प्रतीत होता हैं,परन्तु यदि आप यह सबंध करना चाहते हैं, जिसेकि मैं आपकी ओरसे करा सकता हूं तो अबभी कुछ देर नहीं हुई है। आपको केवल इतनाही करना है कि आप अपनी पुत्रीको एक इच्छापत्र के द्वारा यह बीमा करादें,कि उसको आपके औंर मेरी बहनके देहान्तके बाद ५००० पौण्डका अन्य बच्चोंके सदृश समान भाग ही मिलेगा। साथही उससे विवाह करनेके लिये आप उसे अपने जीवन कालमें भी एकसौ पौंड प्रति वर्ष देते रहेगें। ये शतें हैं, जिनपर गहरा विचार करनेके बाद, मैं आपकी ओरसे कमसे कम स्वीकार करनेमें कुछ हर्ज नहीं समझता। मैं एक्सप्रेससे ये शतें आपको भेजूंगा जिससे आपके उत्तर आनेमें देर न लगे। इनहीं बातोंसे आप जान जायेंगें कि मि· विकमके हालात इतने बुरे नहीं जितने कि समझे जाते हैं। लोगोंको इस विषयमें धोखा हुआ है और मुझे यह कहनेमें भी प्रसन्नता है कि उसके कर्ज को सर्वथा चुका देनेके बादभी मेरी भानजीके लिये अपना आगामी गृहस्थ जीवन चलानेको कुछ थोडीसी राशि बचही रहेगी।

जैसा कि मैंने सबकुछ लिख दिया हैं। ऐसी अवस्थामें आप मुझे इस कार्यके लिये सम्पूर्ण अधिकार देदें जिससे कि मैं आपके नामसे सब कार्य कर सकूं। मैं उसी समय हैगरस्टनको आदेश दे दूंगा कि वह एक ठीक २ इच्छा· पत्र लिखदे। आपको यहां नगर आनेके लिये किसी कामके लियेभी कष्ट करंना नहीं पडेगा। इसलिये आप शान्तिसे लौंगबोर्न ही रहें और मेरी बुद्धि और सतर्कता पर विश्वास रखें। जितना शीघ्र होसके इस पत्रका उत्तर मुझे भेजदें और स्पष्ट सब कुछ लिखें। हमने यह बात सबसे अच्छी समझी है, कि मेरी भानजीका विवाह इसी घरसे किया जाये,जिसे आशा है आपभी पसन्द करोगे। वह आज हमारे यहां आनेवाली है। मैं फिरभी पत्र लिखूंगा यदि कुछ निश्चय किया गया।'

आपका इत्यादि
एडवर्ड गार्डनर

पत्र पढते ही एलिजाबेथ चिल्ला उठी, 'क्या यह भी संभव है। क्या यह संभव है कि वह उससे विवाह करलेगा ?'

उसकी बहनने कहा-'विकम ऐसा अयोग्य पुरुष नहीं है जैसाकि हम उसे समझती रही हैं।' 'मेरे प्यारे पिताजी ! मैं आपको बधाई देती हूं।'

एलिजाबेथने कहा 'और क्या आपने इस पत्रका उत्तर भेज दिया है?'
पिता-'नहीं, पर अब शीघ्र ही भेजदिया जायेगा।'

तब एलिजाबेथने और समय नष्ट न हो जाय इसलिये पितासे शीघ्रही लिखनेकी प्रार्थना की। उसने कहा 'मेरे प्यारे पिताजी ! वापिस घर चलें और तुरन्त उत्तर लिखें। सोचिये ऐसे मामलेमें एक २ क्षण कितना आवश्यक और असूल्य है।

जेनेने कहा-'मैं आपके लिये लिखने को तैयार हूं यदि आप लिखनेके कष्ट को पसंद नहीं करते हैं।'

पिताने कहा -" मैं इसे बहुत नापसंद करता हूं, तो भी यह अवश्य लिखनाही है। यह कहता हुआ वह उनके साथ घरको लौट आया।

एलिजाबेथने कहा--'तो क्या मैं पूछ सकती हूं, क्योंकि उसकी शर्तें तो अवश्य ही पूरी करनी होंगी।

मि. बेनट—पूरी करनी होंगी ! मैं तो उसके इतनी कम राशि मांगनेसे लज्जित हुआ हूं।

एलिजा —उन्हें विवाह, तो अवश्य ही कर लेना चाहिये ? यद्यपि वह ऐसा आदमी है।

बेनट—हां २ उन्हें विवाह तो अवश्य करना ही चाहिये। इसके अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है। परन्तु दो बातोंके विषयमें मैं जाननेको अति-उत्सुक हूं, पहली तो यहकि तुम्हारे मामाने कितना धन इस बातको संभालनेमें लगाया है, और दूसरी यह, कि मुझे सर्वदा कितना धन देते रहना पड़ेगा।

जेन चिल्लाई—धन ! मेरे मामा ! पिताजी ! आप क्या कहते हैं ?

बेनट— मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई भी बुद्धि रखनेवाला पुरुष लीडियासे इतनी सी तुच्छ राशिके प्रलोभनमें विवाह करना न चाहेगा कि जीवन कालमें मैं एक सौ पौण्ड वार्षिक देतारहूं और मृत्यु के बाद पांच हजार दूं।

एलिजाबेथने कहा,— 'यह बिलकुल सत्य है, यद्यपि पहले मुझे ऐसा नहीं पता था। उसका ऋण भी चुकती हो जायेगा और फिरभी कुछ धन बच रहेगा ! ओह ? यह सब कुछ मेरे मामाने ही कर डाला हैं ! उदार, सज्जन महाशय ! मुझे भय है कि कहीं वह अपने आपको कष्टमें न डाल लें। एक छोटीसी राशिसे तो इतना बडा काम नहीं हो सकता हैं।

उसके पिताने कहा—नहीं, विकम मूर्ख होगा यदि वह दस हजार पौण्ड से एक पैसाभी कम लेकर उससे विवाह करता है। मुझे इस नये संबंधके आरंभमें ही उसके विषयमें ऐसा बुरा विचार करते हुए दुःख होता हैं।

एलिजा—दस हजार पौण्ड ! ईश्वर बचावे ! इससे आधी राशिभी कैसे चुका सकेंगे ?

मि. बेनटने कुछ भी उत्तर नहीं दिया ; और सबही गहरा सोच विचार करते हुए चुपचाप रहते हुए घर तक पहुंच गये। तब उनके पिता पुस्तकालय में पत्र लिखनेके लिये गये और लडकियां चायपानके कमरेमें टहलने लगीं।

ज्योंहि कि वे अकेली हुई एलिजाबेथने चिल्लाकर कहा– 'क्या सचमुच ही वे विवाह करलेंगे। यह कैसी अनोखी बात है। परन्तु इसके लिये हम बहुत कतज्ञ हैं। उनका विवाह होगा, परन्तु वे थोडी ही प्रसन्नता पासकेंगें, क्योंकि विकमका चरित्र तो दुर्भाग्य पूर्ण हैं, तो भी हमें प्रसन्न ही होना पडेगा ओह लीडिया !

जेनने उत्तर दिया —मैं तो यह सोचकर बडी सुखी होती हूं कि वह लीडियासे कभी विवाह न करता यदि वह अपने हृदयमें उसका वास्तवमें सन्मान न करता। यद्यपि हमारे दयालु मामाने उसका ऋण चुकाने के लिये कुछ सहायता दी हैं। मैं यह विश्वास नहीं कर सकती कि दस हजार पौंड या लग भग इतने ही, उसे पेशगी दे दिये गये हैं। उनके अपने बच्चे भी हैं और आगे

को और भी हो सकते हैं। वे किसप्रकार दसहजारसे आधे पौंडभी बचाकर दे सकते हैं।

एलिजाबेथने कहा-यदि हमें कभी पता लग जाता कि विकम पर कितना ऋण था और हमारी बहन की ओरसे कितना चुकाया गया हैं,तो हम निश्चित रूपसे जानते कि मि. गार्डनरने उनके लिये कितना धन चुकाया है, क्योंकि विकमके पास तो अपना छदाम भी न था। मेरे मामा और मामी की दयाको हम कभी नहीं भुला सकते। उनका लीडिया को अपने घर पर ले जाकर सुरक्षित रखना और हर प्रकारसे उसकी सहायता करना, एक ऐसा उपकार है जो कि वर्षों तक भी कृतज्ञ रहने मात्रसे नहीं चुकाया जा सकता। अबतक वह अवश्य उन्हींके साथ ही रहती हैं। यदि इतनी उदारता उसे इन दिनों चिन्तित नहीं करती तो उसे प्रसन्न रहनेका कोई अधिकार नहीं हैं। वह कैसा मिलन होगा, जब कि वह पहले पहल मेरी मामीसे मिली होगी।

जेनने कहा—हमें जो कुछ दोनों ओरसे बीती है, वह भुलानेका प्रयत्न करना चाहिये। मुझे आशा है और निश्चय है कि वे अबभी प्रसन्न होंगें। उस का हमारी बहनसे विवाह करने को उद्यत हो जाना, इस बातका प्रमाण है कि वह ठीक समझसे काम करने लगा है। उनका परस्पर का प्रेम उन्हें अधिक दृढ बन्धनमें जकड देगा, और मैं विश्वास करती हूं कि वे शीघ्रही ऐसी शान्ति पूर्वक रहने लगेंगे कि उनकी पिछली मूर्खता समय पाकर भूल जायेगी।

एलिजाबेथ ने उत्तर दिया-उनका आचरण ऐसा था कि न तो तुम न मैं और नाही कोई अन्य पुरुष ही उसे भुला सकता है। इस विषयमें कुछ करना ही व्यर्थ है। अब लड़कियोंको ऐसा प्रतीत हुआ कि हमारी माताको शायद इन बातोंका कुछ भी पता नहीं हैं। इसलिये वे पुस्तकालयमें गयीं और वहां अपने पितासे पूछा कि क्या वे अपनी माताको यह समाचार सुना सकती हैं। वह लिख रहा था, इसलिये अपना सिर बिना उठायेही उसने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया; " जैसे तुम्हारी इच्छा हो "।

" क्या हम अपने मामाका पत्र लेजाकर उनको सुना सकती हैं ?"

" तुम जो कुछ चाहती हो ले जावो परन्तु यहांसे चली जाओ। "

एलेजाबिथ ने उनकी मेज़पर से वह पत्र उठाया और वे दोनों ऊपर सीढ़ीपर चढ़ गयीं। मेरी और किट्टी दोनोंही मिसिज़ बेनटके पास थीं, इसलिये एक बार ही सब उसे सुन सकती थीं। अच्छा समाचार सुनानेसे पहले थोडी-सी आवश्यक तैयारी कर लेनेके बाद, ऊंचे स्वरसे पत्र पढा जाने लगा। मिसिज बेनट बडी कठिनतासे अपनेको संभाले रही। ज्योंही कि जेन ने यह पढा कि मि० गार्डनरको लीडियाके विवाह हो जानेकी शीघ्र ही आशा हो गई है, वह आनन्दमें पागल हो उठी, और आगामि प्रत्येक वाक्य ने उसे और भी पागल बना दिया। इस समय वह आनन्दसे उसी प्रकार पागल और उत्तेजित हो उठी थी जिस प्रकार कि वह भय और दुःखमें हो उठती थी उसके लिये इतना जानना ही पर्याप्त था कि उसकी पुत्रीका विवाह होने वाला है। उसे उसकी भूलों और कुकृत्योंकी तनिक भी स्मृति न रही थी।

वह चिल्ला उठी–' मेरी प्यारी प्यारी लीडिया ! निःसन्देह यह बहुत आनन्ददायक बात हुई ! वह विवाहित हो जायेगी ! मैं उसे फिर देख सकूंगी ! वह १६ वें वर्षमें ही विवाहिता हो जायेगी। वाह मेरे प्यारे दयालु भाई ! मैं जानती थी वह कैसे होगा–मैं जानती थी कि वह सब कुछ प्रबंध कर देगा। मैं पुत्रीको कितना मिलना चाहती हूं और प्यारे विकमको भी मिलना चाहती हूं। परन्तु वस्त्र, विबाह के वस्त्र ! मैं उनके लिये अपनी बहन गार्डनरको सीधा ही लिख दूंगी। लिजी मेरी प्यारी, अपने पिताके पास भाग कर जा और उनसे पूछ कि वह पुत्रीके लिये क्या कुछ देंगे। ठहर, ठहर, मैं स्वयं ही जाऊंगी— किट्टी हिलको बुलानेके लिये घण्टी तो बजा। मैं क्षणभरमें सब ठीक ठाक हो लेती हूं, मेरी प्यारी, प्यारी लीडिया ! हम कितने प्रसन्न होंगे जब आपसमें मिलेंगें ! '

उसकी सबसे बडी पुत्री ने अपनी माताको इतनी उतावलीसे पागलोंके समान जानेसे रोकनेके लिये मि० गार्डनरके विषयमें किये गये उपकारोंकी चर्चा चलाई। इससे वह कुछ रुकसी गयी।

उसने कहा–हमें उसके ऐसे प्रसन्नतादायक परिणामके देने वाले उप-

कारोंका हृदयसे धन्यवाद करना चाहिये । क्योंकि उसने मि० विकमको धनसे सहायता करनेकी स्वयं प्रतिज्ञा लेकर हमें उपकृत किया हैं। उसकी माता ने चिल्ला कर कहा–' बेशक, यह सब बहुत ही अच्छा हुआ है । उसके मामाके अतिरिक्त और कौन यह काम कर सकता था ? यदि उसका अपना परिवार न होता तो उसका सारा धन मुझे और मेरे बच्चोंको ही निश्चित रूपसे मिलता, तुम जानती हो, कि यह पहलाही अवसर है जब कि जीवनमें हमने उससे कुछ लिया है यद्यपि पहले कुछ उपहार तो लिये हैं। मैं तो बहुत ही प्रसन्न हूं । थोडे दिनोंमें ही एक पुत्रीका विवाह तो हो जायगा। मिसिज विकम ! ओह कैसा अच्छा नाम है ; और वह गत जून मासमें केवल सोलह वर्षकी ही तो हुई है। मेरी प्यारी जेन ! मैं इतनी प्रसन्न हूं कि मैं स्वयं लिख नहीं सकती; इसलिये मैं तुम्हें लिखाती हूं और तुम मेरी ओरसे लिखो। हम तुम्हारे पितासे धन के विषयमें फिर बात करलेंगें, परन्तु आवश्यक वस्तुओं के लिये तुरन्त ही आज्ञा जारी कर देनी चाहिये ।

तब वह अनेक प्रकारके सुन्दर बहुमूल्य वस्त्रोंके नाम लिखवाने लगी। रेशमी, मखमली और सूती अनेक प्रकार के सुन्दर मूल्यवान कपडों को लिखाती जा रही थी कि जेनने बडी ही कठिनतासे उसे यह समझाया कि फुर्सत के समय पिताजीसे पूछकर लिखवाना अच्छा रहेगा। उसने कहा,'एक दिनकी देरी कुछ आवश्यक लाभदायक सिद्ध होगी। उसकी माताने यद्यपि मान लिया तो भी वह नयी २ वस्तुओंके लिये अपने मनमें विचार करने लगी।

उसने कहा— 'ज्योंही कि मैं वस्त्र धारण करलूंगी, मैं मैरिटन जाऊंगी और अपनी बहन फिलिप्सको यह बहुत अच्छी खबर सुनाउंगी। और जब मैं वापिस आऊंगी तो मैं लेडी ल्युकस और मिसिज लौंग को बुला भेजूंगी। किट्टी दौड कर नीचे जा और गाडी लाने को कहआ। कुछ वायुसेवन मुझे निश्चय ही लाभ पहुंचायेगा। पुत्रियो ! क्या मेरिटन से मैं तुम्हारे लिये कुछ लेती आऊं? ओह ! हिल भी आपहुंची-मेरी प्यारी हिल क्या तुमने अच्छी खबर भी सुनी? मिस लीडियाका बिवाह होनेवाला है और घोडे का बढिया मांस उसके विवाह की प्रसन्नता में दिया जायेगा।'

मिसिज हिलने उसीक्षण अपना आनंद प्रकट करना आरंभ किया। एलिजाबेथने अन्य सब के साथ उसकी ओरसे बधाइयां स्वीकार कीं, और इस मूर्खतासे तंग आकर वह अपने कमरे में विश्राम करने चली गयी, जिससे कि वह कुछ स्वतंत्रतासे इस विषयको सोचसके। बेचारी लीडियाकी अवस्था, अधिकतर, पर्याप्त बुरी होगी, 'परन्तु क्योंकि यह अति बुरी नहीं हुई इसके लिये उसे धन्यवाद करना चाहिये। उसने ऐसा अनुभव किया, कि यद्यपि भविष्य को देखते हुए, उसकी बहनको न तो अत्यन्त प्रसन्नता ही मिल सकेगी नांही अत्यन्त समृद्धि ही मिलसकेगी। तो भी पिछली घटना पर विचार करते हुए, जिसे अभी केवल दो घंटे ही हुए थे उसने अनुभव किया कि वास्तव में उन्होंने इसविषयमें बहुतसे लाभ ही उठाये हैं।

—०—

पचासवां परिच्छेद

मि॰ बेनटने, इस घटनासे पहले, अपने जीवनमें यह कई बार सोचा था कि वह खर्चनेके स्थानमें धनको कहीं रख दे जिससे कि उसके बच्चे और उसके मरनेके बाद उसकी पत्नीको वार्षिक खर्च मिलता रहे और उनका जीवननिर्वाह बहुत अच्छे प्रकारसे होता रहे। इस समय वह इस बातको और गंभीरतासे कर डालना चाहता था। यदि उसने इस प्रकारका कर्तव्य पूरा कर दिया होता तो लीडियाकी मानप्रतिष्ठा बचानेके लिये उसे इस समय अपने मामासे ऋण न लेना पडता। ग्रेट ब्रिटनके एक सबसे अयोग्य नौजवानपर काबू पाकर उसे अपना पति बनानेका यह काण्ड शायद इस प्रकारसे न हुआ होता।

वह इस बातके लिये चिन्तित हो रहा था कि ऐसे अति तुच्छसे लाभ-के लिये सारेही खर्चका भार उसके सालेपर पडजाना ठीक नहीं है, और वह निश्चय कर चुका था, कि यदि संभव हो, तो उसकी सहायता की राशिका

पता लगाकर जितना शीघ्र हो सके उसके उपकारके भारको चुका दिया जाये।

पहले पहल जब मि· बेनटने विवाह किया था तो खर्चनेमें मितव्ययताको व्यर्थ समझ लिया गया था, क्योंकि निस्सन्देह उन्हें एक पुत्र उत्पन्न होनेका निश्चय हो गया था। इस पुत्रने बडा होकर उन्हें सब खर्चोंसे तथा ऋणोंसे बचा देना था और इस प्रकार उसे अपनी विधवा माता और छोटे भाई बहनोंका पालन करनाही था। परन्तु पांच पुत्रियां क्रमश. जगतमें प्रविष्ट हुई परन्तु अभी पुत्रके आनेकी आशाही लगी हुई थी। मिसिज बेनटको लीडियाके जन्म होनेके कई वर्ष बाद तक, उसके आनेका दृढ निश्चय बना हुआ था। यह आशा अन्तको निराशामें बदल चुकी थी। परन्तु अब धन जमा करना बहुतही कठिन था। मिसिज बेनट तो मितव्ययता जानतीही न थी; और उसके पतिका स्वतंत्रतासे प्रेम करनाही उनकी आयसे अधिक खर्च करनेको रोक रहा था।

पांच हजार पौंड विवाहके सामानके लिये मिसिज बेनट और बच्चोंके लिये निश्चित हो चुके थे। परन्तु बच्चोंके लिये किस अनुपातसे दिये (बांटे) जांये जो कि माता-पिताकी इच्छाके आधीन थे। यह तो एक बात थी, जो कमसे कम लीडियाके लिये अभी २ निश्चय करनी थी, और मि· बेनट इस प्रस्तावसे इन्कार नहीं कर सकता था। धन्यवादपूर्वक उसने अपने भाईकी कृपाको स्वीकार किया यद्यपि वह धनराशि उससे छिपाकर दी गयी थी। तब उसने अपनी पूरी २ स्वीकृति इस विवाहके लिये लिख दी। उसे पता न था कि यदि विकमसे विवाह होगा तो उसे ऐसी असुविधाका एकदम सामना करना पडेगा। वह तो १०० पौण्डकी जगह दस पौण्डही प्रतिवर्ष उन्हें देना चाहता था। क्योंकि उसके जेब खर्चके लिये और खानेके लिये तथा निरन्तर रुपयोंके उपहारोंद्वारा, जो कि उसकी माताद्वारा उसे मिलते रहते थे, लीडियाके खर्च इन्हीं रुपयोंसे पूरे हो सकते थे।

यह काम इतने कम कष्टसे हो जायगा. यह और भी बडा आश्चर्य था। जिसको वह स्वागत करता था। क्योंकि इस मामलेमें वह कमसे कम कष्ट उठाना चाहता था। जब उसको खोजते हुए उसका पहला क्रोध उतर गया

तो वह शान्तिसे घरको लौट आया था। उसका पत्र तुरन्त भेज दिया गया। क्योंकि यद्यपि वह काम करनेमें ढील करता था परन्तु इसे निपटानेमें देर न करता था। वह इस बातको भी जाननेका बडा इच्छुक था कि उसके भाईने उसके लिये कितना खर्च किया है। परन्तु वह लीडियासे इतना कुपित था कि उसने उसके लिये कोई भी संदेश नहीं भेजा।

यह सुसंवाद घरमें शीघ्रही सर्वत्र फैल गया और पडौससे भी दूर २ तक फैल गया। पडौसियोंने तो इसके साथ नमकमिर्च भी लगाना उचित समझा। बातोंही बातोंमें कहा जाता था कि यदि मिस लीडिया बेनट शहरमें आती या संसारमें इसे कहीं दूरके एकान्त स्थानमें रख दिया जाता तो कैसा होता। उसको विवाह करनेके विषयमें तो बहुत बातें उडाई जाती थीं। उसके मंगल-विवाहके लिये वे शुभकामनाएं जो कि मैरिटनकी बूढी २ स्त्रियोंकी ओरसे पहले कहीं जाती थीं अब उनमें कुछ अन्तर हो गया था, क्योंकि उनकी सम्मतिमें इस पतिके साथ लीडियाका दुःखी रहना निश्चित बात थी।

मिसिज बेनटको ऊपरकी मंजिलके नीचे उतरे हुए एक पखवाडा हो गया था, परन्तु इस प्रसन्नतादायक दिनपर वह फिर अपनी मेजके पास मुख्य आसनपर आ बैठी। उसकी मुखमुद्रा बडी प्रसन्न थी। उसकी प्रसन्नताको लज्जाके किसी कणने छुआ तक न था। एक पुत्रीका विवाह, जो कि उसकी अभिलाषाओंका प्रथम उद्देश्य बन चुका था, जब कि उसकी पुत्री जेन १६ साल की हुई थी अब तो पूर्ण होने वाला था। इस समय उसके विचार और शब्द विवाह संबंधी बातों के लिये सरपट दौड रहे थे। कहीं बारीक मलमल, कहीं नई गाडी और कहीं नौकरों के लिये वह सोच रही थी। वह अपनी पडो-सिनों द्वारा एक उत्तम मकान अपनी पुत्रीके लिये खोज रही थी। और उसने उनकी आयका विचार बिना कियेही अनेक मकान इसलिये पसंद नहीं किये थे कि वे आकार में छोटे हैं या अच्छे नहीं हैं।

उसने कहा–'हाइड पार्क अच्छा रहेगा, परन्तु यदि गोल्डिंग्स इसे खाली कर दें, या फिर स्टोक का ग्रेट हाउस (बडाघर) पर उसका ड्राइंग रूम यदि बडा होता; परन्तु ऐशवर्थ तो बहुत ही दूर रहेगा। मैं उसे अपनेसे दस मील

दूर नहीं रख सकती हूं। और पर्विस लाज, उसका मार्ग बड़ा भयंकर है।

उसके पतिने उसे तबतक बिना रोके हुए बोलने दिया जबतक वहां नौकर थे। परन्तु जब वे वहांसे चलेगये, तब उसने उससे कहा–'मिसिज बेनट इससे पहले कि तुम एक या अनेक मकान अपनी पुत्री और पुत्रके लिये लो, हमें ठीक २ बातें समझ लेनी चाहियें। पड़ौस के किसी मकानमें भी वे कदापि रहने न पावेंगे। मैं किसी की मूर्खता को और उत्साहित न करूंगा कि वह उन का लौंगबोर्नमें स्वागत कर सके।

इस घोषणा पर देर तक झगड़ा होता रहा, परन्तु मि. बेनट अपनी बात पर दृढ रहे। इसके बाद दूसरी बात आरंभ हो गयी, और मिसिज बेनटने आश्चर्य और भयसे जान लिया कि उसका पति अपनी पुत्रीके वस्त्रोंके लिये एक गिन्नी भी पेशगी न देगा। उसने इसका यह कह कर विरोध किया कि आगेको वह कभी भी अपने पतिसे प्रेमका कोई उपहार ग्रहण न करेगी। मिसिज बेनट यह कभी सोचभी नहीं सकती थी। उसे यह कभीभी विश्वास न होता था कि उसके पतिका क्रोध इतना बढ जायेगा कि उसकी पुत्रीका विवाह भी शोभा-जनक ढंगसे न हो सकेगा। उसने इस बात की लज्जाको अनुभव न किया कि विवाहसे १५ दिन पूर्व विकमके साथ लीडिया क्यों रहती रही है।

एलिजाबेथ इससमय इस बातसे बड़ी शोकातुर हो रही थी कि उसने, इस क्षणिक विपत्तिमें अपनी बहनके भयोंके विषयमें मि. डारसी को परिचित करा दिया था। क्योंकि जबतक उसकी बहनका विवाह विधिपूर्वक सम्पन्न न हो जावे, वह इसके अनुचित आरंभको उन सबसे छिपाना चाहते थे, जो कि उस स्थान पर विद्यमान नहीं थे।

वह उसके द्वारा इस बातके फैलनेमें कोई भय अनुभव न करती थी। थोडेही व्यक्ति थें जिनके ऊपर वह बातें गुप्त रखनेका भरोसा करती थी। परन्तु ऐसा तो एक भी व्यक्ति नहीं था जिसे कि बहन का मन समझने की उससे अधिक बुद्धि हो। उसे इससे अपनी व्यक्तिगत कोई हानिका भय हो यह बात नहीं थी, प्रत्युत उसे एक ऐसी खाई उन दोनोंके बीच में दीखती थी जिसे कि पाटना असंभव था। यदि लीडिया का विवाह अति उत्तम ढंगसे संपन्न होता,

तो यह नहीं समझा जा सकता था कि मि. डारसी एक ऐसे परिवारसे अपना संबंध जोडेगा, जहां अन्य बातोंके अतिरिक्त एक यह बात भी जोड दी जायेगी कि जिस पुरुष को वह इतनी घृण करता था, उसी के साथ इनका निकटतम रिश्ता नाता हो चुका हैं।

ऐसे संबंधसे घबरा कर वह परे हट जायेगा, यह उसे सूझ रहा था। वह डर्बी शायरमें यद्यपि देख चुकी थी कि वह उसकी प्रतिष्ठा करता है, तो भी उसे इस बातसे अवश्य ही धक्का लगेगा, यह भी वह जानती थी। वह बडी क्षीण, दुःखी तथा पछता रही थी। यद्यपि वह इसका कारण कुछ भी न जानती थी। वह अपनी प्रतिष्ठासे ईर्ष्या करने लगी, जब कि उसे आशा थी कि वह आगे इसे न पा सकेगी। वह उसके विषयमें कुछ २ सुनना चाहती थी, यदि उसे थोडाभी अवसर सुनने को मिलता तो। वह समझ चुकीथी कि वह उसके साथ प्रसन्न रह सकतीथी परन्तु अब उनके शीघ्र मिलनेकी संभावना नहीं थी।

उसके लिये यह कैसी विजय हैं, जैसा कि वह प्रायः सोचा करती थी, यदि वह जान सकता कि वे प्रस्ताव जिनको कि वह अभिमानसे केवल चारमास बीते अस्वीकार कर चुकी थी अब प्रसन्नतासे और कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार कर लिये गये हैं! वह ऐसा उदार है, जितना कि कोई पुरुषभी अधिकसे अधिक हो सकता है, इस बातका उसे सन्देह नहीं था। परन्तु जब कि वह एक मर्त्य पुरुष है, इसलिये उसपर नारीकी एक विजय होनी ही चाहिये।

वह अब विचार करने लगी कि वही एक ठीक पुरुष है जो कि रंगरूप और आकृतिमें तथा बुद्धिमें उसको सबसे अधिक अनुकूल रह सकेगा। उसकी समझ और स्वभाव, यद्यपि उससे मिलते नहीं हैं, तो भी वह उसकी सब अभिलाषाओंको पूर्ण कर सकेगा। यह एक ऐसा संबंध होगा जो कि दोनोंके लिये ही लाभदायक हो सकेगा। मेरी शान्ति और सजीवता के कारण शायद उसका मनभी कोमल हो जाये, उसके रंगढंग और भी अच्छे हो जायें, और उसके न्याय, अनुभव तथा संसारके ज्ञानके कारण मैं भी बहुत आवश्यक लाभ उठा संकू।

परन्तु ऐसा प्रसन्नतादायक कोई विवाह भी अब लोगोंकी प्रशंसा को

नहीं प्राप्त कर सकेगा। क्योंकि भिन्न २ प्रकारके स्वभाव रखनेवाले दो प्राणियोंका संबंध शीघ्र ही उनके कुटुम्बमें होनेवाला हैं।

वह यह भी नहीं सोच सकती थी कि विकम और लीडियाकी इतनी अधिक स्वतंत्रताको कैसे समर्थन किया जा सकेगा। परन्तु वह यह सोचती थी कि किस प्रकारसे दो भिन्न स्वभाव वाले. जिनके गुण कि परस्पर नहीं मिलते थे, इस विवाहको करके कुछ कालके लिये ही सुखी रह सकेंगे।

मि. गार्डनर ने शीघ्रही अपने भाईको पत्र लिखा। मि. बेनट की स्वीकृतिके उत्तर में उसने संक्षेप से उत्तर भेजा था। उसके परिवारकी भलाई की कामना करते हुए पत्र आरंभ हुआ था और इस विषय में आगे को आप को अब कुछ और न लिखूंगा, इस प्रकार समाप्त किया गया था। उस पत्रके लिखने का मुख्य उद्देश्य यह था कि उन्हें यह सूचना दी जाय कि मि. बिकम ने मिलिट्री की नौकरी छोडनेका निश्चय कर लिया है।

आगे लिखा था " यह मेरी प्रबल इच्छा थी कि उसे तभी ऐसा कर डालना चाहिए जबकि उसका विवाह निश्चित हो जाये। और मुझे आशा है आप मेरे साथ इस बातमें सहमत होंगे कि उसका उस पल्टन से हटना उसके लिये और मेरी भानजी के लिये भी अधिक अच्छा रहेगा। मि. विकम का ऐसा विचार है कि वह अपनी पुरानी सेना में ही जाये, और उसके पुराने मित्रों में से अब भी अनेक ऐसे हैं, जो उसे उसकी सेनामें भरती कराने में सहायता करना चाहते हैं। उसे एक जनरलकी सेनाकी ओर से वचन भी मिला हुआ है, जोकि आजकल उत्तर में पडाव डाले हुए हैं राज्य के इस मामले से दूर जाने में भी उसका लाभ ही है। वह स्पष्ट प्रतिज्ञा करता है, और मैं आशा करता हूं कि भिन्न २ लोगों में से, जहां कि प्रत्येक मनुष्यका कुछ अच्छा चरित्र है। वे दोनों ही अधिक समझदार गिने जायेंगे। मैंने कर्नल फास्टर को भी लिखा है कि वह हमारे वर्तमान प्रबन्धों के विषय में उसे सूचित करदे, और उससे प्रार्थना की है कि वह मि. विकमके सभी लेनदारों को सन्तुष्ट करदे जोकि ब्राइटन या उसके आसपास रहते हैं। उन्हें कह दे कि उनका पाई २ बहुत शीघ्र चुका दिया जायगा क्योंकि इस बातके लिये मैंने

अपने ऊपर सब जिम्मेवारी ले ली है। और क्या आप स्वयं भी थोडा कष्ट करेंगे कि मैरिटन के सब लेनदारोंको इस बातकी तसल्ली दिला दें। उनकी मैं सूची भी साथ भेज रहा हूं जोकि मुझे उसने दी है। उसने अपने सब ऋण हमें बतला दिये हैं; मैं आशा करता हूं कमसे कम उसने हमें धोखा नहीं दिया है। हैगर्स्टनको हमने निर्देश भेज दिये हैं और एक सप्ताह तक ये सब पूरे हो जायेंगे। तब वे अपनी पल्टन में सम्मिलित हो जायेंगे। उन्हें पहले लौंगबोर्न में निमंत्रित होना ही चाहिये। और मुझे श्रीमती गार्डनर से पता लगा है कि मेरी भानजी भी आप सबको मिलनेको बहुत इच्छुक है, इससे पहले कि वे दक्षिण दिशाको छोडकर उत्तर में जायें। वह अच्छी है और वह आपको और अपनी माता को बडी सद्भावना से स्मरण करती है।

आपका इत्यादि २

ए. गार्डनर

मि. गार्डनर के समान मि. बेनट और उसकी पुत्रियों ने उन सब लोगों को स्पष्ट देखा जोकि विकमके हर्टफोर्ड शायर से हटने से होते थे। परन्तु मिसिज बेनट इस बात से अधिक प्रसन्न न थी। लीडियाका उस समय उत्तर की दिशा में जाकर बसना जबकि वह उसके साथ रहने में अत्यधिक अभिमान और आनन्द अनुभव कर रही थी—क्योंकि वह तो उनके हर्टफोर्ड शायर में निवास करने की निश्चित योजना बना चुकी थी—उसे उससे बहुत निराशा हुई; और इसके अतिरिक्त यह कितनी शोचनीय बात थी कि लीडिया को एक ऐसी सेना से हटा कर जहां कि वह सबकी परिचित और प्रिय बनी हुई थी, दूर अपरिचित स्थान में ले जाया जा रहा था।

उसने कहा—' वह मिसिज फार्स्टरको बहुत चाहती थी, उसको दूर भेजने से उसे बहुत ही धक्का लगेगा। और कुछ ऐसे नौजवान भी यहां थे जिनको कि वह पसन्द करती थी। हां जनरल.....की (रैजिमेन्ट) सेनामें आफिसर चाहे उसे इतने अच्छे न लगते हों। '

उसकी पुत्री की प्रार्थना—क्योंकि इसे ऐसा ही समझा जा सकता था कि उसे उत्तर में जाने से पूर्व फिर अपने कुटुम्ब से मिलने को बुला लिया

जाय, पहले तो स्पष्ट निषेध में ग्रहण की गई परन्तु जेन और एलिजाबेथ ने जोकि अपनी बहनकी भावनाओं और परिणामको सोचकर, स्वयं भी इसी बातको चाहती थीं, कि उसके विवाहको उसके मातापिता भी देख सकें, अपने पिता से ऐसे सच्चे हृदय से, साथ ही तीव्र उत्कंठा और कोमलता से–प्रार्थना की–कि हम उसे और उसके पतिको लौंगबोर्न में स्वागत कर सकें जबकि वे विवाह कर चुकें–कि वह भी उनके सदृश ही सोचने और उनके सदृश ही करने पर मजबूर हो गया। उसकी माताको भी यह जानकर सन्तोष हो गया कि अब वह अपनी विवाहिता पुत्रीको, उत्तरकी दिशा में जाने से पहले. अपनी पडौसिनोंको दिखा सकेगी। जब मि. बेनट ने अपने भाईको दूसरा पत्र लिखा, तो इसी कारण उसने उन दोनोंको घर में आने की आज्ञा दे दी। और यह निर्णय कर लिया गया, कि ज्यों ही कि विवाहसंस्कार संपन्न हो चुके, वे लौंगबोर्न को आ जावें। एलिजाबेथको कुछ आश्चर्य अवश्य हुआ कि विकम इस योजनाको कैसे मान लेगा; परन्तु यदि वह केवल अपने ही अन्तः-करणकी वाणीको सुन सकती, तो उसे पता लगता कि उसके साथ कभी भी मिलना ही उसकी कामनाओं का अन्तिम उद्देश्य था।

——

इकावनवां परिच्छेद

उनकी बहनके विवाहका दिन आगया; और जेन और एलिजाबेथने उसके लिये इतना अधिक अनुभव किया, जितना कि वह स्वयंभी अपने लिये नहीं करती थी। उन्हें लेनेके लिये गाडी आगे भेज दी गई. और भोज-नके समयतक उनके आनेकी बात निश्चित होगई। उनके आनेसे सबसे बडी बहन भयभीत थी और जेन विशेषरूपसे भयभीत हो रही थी, जिसने लीडियाको यह विश्वास दे रखे थे कि जिनको वह स्वयं अनुभव करती यदि वह अपराधी होती। और जो उसकी बहनने विचारा था उसकी अपेक्षा वह

कम बुरा सोच सकी थी।

वे आ पहुंचे। प्रातराश वाले कमरेमें सारा परिवार उनके स्वागतके लिये इकट्ठा हुआ था। ज्यों२ गाडी द्वारपर आती जा रही थी मिसिज बेनटके मुखपर मुस्कराहट आती जा रही थी। परन्तु उसके पति अत्यधिक गंभीर होते जा रहे थे, उसकी पुत्रियां भयभीत, चिन्तित तथा बेचैन होती जा रही थीं।

बरामदेमें लीडियाकी आवाज सुनतेही द्वार खोल दिया गया, और वह कमरेमें दौडती हुई आयी। उसकी माता आगे बढी, उसे छातीसे लगा लिया और बडे उत्साहसे उसका स्वागत किया। विकमकी ओर भी प्रेमसे मुस्कराते हुए अपना हाथ बढाया,, जोकि अपनी पत्नीके पीछे २ चला आ रहा था, और उन दोनोंके लिये मंगल आशीर्वादें बडी प्रसन्नतासे देने लगी।

जब वह मि. बेनटकी ओर गये तो उसने भी स्वागत किया परन्तु वह हृदयसे न किया गया था। उसका चेहरा शान्त था, और उसने मौन रहनाही उचित समझा। उस जोडेकी ओरसे सीधासादा खुला विश्वस्तमय व्यवहार उसे उत्तेजित करनेके लिये पर्याप्त था। एलिजाबेथ इससे घृणा करती थी और मिस बेनट भी इससे दंग रह गई थी। लीडिया अब भी वैसीही लीडिया थी—जंगली, असभ्य, लज्जारहित, वाचाल और निर्भय। वह एक बहनसे दूसरी बहन तक बार २ जाती थी जिससे कि उनकी बधाइयां प्राप्त कर सके। अन्तको जब वे सब बैठ गये, उसने उत्सुकतासे कमरेके चारों ओर देखा। इसके थोडेसे परिवर्त्तनकी ओर बिशेष ध्यान दिया और उसको देखकर हंसी मानों कि यह सूचित कर रही है कि कुछ दिन पूर्व वह यहांही रहती थी।

विकम उसकी अपेक्षा अधिक परेशान नहीं था; परन्तु उसका व्यवहार इतना अधिक प्रसन्नतादायक था; कि यदि कहीं उसका आचरण और उसका विवाह, ठीक २ ढंगसे होता, तो उसकी मुस्कराहटें और उसके वे संबोधन जिनसे कि वह अपनेको उनका संबंधी होना घोषित करना चाहता था, उन सबको अत्यंत प्रसन्न कर देते। एलिजाबेथ तो पहले उसे ऐसा विश्वास योग्य नहीं मानती थी, परन्तु वह मनमें यह निश्चय करके बैठ गई थी कि आगेसे ऐसे अस्थिर चित्तवालेका अतिविश्वास न करेगी। वह लज्जित थी और

जेनभी लज्जित थी परन्तु दोनोंकी गालोंपरसे एकसमान रंग उड गया था।

वहां बातचीत की कुछ कमी न थी। यद्यपि बधू और उसकी माता तेजीसे बातें न कर सकती थीं, और विकम जो एलिजाबेथके पासही बैठा था, उस पडौसके परिचित जनोंके विषयमें ऐसी प्रसन्न मुद्रासे पूछताछ करने लगा था, परन्तु उसको उसी प्रसन्नतासे वह उत्तर न दे सकती थी। ऐसा प्रतीत होता था वे संसारकी सबसे अधिक आनन्ददायक स्मृतियोंमें मग्न हो रहे हैं। पिछली दुःखप्रद घटनाओंको कोई भी स्मरण नहीं कर रहा था, और लीडिया तो जानबूझकर उन विषयोंको छेड रही थी जिनकी उसकी बहनें संसारके सामने चर्चा भी करना न चाहती थीं।

वह कहने लगी, 'केवल तीन मास पहलेकी तो बात है जब मैं यहांसे गई थी। परन्तु मैं कहती हूं कि मुझे तो एक पखवाडाही बीता लगता है; और फिर भी इतने समयमें कई बातें हो गई हैं। ओह, ईश्वरको धन्यवाद है, जब मैं यहांसे गई थी तो मुझे यहां आये बिना विवाहित हो जानेका तो विचारही न आया था, यद्यपि यदि यह हो जाता तो बडा तमाशा होता।

उसके पिताने अपनी आंखें उठायीं। जेन घबराई। एलिजाबेथने घूरकर लीडियाको देखा; परन्तु उसने, न तो कुछ सुना न देखा। वह इनकी ओरसे लापर्वाह थी। वह प्रसन्नतासे सुनाती जा रही थी, 'ओह मामा, क्या यहांके निवासी जानते हैं कि मैं विवाहित हो गई हूं? मुझे भय है कि वे नहीं जानते और हमने विलियम गोल्डिंगको अपने बरामदेमें बैठे हुए जब आते समय देखा था, तो मैंने निश्चय कर लिया था कि इसे तो अवश्य पता लग जाना चाहिये था। इसलिये मैंने गाडीका उधरकी ओरका शीशा नीचेको हट दिया, मैंने दस्ताना उतार डाला और अपने हाथको खिडकीकी देहलीजपर रख दिया, जिससे कि वह मेरी विवाहकी अगूंठीको देख सके। मैंने फिर उधरकी ओर सिर निकाला और कुछ झुकी और फिर मुस्कराने लगी।

एलिजाबेथ इसे अधिक सहन न कर सकी। वह उठी और कमरेसे बाहर भाग गई, और तबतक न लौटी जबतक कि उसने उन्हें वहांसे उठकर हाल कमरेसे होकर भोजनशालाके बरामदेकी ओर जाते हुए न सुन लिया।

तब वह शीघ्रही उनके साथ आ मिली जिससे कि लीडियाकी गति-विधिको देख सके। क्योंकि वह अपनी माताके दांयीं ओर आ गई थी और उसको अपनी सबसे बडी बहनसे यह कहते सुन रही थी कि 'लो जेन, अब मैं तुम्हारी जगह लेती हूं, पर तुम जरा धीरे २ चलो, क्योंकि मैं तो एक विवाहिता स्त्री हूं।'

यह तो कोई अनुमान नहीं लगा सकता था कि लीडियाको कोई बंधनका भी समय आयेगा, जिससे कि वह आरंभमेंही इतनी स्वतंत्र हो चुकी थी। उसकी शान्ति और आनंद बढ चुके थे। वह मिसिज फिलिप्सको मिलना चाहती थी और ल्यूकेसिजको और अपने अन्य सभी पडौसियोंको। और चाहती थी कि मैं उनमेंसे प्रत्येकको अपनेको 'मिसिज विकम' के नामसे पुकारते हुए सुन सकूं। इसी बीचमें वह भोजनके उपरांत वहां गई। जिससे कि मिसिज हिलको और दो नौकरानियोंको अपनी अंगूठी दिखा सके और अपने विवाहित होनेकी शेखी बघार सके।

उसने कहा, जब कि वे सब चायपानवाले कमरेमें लौट आये, 'हां ममा, और तुम मेरे पतिके विषयमें कैसा सोचती हो? क्या वह एक सुन्दर नौजवान नहीं है? मुझे निश्चय है कि मेरी बहनोंको मुझसे ईर्ष्या करनी चाहिये। मैं तो केवल इतनाही प्रार्थना करती हूं कि वे मुझसे आधा सौभाग्य तो पा सकें। उन सबको अवश्यही ब्राइटन जाना चाहिये। वही स्थान है जहां पति मिल जाते हैं। मां, यह कैसी शोकजनक बात है कि हम वहां कभी गईं ही नहीं।'

माता—'बिल्कुल सच है, और यदि मेरी इच्छा चलती तो मैं सबको जाने देती। परन्तु मेरी प्यारी लीडिया! मैं इतनी दूर तुम्हारा जाना सर्वथा पसन्द नहीं करती। क्या यह ठीक नहीं है?'

लीडिया—हे ईश्वर! हां, उसमें कुछ हानि नहीं है। मैं इसे सब वस्तुओंसे अधिक पसन्द करती हूं। तुम, पापा और मेरी बहनें सबको वहां हमें मिलनेके लिये आना चाहिये। हम जाडोंभर न्यूकैसलमें रहेंगे, और मैं कहनेका साहस करती हूं कि वहां कुछ नृत्य होंगे और मैं अपनी सब बहनोंके

लिये अच्छे साथी चुननेका पूरा २ यत्न करूंगी।

उसकी माताने कहा–'मैं सबसे अधिक यही बात तो चाहती हूं।'

लीडिया–'और तब जब आप लौटेंगी, तो आपने मेरी एक या दो बहनोंको वहीं छोड जाना, और मैं कहती हूं कि मैं उन्हें जाडोंके समाप्त होनेसे पहले २ पति दिला दूंगी।'

एलिजाबेथ–मेरेपर कृपा करनेके लिये मैं आपका धन्यवाद देती हूं। परन्तु मैं इस तुम्हारे ढंगसे पति पानेको विशेषरूपसे अनुचित समझती हूं।'

उनके अतिथि दस दिनसे अधिक वहां न ठहर सकते थे। मि. विकमने लंदन छोडनेसे पहले अपनी सेनासे बुलानेका आज्ञा पत्र पा लिया था, और वह एक पक्षके बादही अपनी सेनामें जानेवाला था।

मिसिज बेनटके अतिरिक्त अन्य किसीने भी उनके थोडेकालके ठहरनेके लिये शोक प्रकट नहीं किया। इसीलिये उसने अपनी पुत्रीको साथ लेकर इधर उधर खूब परिचय कराया और अनेक भोजोंमें दिल खोलकर भाग लिया। यह भोज सभीको इसलिये भी पसंद थे कि इससे एकही कुटुम्बमें अधिक न बैठकर नये २ कुटुम्बोंमें थोडा २ काल बैठना मिलता था।

विकमका प्रेम लीडियाके लिये ठीक ऐसाही था जैसा कि एलिजाबेथने उसकी आशा की थी, परन्तु लीडियाका उससे जो प्रेम था वह वैसा नहीं था। वह अपनी वर्त्तमान खोजसे बडी प्रसन्न थी। क्योंकि उनका संबंध उसीके प्रेमके बलसे हुआ था नकि विकमके। और वह चकित हो गई थी कि वह, उसकी अत्यन्त ध्यानसे क्यों पर्वाह (चिन्ता) नहीं करता है। वह उससे सर्वथा भाग जाना पसंद करता, यदि वह यह अनुभव करती कि उसका भागना परिस्थितियोंके कारण आवश्यक समझा गया है। और यदि यह बात ठीक थी, तो वह ऐसा नौजवान नहीं था जो कि एक साथीके प्राप्त हो जानेका व्यर्थमें ही विरोध करता।

लीडिया उसपर अत्यन्तही अनुराग करती थी। वह प्रत्येक अवसरपरही उसका प्यारा विकम था। उसके जोडका संसारभरमें कोई न था। उसने जो कुछ किया संसारमें सबसे अच्छा किया। और इसको निश्चय था कि वह

पहली सितंबरको अन्य सब गांववालोंकी अपेक्षा अधिक पक्षी मारेगा।

उनके वहां पहुंचनेके बाद शीघ्रही एक दिन प्रातःकाल, जब कि वह अपनी दोनों बहनोंके साथ बैठी हुई थी, उसने एलिजाबेथसे कहा :-

'लिजी! मैंने तुम्हें अपने विवाहका वृत्तान्त तो शायद सुनायाही नहीं। तुम उस समय मेरे पास न थीं जब कि मैंने मांको तथा अन्योंको यह सब हाल सुनाया था। क्या तुम इसको सुननेकी उत्सुक नहीं हो कि यह सब किस प्रकार हुआ!'

एलिजाबेथने कहा—वास्तवमें नहीं, क्योंकि मैं समझती हूं यह विषय बहुत लंबा है।

लीडिया—वाह! तुम भी बडी अनोखी हो! परन्तु मैं तुम्हें अवश्य सुनाउंगी कि यह कैसे हुआ? तुम जानती हो, हमारा सैंट क्लमिन्टके गिरजाघरमें विवाह हुआ था, क्योंकि विकमके मकान उसी जिलेमें थे। यह निश्चय हो चुका था कि हम सबको ११ बजे दोपहर वहां पहुंच जाना चाहिये। मेरी मामी, मामा और मैंने इकट्ठे जाना था, और अन्य सब लोगोंने हमें गिर्जेमें मिलना था। अस्तु. सोमवारकी प्रातःकाल आ पहुंची, और मैं इसी परेशानीमें थी! तुम जानती हो मैं इतनी भयभीत थी. कि कहीं ऐसा न हो कि इसमें कोई विघ्न पड जाये और तब मैं बडी दुर्दशामें फंस जाऊंगी। और मेरी मामी तो-- क्योंकि मैं तो सारा समय अपने श्रृंगार करनेमें लगा रही थी; मुझे उपदेश करती रही और मुझसे बातें करती रही, मानो कि वह मेरे सामने बाइबलका एक व्याख्यान पढ रही हो। परन्तु तो भी मैंने दस मैंसे उसके एक शब्दको भी नहीं सुना, क्योंकि मैं सोच रही थी, तुम अनुमान कर सकती हो, अपने प्यारे विकमको। मैं यह जानना चाहती थी कि क्या वह अपने नीले कोटको पहनकरही विवाह करेगा।

'अस्तु. तब हमने प्रतिदिनके समान १० बजे प्रातराश किया। मैंने समझा यह कभी समाप्तही न होगा। क्योंकि धीरे २ तुम्हें समझना होगा कि मेरे मामा और मामी बहुतही अप्रसन्न रहे, जब तक कि मैं उनके साथ रही थी। यदि तुम मेरा विश्वास करो, तो मैं कहती हूं कि मैंने एक दिन भी

घरके द्वारसे बाहर पैर नहीं रखा था, यद्यपि मैं वहां १५ दिन रही थी। नाहीं किसी पार्टी, गोष्ठी या अन्य किसी बातमें सम्मिलित हुई। निश्चय जानो, लंदनमें भीड कम थी, तो भी छोटा थियेटर खुला हुआ था। अच्छा, इस-प्रकार जब कि गाडी द्वारपर आयी, उसी समय, उस हठी मि. स्टोनद्वारा मेरा मामा किसी विशेष कामके लिये बुला लिया गया, और तब तुम जानती हो, जब दोनों इकट्ठे हो जाते हैं, तो फिर हटनेका नामही नहीं लेते। अस्तु. मैं तो इतनी डर गई थी कि मुझे समझ नहीं आती थी कि मैं क्या करूं। क्योंकि मेरा मामा मेरा संप्रदान करनेवाला था, और यदि वे समयपर न पहुंचे तो मेरा विवाह दिनभरमें भी नहीं हो सकता था। परन्तु सौभाग्यसे, वह दस मिनिटमेंही लौट आये, और तब हम वहांके लिये चल पडे। तो भी, मैंने बादमें स्मरण किया कि यदि वह जानेसे रुक जाता, तो भी विवाहको रोकनेकी आवश्यकता न थी, क्योंकि मि. डारसी उसे अच्छी प्रकार कर डालते।

आश्चर्यसे चकित हुई एलिजाबेथने दुहराया–' मि- डारसी !'

लीडिया– 'ओः ! हां ! तुम जानती हो कि वह वहां विकमके साथ आनेवाला था। परन्तु ईश्वर कृपा करे, मैं तो सर्वथा भूलही गई थी ! मुझे इस विषयमें तो एक शब्द भी कहना उचित नहीं था। वहां तो मैंने सच्चा प्रण किया था ! विकम क्या कहेगा ? यह तो एक रहस्य था जो गुप्त रखना चाहिये था।'

जेनने कहा– यदि यह रहस्य गुप्त रखना चाहिये था तो इस विषयमें अब और कोई शब्द न कहना। तुम्हें मैं आगे इस विषयमें कुछ न पूछूंगी।

एलिजाबेथने कहा– 'ओः निश्चयसे।' यद्यपि वह उत्सुकतासे बेचैन हो उठी थी–' हम तुमसे कोई प्रश्न न पूछेंगी।'

लीडियाने कहा–' धन्यवाद। क्योंकि यदि पूछतीं तो मैं निश्चयही सब कुछ बतला देती, परन्तु तब विकम मुझसे बहुत कुपित हो जाता।'

इस प्रकारका पूछनेके लिये सहारा पाकर एलिजाबेथने तो वहांसे भाग जानेके अतिरिक्त और कोई उपाय अपनेको रोकनेका न देखा।

परन्तु ऐसे विषयमें अज्ञानमें रहना असंभव था अथवा कमसे कम ऐसे विषयके जाननेके लिये यत्न न करना यह भी असंभव था। मि. डारसी उसकी बहनके विवाहपर था, यह वास्तवमें एक दृश्य था, और वास्तवमें मनुष्योंमें जिनके सामने प्रत्यक्ष रूपसे वह सबसे कम कहीं जाता था और सबसे कम कुछ कार्य करनेकी इच्छा रखता था। इसके अभिप्राय जाननेके लिये, उसके मस्तिष्कमें सरपट और अव्यवस्थित विचार आ रहे थे, परन्तु वह एकान्तमें सन्तोष अनुभव करती थी। जिन विचारोंने उसे अत्यधिक प्रसन्न किया था, क्योंकि विकमके चरित्रको उन्होंनेही अत्युत्तमरूपमें पेश लिया था, उसे वे सबसे अधिक असंभव लग रहे थे। वह इतनी देर सहन न कर सकती थी, और शीघ्रही उसने एक कागज लेकर एक छोटासा पत्र अपनी मामीको लिख डाला, जिसमें लीडियाकी कही हुई बातकी व्याख्या चाही थी, क्योंकि इसे गुप्त रूपसेही पूछना उसने उचित समझा था।

उसने लिखा- 'आप समझ सकती हैं कि मुझे इस बातको जाननेकी कितनी उत्सुकता होगी कि किस प्रकार एक व्यक्तिने, जिसका हमारे साथ कुछभी संबंध नहीं था, और देखा जाये तो जो हमारे परिवारके लिये अपरिचित था, ऐसे समयमें आपका साथ दिया। प्रार्थना करती हूं कि आप मुझे इस पत्रका तुरन्तही उत्तर दें, जिससे कि मैं इस बातको जान सकूं क्योंकि लीडिया इस बातको गुप्त रखनेके लिये कह चुकी है; इसलिये यदि आपने भी इसका विवरण न लिखा तो मुझे भी इसको भुलाकर सन्तुष्ट होना पड़ेगा।

उसने पत्र समाप्त करते हुए अपने लिये लिखा- 'यह नहीं कि मैं सन्तुष्ट हो जाऊंगी, यद्यपि, और मेरी प्यारी मामीजी! यदि आप मुझे यह बात अच्छी प्रकारसे खोलकर न लिख देंगी तो मैं सचमुच इसको जाननेके लिये चालाकी और कोई अन्य उपाय करूंगी।'

जेनकी प्रतिष्ठाने उसको यह आज्ञा नहीं दी थी कि वह एकान्तमें बैठी हुई एलिजाबेथको जाकर लीडियाके विषयमें कुछ भी कहे। एलिजाबेथ इस बातसे प्रसन्न थी। जब तक कि उसको प्रतीत न हो गया कि उसकी खोज (पूछताछ) कुछ सन्तोषजनक सिद्ध होगी, तबतक वह विश्वास कर सकती थी।

—०+०—

बावनवां परिच्छेद

एलिजाबेथको अपने पत्रके उत्तर आने का पूरा २ निश्चय था। वह जानती थी कि मामी मेरे पत्र को पाते ही उत्तर अवश्य लिखेगी। उसे जब पत्र मिला तो वह तुरंत एक ऐसे एकांत स्थान में जा बैठी जहां उसे कोई भी टोकने वाला न जा सकता था। वह एक बेंच पर बैठ गई, और प्रसन्न होने का प्रयत्न करने लगी, क्योंकि पत्रकी लंबाई (दीर्घता) ने उसे निश्चय दिला दिया था कि इसमें उस बातसे निषेध तो नहीं किया गया है।

पत्र ग्रेश चर्च स्ट्रीट

मेरी प्यारी भानजी! सप्टेम्बर ६

मैंने तुम्हारा पत्र अभी २ पाया है, और सारा प्रातः काल लगाकर मैं इसका उत्तर लिखूंगी, क्योंकि मैं देखती हूं थोडा लिखनेसे वह सब मैं न लिख सकूंगी जो कि मैं विस्तार से तुम्हें बतलाना चाहती हूं। मैं तुम्हारे इस पत्रसे आश्चर्यान्वित होगई हूं, मुझे तुम से इस की आशा नहा थी। परंतु, मुझे क्रोधित न समझ लेना, क्योंकि तुम इसी विषय में पूछताछ करोगी इस विषय का मुझे कभी विचार भी न था, यदि तुम मेरे अभिप्राय को न समझ सको तो मेरी इस कठोर बात को क्षमा करना, तुम्हारे मामा भी इतने चकित होगए हैं जितनी कि मैं और तुम्हें भी एक पक्ष से संबंध रखनेवाला समझ-करही, उन्हें यह कार्य करना पडा है जैसा कि उन्होंने किया है। परन्तु यदि तुम वास्तवमेंही निष्पाप और अज्ञानमें हो, तो मुझे और भी आश्चर्य है। जिस दिन मैं लॅांगबोर्नसे लंडनमें आई तुम्हारे मामाको एक ऐसा नया अतिथि दर्शक मिला, जिसकी कि उन्हें कभी आशा नहीं थी। मि. डारसी आये, और कुछ घंटे तक बंद कमरेमें उनसे बातें करते रहे। मेरे पहुंचनेसे पहलेही इनकी भेंट समाप्त हो गई थी; इसलिये मेरी उत्सुकता इतनी भयंकर-तासे नहीं बढी जितनी कि तुम्हारी बढी हुई प्रतीत होती है। वह मि. गार्डनरको कहने आया था कि उसने उसने ढूंढ निकाला है, कि कहांपर तुम्हारी बहन और मि. बिकम हैं, और उसने उन्हें देखा है और बातें भी की हैं—

विक्रम से कई बार और लीडिया से एक बार। जितना मुझे स्मरण है वह यह कि उसने हमारे आनेके अगले दिनही डर्बीशायरको छोड दिया था, और नगरमें उनका पीछा करने के उद्देश्य से ही आया था। उसने उद्देश्य यह सोचा था कि उसको ऐसा विश्वास था कि विक्रमकी अयोग्यता इतनी प्रसिद्ध नहीं हो चुकी है कि कोई नौजवान सच्चरित्र कन्या उसे प्रेम या अनुराग कर सकती है। उसने उदारता से स्वीकार किया कि यह उसको मिथ्याभिमान था, और स्वीकार किया कि वह पहले इसे अपनी प्रतिष्ठा से नीचा समझता था कि उसके निजी कार्य संसारके लिये खुले हुए हों। उसका चरित्र स्वयं ही अपनेको बतलाता था। इसलिये उसने इसे अपना कर्त्तव्य समझा कि वह आगे बढे और एक बुराई की चिकित्सा करने के लिये औषधि बने, जो कि उसीके कारण उत्पन्न हुई थी। यदि उसका कोई और उद्देश्य होता, मुझे निश्चय है तो वह उसकी अप्रतिष्ठा का कारण न बनता। इससे पहले कि उसने उन्हें ढूंढ निकाला था, वह कुछ दिन पहले ही उस नगर में आगया था परन्तु उसे खोज करनेके लिये कोई सहारा चाहिये था, जो कि हमारी अपेक्षा उसे बडा लाभप्रद सिद्ध हुआ था; और इसके द्वारा उसे पूरा २ पता मिल सका, इस लिये उसने और भी दृढ निश्चय से उनको खोजना आरंभ कर दिया। ऐसा प्रतीत हुआ है कि एक लेडी मिसिज यंग है जो कि कुछ काल पहले मिस डारसी की गवर्नैस (अधिठात्री) थी, और किसी गर्हित अपराधके कारण हटा दी गयी थी, यद्यपि उसने हमें वह अपराध नहीं बतलाया है। तब उसने एडवर्ड स्ट्रीट में आकर एक बहुत बडासा मकान ले लिया, और इसके कमरों को किराये पर देकर अपना गुजारा करने लगी। वह जानता था कि यह मिसिज यंग विक्रम के साथ बडी गहरी परिचित थी, और वह नगरमें आकर उन दोनों की खोजके लिये उसकी सहायता लेना चाहता था। परन्तु उससे इस बातका भेद लेने के लिये उसे दो तीन दिन लग गये। वह उसका विश्वास खोना नहीं चाहती थी, मैं समझतीहूं, बिना घूंस और रिश्वत लिये, क्योंकि वह जानती थी कि उसका मित्र कहां मिल सकेगा। विक्रम निःस्संदेह उसके पास लंदन पहुंचने के पहले दिन ही आया

था, और यदि वह उन दोनों का अपने घरमें स्वागत कर सकती, तो वे भी वहीं निवास करने लग जाते । अन्त में, हमारे दयालुमित्र ने उससे मन-चाही बात जान ली । वे एक स्ट्रीटमें थे । उसने विकमको देखा, और उसके बाद लीडियाको देखनेके लिये उस पर दबाब डाला । उसका पहला उद्देश उसे देखने का यह था, जैसा कि उसने कहा है, कि वह लीडियाको इस वर्त्तमान अप्रतिष्ठाजनक अवस्था से निकाले, और वह अपने उन मित्र संबं-धियोंके पास लौट जावे, जबकि उनको समझाकर उसके स्वागतके लिये उनको मनालिया जावे । इसके लिये वह यथाशक्ति सहायता देनेको उद्यत रहा था। परन्तु उसने देखा लीडिया उसी स्थानपर रहने के लिये आग्रह करती थी। उसे मित्रों में से किसीकी पर्वाह नहीं थी। वह उससे भी किसी प्रकारकी सहायता नहीं चाहती थी; वह विकमको छोडनेकी बात भी सुननेको उद्यत न थी। उसे निश्चय था वे दोनों जल्दी या देरमें कभी न कभी अवश्यही विवाह कर लेंगे और इस बातकी उसे जरा भी चिन्ता न थी। क्योंकि उसकी ऐसी भावनाएँ थी, इसलिये उसने सोचा, कि अब तो इनका विवाह कर डालना ही उचित होगा, इसके विषय में जब उसने विकमसे आरंभमें बात की तो उसे आसानीसे पता लग गया कि यह उसका विचार नहीं है। परन्तु उसने स्वीकार किया कि क्योंकि उसके ऊपर कुछ ऐसे ऋण हैं जिनका उसे चुकाना परमावश्यक है, इसलिये बाधित होकर उसे अपनी सेनाको छोडना पडेगा, और शंका है कि लीडियाके भागनेके सभी बुरे परिणामोंको बह केवल उसे भोगनेके लिये नहीं छोडेगा। उसने अपने कमिशनसे तत्क्षण त्यागपत्र देनेके लिये निश्चय प्रकट किया, और अपने भविष्यकी दशाके लिये वह बहुत कम सोच विचार कर रहा था। वह कहीं जाना अवश्य चाहता था, परन्तु कहां, यह उसे स्वयं पता नहीं था। और वह यह भी जानता था कि उसके पास जीवनयात्रा के लिये कुछ भी नहीं है। मि. डारसी ने उससे पूछा कि वह क्यों तुम्हारी बहनसे तुरन्त विवाह नहीं कर लेता। यद्यपि मि॰ बेनट बहुत धनाढ्य नहीं गिना जाता था, तो भी वह कुछ न कुछ उसके लिये प्रबन्ध कर सकता था, और विवाह के पश्चात् उसकी अवस्था निश्चित रूपसे अच्छी

हो जानी थी। परन्तु इस प्रश्नके उत्तरमें उसने जाना, कि विक्रमके मनमें अभी भी यह आशा है कि यह किसी अन्य देशमें जाकर विवाह करेगा और उससे अपना भविष्य बहुत उज्ज्वल बनालेगा। ऐसी परिस्थितियों में यह फिरभी नहीं कहा जा सकता था कि यदि तुरन्त ही धन मिल जाये तो वह इसे छोड देगा। वे दोनों अनेक वार मिले क्योंकि उन्हों ने बहुतसी बातों पर विचार करना था। निश्चयही विक्रम कुछ अधिक मांगता था जितना कि उसे मिल रहा था, परन्तु अन्तमें वह एक उचित राशि लेनेको उद्यत हो गया। प्रत्येक बात उन दोनों में निश्चित हो रही थी। मि. डारसीका दूसरा काम तुम्हारे मामाको इन सब बातों से परिचित कराना था। और इसीलिये पहले पहले वह ग्रेस चर्चस्ट्रीटमें मेरे यहां आनेसे पहली सायंकालको आया था। परन्तु मि. गार्डनर वहां नहीं मिल सके थे; और मि. डारसी ने खोज करके यह भी जान लिया था, कि तुम्हारा पिता अभी तक उसके साथही ठहरा हुआ है और दूसरे प्रातःकाल नगरको छोड जायगा। उसने तुम्हारे पिता से इस विषयमें बात करनेमें कुछ लाभ न देखा इसलिये वह उसके चले जाने के बाद, दूसरे दिन उनसे बात करनेको प्रसन्नतासे उद्यत हो गया। वह अपने नामका कार्ड नहीं छोड गया था, दूसरे दिन केवल इतनाही पता लगा था कि एक सज्जन किसी कामसे मिलने आया था। शनिवारको वह फिर आया। तुम्हारा पिता जा चुका था, तुम्हारे मामा घरपर ही थे, और जैसा कि मैं पहले लिख चुकी हूं, वे बहुत देरतक परस्पर बातें करते रहे। वे फिर रविवारको मिले, और तब मैंने भी उसको देखा। सोमवारसे पूर्व सब बातोंका निर्णय न हो सका था। ज्योंहि कि निर्णय हुआ, तभी एक एक्सप्रेस सन्देश लॉंगबोर्नको भेजा गया था, परन्तु हमारा अतिथि बडा भारी हठी था। मैं समझती हूं, लिज़ी! कि कमसे कम उसका हठही उसके चरित्रमें एक बडी कमी है। उसके ऊपर भिन्न २ समयोंमें अनेक दोष लगाये गये हैं, परन्तु यही एक सच्चा दोष है। कोई बात नहीं हो सकती थी, जिसे कि वह स्वयं नहीं कर डालता था, यद्यपि मुझे निश्चय है, (और मैं यह नहीं कहती कि उसका धन्यवाद देना चाहिये, इसलिये इसके लिये कुछ नहीं कहती) तुम्हारा

मामा इस मामलेको बहुत शीघ्र सुलझा सकता था। वे दोनों देरतक इसी बातके लिये झगडते रहे, जो कि उस पुरुष और उस स्त्रीके लिये जिनके विषयमें यह किया जा रहा था, बहुतही अधिक था। परन्तु अन्तमें तुम्हारे मामाको उसकी बातके आगे झुकना पडा, और अपनी भानजीके कार्यमें सहायक सिद्ध होनेकी स्वीकृति पानेकी जगह, इस बातके लिये मजबूर किया गया कि वह इस बातका श्रेय अपने नामपर ले, जो कि यद्यपि उसके सर्वथा विरुद्ध जाता था। और मैं वास्तवमें समझती हूं कि तुम्हारे पत्रने उसे आज प्रातःकाल बहुतही आनंद दिया है; क्योंकि इसनें उसे उस बातको खोलने और स्पष्ट कर देनेका अवसर दिया है जिससे कि उसके उधार मांगे हुए पंखोंके उतर जानेसें उसे झूठी प्रशंसासे छुटकारा मिल जायेगा और सच्ची प्रतिष्ठाके योग्य पुरुषको सच्ची प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकेगी। परन्तु लिजी, यह बात तुम्हारे सिवाय, अथवा अधिकसे अधिक जेनके सिवाय, किसीको भी सर्वथा पता नहीं लगनी चाहिये। मैं समझती हूं कि तुम अच्छी प्रकारसे जानती हो, कि उन युवकोंके लिये क्या कुछ किया गया है। उसके ऋण चुकायें जायेंगें, जो कि मुझे विश्वास है, एक हजार पौंडसे बहुत अधिक होंगें। दूसरे हजार पौंड उसके अतिरिक्त लीडियाके अपने धनके अतिरिक्त उसके विवाहपर खर्च हो चुके हैं। और उसका (कमीशन) सेनामें भर्तीका पत्र खरीद लिया गया है। यह युक्ति कि यह सब कुछ उसने क्यों किया है मैं ऊपर बतला चुकी हूं। यह सब कुछ उसके कारण, उसके एकान्तप्रिय रहने और पूर्ण विचार शक्तिके अभावके कारण हुआ है, कि विकमका चरित्र उसने इतना बुरा समझ लिया था, और अन्तमें वह इस प्रकारसे जैसा कि वह था समझा गया और ग्रहण किया गया। शायद इस बातमें कुछ सचाई थी। यद्यपि मुझे संदेह है कि उसकी एकान्त-प्रियता, या किसीकी भी एकान्त प्रियता, इस घटनाके लिये उत्तरदायी थी। परन्तु इन सब कोमल बातोंके करते हुए भी मेरी प्यारी लिजी! तुम पूरा विश्वास कर सकती हो कि तुम्हारे मामा कभी भी इसको न मानते, यदि हमने उसे इस बातका सम्मान किसी अन्यही अभिप्रायके लिये न देना होता। जब यह सब कुछ निश्चित हो गया, तो

अपने मित्रोंके पास लौट गया, जो अब भी पैम्बरलेमें ठहरे हुए थे। परन्तु यह स्वीकार कर लिया गया था कि जब विवाह होगा उसे लंदनमें अवश्यही होना चाहिये। और तब धनसंबंधी सब बातोंको अन्तिम रूप दे दिया जाये। मैं समझती हूं मैंने तुम्हें सब कुछ लिख दिया है। यही मात्र संबंध है जिसको जानकर तुम बडी चकित हो जाओगी। मुझे आशा है, कमसे कम, तुम अप्रसन्न तो न होगी। लीडिया हमारे घरमें आगई, और विकमको भी लगातार आनेकी आज्ञा दे दी गई थी। मैंने उसे जैसा हर्डफोर्डशायरमें देखा था, वह अब भी वैसाही था। पर मैं तुम्हें यह नहीं कहूंगी कि मैं लीडियाके बर्त्तावसे जब कि वह हमारे पास रह रही थी कितनी कम संतुष्ट थी। यदि मैंने जेनके उस पिछले पत्रसे यह न जान लिया होता, कि उसका घरपर आनेका आचरण एक वास्तवमें शान्तिकारक हैं, और इसीलिये अब मैं तुम्हें लिखती हूं तो मैं तुम्हें नयी वेदना नहीं पहुंचा सकती थी। मैंने उसके साथ बडी गंभीरतासे अनेकवार बातें कीं, और उसको बतलाया कि उसने कितनी बडी शैतानी की है, और अपने कुटुम्बके लिये कितनी अप्रसन्नताका वायुमंडल उत्पन्न कर दिया है। यदि वह सुनती तो अच्छा होता, पर मैं निश्चित जानती हूं कि उसने इसे सुनाही नहीं। कभी २ मैं बडी उत्तेजित हो जाती थी, और मुझे अपनी प्यारी एलिजाबेथ और जेनकी याद आ जाती थी, और उनके लिये मुझे उसके साथ सन्तुष्ट हो जाना पडता था। मि० डारसी अपनी वापसीमें ठीक समयपर पहुंच गया था, और जैसे कि लीडियाने तुम्हें कहा हैं, वह विवाहमें सम्मिलित हुआ था। दूसरे दिन उसने हमारे साथ भोजन भी किया था और फिर बुधवार या वीरवारको नगरको छोडकर चला भी गया था। मेरी प्यारी लिजी! क्या तुम मेरे साथ बहुत नाराज हो जाओगी, यदि मैं इसी अवसरपर यह भी कह दूं (जो कि मैं पहले कभी कहनेका साहस नहीं कर सकी हूं) कि मैं उसे कितना अधिक पसन्द करती हूं? उसका हमसे सुलूक प्रत्येक बातमें ऐसा प्रसन्नतादायक था, जैसा कि तब था जब कि हम डर्बीशायरमें थे। उसकी समझ और सम्मतियां मुझे सभी प्रसन्नता देती थीं। वह और कुछ नहीं चाहता, केवल अधिक सजीवता चाहत

है और वह, यदि वह समझ सोचकर अपना विवाह करेगा तो उसकी पत्नी उसे सिखा देगी। मैं उसे बडा वाचाल समझती थी; किन्तु उसने तुम्हारा नाम भी कभीही लिया होगा। परन्तु वाचालता भी तो एक फैशन या रिवाज होगया है। प्रार्थना करती हूं कि यदि मैं बहुत संभावनाएं करनेवाली हो गई हूं तो मुझे क्षमा कर देना, या कमसे कम मुझे इतना दण्ड देना कि मुझे (पै.) पैम्बरलेसे बाहरही न निकाल देना। मैं सर्वथा प्रसन्न न होऊंगी जब तक कि मैं सारी बाटिकाका चक्कर न लगा लूंगी। एक छोटीसी फिटन, जिसमें दो छोटे २ टट्टू जुडे हुए होंगे,इतनी वस्तुही पर्याप्त होगी। परन्तु मैं अधिक नहीं लिखती हूं, क्योंकि बच्चे मेरी आधे घण्टेसे प्रतीक्षा कर रहे है।

तुम्हारी अत्यन्त विश्वासपात्र
एम. गार्डनर

इस पत्रके समाचारों ने एलेजबिथको एक ऐसी विचारधारामें डाल दिया कि यह समझना कठिन था कि वह आनन्दके विचार थे या दुःखके। वे सन्देह जिनके कारण वह यह निश्चय न कर सकती थी कि मि. डारसीने क्यों उसकी बहनके विवाहमें बढकर भाग लिया; विशेषकर इतनी भलाई करनेकी क्या आवश्यकता थी, इसीके साथ वह यह भी जानती थी कि ये सब कुछ उसने निश्चित किया है, इसलिये वह कृतज्ञताकी पीडाको भी प्रसन्नता के साथ २ ही अनुभव करती थी। वह जानबूझकर नगर तक उनका पीछा करनेके लिये गया; उसने अपने ऊपर सभी प्रकारके कष्ट उठाये और उनकी खोजमें लगा रहा। उसीके लिये उसने एक ऐसी स्त्रीसे, जिससे कि वह घृणा करता था और बहुत कम मिलता था, बार २ मिलना आरंभ किया, तर्क किये, फुसलाया, और अन्तमें उसे रिश्वत भी दी। केवल उस पुरुषके लिये, जिसके साथ मिलने से वह सदा कतराता था और जिसका नाम उच्चारण करना भी वह अपने लिये एक दंड समझता था। यह सब कुछ उसने एक ऐसी कन्याके लिये किया, जिसकी न तो वह कुछ प्रतिष्ठा करता था नांही कुछ मूल्य करता था। उसका हृदय उसे कह रहा था कि यह सब कुछ उसने उसके लिये ही किया हैं। परन्तु यह एक आशा थी, जो अन्य विचारोंके आतेही शीघ्र समाप्त हो गयी और उसने

शीघ्रही अनुभव किया कि यद्यपि उसका अभिमान जब कि उसे अपने लिये उसके प्रेम पर निर्भर करना होता, व्यर्थसा था, क्योंकि एक स्त्री, जिसने कि उसको सदा निषेध (अस्वीकार) किया है, इतनी योग्य है कि वह एक ऐसी भावना के ऊपर काबू पा सकती है, जो कि इतनी स्वाभाविक और विकमके साथ संबंध करने के लिये इतनी अप्रिय है। विकमका साङ्क। प्रत्येक प्रकारका अभिमान इस संबंध के अवश्यही विरुद्ध होगा। निश्चय ही, उसने बहुत अधिक किया था। उसे यह सोचकर लज्जा आती थी कि उसने कितना आधिक उपकार किया है। परन्तु उसने एक युक्ति इस कामको करने के लिये दी है, जिसके ऊपर विश्वास करने के लिये कोई असधारण बात नहीं कही जा सकती। यह युक्तिसंगत था कि वह इस बातको समझे कि उसने भूल की है; उसे स्वतंत्रता थी; और वह इस कामको करनेके लिये साधन रखता था। और यद्यपि वह उसके मुख्य प्रलोभन पर विश्वास नहीं करना चाहती थी, तो भी वह विश्वास कर सकती थी कि उसके अन्दर जो मेरे विषयमें पक्षपात है, उससे उसके कार्योंको सहायता मिल सकती थी। विशेष करके उस कार्यको करनेमें जिसमें कि मेरे मनको अवश्यही शान्ति मिलती थी। यह जानना कष्टप्रद था, अत्यन्तही कष्टप्रद था, कि वे एक ऐसे व्यक्तिके कृतज्ञ बन चुके हैं. जिसका कभी बदला नहीं चुकाया जा सकेगा। वे लीडिया की पुनः प्राप्तिके लिये उसके ऋणी थे, उसके चरित्रकी रक्षा के लिये ऋणी थे और प्रत्येक बातके लिये उसके ऋणी थे। ओहे! अब वह उन अभद्र विचारोंके लिये जो उसके लिये वह कभी करती रही थी, कितनी हृदयसे पछता रही थी। उन कटु बातों के लिये जो उसके लिये वह कहती रही थी, कितना पश्चात्ताप कर रही थी। अपनेमें तो अब वह नम्र हो चुकी थी, परन्तु उसपर वह अभिमान कर रही थी—क्योंकि जहांतक बदला लेने और मानप्रतिष्ठाका प्रश्न है वह अपनी ओरसे अति उत्तम पुरुष सिद्ध हो चुका है। उसने अपनी मामीके उन वचनोंको जो उसके लिये पत्रमें उसने लिखे थे, बार २ पढा। ये बहुत थोडे से थे तो भी इनसे उसे आनन्द मिलता था। उसे कुछ २ आनंद भी प्राप्त हो रहा था यद्यपि उसमें कुछ पश्चात्तापके भाव भी मिले हुए थे। यह जान

कर कि किस प्रकार दृढता से उसे और उसके मामाको उस प्रेम और विश्वास के विषयमें जोकि उसमें और मि· डारसीमें था, फुसला लिया गया है।

वह अपने स्थानसे उठ खडी हुई और उसकी विचारधारा भी छिन्न-भिन्न हो गयी, क्योंकि वहां कोई आगया था। इससे पहले कि वह कहीं अन्यत्र स्थान पर जाती, उसे विक्रम ने आ घेरा था।

उसने आतेही कहा—मेरी प्यारी बहन! मुझे डर है कि मैंने तुम्हारे एकान्तवासके रंगमें भंग डाल दिया है।"

उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—सचमुच तुमने रंगमें भंग डाल दिया है। परन्तु इसका यह अभिप्राय न समझो कि तुम्हारे भंगका स्वागत न किया जायेगा।"

विक्रम–यदि ऐसा होता तो मैं सचमुच बहुत दुःख अनुभव करता, हम सदाही अच्छे मित्र रहे हैं और अबतो हम पहलेसे भी अधिक अच्छे मित्र बन गये हैं।

एलिजा–सच है। क्या अन्य लोग भी बाहर आरहे हैं।

विक्रम—मुझे पता नहीं। मिसिज बेनट और लीडिया गाडीमें मैरिटन को जा रही हैं। और इसीलिये, मेरी प्यारी बहन! मुझे अपने मामाजी और मामीजीसे पता लगा था, कि तुमने सचमुच पैम्बरले को देखा है।

उसने उत्तरमें वहां जाना स्वीकार किया।

विक्रम—मुझे आपके आनंदसे ईर्ष्या होती है, और मुझे निश्चय है कि यह मुझमें और भी बढ जाती, या फिर मैं अपने मार्गमें न्यूकैसलकी ओर जानेका विचार कर लेता। और तुमने पुरानी गृह रक्षिकाको भी निश्चयसे देखा होगा? बिचारी रेनाल्डस! मुझे सदासे बहुत प्यार करती थी। पर निश्चयही उसने मेरा नाम तुम्हें नहीं बतलाया होगा!'

एलिजा– हां, उसने बतलाया था।

विक्रम—उसने क्या कहा था?

एलिजा— यही कि तुम सेनामें गये थे, और उसे भय था कि तुम

अच्छी प्रकारसे वहांसे नहीं लौटे थे। क्योंकि इतनी दूरीसे, जितनी कि वह थी, कुछ की कुछ बातें लोग उडाया करते थे।

विक्रम ने अपने होंठ काटते हुए कहा- 'ठीक है।'

एलिजाबेथको आशा थी कि उसने उसे चुप करा दिया है परन्तु शीघ्रही वह फिर बोल उठा—

'मैं गतमासमें डारसीको नगरमें देखकर बडा चकित हुआ। हम कई-बार परस्पर मिले। मुझे आश्चर्य है कि वह वहां क्या करता था।

एलिजाबेथने कहा—शायद मिस डिबौरोसे अपने विवाहकी तैयारी करता होगा। निश्चयही वर्षके इन अन्तिम दिनोंमें कोई विशेष बातही उसे नगरमें ले गई होगी।

विक्रम—'निश्चयही। जब तुम लैंम्पटनमें थीं क्या तुम उससे मिली थीं ? मैं समझता हूं, मुझे गार्डनर्सने कहा था कि तुम वहां मिली थीं।'

एलिज—'हां; उसने हमें अपनी बहनसे परिचित कराया था।'

विक्रम—परन्तु क्या तुम उसे पसन्द करती हो ?

एलिजा- निश्चयही, मैंने सुना हैं कि वह इन एक दो सालोंमें पर्याप्त उन्नति कर गई है। जब मैंने उसे अन्तिमबार देखा था तब तो मुझे इतनी आशा न थी। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि तुम उसे पसंद करती हो। मैं समझता हूं वह अच्छी निकलेगी।

एलिजा- मैं कह सकती हूं कि वह निकलेगी, वह बडी काठिन आयुसे निकल आई है।

विक्रम— क्या तुम किम्पटम गांवमें भी गई थीं।

एलिज— मुझे तो स्मरण नहीं आता।

विक्रम—मैंने इसका नाम इसलिये लिया है कि यही जीवन है जो मुझे निभाना था। वह एक बहुतही आनंदप्रद स्थान है। अत्युत्कृष्ट जनोंका वासस्थान है। यह मुझे हर अवस्थामें अनुकूल पड सकता था।

एलिज— तुम्हें उपदेश देना क्या पसन्द आया था ?

विक्रम— बहुतही पसन्द। मुझे इसे अपने जीवनका एक कर्त्तव्य समझना चाहिये था, और इसमें कुछभी कष्ट नहीं होना था। यद्यपि पश्चाताप करनेसे कुछ लाभ नहीं, परन्तु सच बात तो यह है कि यह मेरेलिये ऐसी बातही होती जिसे अतिशान्ति कह सकते हैं। और ऐसे जीवनसे उपरामता, मेरी प्रसन्नताके सभी आदर्शोंका उत्तर देनेवाली होती। परन्तु यह भवितव्यता न थी। क्या तुमने कभी डारसीको इस अवस्थाकी बातें करते सुना था, जब कि वह केन्टमें था ?'

एलिजा— मैंने अच्छे अधिकारीसे सुना था, कि वह बात तुमपरही छोडी गई थी; और वर्त्तमान संरक्षककी इच्छापर की गई थी।

विक्रम- तुमने ठीक सुना है! हां, उस (इच्छा पत्र) में कुछ बात ऐसीही थी; मैंने तुम्हें आरंभसेही कह दिया है, तुम्हें स्मरण होगा।

एलेज- हां, मैंने यह भी सुना था, कि ऐसा समय भी आया था कि उपदेश देना आपके लिये इतना सजता नहीं था, जैसा कि वह वर्त्तमानमें दिखता है, कि तुमने वास्तवमें अपना निश्चय घोषित कर दिया था कि तुम (orders) आज्ञाएं नहीं स्वीकार करोगे; और इसीलिये वह कार्य तुम्हारे अनुसारही सुलहसे किया गया था।

विक्रम- तुमने सुना है! और वह बात सर्वथा निराधार नहीं है तुम्हें स्मरण होगा कि जब हम प्रथमबार बातें कर रहे थे तो मैंने इस विषयमें तुमसे कहा था।'

इस समय वे अपने मकानके द्वारतक आ पहुंचे थे, क्योंकि वह उससे छुटकारा प्राप्त करनेके लिये तीव्रतासे चल रही थी, और अपनी बहनके लिये उसे और उकसाना नहीं चाहती थी; उसने उत्तरमें मुस्कराते हुए केवल इतनाही कहा—

'जाओ, मि. विक्रम, तुम जानते हो हम भाई और बहन हैं। इसलिये हमें पिछली बातोंके लिये झगडा नहीं करना चाहिये। भविष्यमें, मुझे आशा है; हम एकही मनवाले रहेंगें।

उसने अपना हाथ बाहर निकाल दिया : विक्रमने उसका बडे उत्साहसे प्रेमभरा चुम्बन किया, यद्यपि वह जान न सका कि किस ढंगसे देखूं, और वे मकानमें घुस गये।

— —

त्रेपनवां परिच्छेद

मि· विक्रम इस वार्तालापसे पूर्णरूपसे सन्तुष्ट हो चुका था, और उसने फिर अपनी प्यारी बहन एलिजाबेथको इस विषयको छोडकर कभी उत्तेजित तथा असन्तुष्ट नहीं किया; और वह भी यह जानकर प्रसन्न थी कि उसने भी इतना कह दिया है कि वह अब इस विषयमें चुपही रहेगा।

उसका और लीडियाका वहांसे प्रस्थान करनेका दिन शीघ्रही आ पहुंचा, और मिसिज बेनटको उनसे वियुक्त होनेके लिये मजबूरन उद्यत होना पडा। क्योंकि उसके पतिने किसी न किसी प्रकार उनके इस विचारको पुष्ट किया था कि वे सभी न्यूकेसलमें जावें और वहां बारह मास लगातार रहें।

मिसिज बेनटने चिल्लाकर कहा 'ओह, मेरी प्यारी लीडिया! हम फिर कब मिलेंगे?'

लीडिया–' ओः परमेश्वर, मैं नहीं जानती। शायद दो तीन वर्षतक हम न मिल सकें।

मिसिज बेनट– मेरी प्यारी, मुझे शीघ्र २ पत्र लिखते रहना।

लीडिया– शीघ्र २ लिखती रहूंगी। परन्तु आप जानती हैं विवाहिता स्त्रियोंको पत्र लिखनेका अधिक समय नहीं मिला करता। मेरी बहनें मुझे लिख सकती हैं; उन्हें इसके अतिरिक्त और काम भी करनेको कुछ नहीं है।

मि· विक्रमके ढंग अपनी पत्नीकी अपेक्षा अधिक मधुर थे। वह मुस्कराया, मधुर दृष्टिसे देखता हुआ अनेक मीठी २ बातें करता रहा।

मि· बेनटने कहा जब कि वे घरसे निकलेही थे– ' वह ऐसा पुरुष है

जैसा कि मैंने कभी नहीं देखा। वह हंसमुख प्रसन्न और हम सभीसे प्रेम करता है। मैं उसपर बहुतही अभिमान करता हूं। मैं तो सर विलियम ल्यूकसको एक बहुत अच्छा दामाद देनेके लिये विरोध करूंगा।

उसकी पुत्रीकी हानिने मिसिज बेनटको कुछ दिनोंके लिये बहुत सुस्त बना दिया था।

उसने कहा-' मैं प्रायः सोचती हूं, कि अपने मित्रोंसे वियोगसे बढकर इस संसारमें कोई दुःख नहीं है, उनके बिना मनुष्य बहुतही असमर्थ हो जाता है।

एलिजाबेथने कहा– इसीलिये मां, एक पुत्रीको विवाह देनेका यही तो परिणाम होता हैं। आपको इससे भी अधिक इस बातसे संतुष्ट हो जाना चाहिये कि आपकी शेष चारों पुत्रियां अभी अविवाहिताही हैं।

मिसिज बेनट– यह बात नहीं है। लीडियाने मुझे इसलिये नहीं छोडा कि वह विवाहिता हो चुकी है, प्रत्युत उसके पतिकी सेनाकी जगह दूर है। यदि वह समीप होती तो वह कभी इतनी जल्दी न जाती।

परन्तु यह घटना जो कि उसे उत्साह शून्य बना गई थी, शीघ्रही उसे ठीक कर गई। उसका मन पुनः आशासे आन्दोलित हो उठा, समाचार पत्रोंकी एक ऐसी खबरसे, जो कि उन दिनों प्रसारित हो उठी थी। नीदरफील्डकी गृह-रक्षिकाको उसके स्वामीने आज्ञा भेजी थी कि वह एक दो दिनमेंही वहां आ रहा है, और वह कुछ सप्ताह वहां शिकार खेलेगा। मिसिज बेनट सर्वथा आश्चर्यमें आ गई थी। उसने जेनकी ओर देखा और मुस्कराई, और प्रत्युत्तरमें सिर हिलाया।

' बहुत अच्छा, बहन ! मि· बिंगले यहां आनेवाले है। (क्योंकि इस समाचारको मिसिज फिलिप्स सबसे पहले लाई थी।) वाह यह तो बहुतही अच्छी बात है, यद्यपि मैं इसकी चिन्ताही कर रही थी। तुम जानती हो, वह हमारे लिये तो कुछ भी महत्व नहीं रखता, और मुझे विश्वास है कि मैं उसे

कभी देखना नहीं चाहती। तो भी वह नीदरफील्डमें यदि आना चाहता है तो उसका बहुत स्वागत है। और कौन जानता है कि क्या होनकार है ? परन्तु हमें इससे क्या। बहन ! तुम जानती हो हमने बहुत पहले निश्चय किया था कि हम इस विषयमें एक शब्द भी न कहेंगें। हां, तो क्या यह सर्वथा निश्चित है कि वह आ रहा है।

दूसरी ने उत्तर दिया—" तुम्हें इस पर विश्वास करना चाहिये क्योंकि मिसिज निकोल्स मैरिटनमें पिछली रात थी। मैंने उसे गुजरते हुए देखा था, और मैं स्वयं भी इसकी सचाईको जाननेके लिये बाहर गयी थी, और उसने कहा कि यह निश्चयही सत्य बात है। वह वीरवारको आ रहा है, अथवा शुक्रवारको भी संभावना है। वह बूचरके पास जा रही थी, उसने मुझे कहा कि वह मांसके लिये आज्ञा देने जा रही है कि उसे बुधवारको मांस चाहिये और उसने तीन बत्तखोंकी जोडियोंको मारनेके लिये रख छोडा था। उसके आनेकी खबर सुनकर मि. बेनटके चेहरेका रंग उड गया। कई महीने हो चुके थे जबकि उसने एलिजावेथको उसका नाम लिया था; परन्तु अब जबकि वे दोनों अकेली थीं उसने कहा :—

जेन—" मैंने देखा तुम आज मेरी ओर देख रही हो, लिजी ! मेरी पूफी ने यह खबर दी है; और मैं परेशान दिखती हूं, परन्तु यह कल्पना न कर लेना कि यह किसी मूर्खता के कारण है। मैं क्षणभरके लिये किं-कर्त्तव्य-बिमूढ हो गई थी, क्योंकि मैं अनुभव करती थी, कि मेरी ओर सभी देखेंगे। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि इस खबर ने न तो मुझे सुख दिया है नां ही दुःख। मुझे एकबातकी प्रसन्नता है—कि वह अकेलाही आ रहा है; परन्तु हम उसे कम ही देख सकेंगे। यह बात नहीं कि मैं उससे डरती हूं, परन्तु मैं अन्य लोगोंके आक्षेपों से डरती हूं।

एलिजवेथ नहीं जानती थी कि इससे क्या लाभ होगा। यदि उसने डर्बीशायरमें उसे न देखा होता, तो वह उसके आनेका वही प्रयोजन समझ लेती ज़ोकि कहा गया था। परन्तु वह अभी तक उसे जेनका पक्षपाती सम-

झती थी, और वह उसका वहां आना अपने मित्रकी आज्ञा से ही हुआ है, ऐसी संभावना करती थी, अथवा उसकी आज्ञाके बिना ही हुआ है यह भी समझती थी।

वह कभी २ सोचती थी-तो भी यह बडी कठिन बात होगी कि यह गरीब मनुष्य एक ऐसे मकानमें नहीं आसकता जोकि उसने कानूनी तौरपर किरायेपर लिया हुआ है, इन सब अनुमानों को उठाने के बिना, मैं उसे उसके अपने हालपरही छोड दूंगी।

उसकी बहन ने चाहे जो कुछ कहा था, और जो कि उसके आनेकी आशा में वास्तवमें उसके मनके भाव माने जा सकते थे। तो भी एलिजबेथ आसानीसे देखती थी कि उसकी भावनाएं इस बातसे कुछ उत्तेजित हो उठी हैं। वे बहुत बेचैन और असम हो उठी हैं। जोकि प्रायः पहले नहीं दीखती थी।

वही विषय जिसपर उनके मातापिता इतनी उत्सुकतासे १२ मास पूर्व बातें किया करते थे, अब फिर सामने आगया है।

मिसिज बेनट ने कहा—' मेरे प्यारे ? ज्योंही कि मि. बिंगले पहले के समान यहां आयेंगे निःसंदेह तुम उसकी सेवा करोगे।"

मि० बेनट—" नहीं नहीं। तुमने मुझे उससे मिलनेको गत वर्ष बार २ मजबूर किया था, और बचन दिया था, कि यदि मैं उसे मिलने गया तो वह मेरी पुत्रियोंमें से एकसे विवाह कर लेगा। परन्तु उसका फल कुछ न निकला। अब मुझे ऐसेही भेजना उचित न होगा। उसकी पत्नी ने उसे समझाया कि वह कितनी आवश्यक बात है। और जब वह नीदरफील्डको आयेगा तो पडौसके लोग क्या समझेंगे।

उसने कहा:—" मैं समझता हूं यह एक शिष्टाचार है। यदि वह हमारी समाजमें मिलना चाहता है, तो उसे खोज कर हमें मिलना चाहिये। वह जानता है हम कहां रहते है। मैं अपने पडौसियों के पीछे २ दौडनेमें अपने घण्टे नष्ट नहीं करना चाहता, वे सदाही जाते आते रहते हैं।

" अच्छा, जो कुछ मैं जानती हूं कि यह बहुत भारी असभ्यता होगी

यदि तुम उसकी सेवा नहीं करते। परन्तु तोभी, इससे मैं उसे भोजनपर यहां निमंत्रण करना तो बंद नहीं करूंगी, यह मैं निश्चय कर चुकी हूं। हमें शीघ्रही मिसिज लौंग और गिल्डिंग्स से मिलना चाहिये। हमारे साथ मिलके कुल १३ जने होंगे। इसलिये उसका भोजनकी मेजपर अवश्य स्थान रखा जा सकेगा।

इस प्रस्तावसे शान्त होकर, वह अपने पतिके अशिष्टाचारको भी सहने के योग्य हो गयी, यद्यपि यह जानना बहुतही संतोषका विषय था कि उसके सभी पडौसी मि० बिंगलेको इस प्रकार उनके यहां निमंत्रित हुआ देख सकेंगे और अपना निमंत्रण उसे इनसे पहले न दे सकेंगे। जब उसके आनेका दिन निकटही आ पहुंचा।

जेन ने अपनी बहनसे कहा, 'मैं तो बडी शोकातुर हो रही हूं कि अन्त को वह आ रहा है।' 'यद्यपि यह कुछ न हो सकेगा—मैं उसे पूर्ण उपेक्षा से देख सकूंगी—परन्तु मैं इस बातकी बार २ चर्चासे तंग आ चुकी हूं। मेरी माता की अच्छी भावनाएँ हैं—परन्तु वह जानती नहीं हैं—कोई भी नहीं जानता है—कि मैं उसकी बातों से कितना दुखी होरही हूं। जब वह नीदर-फील्डसे चला जायेगा, तब मैं बहुतही प्रसन्न हूंगी।'

एलिजाबेथ ने कहा-' मैं चाहती हूं कि तुम्हें शान्ति देनेको कुछ कहूं ?' परन्तु यह मेरी शक्ति से बाहरकी बात है। तुम्हें अवश्यही यह अनुभव करना चाहिये, और धैर्यका उपदेश एक दुःखीको दे कर सामान्य सन्तोष देना मुझे पसंद नहीं, क्योंकि तुम इतना धैर्य पहलेही रख रही हो।

मि. बिंगले पहुंच गये। मिसिज बेनट अपने नौकरोंकी सहायतासे जान गयी कि वह कब आया है। उसके आनेके समय तक वह अत्यन्त चिन्तित रही थी क्योंकि प्रतीक्षाका वह समय बीतनेमें ही न आता था। वह निमंत्रण देनेके दिन तक जो बीचके दिन पडते थे उनको किसी प्रकार लांघ न सकती थी, उसे उस दिनसे पहले उसके दर्शन होने की आशा न थी। परन्तु हर्ट-फोर्डशायरमें उसके पहुंचनेके तीसरे प्रातःकाल, उसने अपने शृंगारभवनकी

खिडकीमें से देखा कि वह वाटिकामें से हो कर घोडे पर चढ कर उनके घरकी ओर आ रहा है।

उसी समय उत्सुकताके मारे उसने अपनी पुत्रियोंको भी अपने आनंदमें भाग लेनेको बुलाया। जेन जानबूझ कर अपनी मेजपरही रही, परन्तु एलिजाबेथ अपने माताको संन्तुष्ट करने लिये, खिडकी तक गई। उसने देखा। उसने मि. डारसीको उसके साथ देखा, और फिर अपनी बहनके पास आकर बैठ गयी।

किट्टी ने कहा–'मां उसके साथ एक सज्जन और भी है, वह कौन हो सकता हैं।'

माता–'मेरी प्यारी, मैं समझती हूं, कोई परिचित होगा या अन्य होगा, मुझे निश्चय है कि मैं नहीं जानती हूं।'

किट्टी ने कहा—'ओह! यह तो उस जैसा ही लगता है जो उसके साथ पहले भी आया था। मि० क्या है उसका नाम--वही लंबा, मानी पुरुष।'

'भगवानको धन्यवाद है मि० डारसी! मैं शपथ खाती हूं, वही हो सकता है। ठीक है, निश्चयही मि० बिंगलेका कोई भी मित्र यहां सदाही स्वागत पायेगा, परन्तु अन्य कोई हो तो मैं कह देती हूं कि मैं उसका दर्शन भी पसंद नहीं करती।

जेन ने एलिजाबेथको आश्चर्यसे और भावभरी दृष्टि से देखा। यह डर्बीशायर में उनके थोडी से देरके परिचयको भी जानती थी; और इसलिये इस असमंजसको भी जानती थी जो कि उसकी बहनके लिये, विशेष करके उस विवरण सूचक पत्रको पानेके बाद पहली बार ही उसके आने से उत्पन्न हो गयी थी। दोनों बहनें पर्याप्त बेचैन हो उठीं। प्रत्येकको दूसरीसे सहानुभूति थी और निःस्संदेह अपनेसे भी थी। और उनकी माता ने मि. डारसीको उसके नापसंद आनेकी चर्चा भी चलादी, और अपना विचार भी कह दिया कि क्योंकि वह मि. बिंगलेका मित्र है इसी नाते वह उससे भद्रव्यवहार कर सकेगी, यद्यपि उसकी पुत्रियों ने उसकी बात नहीं सुनी थी। परन्तु एलिजाबेथको बेचैनीके कारण थे, जो कि जेन नहीं जान सकती थी! क्योंकि उसे

वह मिसिज गार्डनरका पत्र दिखलानेका अबतक भी साहस नहीं कर सकी थी नांही उसके विषयमें उसके विचारोंमें जो परिवर्त्तन हो चुका था, वही कह सकती थी। जेनके लिये तो वह एक ऐसा मनुष्य था जिसके प्रस्तावोंको वह अस्वीकार कर चुकी थी, और जिसकी योग्यताओंका उसने कम मूल्य लगाया था; परन्तु एलिजाबेथको अपने आप जो कुछ उसके विषयमें पता लग चुका था उससे तो वह यह समझती थी कि उसकी कृपाओंके बदलेमें हमारी सारी परिवारही उसका महान ऋणी है। उसका वह एक विशेष स्वार्थ से सम्मान करती थी, यद्यपि वह इतनी कोमल नहीं हुई थी, कमसे कम जितना जेन बिंगले के लिये अनुभव करती थी, उतनाही वह डारसीके लिये अनुभव करनेमें उचित और न्याय समझती थी। उसके आने पर उसके नीदरफील्ड आने पर, लौंगबौर्न आने पर-और स्वयं ही उसकी खोज करने पर, उसका आश्चर्य प्रायः एक समान उतनाही हो उठा था जितना कि उसने डर्बीशायरमें उसके बदले हुए व्यवहारसे जाना था।

उसका रंग जो उसके चेहरे परसे उड गया था, आधे मिनिट के लिये फिर लौट आया और पहलेसे भी अधिक चेहरा चमक उठा। और आनन्द से भरी हुई मुस्कराहट ने उसकी आंखोंमें कामना जगादी, ज्योंहि कि उसने उस समय की जगहको सोचा कि उसका प्रेम और इच्छाएं अब भी उसी प्रकार अचल होंगी, यद्यपि वह उसे पा नहीं सका है।

उसने कहा-'भला पहले देखूं तो यह किस प्रकार बर्त्तता है, इससे तुरन्त ही पता लग जायेगा कि उससे कितनी आशा की जा सकती है।'

वह जानबूझकर काम पर बैठ गयी, शांत होने की चेष्टा करने लगी, और अपनी दृष्टिको बिना उठाये हुए तबतक बैठी रही, जबतक एक नौकर ने द्वारपर पहुंचकर, उसकी उत्सुकतापूर्ण कुतूहलभरी दृष्टिको अपनी बहनके चेहरेपर डालनेको विवश न कर दिया। जेन पहले की अपेक्षा कुछ अधिक पीली हो गयी थी, परन्तु जितनी एलिजाबेथको आशा थी उससे अधिक

शान्त थी। उन महानुभावोंके आने पर उसका रंग और पीला पड गया, तो भी उसने अत्यन्त शान्तिपूर्ण ढंगसे उनका स्वागत किया। उससे न ता कोई क्रोध या अप्रसन्नता का चिन्ह ही उसने वहां प्रकट होने दिया।

एलिजाबेथ ने दोनों महानुभावों से इतना कम वार्तालाप किया जितना कि सभ्यता आज्ञा देती थी, और फिर अपने काम पर बैठ गयी। परन्तु उसकी उत्सुकता असामान्यरूपसे बढ गयी थी, जिसपर कि उसका कुछ वश न रहा था। उसने साहस करके एक वार डारसीको देखा। वह सदाकी भांति गंभीर था, और उसने उसे उससे अधिक गंभीर समझा, जैसाकि उसे हर्ट-फोर्डशायरमें देखा था और जितना कि उसने उसे पैम्बरलेमें देखा था। परन्तु, शायद, वह उसकी माताकी उपस्थितिमें इतना न प्रकट हो सकता था जितनाकि वह उनके मामा और मामीके सामने प्रकट हो सकता था। यह एक वेदनाजनक बात थी यद्यपि अनुचित न थी।

बिंगलेको भी उसने उसी प्रकार क्षणभरके लिये देखा, और उसी क्षण में उसने उसे उन दोनोंकी ओर प्रसन्नता तथा आनन्दभरी दृष्टिसे देखते हुए पाया। उसका स्वागत मिसिज वेनट ने सभ्यताकी पराकाष्ठा दिखाते हुए ऐसा किया कि जिससे उसकी दोनों पुत्रियां लज्जित हो गयीं, विशेष करके जब उसके मित्रके साथ उसने ठीक उल्टा, उपेक्षायुक्त तथा अति सामान्यसा सभ्यताका व्यवहार किया तथा उससे वार्त्तालाप किया।

विशेष करके एलिजाबेथको भेदभरा बर्त्ताव बहुतही अखरा, क्योंकि वह जानती थी कि उसकी माताको अपनी प्यारी पुत्रीकी घोर अप्रतिष्ठासे एक मात्र रक्षा करनेवाला होनेके कारण उसका अत्यन्त कृतज्ञ होना चाहिये था, नकि उसके साथ इतना रूखा व्यवहार करना चाहिये था।

डारसी भी, मि- गार्डनर और मिसिज गार्डनरके विषयमें उससे प्रश्न पूछनेके बाद जिसका उत्तर देनेमें वह गडबडा गई थी– और कुछ न बोला, वह उसके पास भी नहीं बैठा– शायद यही कारण उसके मौनका हो। परन्तु डर्बीशायरमें तो ऐसा नहीं हुआ था। वहांपर तो वह जब उससे बात नहीं

कर सकता था तो उसकी सहेलियोंसे बातें करता था। परन्तु अब तो उसकी वाणीके स्वर सुननेको भी कई मिनिट बीत गये थे; और जब वह अपनी उत्सुकताको नहीं रोक सकती थी तो वह उसके चेहरेपर दृष्टि डाल लेती थी। वह देखती थी कि वह प्रायः जेनकी ओर और उसकी ओर देखता था, और प्रायः लगातार भूमिकी ओर देखता रहता था। जब वे पहली बार मिले थे, उससे अधिक विवेक तथा उससे कम चिन्ता इसबार प्रसन्न करनेको प्रत्यक्ष प्रकट की जा रही थी। वह अपने इस व्यवहारपर स्वंयही क्रोध कर रही थी और निराश हो रही थी।

उसने कहा–' क्या मैं इससे उसके भाव बदल गये हैं ऐसा समझ लूं? यदि ऐसा होता तो वह यहां आताही क्यों ?"

वह अपने आपके सिवाय किसीसे भी बातें करनेकी दशामें नहीं था, और उससे स्वय बातें करनेमें वह अपने अन्दर साहसकी बहुत कमी अनुभव करती थी।

उसने उसकी बहनके विषयमें पूछा, परन्तु इससे अधिक कुछ न पूछ सकी।

मिसिज बेनटने कहा– ' आपको गये हुए मि. बिंगले, बहुतही काल बीत गया है।'

उसने झट इसे स्वीकार कर लिया।

' मैं डर गई थी कि तुम फिर कभी इधर न आओगे। लोग कहते थे कि तुम यह स्थान सर्वदाके लिये छोडकर मीचैलमस जा बसोगे; पर मुझे आशा थी, ऐसा न होगा। तुम्हारे जानेके बाद पडौसमें अनेक परिवर्त्तन हो गये हैं। मिस ल्यूकसका विवाह हो चुका है और वह गृहस्थी हो गई है, और मेरी पुत्रियोंमेंसे एकका विवाह हो चुका है। मैं अनुमान करती हूं, आपने भी यह सुन लिया होगा, निश्चयही तुमने समाचार पत्रोंमें भी इसे अवश्य पढा होगा। टाइम्समें तथा कोरियरमें यह छपा था, यद्यपि जैसे चाहिये था वैसा नहीं छप सका था। इतनाही कहा गया था 'अन्तको,

जार्ज विकम एस्क्वायरका (विवाह) मिस लीडिया बेनटसे (हुआ।) इसके पिताके विषयमें एक शब्द भी नहीं लिखा गया, नांही उसके निवासस्थानको लिखा गया, नांही कुछ और लिखा गया। यह मेरे भाई गार्डनरकाही तो लेख था, और मैं चकित हूं कि उसने इसको ऐसी भद्दी भाषामें कैसे लिखा। क्या तुमने इसे पढा था?"

बिंगलेने उत्तर दिया, हां उसने पढा था, और उसने बधाइयां दीं। एलिजाबेथ अपनी आंख ऊपर न उठा सकी। मि. डारसी कैसे दीख रहा था, इसीलिये वह नहीं जानती थी।

उसकी माता कहती जा रही थी–'निश्चयही, यह एक प्रसन्नताकी बात है कि एक पुत्री अच्छी प्रकारसे विवाहिता हो गई है,' वह कहती चली जा रही थी, 'परन्तु साथही, मि. बिंगले, उसे मुझसे दूर ले जाना भी बहुत कष्टदायक है। वे न्यूकेसलमें चले गये हैं, एक ऐसी जगह जो दूर उत्तरमें है। सुना है वे वहीं रहेंगें। पता नहीं कबतक उसकी सेना वहीं है। मैं समझती हूं तुमने भी उसके शायर छोडकर रेंगुलर सेनामें भर्ती होकर जानेके विषयमें सुनाही होगा। ईश्वरको धन्यवाद है। उसके वहां कुछ मित्र भी हैं, यद्यपि जितने उसको चाहियें उतने नहीं हैं।'

एलिजाबेथ जो इस बातका यश मि. डारसीपर डालना चाहती थी, इतनी लज्जित और दुःखित हुई कि वह अपने स्थानपर बैठे रहनेमें भी कष्ट प्रतीत कर रही थी। अन्तको उसके मुंहसे अपने आप इतनाही निकल सका, कि उसने बिंगलेसे यह पूछा कि क्या वह यहां कुछ दिन ठहरना चाहता है। उसने कहा, शायद कुछ सप्ताह।

उसकी माताने कहा— 'जब तुम अपने सब पक्षी मार चुको तो मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुमने मि. बेनटके यहांके भी मनचाहे पक्षियोंका अवश्य शिकार करना। मैं समझती हूं तुम्हें कृतज्ञ करनेको वह सब उत्तम स्थानोंपर तुमसे शिकार करवाकर बहुतही आनंद अनुभव करेंगें।

इस अनावश्यक और व्यर्थकी बातसे एलिजाबेथका दुःख और भी बढ

गया था। क्या गतवर्षके समान इस वर्ष भी वैसीही चापलूसीकी बातें शीघ्र २ की जायेंगी और उनका परिणाम भी क्या वैसाही निकलेगा। उसने उसी क्षण सोचा, ऐसी दुःखदायक बातोंसे जेन और मेरे दिन कभी भी प्रसन्नताके न आ सकेंगे।

उसने अपने आपसे कहा, 'मेरे हृदयकी पहली कामना यह है कि इन दोनोंमसे किसीके साथ हम अधिक न रहें। उनकी संगतिसे हमें प्रसन्नता नहीं मिल सकती प्रत्युत ऐसा दुर्भाग्यही मिलेगा। मैं इसको या उसको और न देख सकूं तो अच्छा हो।'

तो भी वह दुःख, जिसे आनंदके वर्ष कुछ कम न कर सकते थे, शीघ्रही प्राप्त हो गया यद्यपि इस सांसारिक सुखसे जो कि उसकी बहनकी सुन्दरताकी प्रशंसामें उसके पूर्व प्रेमीने की थी वह चमक उठा था। जब वह पहले पहल अन्दर आया था, उसने थोडीसी उससे बातें की थीं, परन्तु प्रत्येक पांच मिनिटके बाद वह उसकी ओर अधिक आकर्षित होता जा रहा था। उसने उसको उतनाही सुन्दर उतनाही उत्तम स्वभाव तथा उतनाही अविचलित पाया जितना कि गतवर्ष पाया था, यद्यपि वह उतनी बातें अब न करती थी। जेन यह चाहतींही थी कि उसमें कोई परिवर्त्तन होनेका उसे पता न लगे। जेनको पहलेके समान बातें करनेके लिये फुसलाया भी गया, परन्तु उसका मन इतना मग्न था कि वह कभी २ यह भी न जान सकती थी कि वह कब बोलते २ चुप हो गई है।

जब वे सज्जन जानेके लिये उठे, मिसिज बेनट अपने अभिलाषित शिष्टाचारके लिये सतर्क हो उठी, और उन्हें कुछ दिन बाद लॉंगबोर्नमें आने और भोजन खानेका निमंत्रण देने लगी।

उसने कहा– 'मि. बिंगले! तुम मेरे ऋणी हो, क्योंकि जब तुम गत सर्दियोंमें गये थे तो तुमने हमारे कुटुम्बके साथ दोबारा यहां आतेही भोजन करना स्वीकार किया था; देखो, मैं नहीं भूली, और तुम निश्चय जानो, तुम्हारे लौटकर न आने और वचन न निभानेसे मैं बहुतही निराश हो गई हूं।

इस बातको सुनकर बिंगले कुछ हतप्रभसा हो गया, और अपने विषयमें

कहने लगा कि कुछ आवश्यक कार्योंसे न आ सका। बादमें वे चले गये।

मिसिज बेनट इस बातको कहनेके लिये उद्यत थी कि वे उस दिन वहीं ठहरें और वहीं भोजन करें; परन्तु यद्यपि वह सदाही मेजको उत्तम भोजनसे सजाये रहती थी, परन्तु उसने एककी बजाय दो बार बातचीत करके अपने मनके भाव उसको जतलाने उचित समझे तथा एक ऐसे पुरुषकी क्षुधा और अभिमानको इतनेसे संतुष्ट कर लेना उचित समझा जो कि दस हजार पौंड प्रतिवर्ष कमाता था।

-०-

चौवनवां परिच्छेद

ज्योंहि कि वे गये, एलिजाबेथ अपनेको स्वस्थ करनेके लिये उठकर बाहर चली गई, क्योंकि वह एकान्तमें रहना चाहती थी जहांपर कि उसके विचारोंमें कोई बाधा न पहुंचा सके। मि. डारसीके बर्त्तावने उसे चौंका दिया था और उसपर प्रभाव डाला था।

उसने आपही कहा–' तो क्या वह यहां केवल मौन, गंभीर और उदास रहनेकोही आया था।

उसने इस विचारको पसन्द न किया। उसने फिर कहा–

' जब वह नगरमें था तो वह कोमल, प्रसन्नतादायक बनकर मेरे मामा और मामीको मिल सकता था, परन्तु मुझसे इस प्रकार क्यों नहीं मिला? यदि वह मुझसे डरता है तो यहां क्यों आया था? यदि वह मेरी कुछ भी पर्वाह नहीं करता; तो चुप क्यों बैठा रहा? सतानेवाला क्रूर मनुष्य है, मैं अब उसके बारेमें कुछ न सोचूंगी।

ऐसे विचार कुछ देरतक तो वह अपनी बहनसे छिपाकर करती रही थी कि उसी समय जेन वहां आ पहुंची। उसके प्रसन्न प्रफुल्लित मुखसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि वह अतिथियोंसे एलिजाबेथकी अपेक्षा अधिक सन्तुष्ट थी।

जेनने कहा-' अब जब कि पहली मुलाकात समाप्त हो चुकी है, मैं पूर्ण शान्ति अनुभव करती हूं। मैं अपने बलको जानती हूं. और फिर उसके आनेसे मैं कभी घबराऊंगी नहीं। मुझे प्रसन्नता है कि वह मंगलवारको यहां भोजन करेगा। यह तब सभी देख सकेंगें कि दोनों ओरसे हम इस प्रकार मिल रहे होंगें जैसे सामान्य और साधारण परिचयवाले लोग मिलते हैं।'

एलिजाबेथने हंसते हुए कहा- ' जी हां, बहुतही साधारण परिचयवाले लोग। ओह, जेन अपनेको संभाल।'

जेन-' मेरी प्यारी लिजी! तुम मुझे इतना दुर्बल न समझो कि मैं अब फिर भयग्रस्त हो जाऊंगी।'

एलेज -' मैं समझती हूं तुम बहुतही भयग्रस्त हो क्योंकि तुम उसे अपने प्रेममें अत्यधिक फंसाती जा रही हो।'

उन्होंने उन दोनों सज्जनोंको फिर मंगलवार तक नहीं देखा। इन्हीं दिनोंमें मिसिज बेनटने उन सब मंगल आशाओंको पुन: अपने मनमें जागृत कर लिया था, जो कि मि· बिंगलेकी आधे घंटेकी मुलाकातमें उसके मधुर, नम्र स्वभावसे उसपर प्रभाव डाल गईं थीं।

मंगलवारके दिन लॉंगबोर्नमें एक बडी पार्टी इकठ्ठी हुई; और वे दोनों सज्जन भी जो कि बडे शिकारी होनेके कारण बडे समयपालक थे, ठीक समयपर पहुंच गये। जब वे भोजनगृहमें पहुंचे तो एलिजाबेथ इस बातकी प्रतीक्षा करने लगी कि क्या बिंगले सदाके समान, अब भी उसकी बहनके पासही बैठेगा। उसकी दूरदर्शिनी माताके मनमें भी यही विचार थे। वह भी चाहती थी कि यह उसीके पास बैठे। कमरेमें घुसनेपर, वह दुविधामें पड गया; परन्तु जेनने सब ओर देखा और मुस्कराई। इससे निर्णय हो गया। वह उसीके पास आकर बैठ गया।

एलिजाबेथने विजयके भावसे, उसके मित्रकी ओर देखा। उसने इसे सज्जनोंवाली उदासीनतासे सह लिया था। इससे एलिजाबेथ जान गई थी कि बिंगलेको उसके मित्रकी इस आनन्दको मनानेके लिये, आज्ञा मिल चुकी

है। क्योंकि मि. बिंगलेने जब बैठतेसमय भयमिश्रित हंसीसे डारसीकी ओर देखा था, तो एलिजाबेथने उसकी आंखोंसे यह सब समझ लिया था।

उसका बर्त्ताव उसकी बहनसे भोजनके समय ऐसा था।जिससे यह प्रतीत होता था कि वह उसकी अधिक प्रशंसा करता है। एलिजाबेथने जान लिया कि यदि इन दोनोंको खुला मिलने जुलने दिया जाये तो इन दोनोंका जीवन बहुत आनन्दमय हो सकता है। उसने परिणामकी पर्वाह किये बिना उसके बर्त्तावसे आनंद अनुभव किया और जेनके लिये अच्छा अनुभव किया। यद्यपि वह इससे प्रसन्न हो रही थी परन्तु फिर भी कुछ सुस्त थी। मि० डारसी उससे इतनी दूर बैठा था जितनी दूर कि मेज उसे बैठा सकती थी। वह उसकी माताके एक ओर बैठा हुआ था। वह जानती थी कि ऐसी अवस्थामें दोनोंको कितनी कम प्रसन्नता हो सकती थी. या दोनों कितना कम लाभ उठा सकते थे। वह इतनी समीप नहीं थी कि उनकी परस्परकी बातचीतको सुन सकती परन्तु वह देख सकती थी कि वे परस्पर बहुत कम बोल रहे थे तथा शिष्टाचार सम्बन्धी व्यवहार भी बडे रूखेसे भावसे कर रहे थे। उसकी माताके अभद्र व्यवहारसे एलिजाबेथको बडी वेदना हो रही थी, वह चाहती थी कि समय मिलतेही वह उसे कह दे कि हम उसकी दयासे कितने अनुगृहीत और कृतज्ञ हो चुके हैं और हम इसको सभी अनुभव करते हैं।

उसे आशा थी कि सायंकालको शायद हमें मिलनेका अवसर मिल जावे, और इसप्रकार केवल औपचारिक नमस्कारादिके अतिरिक्त हम कुछ अधिक लाभदायक वार्त्तालाप भी कर सकें। यह उत्सुकता और बेचैनी जो उसके आनेकी प्रतीक्षामें एलिजाबेथको हो रही थी इससे उकताकर वह कुछ असभ्यसी हो उठी थी। वह उनके आनेकी प्रतीक्षामें द्वारकी ओर लगातार देख रही थी क्योंकि वही स्थान था जिसपर कि उस सायंकालका सारा आनंद निर्भर कर रहा था।

उसने कहा, 'यदि वह मेरे पास नहीं आया, तो मैं उसका ध्यान सदाके लिये छोड दूंगी।'

दोनों सज्जन आये और उसने समझा कि वह ऐसे देख रहा है मानों कि उसने उसकी सब आशाओंको सार्थक कर दिया है, परन्तु शोक! अन्य स्त्रियोंने उस मेजको चारों ओरसे ऐसा घेर लिया था; जहांपर कि मिसिज बेनट चाय बना रही थी और एलिजाबेथ काफी बना रही थी, कि वहांपर उसके पास एक कुरसी रखनेको भी जगह न बची थी। और उस सज्जनके आतेही, एक लडकीने एलिजाबेथके पास जाकर कानमें कहा—

'पुरुषोंको आकर हमारा काम नहीं बटाना चाहिये। हमने स्वयं काम करनेका निश्चय कर लिया है। हमें उनमेंसे किसीको भी यहां नहीं आने देना चाहिये क्या यह ठीक है?"

डारसी कमरेके दूसरी ओर चला गया। वह उसका पीछा अपनी आंखोंसेही कर रही थी। जिस २ से वह बातें करता था, उस २ से वह ईर्ष्या करती थी, काफी बनाते समय जो उसे सहायता देती थी उसपर भी वह बिगड उठती थी, और अन्तमें वह अपनेपर भी क्रोध करने लगी कि वह इतनी मूर्ख क्यों है।

'एक पुरुष, जिसे कि वह एक बार अस्वीकार कर चुकी है! उससे मैं अब फिर कभी कैसे यह आशा कर सकती हूं कि वह फिरसे मुझे प्रेम करेगा? क्या संसारमें कोई ऐसा भी पुरुष है जो एकही स्त्रीसे दुबारा प्रेमका प्रस्ताव करनेकी दुर्बलताका बिरोधी न होगा? क्या उनको अपनी मान-प्रतिष्ठाका कुछ भी ध्यान न होगा?'

इसी बीचमें वह अपना प्याला काफी लेनेको स्वंय उसके पास लेकर आया। इससे वह कुछ चेतन हो उठी; और उसने उससे वातचीत करनेका यही अवसर उत्तम जानकर उससे कहा—

'क्या आपकी बहन अभीतक पैम्बरलेमें ही है?'

डारसी-'हां, वह क्रिसमस तक वहीं रहेगी।'

एलिजा-'क्या वह सर्वथा अकेली है? क्या उसके सारे मित्र उसे छोड गये हैं?'

डारसी–' मिसिज एनेस्ले उसके साथही है। अन्य सब तीन सप्ताहोंके लिये स्काटबौरो चले गये हैं।'

उसे और कुछ कहनेको न सूझ सका, परन्तु यदि वह उससे बात करना चाहता तो उसे अधिक सफलता मिल सकती थी। वह उसके पासही खडा था, कुछ मिनिट तक वह चुप रहा, और अन्तमें उसी लडकीके एलिजाबेथके कानमें कुछ फिर खुसफुसानेके कारण वह वहांसे परे हट गया।

जब चायके पात्र हटा लिये गये और ताश खेलनेकी तैयारी हुई, तब सब स्त्रियां उठीं। तब एलिजाबेथको फिर उससे शीघ्रही मिलनेकी आशा जाग उठी। परन्तु उसकी माताने डारसीको खेलनेके लिये अपनी मंडलीमें बिठा लिया, और इस प्रकार एलिजाबेथकी यह आशा भी टूट गई। विभिन्न २ मेजोंपर खेलनेमें वे फसे रहे। तो भी दूर बैठे २ भी डारसीकी आंखे एलिजाबेथकी ओर बार २ जा टकराती थीं और इस प्रकार दोनोंही अच्छी तरह खेल न सकते थे।

मिसिज बेनट ने सोच रखा था कि नीदरलैंडके दोनों सज्जनोंको सायंके भोजनपर निमंत्रण देगी, परन्तु उनकी गाडी दुर्भाग्यसे आज्ञा मिलतेही वहां आ पहुंची थी, इसलिये उन्हें रोकनेका उसे कोई अवसर न मिल सका।

ज्योंहि कि वे सब अकेले हो गये, ' तब उसने कहा ' कहो लडकियो! आजका दिन कैसा बीता ? मैं समझती हूं नहीं २ मुझे निश्चय है कि असाधारण और अच्छी प्रकारसे यह दिन बीता है। भोजन इतनी उत्तमतासे सजाया गया था कि मैंने पहले ऐसा कभी नहीं सजाया था। कोफ्ते इतने अच्छे भूने गये थे कि सब ने कहा कि हमने पहले कभी ऐसे नहीं खाये थे। रसा तो इतना अच्छा बना था कि ल्यूकेससमें जो गत सप्ताह बना था उससे यह पचासगुना अच्छा था। और मि॰ डारसी ने भी स्वीकार किया कि मुर्गीका शोरबा इतना बढिया था कि उसने पहले कभी नहीं खाया था। और मुझे आशा है उसके यहां दो तीन फ्रेंच रसोइये अवश्य हैं। और मेरी प्यारी जेन, मैंने तुम्हें इससे अधिक सुन्दर कभी नहीं देखा

था। मिसिज लौंग भी ऐसाही कहती थी। क्योंकि मैंने उससे तुम्हारे विषय में पूछा भी था। और जानती हो उसने और क्या कहा था? 'आह! मिसिज बेनट, अन्तमें हम उसे नीदरफील्डमें ही ले जायेंगे!' निस्संदेह वह लेजा चुकी है। मैं समझती हूं मिसिज लौंग इतनी अच्छी स्त्री हैं जितनी कि कोई और हो सकती हैं; और उसकी भानजियां भी बडी सुन्दर सभ्य लडकियां हैं। मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूं।'

संक्षेप में कहें तो मिसिज बेनट अत्यन्त प्रसन्न थी। उसने बिंगलेका जेनके साथ व्यवहार देखा था। उसे निश्चय हो गया था कि अन्तको वह उसे प्राप्त कर लेगी और उसकी अपने कुटुम्बके लाभके लिये आशाएं, युक्तियों से ऊपर उठकर निश्चयको पहुंच चुकी थीं, और इससे वह बहुत प्रसन्न थी। परन्तु उसे इतना खेद अवश्य था कि वह दूसरे दिन अपने प्रस्तावोंको सुनाने के लिये बिंगलेको यहां न पायेगी।

मिस बेनट ने एलिजाबेथसे कहा —'यह दिन बहुत ही अनुकूल रहा। यह पार्टी इतनी अच्छी तरह चुनी गयी थी कि एक दूसरे के बहुतही अनुकूल थी। मुझे आशा है हम प्रायः परस्पर मिला करेंगे।'

एलिजाबेथ मुस्करा दी।

जेन—'लिजी! तुम्हें ऐसा न करना चाहिये। तुम्हें मुझपर सन्देह न करना चाहिये इससे मैं भर जाती हूं। मैं तुम्हें निश्चय दिलाती हूं कि जैसे एक बुद्धिमान नौजवान बातोंमें आनंद लेता है मैं भी उसी प्रकार उसकी बातोंमें आनंद लेनेका अभ्यास करने लगी हूं, बस इससे अधिक और कुछ न समझो। अब जैसे उसके व्यवहार हैं मैं इन्हें सर्वथा पसंद करती हूं। क्योंकि अब वह यह दिखा रहा है, कि उसने मुझसे प्रेम करनेके लिये कभी इरादा नहीं किया था। यह बात अवश्य है कि उसे उत्तम संबोधनों से दूसरों को प्रसन्न करना आता है और उसके मनमें दूसरोंको प्रसन्न करने की अन्योंकी अपेक्षा अधिक इच्छा भी होती है।'

उसकी बहन ने कहा—'तुम सचमुच बडी क्रूर हो, तुम मुझे मुस्कराने

भी नहीं देती हो, और मुझे इस विषयमें बार २ उत्तेजित करती हो।'

जेन-'कुछ स्थानों में विश्वास करना कठिन होता है; और अन्य स्थानों में असंभव। परन्तु तुम मुझे इस बातका प्रलोभन क्यों देती हो कि मैं जितना स्वयं अनुभव करती हूं उससे भी अधिक स्वीकार कर लूं?'

एलिजा-'यही तो प्रश्न है जिसके विषय में उत्तर देने में मैं बड़ी कठिनता अनुभव कर रही हूं! हम सिखानेको प्यार करती हैं, परन्तु हम केवल उतना ही सिखा सकती हैं जो कि जानने के योग्य नहीं होता। मुझे क्षमा करना, और यदि तुम उदासीन रहनेका हठ करोगी, तो मुझपर विश्वास न कर पाओगी।

—०+०—

पचपनवां परिच्छेद

इस भेंटके कुछ दिन पीछे मि. बिंगलेको फिर बुलावा आया, परन्तु अकेले आनेके लिये। उसका मित्र उसी प्रातःकाल लंदन चला गया था, परन्तु दस दिनके बाद वहां लौट कर आनेवाला था। वह उनके साथ एक घंटे से भी अधिक देर तक बैठा और वास्तवमें बहुत ही अच्छे ढंगसे व्यवहार करता रहा। मिसिज बेनट ने उसे खाने के लिये अपने साथ बुलवाया परन्तु उसने अनेक प्रकारकी मधुर बातों से उन्हें कहा कि मुझे कहीं और जाना है।

उसने कहा—दूसरी बार जब तुम बुलाये जाओगे. मुझे आशा है हम अधिक सौभाग्यशाली होंगे।

वह तो सदाही प्रसन्न होनेवाला था इत्यादि २:, और यदि वह उसे छुट्टी दे देती तो शीघ्रही उन दोनोंकी सेवा करनेका उसे अवसर प्राप्त हो जाता।

'क्या तुम कल आसकोगे?'

'हां।' कलके लिये तो उसने कहीं समय नहीं दे रखा था, इसलिये उसके निमंत्रणको उसने प्रसन्नतासे स्वीकार कर लिया।

वह आया, और ऐसे अच्छे समयमें आया जबकि किसी भी लेडी ने

अभी तक अपना वेषविन्यास नहीं किया था। मिसिज बेनट अपनी गाऊन पहने, आधे बाल बनाये हुए चिल्लाती हुई अपनी लडकीके कमरे में भागी—

'मेरी प्यारी जेन, जल्दी करो, और शीघ्र नीचे आओ। वह आ पहुंचा है—मि. बिंगले आ पहुंचा है। हां, हां, निश्चयही। जल्दी करो, शीघ्रता करो—यहां साराह, शीघ्र इसी क्षण मिस बेनटके पास पहुंच और उसे गौन पहनाने में सहायता कर। मिस लिजीके बालोंकी इस समय पर्वाह न कर।'

जेन ने कहा—तय्यार होते ही हम नीचे आयेंगी, परन्तु मैं कहती हूं किट्टी हम सबसे आगे जा पहुंचेगी क्योंकि वह आधा घंटा हुआ ऊपर गयी थी।'

'ओह ! किट्टीको फांसी दो ! उसे इस बात से क्या मतलब ? आओ जल्दी करो, जल्दी करो ! तुम्हारा कंघा कहां है मेरी प्यारी ?

परन्तु जब उसकी माता चली गयी, जेन ने अपनी किसी बहनके बिना नीचे जाना उचित न समझा।

सायंकालको यही उत्सुकता फिर देखी गयी कि वे दोनों अकेलेमें छोड दिये जांये। चायके बाद, मि. बेनट पुस्तकालयमें चला गया, उसका यही स्वभाव था, और मेरी ऊपर जाकर अपने काममें लग गयी। पांचमें से दो विघ्न तो यों हट गये। मिसिज बेनट एलिजाबिथ और कैथराइनको देखती हुई बहुत देर तक बैठी रही और घूरती रही, परन्तु उन पर कोई विशेष प्रभाव न होने दिया। एलिजाबेथ इस बातको न देखती, परन्तु अन्त में किट्टी ने देखा और वह बडी अनजानसी बनकर कह बैठी; 'क्या बात है मां ? तुम मेरी ओर क्यों घूर रही हो ? मैं क्या करूं ?'

'नहीं बच्ची, कुछ नहीं। मैं तुम्हें नहीं घूरती हूं।'

फिर वह पांच मिनिट और चुपचाप बैठी रही, परन्तु ऐसा अमूल्य समय व्यर्थ जाता देख, वह उठी और किट्टीसे कहने लगी :—

'यहां आओ, मेरी प्यारी; मैं तुमसे बात करना चाहती हूं,' यह कह कर

उसे कमरे से बाहर ले गयी। उसी समय जेन ने एलिजाबेथको देखा मानों कि उसे इस प्रकारके व्यवहारसे कष्ट हो रहा हो। कुछ ही क्षण में मिसिज बेनट ने आधा द्वार खोला और चिल्लाई :—

'लिजी, मेरी प्यारी, मैं तुमसे बातें करना चाहती हूं।'

एलिजाबेथको भी जाना पडा।

ज्योंहि कि वह हालमें आई उसकी माता ने उससे कहा–'तुम्हें पता है, मैं उन दोनोंको अकेले छोड़ना चाहती हूं। किट्टी और मैं ऊपरके शृंगार-भवन में जा कर बैठेंगी।'

एलिजाबेथ ने अपनी मातासे युक्तियां देनी उचित न समझीं, परन्तु तबतक चुपचाप हालमें ही रही जबतक किटीके साथ उसकी मां उनकी आंखों से ओझल न हो गयी, तब वह ड्राईंग रूम में लौट कर आ गयी।

मिसिज बेनटकी आजके दिनके लिये बनायी गयीं सब योजनाएं असफल रहीं। बिंगले प्रभावशाली आकर्षक युवक अवश्य था, वह गुणी था परन्तु वह उस की पुत्रीका पहले से ही प्रेमी नहीं बन चुका था। उसकी मधुर तथा आनंद दायिनी संगति उनके सायंकी गोष्ठीको बहुत उत्तम बना चुकी थी, परन्तु उस ने उसकी माताके अनुचित आज्ञायुक्त अधिकारपूर्ण मूर्खता से भरे हुए अनेक ऐसे आक्षेपोंको केवल इसलिये सहलिया कि वह उसकी पुत्रीका कृतज्ञ रहना चाहता था।

उसे सायंकालके भोजनके निमंत्रणकी आवश्यकता न थी। और इससे पूर्व कि वह जाता निमंत्रण दे दिया गया था। उसने स्वयं तथा मिसिज बेनट ने यह काम मिलकर ही कर लिया था। क्योंकि उसे मिसिज बेनटके पतिके साथ मिलकर दूसरे प्रातःकाल शिकार खेलनेको कहा गया था।

इस दिनके बाद जेन ने अपनी उपेक्षाके विषयमें कुछ नहीं कहा। बिंगलेके विषयमें दोनों बहनों ने कुछ बातचीत न की; परन्तु एलिजाबेथ बिस्तरे पर जाकर बहुत प्रसन्न हुई कि सब काम शीघ्र २ अच्छी प्रकार से

होता जाता है। और डारसीके लौटनेके समयके अन्दरही हो जायगा। उसने समझलिया था कि उस सज्जनकी सम्मातिसे ही सब कुछ हो रहा है।

बिंगले अपने ठीक समय पर पहुंच गया था। उसने मि. बेनटके साथ प्रातःकाल शिकारमें बिताया। बेनटको उससे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। क्यों कि बिंगले में कोई कमी तथा दुर्गुण न था, इसलिये बेनट उससे मिलकर असाधारणरूपसे बातचीत करता रहा। बिंगले उसके साथ दोपहरके भोजन के लिये लौटा। सायंकालको मिसिज बेनटका निमंत्रण फिर मिल गया और उसमें भी अन्य सभीको अलग रखकर केवल उन दोनों--बिंगले और जेनको मिलनेका उपक्रम सोचा गया था। एलिजाबेथ एक पत्र लिखना चाहती थी. वह चायपानके बाद प्रातराशवाले कमरेमें इसलिये गई। यद्यपि अन्य सब तो ताश खेलनेको बैठ गये थे पर वह अपनी माताकी योजनाके विरुद्ध जाना न चाहती थी।

परन्तु जब वह पत्र लिखकर समाप्त कर चुकी तब ड्राइंगरूममें लौट आई। और वहां तो उसने अत्यन्त आश्चर्यसे देखा कि, उसकी माता उसके लिये बडी चिन्तित हो रही थी। उसने द्वार खोलतेही देखा, कि उसकी बहन और बिंगले दोनों अंगीठीपर इकट्ठे झुके हुए खडे हैं; मानों हार्दिक वार्तालापमें मग्न हैं। और इससे भी संदेह न होता हो तो दोनोंके मुख, जैसे कि शीघ्रतासे उन्होंने मुडकर पीछे देखा और एक दूसरेसे हटकर दूर हो गये, इससे सब कुछ पता लग गया था। उनकी दशा बडी भद्दी थी, परन्तु जेनकी तो, उसकी समझमें, अधिक भद्दी थी। दोनोंमेंसे किसीने एक बिन्दु विसर्ग भी न कहा। एलिजाबेथ वहांसे जानेही लगी थी, जब कि बिंगले और जेन जो कि बैठे हुए थे, एकदम उठ खडे हुए और बिंगलेने कुछ कानाफूसी जेनसे की और कमरेसे बाहर भाग गया।

जेन एलिजाबेथसे कुछ छिपा न सकती थी, जब कि उसपर विश्वास करनेसे उसके आनंदकी वृद्धि होती थी। उसने तुरन्त उसको आलिंगन करते हुए स्वीकार किया कि, वह इस संसारमें सबसे अधिक प्रसन्न प्राणी है।

उसने कहा–' यही बहुत है, यही बहुत अधिक है। मैं इसके योग्य

नहीं। ओह ! संसारमें सब क्यों इतने प्रसन्न नहीं।'

एलिजाबेथने भी खूब बधाइयां दीं। इतनी प्रसन्नता, उत्साह तथा जोशसे बधाई दीं कि जो शब्दोंमें वर्णन नहीं की जा सकतीं। दयापूर्ण प्रत्येक वाक्य जेनको प्रसन्नता दे रहा था। परन्तु वह अपनी बहनके साथ रहना न चाहती थी, और इस समय अधूरी बातको कहना भी न चाहती थी।

उसने कहा, 'मैं अपनी माताके पास अभी जा रही हूं, जो कि मुझे इतना प्यार करती है। मैं चाहती हूं कि औरोंके मुखसे सुननेसे पहले मैंही माताको यह सुसमाचार स्वयं सुना सकूं। वह तो मेरे पिताके पास पहलेही चला गया है। ओ लिज़ी ? यह जानना कि मैं अपनी माताको क्या कहना चाहती हूं, सब परिवारकोही अत्यन्त प्रसन्न कर देगा। मैं इतनी प्रसन्नता कैसे सहन कर सकूंगी ?'

'फिर वह अपनी माताकी ओर शीघ्रतासे गई, जिसने जानबूझकर ताशकी मंडलीको तोड दिया था और किटीके साथ ऊपरकी मंजिलमें बैठी थी।

एलिजाबेथ अकेली रह गई थी। वह यह जानकर प्रसन्न थी कि इतने महीनोंसे जिस काममें विघ्न पड रहे थे अन्तको वह काम सिद्ध हो गया।

उसने कहा 'और उसके सभी मित्रोंकी उत्सुक सद्भावनाओंका फल मिल गया है, और उसकी बहनकी भूलों, झूठों और चालबाजियोंका भी परिणाम बडाही आनंददायक, बुद्धिमत्तापूर्ण तथा युक्तियुक्त निकल आया है।'

कुछही मिनिट बाद वह बिंगलेसे मिली जो कि उसके पितासे कुछ देर तक मिलकर सफल होकर लौटा था।

उसने शीघ्रतासे द्वार खोलते हुए कहा–'तुम्हारी बहन कहां है ?'

एलिजा–'वह मेरी माताके पास ऊपर है। वह एक क्षणमेंही नीचे आ जायेगी, समझे।'

बिंगलेने तब द्वार बंद कर दिया, और उसके पास आकर, बहनकी शुभकामनाएं और स्नेह मांगा। एलिजाबेथने हार्दिक आनंद और प्रसन्नता उनके परस्पर विवाह करनेमें प्रकट की। उन्होंने बडी प्रसन्नतासे हाथ मिलाये

और तब तक जब तक कि उसकी बहन नीचे न आगई उसने बिंगलेसे उसके आनंदकी सभी बातें सुनलीं। उसने उसकी प्रसन्नता, जेनकी संपूर्णता, और सुन्दरताको सुना, यह भी सुनकर वह प्रसन्न हुई कि वह सच्चा प्रेमी है।

उस सारे परिवारके लिये आजकी सायंकाल असाधारण आनंद देनेवाली थी। मिस बेनटके मनमें सन्तोषके बढ जानेसे उसके मुखपर पहलेसे भी अधिक सौंदर्यका तेज झलकने लगा था। वह पहलेसे भी अधिक सुन्दर लग रही थी। किटी मुस्करा रही थी और आशामें थी कि मेरी बारी भी अब शीघ्रही आवेगी। मिसिज बेनटने किटीको तो कुछ न कहा पर व्यर्थमें बिंगलेसे आध घण्टा बातें करती रही। जब मि. बेनट उसके साथ सायंकालके भोजनमें बैठा तब उसकी वाणी और व्यवहारने स्पष्ट बतला दिया कि वास्तवमें वह कितना प्रसन्न था।

उसने इस विषयमें एक शब्दभी न कहा। जब वह अतिथि रातको जानेकी आज्ञा लेकर वहांसे चला गया तो उसने अपनी पुत्रीके पास जाकर कहा--

'जेन, मैं तुम्हें बधाई देता हूं, तुम एक बहुत प्रसन्न स्त्री बनोगी।'

जेन तुरन्त उसके पास गई, उसका चुंबन किया और उसकी सज्जनताके लिये उसको धन्यवाद दिया।

उसने उत्तरमें कहा--' तुम बहुत अच्छी कन्या हो, और मैं तुम्हें इस प्रकार अच्छी तरह संबंध पा जानेपर बहुत आनंद अनुभव कर रहा हूं। मैं तुम दोनोंका जीवन उत्तम गुजरेगा ऐसा निश्चित समझता हूं। तुम्हारे मिजाज एकसे हैं। तुममेंसे प्रत्येक एक दूसरेको चाहता है। तुम न तो इतन सरल हो कि प्रत्येक नौकर तुम्हें ठगले, और न इतने उदार हो, कि तुम अपनी आयसे अधिक व्यय करोगे।'

जेन- पर मैं ऐसा नहीं समझती। धनके विषयमें अदूरदर्शिता या अविचारपूर्ण होना मेरे लिये ठीक न होगा।'

उसकी पत्नीने चिल्लाकर कहा.' अपनी आयसे अधिक व्यय करोगे। मेरे प्यारे मि. बेनट, तुम क्या कह रहे हो? क्यों, उसे वर्षमें ४,५ हजार रुपयेकी आय

होती है, शायद अधिकही होती हो'। फिर अपनी पुत्रीको संबोधन करने लगी। 'ओ, मेरी प्यारी, प्यारी जेन, मैं बहुतही प्रसन्न हूं! मैं समझती हूं आज मैं एक पलभरको भी न सो सकूंगी। मैं जानती थी यह कैसे होगा। मैं सदा कहती थी कि अन्तमें यह होनाही चाहिये। मैं जानती थी तुम्हें सुन्दरता निरर्थक नहीं मिली है। मुझे याद है ज्योंहि कि मैंने उसे हर्डफोर्ड शायरमें गत-वर्ष आनेपर पहले देखा था, मैंने तभी सोचा था कि यह कितना अच्छा हो कि तुम दोनोंका संबंध हो जाये। ओह? सारे संसारमें सबसे बढकर वह सुंदर युवक है।

विकम, लीडिया, सब भूल गये थे। जेन उसकी विशेष प्रिय थी और जगतमें असाधारण सुन्दरी थी। इस समय तो वह किसी औरको न चाहती थी। उसकी छोटी बहनोंने उससे प्रसन्न होनेकी बातचीत चलाई क्योंकि भविष्यमें उनकी प्रसन्नताका भी वही कारण बन सकती थी।

मेरीने नीदरफील्डके पुस्तकालयका प्रयोग कर सकनेके लिये उससे लिखित आज्ञा मांगी और किटीने प्रत्येक सर्दीकी ऋतुमें कुछ नाचोंका प्रबंध करनेके लिये प्रबल रूपसे प्रार्थना की।

बिंगले, निस्सन्देह, अबसे लॉंगबोर्नमें प्रतिदिन आने लगा था। वह प्रातः प्रातराशसे पहले आता था और सायंकाल भोजनके बाद चला जाता था। कभी २ इसमें पडौसके असभ्य पुरुष विघ्नका कारण बन जाते थे। जब कि वे उसे कभी निमंत्रण कर बैंठते थे और उसे भी मजबूर होकर उसे स्वीकार करना पडता था।

एलिजाबेथको अब अपनी बहनसे बातें करनेका बहुत कम समय मिलता था, क्योंकि जब वह उपस्थित रहता था, तब जेन किसी औरकी ओर ध्यान न दे सकती थी। परन्तु जब उन दोनोंके वियोगका समय होता था उस समय वह उनको लाभप्रद सिद्ध होती थी। जेनकी अनुपस्थितिमें वह सदा एलिजाबेथसे वार्त्तालाप करके प्रसन्न होता था, और जब बिंगले चला जाता था, जेनभी उससे बातें करके आनन्द प्राप्त करती थी।

एक सायंकाल जेनने कहा- 'उसने मुझे यह कहकर अति आनन्दित कर दिया है कि वह गत बसन्तऋतुमें मेरे उसीके नगरमें रहनेकी बात सर्वथा नहीं जानता है। मैं इसे संभव नहीं मानती।'

एलिजाबेथने उत्तर दिया—'मैं भी संदेह करती हूं। परन्तु वह इस बातसे क्या समझता है।'

जेन—'यह सब उसकी बहनोंका काम है। मेरे साथ उसके परिचय करानेमें वे सचमुच मित्र नहीं सिद्ध हुई थीं। इसके लिये मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं हैं। क्योंकि उसने जिसमें अपना अधिक लाभ देखा उसको चुन लिया। परन्तु जब वे देखेंगी और मुझे विश्वास है; कि उनका भाई मेरे साथ प्रसन्न है तो वे भी संतुष्ट हो जायेंगी। और हम भी फिर अच्छी प्रकारसे आपसमें मित्र बन जायेंगी। यद्यपि हम वैसी मित्र न बन सकेंगी जैसी कि हमें आरंभमेंही बन जाना चाहिये था।'

एलिजाबेथने कहा, 'यह तो पहली बारही मैंने तुमसे ऐसी कठोर वक्तृता सुनी है। अच्छी लडकी! यह मुझे दुःखी करनेवाली बात है। निस्सन्देह मिस बिंगले छला हुआ प्राणी है।'

जेन—'लिजी! क्या तुम इसपर विश्वास करती हो, कि जब वह नवम्बरमें नगरमें गया था, वह वास्तवमें मुझसे प्रेम करता था। और मेरे उदासीन रहनेके कारणके बिना उसका इधर आना किसीने नहीं रोका था।'

एलिजा—'निश्चयही, उसने एक भूल की थी, परन्तु यह उसकी लज्जाही थी जिसके कारण वह न आ सका था।'

इसने स्वाभाविक रूपसे जेनकी ओरसे एक प्रशंसात्मक वक्तृता दी थी उसके डरपोकपनपर, और वह अपने अच्छे गुणोंको थोडाही महत्व देता था।

एलिजाबेथ यह जानकर प्रसन्न हुई कि उसने अपने मित्रके हस्तक्षेपको धोखा नहीं दिया, क्योंकि यद्यपि इस संसारमें जेन अत्यन्त उदार और क्षमा योग्य हृदय रखती थी, परन्तु वह जानती थी कि यह एक ऐसी परिस्थिति थी जिससे कि वह उसके विरुद्ध हो सकती थी।

जेनने चिल्लाकर कहा—'मैं सचमुचही अत्यन्त भाग्यशालिनी हूं। ओलिजी, मैं अपने कुटम्बमेंसे अकेलीही क्यों ऐसी बन गई और क्यों सबसे अधिक आशीर्वादें प्राप्त कर गई? कितना अच्छा होता कमसे कम मैं तुम्हें भी ऐसाही प्रसन्न देख सकती? यदि तुम्हें भी ऐसा वर मिल जाता।'

एलिजाबेथने कहा:—यदि तुम मुझे ऐसे चालीस मनुष्यभी दे देतीं तो भी मैं तेरे सदृश कभी प्रसन्न न हो सकती थी। जब तक मैं तेरी आकृति रूप, रंग, गुण न पाऊं तब तक तेरी प्रसन्नता कैसे पा सकती हूं। नहीं २ मुझे अपने हालपर ही रहने दो, और यदि कभी मेरा अच्छा भाग्य जागा, मैं किसी अन्य मि. कोलिन्ससे समयपर मिल लूंगी।

लाँगबोर्न परिवारमें यह बात देरतक छिप न सकती थी। मिसिज बेनटने मिसिज फिलिप्सके कानमें कहही दी, और उसने बिनाही उसकी आज्ञा लिये अपने मैरिटनके सभी पडौसियोंके कानोंमें कह दीं।

अब तो बेनट परिवारको संसारमें सबसे अधिक सौभाग्यशाली मान लिया गया, यद्यपि कुछही सप्ताह पूर्व, जब कि लीडिया भाग कर गई थी, उसे सामान्यतया सबसे अभागा परिवार कहा जाता था।

——

छप्पनवां परिच्छेद

एक प्रातःकाल, जबकि बिंगले का जेनके साथ संबंध निश्चित हुए २ लगभग एक सप्ताह हो चुका था, तब वह और कुटुम्बकी स्त्रियां भोजनगृहमें बैठी हुई थीं। उनका ध्यान एकदम एक गाडीके शब्दकी ओर गया; और उन्होंने खिडकीमें से देखा कि एक चार घोडोंवाली गाडी मैदानकी ओर चली आ रही है। अतिथियोंके आनेका यह समय नहीं था, और पडौसियोंकी बातका उत्तर दिये बिना ही इस गाडीका यात्री यहां आ पहुंचा था। घोडे खोल दिये थे। परन्तु इस घरके नौकरों को न तो उस गाडीका, नांही उसके सवार

का कुछ पहलेसे परिचय था। क्योंकि यह निश्चित था कि कोई तो आया ही है। बिंगले ने तुरन्त मिस बेनट से कहा कि और किसीका इस तरह हमारे बीच घुसते आना उचित नहीं होगा, इसलिये वह उसे अपने साथ लेकर झाडियों की ओर चला गया। वे दोनों चले गये; शेष तीनों वहीं रह गयीं थीं। यद्यपि वे कुछ सन्तुष्ट थीं, कि इतनेमें द्वार खुला और उनका अतिथि अन्दर घुसा। यह लेडी कैथराइन डीबौरो थी।

निःस्सन्देह, उसके आने पर सब चकित हो उठे। क्योंकि उन्हें तो उसके आनेकी कभी आशा ही नहीं थी। और मिसिज बेनट और किटी तो उसे सर्वथा नहीं जानती थीं, एलिजाबेथ कुछ जानती थी।

वह असाधारण रूपमे कुछ क्रुद्धसी हुई २ घरमें घुसी, इसलिये उसने एलिजाबेथके प्रणामका उत्तर भी न दिया था। हां तनिकसा सिर हिला दिया था, वह बिना एक शब्द भी बोले आकर बैठ गयी। उस श्रीमतीके प्रवेश करते समय एलिजाबेथ ने अपनी मातासे उसके नामका परिचय करा दिया था, यद्यपि इस परिचयके लिये उससे किसीने भी प्रार्थना न की थी।

चकित हुई २ मिसिज बेनट, ऐसे माननीय अतिथिको अपने घरमें पाकर फूली न समाई, उसने अत्यन्त नम्रता से उसका स्वागत किया। क्षण मात्र चुपचाप बैठ; उसने बडी कठोरता से एलिजाबेथको कहा :—

'मुझे आशा है तुम कुशलसे हो मिस॰ बेनट। मैं समझती हूं वह लेडी तुम्हारी मां है?'

एलिजाबेथ ने उत्तरमें दोनों बातें नम्रतासे स्वीकार कीं।

कैथराईन—'और वह, मैं समझती हूं, तुम्हारी बहन है?'

मिसिज बेनट ने उत्तर दिया—'जी हां, श्रीमतीजी!' साथही लेडी कैथराइनसे बातें करके वह मनमें बहुत ही प्रसन्न हो रही थी। यह मेरी एक को छोड कर सबसे छोटी पुत्री है। मेरी सबसे छोटी पुत्रीका अभी विवाह हुआ है, और मेरी सबसे बडी पुत्रीका भी शीघ्रही विवाह होने वाला है। इस समय वह एक नौजवानके साथ टहलने गयी है। मुझे आशा है कि वह

नौजवान शीघ्रही हमारे कुटुम्बका अंग बनने वाला है।'

'तुम्हारा बाग बहुत छोटासा है,' लेडी कैथराइन ने कुछ क्षण चुप रहकर कहा।

मिसिज बेनट—'मेरी श्रीमतीजी ? रोजिंग्सके मुकाबले में तो यह कुछ भी नहीं है। यह तो मैं कहनेका साहस कर सकती हूं; परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, कि यह सर विलियम ल्यूकैसिसकी बाटिकासे तो बहुत बडा है।'

कैथराइन—'ग्रीष्म ऋतुकी सायंकालोंमें इस कमरेमें बैठना तो बहुत ही कष्टदायक होता होगा, क्योंकि खिडकियां तो पूरी पश्चिमकी ओर हैं।'

मिसिज बेनट ने उसे विश्वास दिलाया कि भोजनके बाद वे वहां कभी भी नहीं बैठी और फिर कहा:–

क्या मैं आप श्रीमती जी से इतना पूछनें की स्वतंत्रता ले सकती हूं कि श्रीमती जी के आनेके समय मिस्टर और मिसिज कालिन्स अच्छे थे।

'हां, बहुत अच्छे थे। मैंने उन्हें गतरात्रिसे पहली रात देखा था।'

एलिजाबेथको आशा थी कि वह अब शारलोटसे आये हुए एक पत्रको दिखायेगी, क्योंकि उसके आनेका यही कारण संभव हो सकता था, परन्तु कोई पत्र न दिखाया गया, और वह इससे बडी बेचैन हो गयी।

मिसिज बेनट ने, बडी सभ्यता दिखाते हुए, श्रीमती जी से कुछ जल-पानकी प्रार्थना की। परन्तु लेडी कैथराईन ने दृढतासे, बिना किसी नम्रताके कुछ भी ग्रहण करना अस्वीकार कर दिया, और फिर उठते हुए एलिजाबेथ से यों कहा :—

'मिस बेनट ! तुम्हारे इस मैदान के एक ओर कुछ जंगली पौधे उगे हुए हैं, उनसे यह भद्दा हो गया है। मैं इसमें एक चक्कर लगाकर प्रसन्न हूंगी यदि तुम मेरे साथ चलनेकी कृपा करो।'

माता ने चिल्लाकर कहा :–'जाओ ! श्रीमती जीको भिन्न २ मार्गोंकी सैर कराओ। मुझे आशा है वह हमारी कुटिया से प्रसन्न होंगी।

एलिजाबेथ ने आज्ञाका पालन किया, और भागकर अपने कमरेसे छत्री ले आई, और अपने भद्र अतिथिके साथ नीचे उतर गयी। जब वे हाल कमरेमें से गुजरीं, लेडी कैथराइन ने भोजनगृह और ड्राईंगरूमको द्वार खोल कर देखा, कुछ क्षण देखकर, ' हां ये देखनेमें अच्छे कमरे हैं, ' ऐसा कहा और बाहर निकल गई।

उसकी गाडी द्वार पर खडी थी, और एलिजाबेथ ने देखा कि उसकी नौकरानी उसमें उपस्थित है। वे दोनों बाटिकाकी ओर चुपचाप चली गईं। एलिजाबेथ ने मनमें निश्चय किया हुआ था कि वह अब स्वयं बातचीत करनेकी ऐसी स्त्रीसे कोई कोशिश न करेगी जो कि इतनी ढीठ और उसके बिरुद्ध थी।

' मैं इसे इसके भतीजे के समान कैसे मान सकती हूं ? उसने उसके मुख की ओर देखते हुए कहा।

ज्योंहि कि वे एक बारादरी में घुसे, लेडी कैथराइन ने इस प्रकार कहना आरंभ किया :-

' मिस बेनट, तुम्हें यहां मेरे आनेका कारण तो पता लगही गया होगा। तुम्हें तुम्हारा हृदय, तुम्हारा अंत:करण स्वयं बतला देगा कि मैं यहां क्यों आई हूं।'

एलिजाबेथ तनिक भी चकित न होकर उसकी ओर देखती रही।

एलिजा:-'निस्सन्देह, आप भूलमें हैं, श्रीमती जी; मैं सर्वथा इस बात से अनभिज्ञ हूं कि आप ने यहां आने का कष्ट क्यों उठाया है। '

श्रीमती जी ने क्रोधके स्वरमें कहा.-' मिस बेनट ! तुम्हें पता होना चाहिये कि मुझे धोखा नहीं दिया जा सकता। अस्तु. तुम चाहे कितना ही धोखा देना चाहो, असत्य बोलना चाहो, पर तुम मुझे ऐसा नहीं पाओगी। मेरा चरित्र सदा सत्य और स्पष्ट बात बोलनेमें प्रसिद्ध रहा है। और इस क्षण जिस अभिप्राय से कि मैं आई हूं मैं सर्वथा इससे नहीं हटूंगी। दो दिन हुए मुझे एक बडी भयंकर रिपोर्ट मिली है। मुझे कहा गया है कि तुम्हारी बहनका एक बहुत धनाढ्य घरमें विवाह होने वाला है, और तुम्हारा

अर्थात् मिस एलिजाबेथ बेनटका भी मेरे भतीजे-मेरे सगे भतीजे मि. डारसी से शीघ्रही बाद में विवाह होनेकी पूरी संभावना है। यद्यपि मैं जानती हूं कि यह एक झूठी शरारत भरी अफवाह उडायी गयी है। यद्यपि मैं उसे इतना घायल करना नहीं चाहती कि इस बातको सत्य समझलूं, तो भी मैंने उसी समय यहां आना उचित समझा, जिससे कि मैं अपने मनके भाव तुम्हें बतला सकूं।

एलिजाबेथने आश्चर्यचकित होते हुए कहा -'यदि आप इसका सत्य होना असंभव समझती हैं, तो मुझे आश्चर्य हैं कि आप ने फिर इतनी दूर आनेका कष्ट क्यों उठाया। इससे आपका क्या अभिप्राय है ?'

कैथराइन-' तुरन्त तुम पर जोर डालनेके लिये कि इस बातको सब जगह सबको कह दो कि यह झूठ है।'

एलिजाबेथने शान्ति से कहा -' आपका लौंगबोर्नमें मुझे और मेरे परिवारको मिलने आना तो इस बातको शायद और पुष्ट करनेका कारण होगा। यदि वास्तवमें ही ऐसी बात फैली हुई होगी।'

कैथ० -यदि ! तो क्या तुम, इस बातसे अपरिचित होनेका बहाना करती हो ? क्या यह बात तुम्हीं ने स्वयं जानबूझकर नहीं उडायी है ? क्या तुम नहीं जानती हो कि ऐसी बात सर्वत्र फैली हुई है ?'

एलिज० -मैंने तो ऐसी बात कभी नहीं सुनी है।'

कैथ० -' और क्या तुम यह भी कहती हो कि इस बातका कोई आधार नहीं हैं।'

एलिज० -' मैं श्रीमती जीके साथ आप जैसी स्वष्टवादिनी होनेका तो दावा नहीं कर सकती हूं। आप ऐसे भी प्रश्न पूछ सकती हैं कि जिनके उत्तर देना मैं पसन्द नहीं करूंगी।'

कैथ० -' यह सहन नहीं हो सकेगा। मिस बेनट, मैं सन्तुष्ट होना चाहती हूं। क्या उसने, क्या मेरे भतीजे ने, तुमसे विवाह करनेका वचन दिया है ?'

एलिज० –' श्रीमती जी तो इसे असंभव घोषित कर चुकी हैं।'

कैथ० –' ऐसा तो करना ही होगा; जबतक वह युक्ति और बुद्धिपूर्वक चलेगा, उसे ऐसा करना ही होगा। परन्तु तुम्हारी कला और प्रलोभन में क्षणमात्रके लिये फंसकर, उसने अपने प्रति और अपने परिवारके प्रति जो कर्त्तव्य हैं उन्हें भुला दिया है। तुमने उसे इस ओर घसीट लिया है।

एलिज० –' यदि मैंने घसीटा है, तो मैं इसे अन्त तक भी स्वीकार न करूंगी।'

कैथ०— मिस बेनट! क्या तुम जानती हो, मैं कौन हूं? मैं ऐसी भाषा सुननेकी अभ्यस्त नहीं हूं। मैंही इस संसारमें उसकी निकटतम संबंधिनी हूं. और इस लिये उसकी सभी प्रिय वस्तुओंको जानना चाहती हूं।

एलिजा—' परन्तु आप मेरी प्रिय वस्तुओंको जाननेका अधिकार नहीं रखती हैं। और नांही आपका यह व्यवहार मुझे कभी भी कुछ कहनेको उद्यत कर सकता है।'

कैथ०—' मुझे ठीक तरह पहले समझ तो लो। यह साथी, जिसको कि तुम प्राप्त करनेकी आशा कर बैठी हो, कभी न मिल सकेगा। नहीं, कभी नहीं। मि० डारसी मेरी पुत्रीसे मंगा जा चुका है। अब बतलाओं कि तुम क्या कहना चाहती हो?'

एलिजा०— ' केवल इतना— कि यदि वह मंगा जा चुका है, तो आपको यह माननेका कोई कारण नहीं कि वह मुझे अपना साथी बनानेको कहेगा।'

लेडी कैथराइन क्षणभरके लिये हिचकिचाई, परन्तु फिर उत्तर देने लगी,

उन दोनोंकी मंगनी एक विशेष प्रकारकी है। बाल्यकालसे ही वे दोनों एक दूसरेके साथ विवाह करेंगे, ऐसा विचार कर लिया गया था। यह उसकी माताकी प्रिय अभिलाषा थी, और इधर इसकी माताकी भी। जब ये दोनों पालनेमें झूला करते थे, तभी हमने इनके विवाहके लिये विचार कर लिया था, और अब, जब कि दोनों बहनोंकी कामनाएं पूर्ण होनेका समय आया

है अर्थात् , विवाह करनेका समय आया है, तब एक ऐसी नौजवान स्त्रीने इसमें विघ्न डाल दिया है जो कि जन्मसे नीच है, और जिसका इस जगतमें कोई भी मूल्य नहीं है, और जो कि परिवारके साथ कभी भी मेल नहीं खा सकती। क्या तुम उसके मित्रोंकी इच्छाओंका कुछ मूल्य नहीं करती हो— उसकी मनचाही मिस डीबौरोके साथ उसका विवाह होने देना नहीं चाहती हो ? क्या तुम्हें उचित और अनुचितका अथवा लज्जाका कोई विचार नहीं ? क्या तुमने मुझे कहते नहीं सुना है कि वह बचपनसेही अपनी चचेरी बहनके लिये वर नियत हो चुका है !'

एलिजा०-'हां, और मैं इसे पहले भी सुन चुकी हूं। परन्तु इससे मुझे क्या प्रयोजन ? यदि आपके भतीजेसे मेरे विवाह करनेमें और कोई आपत्ति नहीं है, तो इस बातसे मैं कैसे हट सकती हूं कि उसकी माता और मासीने उसकी मिस डीबौरोसे विवाह करनेकी अभिलाषा कर रखी थी। आप दोनोंने जितना भी हो सकता था उतना प्रयत्न उसके वहीं विवाह करनेके लिये किया। परन्तु इसका सफल होना तो दूसरोंपर निर्भर था। यदि मि• डारसीको, न तो अपनी प्रतिष्ठाके विचारसे, नांही अपने प्रेमके कारणसे, अपनी भतीजीसे विवाह करना पसंद न हो, तो वह कहीं और विवाह करनेकी इच्छा क्यों न करे ? और यदि उसने मुझेही चुनना चाहा हो, तो मैं उसे क्यों न स्वीकार कर लूं ?

कैथ०—'क्योंकि मान, प्रतिष्ठा, दूरदर्शिता- नहीं २ स्वार्थ ये सब इस बातसे रोकते हैं। हां, मिस बेनट स्वार्थ भी; क्योंकि यदि तुम जानबूझकर सबकी इच्छाओंके विरुद्ध इसे करना चाहती हो तो उसका परिवार और मित्र तुम्हारा मान न करेंगे। तुम्हारी निगरानी की जायेगी, तुच्छता दर्शाई जायेगी, और उसके सभी संबंधियोंद्वारा तुमसे घृणा की जायेगी। तुम्हारा रिश्ता एक अपमानजनक होगा, तुम्हारा नाम तक हममेंसे कोई न लेगा।'

एलिजाबेथने कहा—'ये बडी दुर्भाग्यकी बातें हैं। परन्तु मि. डारसीकी पत्नीको ऐसे असाधारण आनन्दोंके साधन भी अवश्य मिलही जायेंगे जो

उसके पदकी प्रतिष्ठाके योग्य होंगे, और जिनके कारण, उसे कभी इस विवाहके लिये पश्चात्ताप न करना पडेगा।'

कैथ० — 'हठी, दुराग्रही, बिगडे दिमागकी लडकी। मुझे तुम्हारे व्यवहारसे लज्जा आती है। क्या पिछली बसन्तमें जो मैंने तुम्हारे साथ व्यवहार किया था, उसके लिये यही कृतज्ञता प्रकट कर रही हो? आओ, बैठ जाओ। तुम्हें यह समझ लेना चाहिये, मिस बेनट, कि मैं अपने उद्देश्यको निश्चित रूपसे पूर्ण करने आयी हूं। इस बातसे मैं पीछे नहीं हटूंगी। मैं किसी व्यक्तिके वहमोंके तथा मनमोदकोंके सामने कभी नहीं झुकी हूं। मुझे असफलताके सामने सिर झुकानेका कभी अभ्यास नहीं हुआ है।

एलिज० -'तब तो श्रीमती जी! आपकी दशा इस समय बहुत ही दयनीय हो गयी है; परन्तु इसका मुझपर तो कुछ भी प्रभाव नहीं पड सकता।'

कैथ० -'मुझे बीचमें मत टोको। चुपचाप सुनती जाओ। मेरी पुत्री और मेरा भतीजा एक दूसरेके लिये ही बनाये गये थे। वे माताकी ओरसे एकही श्रेष्ठ वंशमें उत्पन्न हुए थे, और पिताकी ओरसे, प्रतिष्ठित, सम्मानित, प्राचीन यद्यपि उपाधिरहित वंशसे उत्पन्न हुए थे। दोनों वंशोंकी ओरसे उत्तराधिकारमें उनको अपार धनसम्पत्ति मिलने वाली थी। उनके प्रतिष्ठित कुटुम्बके प्रत्येक व्यक्ति की यह अभिलाषा थी और सब यही कहते थे, कि वे दोनों ही एक दूसरेके लिये बनाये गये हैं। और कौन उनको पृथक् कर सकता है। एक नौजवान युवतीकी झूठी उच्चाकांक्षाएं, जिसका वंश, संबंधी और धनसम्पत्ति कुछ भी मूल्य नहीं रखते हैं? क्या यह कभी हो सकता है प्रत्युत यह कभी नहीं हो सकता, और नांही कभी होगा! यदि तुम अपनी भलाईसे परिचित होतीं तो तुम्हें उस परिस्थितिको छोडनेकी इच्छा नहीं करनी चाहिये जिसमें कि तुम पलकर बडी हुई हो।'

एलिज० -'आपके भतीजेके साथ विवाह करके, मैं यह नहीं समझूंगी कि मैंने अपनी परिस्थितियोंको छोड दिया है। वह एक सज्जन पुरुष है, और मैं एक सज्जन पुरुषकी पुत्री हूं, यहां तक हम दोनों समान ही हैं।'

कैथ० -' यह ठीक है कि तुम एक सज्जन पुरुषकी पुत्री हो। परन्तु तुम्हारी माता कौन है? तुम्हारे चाचा और चाची कौन हैं? मुझे उनके हालातसे अपरिचित न समझो।'

एलिजाबेथने कहा -' मेरे संबंधी चाहे कुछ भी हों। यदि तुम्हारा भतीजा उनके लिये कुछ आक्षेप नहीं करता, तो वे तुम्हारे लिये चाहे कुछ न हों।'

कैथ० -' मुझे एकबार ही स्पष्ट बतला दो, क्या तुम्हारी उससे सगाई हो गई है।' यद्यपि एलिजाबेथ, लेडी कैथराइन पर केवल कृपा करके इस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहती थी, तो भी वह क्षणभर सोच कर यह कहने से न रुक सकी :—

' नहीं, मेरी सगाई नहीं हुई है।'

लेडी कैथराइन इससे प्रसन्न हो गयी।

' और क्या तुम मुझसे प्रतिज्ञा करती हो कि तुम उससे अब सगाई न करोगी?'

एलिज० —' मैं ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं कर सकती।'

कैथ० —' मिस बेनट, मुझे धक्का लगा है और लज्जा आती है। मुझे आशा थी कि मैं एक समझदार नवयुवतीसे मिलने जा रही हूं। परन्तु इस विश्वाससे धोखेमें न रहो कि मैं कभी हार कर जाऊंगी। मैं तबतक नहीं जाऊंगी जबतक तुम मुझे मेरी आकांक्षा पूरी करनेका वचन न दोगी।'

एलिजा० —' और मैं निश्चयसे इसे कभी न दूंगी। मैं एक ऐसी सर्वथा ही अनुचित बातके लिये डरने वाली नहीं हूं। श्रीमती जी! आप चाहती हैं कि मि. डारसी आपकी पुत्रीसे विवाह करे। अच्छा आपकी मन-चाही बातको स्वीकार करके यदि मैं यह वचन भी देदूं तो क्या उनका विवाह इससे अधिक संभव हो सकेगा? मान लीजिये कि वह मुझसे प्रेम करता है, क्या मेरे उसका पाणिग्रहण करना अस्वीकार करनेसे ही वह अपनी भतीजीके साथ विवाह करना पसन्द कर लेगा? मुझे कहनेकी आज्ञा दीजिये, लेडी

कैथराइन ।कि वे युक्तियां, जिनसे कि आप ने अपने इस असाधारण प्रार्थना-पत्रको पुष्ट करना चाहा हैं, वैसी ही व्यर्थ और सर्वथा निकम्मी हैं जैसाकि अविचारसे युक्त प्रार्थना पत्र है। यदि आप यह समझती हैं कि मुझपर इन तुच्छ बातोंका प्रभाव पड सकेगा तो आपने मेरे चरित्रको समझनेमें बडी भारी भूल की है। आपका भतीजा अपने विषयमें, आपके इस प्रकारके हस्ताक्षेपको कितना पसन्द करेगा, मैं नहीं कह सकती। परन्तु आपको निश्चय ही मेरे संबंधमें कुछ सोचनेका अधिकार नहीं है। इसलिये मैं प्रार्थना करती हूं कि इस विषयमें आप अब और कोई बात मुझसे ने करें।

कैथ०-"कृपाकर के इतनी शीघ्रता न करो। मुझे अभी पूरा कह लेने दो। जितने आक्षेप मैंने अबतक किये हैं, मुझे उनके साथ कुछ और भी करने हैं। मुझे तुम्हारी सबसे छोटी बहन की निन्दनीय करतूतों का कच्चा चिट्ठा पता न हो, यह बात नहीं है। मैं इसे पूरा २ जानती हूं- कि उस युवक ने इससे सौदे के रूप में विवाह किया है, और तुम्हारे पिताने और मामा ने यह सौदा किया है। और क्या ऐंसी कन्या मेरे भतीजे की बहन बन सकती है? क्या उसका पति, जोकि उसके स्वर्गवासी पिता के मुंनीम का पुत्र है, उसका भाई बन सकता है। हे आकाश और भूमि? तुम सोच क्या रही हो? क्या पैम्बरले की छायाएं इस प्रकार अपवित्र की जायेंगी।

एलिजाबेथने क्रोध से कहा-"आप अब इससे आगे कुछ नहीं कह सकती हो। आपने मुझे सब संभव उपायोंसे अपमानित किया है। मैं अब अपने घर लौट जाने की आज्ञा मांगती हूं।"

और ऐसा कहतेही वह उठकर खडी हुई। लेंडी कैथराइन भी उठ खडी हुई, और वे दोनों लौटने लगीं। वे श्रीमतीजी तो बहुतही कुपित होरहीं थीं।

कैथ०- "तब तुम्हें मेरे भतीजे की मान और प्रतिष्ठाका कोई ध्यान नहीं है। भावहीन स्वार्थी लडकी। क्या तुम यह नहीं समझती हो कि तुम्हारे साथ विवाह करनेसे वह प्रत्येक दृष्टिसे गिर जायगा।"

एलिजा-- " लेडी कैथराईन ! मैं और कुछ कहना नहीं चाहती। आप मेरी भावनाओं को जानती हैं।

कैथ०—"तो तुमने उसे प्राप्त करनेका दृढ निश्चय कर रखा है ?

एलेज०-- मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही है। मैं ने केवल उसी प्रकार काम करनेका निश्चय कर रखा है, जिस प्रकार कि मैं अपने आपको प्रसन्न रख सकूं, और इस विषय में आपको या किसी और को, मैं कुछ बतलाना नहीं चाहती, क्योंकि आपका या उनका मेरे साथ कोई संबंध नहीं हैं।

कैथ०-- " यह ठीक है। तो क्या तुम, मुझपर कृपा करनेसे इन्कार करती हो। क्या तुम कर्त्तव्य, मानप्रतिष्ठा और कृतज्ञताके दावोंको माननेसे इन्कार करती हो। तुम निश्चय कर चुकी हो कि उसे उसके सब मित्रोंकी सम्मतिमें गिरा करके छोडोगी, और संसारभरमें उसे घृणित बना कर छोडोगी।

एलिज० –' न कर्त्तव्य, नांही मानप्रतिष्ठा, नांही कृतज्ञता मुझपर वर्त्तमान विषय में, कुछ संभव दावा रखते हैं। मेरे डारसीसे विवाह कर लेनेसे इनमेंसे किसी भी सिद्धांतकी हानि नहीं होती है। और उसके परिवारके लोगोंके क्रोध, और संसारके क्रोधके विषयमें मैं इतनाही कहना चाहती हूं, कि यदि मेरे साथ विवाह करनेमें उसके परिवारके लोग कुपित हो जायेंगे, तो मुझे एक क्षणके लिये भी उनसे कुछ मतलब नहीं रहेगा, और संसारको भी पर्याप्त समझ है कि वह उस घृणामें सम्मिलित होगा या नहीं। '

कैथ० –' तो यही तुम्हारी वास्तविक सम्मति है–यही तुम्हारा अन्तिम निश्चय है ! बहुत अच्छा। अब मैं देखूंगी कि मुझे क्या करना होगा। मिस बेनट ! यह न समझ लेना, कि तुम्हारी महत्वाकांक्षा कभी पूरी हो सकेगी। मैं तुम्हारी परीक्षा लेने आई थी। मुझे आशा थी कि तुम समझदार निकलोगी, परन्तु यह समझ रखना, कि मैं अपना काम करके छोडूंगी ;

इसी प्रकार लेडी कैथराइन गाडी तक बातें करती चली गयी। जब गाडीके द्वार पर पहुंची तो एकदम घूमकर उसने कहा :—

'मिस बेनट ! मैं तुमसे विदा नहीं होती हूं । मैं तुम्हारी माताको कोई नमस्कार नहीं भेजती हूं । तुम किसी ध्यान देनेके योग्य नहीं हो । मैं तुमसे अत्यन्तही अप्रसन्न हो कर जा रही हूं ।'

एलिजाबेथने कुछ भी उत्तर न दिया, और घर ले जानेकी तनिक भी इच्छा न दिखलाते हुए, स्वयं चुपचाप अपने घरमें घुस आई । जब वह सीढियों पर चढ रही थी तो उसने गाडीके जानेकी आवाज सुनी । उसकी माता उसके शृंगारभवनके द्वारपर उससे अधीरतासे मिली, कि पता करे कि लेडी कैथराइन क्यों घरमें वापिस नहीं आई और यहां आराम नहीं किया ।

उसकी पुत्री ने कहा :—'उसने इसे पसन्द नहीं किया, वह चली जाना चाहती थी ।'

माता–'वह देखनेमें बडी अच्छी स्त्री है । और उसका यहां पधारना बडा अच्छा था । क्योंकि वह केवल, मैं समझती हूं, हमें यह कहने आयी थी कि कोलिन्स कुशलसे है । वह कहीं और जा रही थी, मुझे कहनेका यह साहस होता है, और इसप्रकार मैरिटनसे गुजरतेहुए, उसने सोचा, शायद वह भी तुम्हें अपने यहां बुलावे । मैं सोचतीहूं' लिजी ? उसकेपास तुम्हें कहनेके लिये कुछ विशेष बात नहीं थी !

एलिजाबेथने यहां थोडा झूट बोला, क्योंकि उनकी बातचीतका विषय यहां बतलाना असंभव था ।

———

सत्तावनवां परिच्छेद

इस असाधारण भेंट से एलिजाबेथ कई घंटे तक अशान्त रही । ऐसा प्रतीत होता था, लेडी कैथराईन ने रोजिंग्ससे यहां तक आनेका कष्ट केवल इस लिये किया था, कि वह उसकी संभावित मंगनी को मि. डारसी से न होने दे । यह एक बडी भयंकर योजना थी, इस बात का एलिजाबेथ निश्चय न कर सकी कि यह बात वास्तव में कहां से उठी । उसने सोचा, कि वह तो

बिंगलेका गूढ मित्र है, और मैं जेन की बहन हूं। बस यही विचार लोगों के इसअनुमान का कारण बन गया है; विशेष करके इस समय जबकि एक विवाह ने दूसरे विवाह के शीघ्रही हो जानेका विचार उत्पन्न कर दिया हो। वह यह जानती थी कि उसकी बहन का विवाह उन दोनों को अधिक निकट ले आयेगा। और इसलिये उनके ल्यूकस लॉज में रहनेवाले पडोसी (क्योंकि उनका पत्र व्यवहार कौलिन्स परिवार से है, इसलिए लेडी कैथराइन को भी यह समाचार मिल गया होगा।) ने ही यह विश्वास निश्चित रूपसे और शीघ्रही होने के विषय में जमा दिया है और उसने निकटभाविष्य में इसकी संभावना समझली है।

लेडी कैथराइनकी बातों को स्मरण करके, उसने इस विषयपर बार २ उसके बल देनेके कारण कुछ बेचैनी अनुभवकी। उसने सोचा कि जैसाकि वह अपनी बातों से प्रगटकर गई है, ऐसा हो सकता है कि इन्हीं संब बातोंको लिख कर वह मि. डारसी को एक प्रार्थनापत्र भेजे, जिससे कि यह विवाह रुक जाये परंतु डारसी इन सब बातों को उसके विषय में पढ कर क्या २ सोचेगा, यह सोचकर वह घबरा उठी। उसे यह नहीं पता था कि वह अपनी भतीजीसे कितना प्यार करता था, या वह उसके निर्णय को कितना मानता था। परंतु यह बात निश्चित थी कि वह श्रीमती लेडी का इतना मान करता था जितना कि वह नहीं कर सकती थी, और यह निश्चित था कि उसकी चाची उसके एक ऐसी स्त्री से विवाह करने का विरोध करके उसकी दुर्बल भावनाओं पर चोट करेगी, जो स्त्री कि उसके समकक्ष नहीं है। उसके अभिमानी मिजाज़ से वह यह समझती थी कि अपनी चाचीकी उन्हीं दुर्बल और उपहासास्पद युक्तियों को जानकर वह भी उन्हें अच्छा न समझेगा।

यदि वह पहले के समानही ढिलमिल निश्चय का होगा तो वह अपनी चाची के उपदेशों और संबंध का ध्यान करके अपनी मान प्रतिष्ठा को आघात न पहुंचाता हुआ, अपना विवाह वहीं करेगा। ऐसी दशामें वह यहां लौटकर अब न आयेगा। लेडी कैथराइन मार्ग में उसके साथ मिल कर जायेगी। और

बिंगले के साथ यहां नीदरफील्डमें उसके आनेके संकल्प को छुडवा देगी।

उसने कहा - "इसलिये, यदि कुछ ही दिनों में उसके मित्रों ने उसके न आनेके समाचार पाये, तो मैं इस बात से वास्तविक बात को जानलूंगी। तब मैंभी सब प्रकारकी आशा, अभिलाषा उससे त्याग दूंगी। यदि वह मुझसे केवल शोक प्रकट कर देगा, जब कि वह मेरे प्रेम और हाथको पा सकता था, तो मैं भी उसके लिये शीघ्र ही शोक प्रकट करना बंद कर दूंगी।

शेष सारे कुटुम्बको इस नये अतिथिके आनेका समाचार सुनकर बडा आश्चर्य हुआ था। परन्तु मिस बेनटके समान सबने ही वही उत्तर समझ कर संतोष कर लिया था, और एलिजाबेथ इस विषय में अधिक बोलने से बच गयी थी।

दूसरे प्रातःकाल, जब वह पौडियोंसे नीचे उतर रही थी, उसे उसके पिता मिले, जो कि पुस्तकालयसे आ रहे थे, और उनके हाथमें एक पत्र था।

उसने कहा-' लिजी, मैं तुम्हें ढूंढने जा रहा था, मेरे कमरे में आओ।

वह उनके साथ कमरे में गयी। वह उत्सुकतासे जानना चाहती थी कि इस पत्रके संबंधमें न जाने पिता क्या कहेंगे। उसे भय हुआ कि कहीं यह पत्र लेडी कैथराइनने न भेजा हो और इसका कुछ उत्तर न देना पडे।

वह अपने पिताके साथ अंगीठी तक चली गयी। वहां वे दोनों बैठ गये। तब पिता ने कहा—

पिता —' मुझे आज प्रातःकाल एक पत्र मिला है और मुझे इससे बडाही आश्चर्य हुआ है। क्योंकि यह मुख्य करके तुम्हारे विषयमें ही है, इस लिये तुम्हें इसकी बातें जान लेनी चाहियें। मैं पहले नहीं जानता था कि मेरी दोनों ही पुत्रियां विवाह सूत्रमें बंधनेको बिल्कुल तैयार बैठी हैं। इस अत्यन्त आवश्यक बात पर म तुम्हें बधाई देना चाहता हूं।'

अब तो एलिजाबेथने चाचीकी जगह भतीजेका पत्र आया समझकर लज्जा अनुभवकी। वह सोच ही रही थी कि मुझे पत्र न लिख कर पिताको

पत्र लिखनेसे उसने मुझे प्रसन्न किया है या अप्रसन्न, कि इसी बीचमें उसके पिता बोले—

पिता—'तुम सावधान प्रतीत होती हो। ऐसी बातोंमें नौजवान स्त्रियें विशेष मनोयोग देती हैं, परन्तु मैं समझता हूं कि मैं तुम्हारे प्रशंसक का नाम बतलाकर तुम्हारी चालाकी की भी रक्षा करूंगा। यह पत्र मि. कौलिन्ससे प्राप्त हुआ है।

एलिजा० -' मि. कौलिन्ससे। वह क्या कहना चाहता है?'

पिता--निस्सन्देह, इस विषयमें कुछ बहुतही आवश्यक बातें। सबसे पहले तो उसने शायद भद्र ल्यूकेसेससे सुनकर सबसे बड़ी पुत्रीके विवाह होने के उपलक्ष्यमें मुझे बधाई दी है। इस विषयमें अधिक पढकर मैं तुम्हारे धैर्य की परीक्षा न करूंगा। जो तुम्हारे विषयमें लिखा है वह इस प्रकार है:— ' मिसिज कौलिन्स और मेरी ओरसे इस प्रकार इस आनन्दप्रद समाचार पर बधाई देनेके बाद अब मैं थोडासा दूसरे विषयमें संकेत लिखना चाहता हूं, जिसके विषयमें उसी अधिकारी ने हमारा सर्वत्र विज्ञापन दे दिया है। ऐसा समझा गया है कि आपकी पुत्री एलिजाबेथ अब देर तक बेनट नामसे नहीं पुकारी जायेगी, जबकि उसकी सबसे बडी बहन इस नामको छोडेगी, और उसका चुना हुआ साथी इस भूमि भागका सबसे प्रसिद्ध उज्वल पुरुष होगा।'

पिता–' लिजी! क्या तुम अनुमान लगा सकती हो, कि यह कौन होगा?'

'यह युवक सज्जन, विशेष रूपसे परमेश्वरकी कृपासे संसारकी सभी सुख सम्पत्ति से भरापूरा है—इसके पास प्रचुरसंपत्ति, उत्तम संबंधी और अनेक प्रकारके साधन हैं। तो भी इन सब प्रलोभनों के साथ २, मैं अपनी बहन एलिजाबेथको और आपको, इस बातसे सावधान भी करना चाहता हूं कि यदि इसके प्रस्तावोंको मानकर आप इससे संबंध कर लोगे तो एक बड़ी भारी भूल करोगे, यद्यपि आप इस समय तो मेरी बात पर ध्यान न देकर, इस लाभको उठाना पसन्द करोगे।

पिता—' लिज़ी, क्या तुम्हें कुछ पता है, यह कौन सज्जन है ? परन्तु अब यह प्रकट होने लगा है ।'

' मेरा अभिप्राय आपको सावधान करनेका निम्नलिखित है :-हमारे पास सोचनेके कारण हैं कि उसकी चाची, लेडी कैथराइन डीबौरो, इस संबंध को मित्रकी दृष्टि से नहीं देखती है । '

पिता-' मि. डारसी, ही तो यह सज्जन दीखता है । अब लिज़ी, बतलाओ मैंने तुम्हें आश्चर्य में डाल दिया कि नहीं ? क्या वह या ल्यूकेसिस कभी हमारे परिचितों में से किसी पर अनुरक्त हो सकते हैं । शायद यह किसी ने झूठी बात उडायी है ? मि. डारसी जो कभी किसी स्त्रीकी ओर देखता ही नहीं, और जो उनके दोष ही निकालनेको देखता है, और जिसने शायद तुम्हें अपने जीवनमें कभी भी नहीं देखा है ! क्या यह प्रशंसनीय बात होगी ? '

एलिजाबेथने अपने पिताकी प्रसन्नतामें सम्मिलित होनेका यत्न किया । परन्तु वह एक शोकभरी मुस्कराहट ही कर सकी । उसे पिताकी समझ कुछ अनुकूल न दिखी ।

पिता-' क्या तुम्हारा ध्यान कहीं और तो नहीं चला गया ?'

एलिज़ा-' जी, हां, कृपाकरके आगे पढ़ें । '

—' जब गतरात्रिमें हमने श्रीमती लेडीको इस विवाह होनेकी बात कही, तो उसने अपनी उसी समय अप्रसन्नता प्रकट करते हुए, स्पष्ट कहा कि इस नीच वंशसे मैं उसको संबंध करनेकी कभी आज्ञा नहीं दे सकती । इसी लिये मैंने अपनी बहनको और आपको इसकी सूचना देनी तुरन्त उचित समझी है । कहीं ऐसा न हो कि इन दोनोंके विवाहको जिसको कि उचित रूपसे स्वीकृति, नहीं मिली होगी, करनेसे पीछे पछताना पड़े । मि· कालिन्स यह भी कहते हैं, ' मैं बहुत प्रसन्न हो गया था कि मेरी बहन लीडियाका बुरा व्यवहार इन दिनों लोग भूल गये थे, केवल विवाहित होने से पूर्व वे कुछ दिन साथ रहे थे, इतनाही लोगोंको पता है । परन्तु मैं यह कह कर अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा हूं कि आपको विवाहके बाद उन दोनोंको अपने घरमें बुला

कर स्वागत समारोह नहीं करना चाहिये था। यह बुराईको सहारा देना था, और यदि मैं लैंगबोर्नका धर्माधिकारी होता तो मैं इसका प्रबल विरोध करता। यह तो उचित था कि आप उन्हें ईसाई होनेके कारण क्षमा कर देते, परन्तु अपने सन्मुख आनेकी आज्ञा न देनी चाहिये थी, और उनका नाम अपने कानोंसे सुनने की आज्ञा न देनी थी।' यह है उसका विचार ईसाइयोंकी क्षमा के विषयमें। अवशिष्ट पत्र प्रिय शारलोटकी दशाके विषयमें और एक जैतूनकी नई शाखा की मांगके विषयमें है। परन्तु लिजी, ऐसा दीखता है मानों तुमने इस पत्रका आनन्द नहीं लिया है। मुझे आशा है तुम मसीह तो नहीं बनने जारही हो, और इस व्यर्थके समाचार पर विचार करनेका बहाना कर रही हो। क्योंकि हम भी अपने पड़ौसियोंके विषयमें ऐसी बातें उड़ा सकते हैं और अपने अवसरपर उनकी हँसी उड़ा सकते हैं।'

एलिजाबेथ चिल्लाई—ओह, मैं सर्वथा बदल गयी हूं। परन्तु यह तो बहुत विचित्र बात है!'

पिता—हां, यही तो इसे मजेदार बना रही है। यदि वे किसी और का नाम उड़ाते तो कुछ बात नहीं थी। परन्तु उसकी ओरसे पूर्ण उपेक्षा और तुम्हारी ओरसे उसकी ओर अनिच्छा प्रकट करना, इससे तो यह सब व्यर्थ की बात ही दीखती है! मैं यदि इस पर कुछ लिखूंगा तो मि. कालिन्स की चिट्ठीके ऊपर कुछ विचार करना न छोड़ूंगा। नहीं, जब मैं उसका पत्र पढ़ता हूं तो मैं उसे विकमसे अच्छा समझता हूं, क्योंकि चालाकी और बनावटमें मेरा दामाद बढ़चढ़कर है। लिजी! बतलाओ तो लेडी कैथराइन ने इस समाचारके विषयमें क्या कहा था। क्या उसने उसकी स्वीकृति लेनेको उसे बुलाया था?' इस प्रश्न पर उसकी पुत्रीने उत्तरमें केवल हंस दिया; और क्योंकि यह तनिकसे सन्देहके बिना ही पूछा जा चुका था, वह उनके इसे फिर दोहराने से घबराई नहीं। एलिजाबेथ ने अपने असली मनोभावोंको छिपानेका पूरा २ यत्न किया और बाहरसे बनावटी भाव दिखानेका प्रयत्न करने लगी। जब वह चिल्लायी थी तो उसे वास्तवमें हंसना उचित था।

उसके पिताने बडी क्रूरतासे उसके मनको मार दिया था, जबकि उसने मि. डारसीकी उपेक्षाकी बात उसे कही थी। और वह कुछ भी नहीं कर सकती थी सिवाय इसके कि अपने पिताकी गूढ अनभिज्ञता और भय पर आश्चर्य प्रकट करती थी। उसने देखा तो बहुत ही कम था पर बहुत अधिक सोच रखा था।

— — —

अठावनवां परिच्छेद

यद्यपि एलिजावेथ को आशा थी कि कोई "पत्र वहाँपर न आने के लिये क्षमा करें" इस विषय का आयेगा परन्तु ठीक इससे विपरीत मि. बिंगले डारसी को साथ लेकर लेडी कैथराइनके कुछ दिन बादही लौंगबौर्न में आपहुंचा। ये दोनों सज्जन प्रातःकाल ही आगये थे। मिसिज बेनट ने अभी उसे उसकी चाची के वहाँ आनेका समाचार सुनाने का अवसर भी नहीं पाया था। जिसके कारण उसकी पुत्री क्षणकाल के लिये घबरा रही थी, कि बिंगलेने जो कि जेन के साथ अकेले में मिलना चाहता था, प्रस्ताव किया कि चलो सब घूमने चलें। सब मान गये। मिसिज बेनट को घूमने का अभ्यास नहीं था, मेरीके पास समय नहीं था, इस लिये शेष पाँचों घूमने चल पडे। बिंगले और जेनने शीघ्रही शेष सबको आगे २ चलने दिया। वे दोनों पीछे रहगये, जबकि एलिजाबिथ, किट्टी और डारसी तीनों ही एक दूसरेसे वार्तालाप करने लगे। दोनों ओर से बहुत ही कम बात-चीत हुई। किट्टी उससे बातें करने में बहुत डरती थी। एलिजावेथ मन में एक निराशायुक्त प्रस्ताव लिये हुए थी, और शायद, वह भी ऐसा ही प्रस्ताव लिये हुए था।

वे ल्यूकेसिस की ओर जा रहे थे, क्योंकि किट्टी मेरिया को बुलाना चाहती थी। और एलिजावेथने जब और कोई साधारण मार्ग न देखा जब कि किट्टी उनको छोड़कर चली गयी, तो उसने साहस किया और डारसी के साथ अकेली ही चलने लगी। अब उसके निश्चय किये हुए प्रस्ताव करने का समय आगया; और जब वह पूर्ण उत्साह में भर रही थी, उसने तुरन्त कहा :—

" मि. डारसी, मैं एक बहुत स्वार्थी जीव हूं, और अपनी भावनाओं को तृप्त करने के लिये, मैंने न जाने तुम्हारी भावनाओंको कितना घायल किया है । मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देनेसे अब नहीं रुक सकती, क्योंकि आपने मेरी अबोध बहन पर अश्रुतपूर्व दया दिखाई है । जबसे मुझे पता लगा है, मैं बहुत ही उत्सुक रही हूं कि मैं आपका कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद करूं । यदि यह बात मेरे सारे परिवार को पता लग जाती, तो मैं अकेली ही आपका धन्यवाद न करती "

डारसीने आश्चर्य और प्रेमसहित उत्तर दिया – " मुझे शोक है, अत्यंत ही शोक है, कि तुम्हें सूचित कर दिया गया है, फिर वह चाहे ठीक २ न किया गया हो, और इसी कारण तुम्हें इतनी बेचैनी हुई है । मुझे पता न था कि मिसिज गार्डनर का विश्वास नहीं करना चाहिये था । "

एलिजवेथ – " तुम मेरी भामी को दोषी न ठहराओ । लीडिया की विवेक हीनताने पहले मुझे धोखा दिया और मैंने समझा कि तुमभी इस मामलेमें संबंध रखते हो और सचमुचही, तबतक मैं बेचैन रही जबतक कि मैंने सब हालात न जान लिये । मैं आपका बारबार धन्यवाद करती हूं, और अपने सारे परिवार की ओर से धन्यवाद करती हूं कि आपने उदारता और दया करके उनको खोज निकालने में और उनका संबंध करादेने में इतने कष्ट उठाये । "

उसने उत्तर दिया – " यदि तुम मुझे धन्यवाद ही देना चाहती हो, तो यह केवल तुम्हारे लिये ही होना चाहिये । क्योंकि तुम्हें प्रसन्न करने की इच्छा ही थी जिसने मुझे इस संबंध में कुछ कार्य करने के लिये उत्साहित किया, मैं इसे अस्वीकार करने का यत्न नहीं करूंगा । परन्तु तुम्हारे परिवार पर मेरा कुछ ऋण नहीं है । यद्यपि मैं उनका अत्यन्त सम्मान करता हूं पर मुझे निश्चय है कि मैंने केवल तुम्हारें ही ध्यान में यह सब कुछ किया है । "

एलिजाबेथ सब सुनकर कुछ कह न सकी, वह बोलने में झिझक रही थी । थोडी चुप्पी के बाद उसके साथीने कहा – " तुम मुझ अपदार्थ

के लिये अति उदारता दिखा रही हो। यदि आपकी भावनाएं अभीतक गत अप्रेल मास के सदृश ही बनी हुई हैं, तो तुरन्त कह दो। मेरी प्रेम और अभिलाषाएं उसी तरह स्थिर हैं, परन्तु आपका एक शब्द भी मुझे इस विषयपर सदाके लिये चुप करादेगा।"

एलिजाबेथ, इस समय उसकी असाधारण नीची होती हुई दशाको तथा उसकी उत्सुकताको देखकर बोलनेको विवश हो उठी, और उसी क्षण उसने रुक २ कर बोलते हुए उसे यह समझानेका यत्न किया कि उसके विचार उसी क्षणसे सर्वथा बदल गये हैं जबसे कि उसने उसको इतनी कृपा और प्रेमका विश्वास दिलाया है। इस उत्तरसे वह इतना प्रसन्न हुआ कि पहले कभी न हुआ था, और प्रेमसे विह्वल होकर उसने अपने आपको संभालते हुए भी अपने अनुरागको प्रकट करनेमें कसर न छोडी। यदि एलिजाबेथ उसकी आँखोंकी ओर दृष्टिपात करती तो उसे पता लग जाता कि उसकी हार्दिक प्रसन्नताका प्रतिबिंब किस प्रकार उसके मुखको उज्ज्वल कर रहा है। यद्यपि वह देख न सकी, तो भी वह सुन तो सकती थी; और उसने उसे अपनी उन प्रेमभरी भावनाओंको सुनाया कि वह उसको अपने लिये कितना मूल्यवान समझता है। और इससे उसने अपने प्रेमको प्रति-क्षण अधिकसे अधिक मूल्यवान बनाया।

वे चल रहे थे पर वे किधर जा रहे हैं, इस बातका उनको ध्यान ही न था। वे विचारोंमें तथा भावनाओंमें मग्न हो रहे थे। वे परस्पर बहुत कुछ कहना चाहते थे। एलिजाबेथको शीघ्र ही पता लग गया कि वे दोनों ही इस आनन्ददायक घटनाके लिये मि० डारसीकी चाचीके ऋणी हैं। क्योंकि जिसने लौंगबौर्नसे वापिस लौटकर उसे सारा हाल सुना दिया कि किस प्रकार वह वहाँ जा कर एलिजबेथसे मिली, अपना उद्देश्य उसे बतलाया, उस पर जोर डाला कि वह उससे विवाह न करें, परन्तु उस ढीठ लडकी ने उसकी बात माननेसे किस प्रकार इन्कार कर दिया। श्रीमती लेडी ने ये सब बातें सुनाकर यह समझा कि उसके भतीजे पर वह अपना

प्रभाव डालकर और एलिजाबेथकी तुच्छता दिखलाकर सफल मनोरथ हो सकेगी, और एलिजाबेथके स्वीकार न करने पर भी अपने भतीजेसे यह स्वीकार करवा लेगी कि वह उस लडकीसे विवाह नहीं करेगा; परन्तु इसका प्रभाव दुर्भाग्यसे लेडी साहिबाके लिये उल्टाही निकला। वह वहां भी असफल मनोरथ हो गयी।

डारसी ने कहा—" इस समाचारको सुनकर मुझे आशा हो गयी। यद्यपि इससे पहले मैं आशा करने से अपने आपको बचाता रहता था। मैं तुम्हारे स्वभावको तो पर्याप्त जानता था कि यदि तुमने मेरे विरुद्ध ही मनमें अन्तिम दृढ निश्चय कर लिया होगा, तो तुम इसे निर्भय होकर स्पष्ट सरल रीति से लेडी कैथराइनके सामने अवश्य ही स्वीकार कर लोगी।"

एलिजाबेथके कपोल लाल हो गये और उसने हँसते २ कहा—" हाँ, तुम मेरी स्पष्टवादिताको पर्याप्त जानते हो, तभी तुम मुझे ऐसा समझते हो ना! मैं तुम्हारे मुंहपर ही जो तुम्हें बुरा भला कह चुकी हूं, तो मुझे तुम्हारे सभी संबंधियोंके सामने भी वैसा ही कहना चाहिये था न ? "

डारसी—" तुमने जो कुछ मेरे विषयमें कहा था, क्या मैं उसके योग्य नहीं था ? यद्यपि तुम्हारी झिडकियाँ मेरे विषयमें भूल और अयथार्थ ज्ञानके कारण ही तुमने मुझे दीं थीं, तो भी उस समयका मेरा व्यवहार अवश्य ही कठोर ताडनाके योग्य था। यह क्षमा योग्य न था। मैं इसको सोचकर लज्जित होता हूं।

एलिजाबेथने कहा—" हमें उस सायंकालकी घटना पर अधिक दोषी कौन है, इस विषय पर झगडा करना अच्छा नहीं। यदि अच्छी तरह से परीक्षा करके देखें तो दोनोंका ही व्यवहार कुछ कठोर था; परन्तु उसके वादसे, मुझे आशा है, हम दोनों ही अधिक सभ्यता सीख गये हैं। "

डारसी—" मैं अपने-आपको इतनी सरलतासे शान्त नहीं कर सकता हूं। उसकी स्मृति कि जो कुछ मैंने तब कहा था, मेरा व्यवहार, मेरे ढंग

मेरा भाव प्रकाशन, अब तक अनेक महीनोंसे मुझे घोरपीडा पहुंचातें रहे हैं। तुम्हारी झिडकियां इतना अच्छा काम कर गयीं; मैं इस बातको कभी नहीं भुलाऊंगा :–" यदि तुम मुझसे इससे अधिक सज्जनताका व्यवहार करते, " यही तो तुम्हारे शब्द थे। तुम नहीं जानतीं, तुम कठिनतासे विश्वास करोगी, उन्होंने मुझे कितना दुःखी कर दिया था; यद्यपि यह मैं मानता हूं कि मुझे उनके समझने में कुछ दिन लगे थे कि वे कितने सच्चे थे। "

एलिजा० –" मुझे सचमुच पता न था कि उन शब्दबाणोंका प्रभाव तुम पर इतना गहरा होगा, मुझे तनिकसी भी तो संभावना नहीं थी कि उनको इस रूपमें ग्रहण किया जायेगा। "

डारसी–मैं इसे आसानीसे स्वीकार करता हूं। तुमने उस समय समझा था कि मैं सभी उत्तम भावनाओंसे रहित हूं––मुझे निश्चय है तुमने मुझे ऐसा ही समझा था। मैं उस समयके तुम्हारे चेहेरेके रंगको नहीं भूल सकता, जबकि तुमने कहा था कि मैंने तुम्हें कभी भी यथासंभव इस विचार से संबोधन नहीं किया कि तुमको लुभाउं कि तुम मुझे स्वीकार करो। "

एलिजा० –" ओह ! अब उन शब्दोंको मत दोहराओ, जो मैंने उस समय कहे थे। ये स्मरण अच्छे नहीं हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि बहुत दिनोंसे मैं इन शब्दोंके लिये हृदयसे लज्जा अनुभव करती रही हूं। "

डारसी ने अपने पत्रका विषय छेडा। उसने कहा, " क्या इस पत्र ने शीघ्रही आपको मेरे विषयमें कुछ अच्छा विचार करनेकी प्रेरणा की थी।' क्या तुमने पढकर, इसमें लिखी हुई बातोंको कुछ महत्त्व दिया था ?'

एलिजाबेथ ने उसे कहा कि इस पत्रको पढकर उस पर क्या प्रभाव पडा था। और किस प्रकार धीरे २ उसके सारे पहले हठ दूर हो गये थे।

उसने कहा—" मैं जानता था, कि मैं जो कुछ लिख रहा हूं इससे तुम्हें दुःख तो पहुंचेगा, परन्तु यह आवश्यक था। मुझे आशा है तुमने उस पत्रको फाड दिया होगा। उसके आरंभमें ही कुछ ऐसी बातें थीं जिससे मैं डरता था कि तुम इसे आगे न पढोगी। मैं कुछ भाव स्मरण कर सकता हूं जिनको जानकर तुमने मुझसे घृणा कर ली होगी।

एलिजा०— वह पत्र निश्चयही जला दिया जाता, यदि तुम इस मेरी प्रतिष्ठाकी रक्षाके लिये आवश्यक समझते, परन्तु यद्यपि हम दोनों सोचनेका कारण रखते हैं। कि मेरी सम्मतियां सर्वथाही अपरिवर्त्तनीय नहीं हैं, मुझे आशा है, तो भी वे इतनी शीघ्रतासे नहीं बदलीं जैसा कि उस पत्रमें कहा गया है।'

डारसीने उत्तर दिया—' जब मैंने वह पत्र लिखा था, मुझे अपनेपर विश्वास था कि मैं पूर्णतया शान्त और शीतल था, परन्तु तो भी मैं मानता था कि यह पत्र भावोंकी भयंकर कटुतासे भरकर लिखा गया था।

एलिज०— शायद यह पत्र, कटुतासे आरंभ हुआ था, परन्तु यह कटुतामें समाप्त नहीं हुआ था। यह एक उदार भावोंका द्योतक तथा स्पष्ट सच्चा पत्र था। परन्तु पत्रके विषयको अब छोडो। जिसने यह पत्र लिखा था और जिसने इस पत्रको प्राप्त किया था, उन दोनोंके उस समयके भाव सर्वथाही इस समयके भावोंसे भिन्न थे, इसलिये ऐसी अप्रसन्नताकी बातें इस समय भुला देनी चाहियें। तुम्हें कुछ मेरी बातें भी सीख लेनी चाहिएं। पिछली उन्हीं बातोंका स्मरण करना चाहिए जिनको स्मरण करनेमें तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होती है।'

डारसी— इस प्रकारकी किसी बातका मैं तुम्हें श्रेय लेने नहीं दूंगा। तुम्हारे गतदृश्य सर्वथाही पहुंचके बाहर हैं कि उनसे जो सन्तोष उत्पन्न होता है वह फिलासफीका नहीं, प्रत्युत अधिक अच्छी तरह कहा जाये तो वह विस्मृतिका भाव होता है। पर मेरे साथ ऐसा नहीं होता। पीडादायक

स्मरण हैं जो कि नहीं भुलाये जा सकते, जिनके लिये पश्चात्ताप भी नहीं किया जा सकता और नाँही किया जाना चाहिए। मैं अपने सारे जीवनभर स्वार्थीही रहा हूं, क्रियामें स्वार्थी रहा, यद्यपि सिद्धान्तमें नहीं। बचपनमें जो ठीक था मुझे वही सिखाया गया था, परन्तु मुझे अपने स्वभावको ठीक करनेकी शिक्षा नहीं दी गई थी। मुझे अच्छे सिद्धान्त सिखाये गये थे, परन्तु उनपर आचरण करनेके लिये मुझे अभिमान और हठ करना सिखाया गया था। दुर्भाग्यसे मैं, केवल मात्र एकही पुत्र था जो अपने माता पिता-द्वारा बर्बाद किया गया था, जो यद्यपि स्वयं अच्छे थे, (विशेष करके मेरे पिता अत्युत्तम सभ्य और मिलनसार थे) उन्होंने मुझे आज्ञा दे रखी थी, उत्साहित कर रखा था, प्रत्युत मुझे सिखाया था कि मैं स्वार्थी और असहिष्णु बनूं, और अपने परिवारके सिवाय किसीकी भी पर्वाह न करूं। और शेष सारे संसारके विषयमें अति तुच्छ भाव रखूं। उनकी बुद्धिको और योग्यताको कमसे कम अपने मुकाबिलेमें अति तुच्छ समझूं। मैं ८ वर्षसे १६ और २० वर्ष तक ऐसाही रहा, और मैं अबतक भी ऐसाही होता, यदि तुम, मेरी प्रियतम, सुन्दरतम एलिजाबेथ! मैं तुह्मारा कितना ऋणी नहीं हूं? तुमने मुझे एक ऐसा पाठ सिखा दिया है जो वास्तवमें बडाही पहले कठोर था, परन्तु अत्यन्त लाभदायक था। एक तुमने मुझे ठीक २ नम्र बना दिया है। मैं तुह्मारे पास बिना स्वागत पानेकी आशा-सेही आया था। तुमने मुझे दिखला दिया है कि मेरे एक स्त्रीको प्रसन्न करनेके सभी बहाने कितने अपर्याप्त थे, जो कि वास्तवमें प्रसन्न करने योग्य थी।

एलिजा० - क्या तुमने तब अपनेको यह समझा लिया था कि तुह्में मुझे प्रसन्न करना चाहिए था।

डारसी– निस्सन्देह मैंने समझ लिया था कि तुम मेरे अहंकारके बारेमें क्या सोचोगी? मैंने तुह्में अपने चाहने योग्य समझा, और कि तुम मेरा

सम्बोधन चाहती हो।

डारसी–मेरे व्यवहार संभवतः अपराधवाले थे, पर वे जानबूझकर न किये गये थे, मैं तुझे विश्वास दिलाता हूं। मैंने तुझें ठगनेकी कभी कोशिश नहीं की। परन्तु मेरी भावनाएं शायद मुझे कई बार गलत रास्तेपर ले गईं। उस सायंकालके बाद आपने मुझसे कितनी घृणा की होगी।

एलिजा०– तुमसे घृणा की होगी ! मैं शायद पहले क्रोधित थी, पर मेरा क्रोध शीघ्रही उचित दशाकी ओर ढल गया था।

डारसी– मैं पूछते हुए कुछ डरता हूं, कि जब हम पैम्बरलेमें मिले थे, तो तुमने मेरे विषयमें क्या सोचा था। तुमने मुझे आनेके लिए दोषी ठहराया था?'

एलिजा०–'नहीं, निस्सन्देह, मैं आश्चर्यसे चकित हुई थी, और कुछ नहीं।'

डारसी–तुह्मारा आश्चर्य मुझसे अधिक नहीं हो सकता था, जब कि तुमने मुझे देखा । मेरा अन्तः करण मुझे कहता था कि मैं असाधारण नम्र व्यवहारके योग्यही नहीं हूं, और मैं मानता हूं कि मुझे अपने उचित भावसे अधिक की आशा भी नहीं थी।'

डारसीने उत्तर दिया– तब मेरा उद्देश्य, केवल तुह्में अपनी शक्तिभर सभ्यताके व्यवहारसे यह दिखलाना था, कि मैं इतना नीच नहीं हूं कि पिछली बातोंपर क्रोध करूं, और मैं आशा करता था कि तुम मुझे क्षमा कर दोगी, जिससे कि तुह्मारी सम्मति मेरे विषयमें इतनी बुरी न रहे। यह दिखाकर कि तुह्मारी झाडोंने मुझपर प्रभाव डाला है। कितनी शीघ्र अन्य कामनाएं भी उसमें आ मिलीं, यह ठीक २ नहीं कह सकता, परन्तु मैं यह विश्वास करता हूं कि तुह्में देखनेके आध घण्टेके बादही ऐसा हुआ था।'

तब उसने उससे कहा कि जारजियाना आपसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुई थी, और इसके एकदम बीचमें बोलनेसे आप निराश हो गई थी, क्योंकि

वह विघ्न पडने के कारणकी ओर स्वाभाविक ले जानेवाली बात थी। वह शीघ्रही जान गई थी कि उसका डरबीशायरसे पीछा करनेका इरादा उसकी बहनकी कामनाएं हैं जो सरायके छोडनेसे पहलेही बन चुका था। और उसकी गुरुता और विचारशीलता अन्य किसी कारणसे नहीं उठी थी जितना कि ऐसे उद्देश्यसे आशा की जा सकती थी।

उसने अपनी कृतज्ञता फिर प्रकाशित की, परन्तु यह एक ऐसा विषय था जिसपर आगे दोनों के लिए वार्तालाप करना कष्ट बढानेवाला था।

कुछ मील इस प्रकार आनन्द में भ्रमण करके, और कितनी दूर तक वे चले आये हैं, इसको जाने विनाही, उन्हें अन्त में पता लगा जब कि उन्होंने अपनी घडियोंको देखा, अब घर पहुंचने का समय आगया है।

" मि. बिंगले और जेन का क्या होगा " अब इस विषय पर वे आश्चर्यमग्न होकर बातें करने लगे। डारसी उसके विवाह पर प्रसन्न था, उसके मित्रने उसे सूचनाएं दे रखी थीं।

एलिजाबेथ ने कहा– " मैं यह पूछना चाहती हूं कि क्या इसपर तुम्हें आश्चर्य हुआ था ? "

डारसी – " सर्वथा नहीं, जब मैं चला गया था, तो मैंने अनुभव किया था कि यह शीघ्रही होगा। "

एलिजा – " इसका यह अर्थ निकला कि तुमने उसको आज्ञा देदी है। यह मैंने अनुमानसे जान लिया थां। " यद्यपि वह इस बात को सुनकर आश्चर्य चकित होगया था, तोभी उसने जान लिया कि बात तो यही थी। "

डारसी–" मेरे लंदन जाने से पहली सन्ध्या को मैंने उसे स्वीकृति दी थी, यद्यपि मुझे इससे पहले दे देनी चाहिये थी। मैंने उसे यह भी कह दिया था कि मेरे उसके विषय में पहले जो कुछ विचार थे वे व्यर्थ और अनुचित थे। वह बडा चकित हो गया था। उसे तनिक भी संदेह न था। मैंने उसे स्वयं यह भी कहा, कि मैंने पहले उल्टा समझ लिया था कि

तुम्हारी बहन शायद उसे नहीं चाहती। पर वास्तव में यह बात नहीं थी। मैं देखता था कि वह तुम्हारी बहन से अत्यन्त अनुराग करता था, इसलिये मुझे उन दोनों की प्रसन्नता में कोई संदेह नहीं रहा था। एलिजावेथ उसके अपने मित्र को ऐसी सरलतासे सब कुछ कहने पर, मुस्करादी।

उसने कहा – क्या तुमने स्वयं निरीक्षण करके उसको सम्मति दी थी जब तुमने उसे कहा कि मेरी बहन उससे प्रेम करती है, या केवल मेरी सूचना से, जो मैंने तुम्हें गत बसंत ऋतु में दी थी ? ''

डारसी – '' पहली बात से। मैंने उसे पाससे पूरा २ ध्यान से देखा है, यहां पर हुई इन अन्तिम दो भेंटों में मैंने जानलिया है कि वह उससे प्रेम करती है। ''

एलिजा – और इस बात की तुम्हारी ओर से दी हुई तसल्ली, मैं समझती हूं, उसको भी तुरन्त ही विश्वास दिला गयी। ''

डारसी – हां हां। बिंगले एक सीधा सादा कोमल स्वभाव का पुरुष है। ऐसे उत्सुकता वाले मामले में वह अपनी बुद्धिपर विश्वास नहीं करता था, परंतु उसका मुझपर विश्वास ही उसका सब काम सुगम बना गया। मैं एक बात मानने को बाधित हो गया था, जो कि उस समय यद्यपि अन्यायसे नहीं पर उसे दुःख दे चुकी थी। मैं यह छुपा रखना नहीं चाहता कि तुम्हारी बहन पिछली सर्दियों में तीन महीने नगर में रही थी, और मैं इसे जानता था, और जानबूझकर उससे छिपाता रहा था। वह कुपित था। परन्तु उसका क्रोध, मुझे समझा दिया गया है, तुम्हारी बहन की किसी भावनाओंके संदेह में रहने की अपेक्षा, देर तक न रह सका था। उसने मुझे अब हृदय से क्षमा कर दिया है।

एलिजावेथ देखना चाह रही थी कि मि. बिंगले एक बहुत ही आनंद दायक मित्र था – जो ऐसी सुगमतासे पीछे चलाया जा सकता था, कि उसका मूल्य डालनाही असंभव था। परन्तु उसने अपने आपको रोका। उसने

स्मरण किया, कि उसे अब भी यह सीखना है कि उसपर कोई हंसी उडाये, और इस समय इसे आरंभ करना बहुत जल्दी होगा। बिंगले की प्रसन्नता का ध्यान करके, जो कि निस्सन्देह, उसकी अपनी प्रसन्नता से कम थी, उसने तबतक वार्त्तालाप जारी रखा, जबतक कि वे घर पर न पहुंच गये। हाल में जाकर वे पृथक् २ हो गये।

उनसठवां परिछेद

"मेरी प्यारी लिजी! तुम कहां भ्रमण करती रहीं थीं" यह प्रश्न था जो कमरे में घुसते ही जेनसे एलिजबेथनें सुना, और अन्य सभीने भी मेज के चारों ओर बैठते हुए यही प्रश्न पूछा। उसने इतना ही उत्तर दिया कि वे तबतक इधर उधर भटकतेही रहे और यहां वह स्वयं भी भूली रही। उसके बोलते समय कपोल लाल हो गये थे; परंतु न तो उन्होंने और नांही किसी अन्य वस्तुने सचाई जाननेका उन्हें संदेहभी होने दिया।

सायंकाल चुपचाप बीत गई और किसीने भी कोई असाधारण बात अनुभव नहीं की। प्रसिद्ध प्रेमी बातें करते और हंसते रहे; परंतु गुप्त प्रेमी चुपरहे। डारसी ऐसी मिट्टी का नहीं बना था जो प्रसन्नता की बातपर हंसताही रहे; और एलिजाबेथ, उत्तेजित तथा गडबडाई हुई भी, अधिक अच्छीतरह यह बात जानती थी कि वह जैसा कि होना चाहती थी, वैसीही सुप्रसन्न है। क्योंकि यद्यपि तुरन्त उसके साथ डारसीके विवाहके होनेकी बातथी, तोभी उसके सन्मुख अन्य बुराइयांभी थीं। वह सोच रहीथी कि हमारे परिवार के लोग मेरी इस बात को जाननेपर कैसा अनुभव करेंगें। वह इस बातसेभी डर रहीथी कि अन्य बातोंके साथ २ यह एक नापसंदीभी है जिसेकि उसकी सारी संपत्ति और उसके परिणामभी दूर नहीं कर सकते हैं।

रातके समय उसने अपना हृदय जेनके सामने खोलदिया। यद्यपि मिस बेनट के साधारण स्वभावसे सन्देह बहुत दूर रहता था पर यहांपर तो वह सर्वथाही अश्रद्धालु असन्दिग्ध होगई थी।

जेन– तुम मजाक कररहीहो, लिजी! यह नहीं होसकता! मि० डारसीसे संबंध करलेना! नहीं, नहीं, तुम्हें मुझे धोखा नहीं देना चाहिये; मैं तो इसे असंभव समझती हूं।"

एलिजा– "निस्सन्देह, आरंभ तो दुर्भाग्यपूर्ण हुआ था! मेरा सारा आधार अब तुमपर है और मुझे निश्चय है यदि तुम मेरा विश्वास नहीं करतीहो तो कोई भी नहीं करेगा। निस्सेन्दह मैं तुम्हें सच कह रही हूं। मैं सत्यके सिवाय कुछ नहीं कर रही हूं। वह अबतक मुझे प्रेम करता है, और हमने विवाह करनेका परस्पर वचन देदिया है।"

जेनने उसकी ओर संदेहभरी दृष्टिसे देखा। ओह, लिजी, यह नहीं होसकता। मैं जानती हूं तुम उसे कितना नापसंद करती हो।"

एलिजा– तुम्हें कुछभी पता नहीं। वे सब बातें भुलादो। शायद मैं उससे इतना कभी प्रेम नहीं करसकी, जितना आजकल करती हूं; परन्तु मेरे जैसी इन घटनाओंमें पिछली बातें स्मरण करना अच्छा नहीं होता। यही अन्तिम समय है जिसकी बात मैं सदा स्मरण रखूंगी।

मिस बेनट अबतक भी आश्चर्यचकित दृष्टिसे देख रहीथी। एलिजा-बेथनें फिर और गंभीर होकर उसे इस बातकी सचाईका निश्चय कराया।

जेन चिल्ला उठी– "ईश्वरको धन्यवाद है। क्या ऐसा हो सकता है तोभी मैं तो तुमपर निश्चयही विश्वास करूंगी। मेरी प्यारी प्यारी लिजी मैं चाहती हूं मैं तुम्हें बधाई दूं,। पर क्या तुम्हें निश्चय हैं– प्रश्न क्षमा करना– क्या तुम्हें पूरा निश्चय है कि तुम उसके साथ प्रसन्न रह सकोगी?

एलिजा०– इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। यह हम दोनों में निश्चित हो चुका है कि हम दोनों ही इस संसार में सबसे अधिक प्रसन्न

जोडा होंगें। परन्तु क्या तुम प्रसन्न हो, जेनी! क्या तुम ऐसा भाई पाकर प्रसन्न होगी!"

जेन– बहुत, बहुतही अधिक। मुझे और बिंगलेको इससे अधिक प्रसन्नता नहीं हो सकती। परन्तु हम इस विषय को सोचचुके हैं, वार्तालाप करचुके हैं, हम तो इसे असंभवही समझते रहे थे। और क्या तुम उसे सचमुच बहुत प्रेम करती हो? ओह, लिजी! बिना प्रेम के विवाह करनेकी अपेक्षा कुछभी करलेना अच्छा है। क्या तुम्हें पूरा निश्चय है कि तुम्हें जो कुछ चाहिये था वह मिलगया है।

एलिज०–ओह, हां! तुम केवल तबही सोचोगी कि मैं उससे भी अधिक पागयी हूँ जितना कि मैं चाहतीथी, जबकि मैं तुम्हें स्वयं सब बातें बतलाउंगी।

जेन– "तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

एलिजा– क्यों, मुझे यह मान लेना चाहिये कि मैं उसे अधिक प्रेम करती थी। मुझे भय है तुम क्रोध करोगी।

जेन–मेरी अत्यंत प्यारी बहन, अब गंभीर बनो। मैं बहुत गंभीरतासे बात करना चाहती हूं। मुझे सब बातें शीघ्रही बतादो। क्या तुम बतला सकती हो तुम उसे कितने दिनसे प्यार करती रही हो?"

एलिजा– यह इतने धीरे २ होता गया कि मैं यह नहीं जानती कि यह कब आरंभ हुआ, परन्तु मुझे विश्वास है इसकी प्रथम तिथि वह थी जबकि पैम्बरले में मैंने उसकी सुन्दर भूमियां देखीं।

दूसरी बार की गंभीर होनेकी चेतावनीने, उचित प्रभाव डाला था, और उसने अपनी प्रेम की गंभीर बातोंसे शीघ्रही जेन को सन्तुष्ट कर दिया। जब वह इस प्रसंग को समझ गयी तो उसने और प्रश्न फिर न किये।

उसने कहा– "अब मैं बहुत ही प्रसन्न हूं। क्योंकि तुमभी मेरे

समानही प्रसन्न होगी । मैं सदा उसका मूल्य करती रही हूं । चाहे कुछ बात न थी, तोभी वह तुम्हें प्रेम करता था, मैं सदा उसका सम्मान करती थी, परन्तु अब, और जबकि वह बिंगलेका मित्र है और तुम्हारा पति है, तो मुझे बिंगले और तुम ही अधिक दोनों अधिक प्रिय हो । परंतु लिजी! तुम बहुतही चुप रहीं हो और मुझसे भी इस बातको बहुतही गुप्त रखती रही हो । तुमने मुझे पैम्बरले और लिम्पटन का कुछ ही हाल सुनायाथा । मुझे इसका सारा हाल किसीदूसरे की कृपासे पता लगा था, तुमसे नहीं ।

एलेजाबेथने उसे अपनी बातको गुप्त रखनेका उद्देश्य बतलाया । वह बिंगलेको कहना नहीं चाहतीथी, और उसकी अपनी भावनाओं की अनिश्चित दशा, उसे उसके मित्र का नाम बतलानेसे रोक रही थी; परन्तु अब वह किसी प्रकार भी उससे यह छिपाना नहीं चाहती थी कि लीडियाके विवाहके लिये उसने कितना कार्य किया है । सब बातें स्वीकार करली गई, और आधी राततक वार्तालाप होता रहा ।

मिसिज बेनट चिल्लाई जबकि वह एक खिडकी के समीप दूसरे दिन प्रातःकाल खडी हुई थी, "हे परमेश्वर ! यदि वह प्रतिकूल मि. डारसी अब हमारे यहां हमारे प्यारे बिंगले के साथ न आवे तो बहुतही अच्छा हो! आखिर वह क्या चाहता है जो सदा यहां आता है। हम इससे उकता उठे हैं; यद्यपि मैं ठीक तो नहीं कह सकती, परन्तु शायद वह शिकार के लिये जाना चाहता होगा, या और कुछ ऐसाही काम होगा । और हमें आकर अब वह तंग न करेगा । हमने उसका करना भी क्या है ? लिजी, तुमने उसके साथ फिर घूमने बाहर चले जाना, जिससे कि वह बिंगले के मार्गमें विघ्न न बने ।

एलिजाबेथ एक इतने मनपसंद सुगम प्रस्तावको सुनकर अपनी हंसी बडी कठिनतासे ही रोकसकी, तथापि वह बहुतही प्रसन्न थी कि उसकी माता उसे सदाही ऐसी उपाधियां या नाम देनेका सुअवसर देती रहे ।

ज्योंहि कि वे कमरे में घुसे, बिंगलेने एलिजाबेथको ऐसे गूढभावसे देखा, और ऐसी गर्मीसे हाथ मिलाया, जिससे इस बातमें संदेह न रहा कि उसे पूरी २ सूचना मिल गई है और उसने उसके बाद शीघ्रही उच्चस्वरसे कहा– "मिसिज बेनेट, क्या यहां और अधिक गली मुहल्ले नहीं हैं, जिनमें लिजी आजभी जाकर फिर अपना मार्ग भूल जाये?"

मिसिज बेनटने कहा– मेरी सम्मति है कि मि. डारसी, और लिजी, और किट्टी, ये सब ओकहाम् मौण्ट तक घूमने जावें। यह एक बहुत अच्छी लंबी सैर होगी, और मि. डारसी ने वह दृश्य कभी नहीं देखा होगा?"

मि० बिंगलेने उत्तर दिया–"यह औरोंके लिएभी बडा अच्छा रहेगा पर मुझे विश्वास है कि किट्टी के लिये यह बहुत दूर होगा– क्यों किट्टी दूर नहीं होगा?"

किट्टीने माना कि वह तो घरपर ही रहना पसंद करेगी। डारसीने उस मौण्ट (पर्वत) से दृश्य अच्छा दीखेगा यह पहलेही कहदिया, और एलिजाबेथने चुपचाप स्वीकार कर लिया। जब वह ऊपर अपने कमरे र तय्यार होनेको गई, मिसिज बेनट यह कहते हुए उसके पीछे २ ऊपर चली गई––

"मुझे बहुतही शोक है, लिजी, कि प्रतिकूल मनुष्य के साथ जान को तुम बाधित की गयी हो, परंतु मुझे आशा है तुम इसकी पर्वाह न करोगी। यह सब कुछ जेनके लिएही है यह तुम जानतीही हो; और इस अवसरपर उससे बातें भी नहीं की जा सकतीं, हां कभी २ करने में हर्ज नहीं होगा इसी लिये तुम अपने आपको उससे बातों के लिए बहुत असुविधा मे मत डालना।

भ्रमण करते समय यह निश्चय किया गया कि मि. बेनट की सायंकालको स्वीकृति लेली जाये; एलिजाबेथने अपनी मांसे बात करनेका स्वयं

निश्चय किया। वह यह निर्णय न कर सकी कि उसकी माता उसे इस विषय में क्या कहेगी। कभी तो वह यह सोचती थी कि डारसी की धन सम्पत्ति और प्रतिष्ठा उसको प्रभावित करेगी, कभी वह यह सोचती थी कि वह इस जोडी के विरुद्ध है, पता नहीं वह इसे स्वीकार नांही करें। वह मातासे मिलकर डारसी से पहलेही अस्वीकृति की कोई वात स्वयं सुनने में हर्ज न समझतीथी। डारसी को तो वह केवल प्रसन्नतादायक वातही सुनने में आगे रखना चाहती थी।

सायंकाल जब मि० बेनट पुस्तकालय में गये, तो उसने देखा मि० डारसी भी उठा है और उनके पीछे २ गया है, इस बातको देखकर उसकी घबराहट बढ गई। वह अपने पिता के विरोधको तो नहीं डरती थी, परन्तु उसे इस समय अप्रसन्न किया जायेगा; और उसका कारण एलिजाबेथ बनेगी– क्योंकि वही उसकी प्यारी बच्ची, अपने मनपसंद के चुनाव से उसको कष्ट पहुचायेगी, और उसके वियोग हो जानेसे उसे भय तथा शोकसे भर देगी– यह एक दुर्भाग्यपूर्ण विचार था, और इसी विचार में यह दुःख– मग्न बैठी हुई थी, कि इतने में डारसी आगया। उसकी ओर उसने देखा तो डारसी के मुखपर मुस्कराहट थी। इससे उसे कुछ शान्ति हुई। कुछही क्षणमें वह मेज के पास आया, जहां वह किट्टी के पास बैठी हुई थी। उसके काम की प्रशंसा करनेके बहानेसे उसने उसके कान में कहा, " तुम अपने पिता के पास जाओ; वह तुम्हें पुस्तकालय में मिलना चाहते हैं।" वह उसी समय वहां चली गयी।

उसके पिता कमरेमें टहल रहे थे, वह गंभीर और चिन्तित थे उन्होंने कहां "लिजी! तुम क्या कर रही हो? क्या तुम पागल तो नहीं हो गई हो जो इस पुरुषको चुन रही हो? क्या तुम सदा उससे घृणा नहीं करती रही हो?"

अब वह चाह रही थी कि कितना अच्छा होता कि मेरी पहली सम्मा

तियां अधिक युक्तियुक्त होती, मेरे कथन संयत भाषामें होतें। इस तरहसे वह अब उन टिप्पणयों और भाष्योंसे बच जाती, जोउसे अब अपनीहौ बातोंके विरुद्ध देने पडेंगे। परंतु अब पिता को उत्तर देना तो आवश्यकही था। इस लिये किसी न किसी प्रकार उसने अपने पिता को यह समझा दिया कि उसका प्रेम डारसी से है।

पिता– दूसरे शब्दों में तुम उसे प्राप्त करनेका निश्चय कर चुकी हो निश्चयही वह धनी पुरुष है, और तुम्हें बहुमूल्य वस्त्र और बढिया सवारियें जेनकी अपेक्षा मिलेंगी। परन्तु क्या ये पदार्थ तुम्हें आनंद दे सकेंगें ?"

एलिजाबेथ–क्या आपको मेरी उससे उपेक्षाके अतिरिक्त कोई और भी आपत्ति है ?

पिता --सर्वथा नहीं। हम सब जानते हैं कि वह अभिमानी तथा अप्रिय लगने वाला है, परन्तु यदि तुम उसे वास्तवमें पसन्द करती हो, तो ये आपत्तियां व्यर्थ हैं।

एलिजाबेथ ने आंखोंमें आंसू भरते हुए कहा --" हां हां, मैं उसे पसन्द करती हूं, मैं उससे प्रेम करती हूं। वास्तवमें वह अनुचित अभिमान नहीं करता है। वह पूरा मिलनसार है। आप उसे पूरी तरह नहीं जानते हैं, इसलिये उसके विषयमें ऐसी बातें कह कर कृपा करके मेरे मनको न दुखाइयें।"

पिता--" लिजी ! मैंने उसे अपनौ स्वीकृति दे दी है। वास्तवमें वह इस प्रकारका पुरुष है कि मैं उसकी मनचाही बातको अस्वीकार नहीं कर सकता। मैं यह बात अब तुम पर ही छोडता हूं। यदि तुम उसे पाने का निश्चय ही कर चुकी हो। परन्तु मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम इस विषय पर भली प्रकार सोच लो। लिजी ! मैं तुम्हारे स्वभावको जानता हूं। मैं जानता हूं कि तुम न तो प्रसन्न हो सकती हो नांही आदर पा सकती हो जबतक कि तुम अपने पतिका मान नहीं करोगी या उसे अपने से प्रत्येक

बातमें अच्छा न समझोगी । तुम्हारी प्रखरबुद्धि असमान विवाह से तुम्हें अत्यन्त भयमें डाल देगी । तुम अप्रतिष्ठा और दुःखसे कठिनतासे बच सकोगी । मेरी बच्ची ! मुझे इस बातसे दुःख नहीं पहुंचाओ कि मैं तुम्हारे पतिको तुमसे आदर पाते हुए न देखूं । तुम नहीं जानती हो कि तुम क्या करने लगी हो । "

एलिजाबेथ, यद्यपि उससे प्रभावित हो रही थी, तो भी अपने उत्तर देनेमें वह सच्ची और दृढ थी, और अन्तमें अनेकवार कहकर उसने पिता को विश्वास दिला दिया कि मि० डारसीको ही वह पसन्द करती है । उसने बतलाया कि किस प्रकार धीरे २ उसके भाव उसके लिये घटनाओंके अनु- सार बदलते गये और ये सब बातें एक दिनमें ही नहीं हुई हैं प्रत्युत कई महीनों तक वह जांचती रही है, उसके सद्गुणोंको परखती रही हैं । इस प्रकार अन्तमें उसने अपने पिताको इसी वरसे विवाह करनेको प्रसन्न कर लिया ।

पिता ने उसके चुप होने पर कहा —" अच्छा मेरी पुत्री ! मुझे अब अधिक कुछ नहीं कहना है । यदि सब बातें ऐसी ही हुई हैं तो वह तुम्हारे योग्य है । मैं तुम्हें लिजी ! किसी ऐसे पुरुषको नहीं सौंपना चाहता जो तुमसे कम योग्य हो ।

उस उत्तम प्रभावको सम्पूर्ण बनाते हुए उसने अपने पितासे वह सब कहा कि किस तरह मि० डारसी ने अपनी इच्छासे लीडियाके लिये इतना भारी त्याग किया है । उसने ये सब बातें बड़े आश्चर्य से सुनीं ।

पिता—निस्सन्देह यह सन्ध्या तो आश्चर्यों से भरी हुई है । तो डारसी ने ही सब कुछ किया है—इनकी जोडीको तय्यार किया, धन दिया, उसका ऋण चुकाया और उसको कमीशन (नौकरी) दिलवा दिया । यहां तक तो बहुत ही अच्छा हुआ । इसने मुझे एक विपत्तियों के पहाड से बचा लिया है, और धनको भी बचा दिया है । यदि यह तुम्हारे मामाका कार्य होता

तो मैं उसे अवश्य धन देता, परन्तु जोशीले युवा प्रेमी सब कार्य अपने ही ढंगसे करते हैं। मैं उसे कल धन वापिस करनेकी बात कहूंगा। वह तुमसे अपने प्रबल प्रेमके बदलेमें इस पर बुरा मनायेगा और मधुर वचन कहकर धन लेनेसे इन्कार कर देगा। बस यह मामला सदाके लिये समाप्त हो जायगा।'

तब उसने कुछ दिन पूर्व मि० कालिन्सके पत्रके पढनेसे जो एलिजाबेथ घबरा-सी गयी थी, उसको स्मरण किया; और उस पर कुछ देर हँस कर, उसे कहा कि वह जा सकती है। जाते समय यह भी कह दिया,—"यदि कोई और जवान पुरुष मैरी और किट्टीके लिये भी आवें तो उनको भी भेज देना, क्योंकि मुझे फुर्सत ही फुर्सत है।"

एलिजाबेथ के मनसे एक बड़ा भारी बोझ उतर गया था, और अपने कमरे में आधा घण्टा आराम करनेके बाद, वह अन्योंके साथ आराम से बातें कर सकती थी। अबतो प्रत्येक वस्तु नया आनंद दे रही थी। परन्तु संध्याकाल शान्ति से बीत गया। अब कोई प्राकृतिक अडचन नहीं थी, और स्वतंत्रता पूर्वक शान्ति और परिचय का समय स्वयं आ रहा था।

जब रातको उसकी माता अपने श्रृगार भवन में गयी, तो वह उसके पीछे २ गयी, और सब आवश्यक बातें उसे कह दीं। इसका प्रभाव बहुत ही असाधारण पडा, क्योंकि इस समाचारको पहले पहल सुनतेही मिसिज बेनट सर्वथा चुप शान्त होकर बैठ गयी और एक अक्षर भी उच्चारण न कर सकी। कई मिनटों तक वह यह भी न सोचसकी कि वह क्या सुन रही है, यद्यपि वह अपने कुटुम्ब की भलाई को समझती थी जोकि उनके परिवार के लिये प्रेमी के रूप में बनकर आई थी। अन्तमें वह होश में आई, कुरसी पर संभली और उठ खडी हुई, फिर बैठ गयी, आश्चर्य करने लगी, और अपने को आशीर्वाद देने लगी।

"अत्यन्त शुभ! ईश्वर मुझपर कृपा करे! जरा सोचो मेरी प्यारी! मि. डारसी! यह किसने सोचा था? और क्या यह वास्तव में सच है?

ओह मेरी प्यारी लिजी, तुम कितनी धनी और कितनीं बडी बनोगी। कितना जेबखर्च, कैसे जवाहिरात कैसी उत्तम गाडियां तुम्हें मिलेंगी! जेनको क्या मिलेगा, इसके मुकाबले में कुछ भी नहीं। मै इतनी प्रसन्न इतनी खुशी हूं। इतना चित्ताकर्षक पुरुष! इतना सुन्दर – इतना ऊंचा ओह, मेरी प्यारी लिजौ! मै उसे पहले जो नापसंद करती रही हूं उसकी मुझे क्षमा दो। मैं समझती हूं वह मुझे क्षमा कर देगा। प्यारी २ लिजी नगर में एक मकान! प्रत्येक बात आकर्षक है। तीन पुत्रियें तो ब्याही गयीं! दस हजार पौंड प्रति वर्ष! ओः ईश्वर! मेरा क्या होगा। मैं तो इस बातको सोचनेसे ही पागल हो जाऊंगी।

इतना ही लिखना पर्याप्त है कि वह इस संबंध से अत्यन्त प्रसन्न थी एलेजबिथने सुनकर आनंद मनाया और कमरे से चली गयी। अभी उसे अपने कमरे में गये हुए तीन मिनिट नहीं बीते थे कि उसकी माता उसके पास पहुंच गई।

वह चिल्लाई – मेरी सबसे प्यारी पुत्री मैं कुछ सोच ही नहीं सकती हूं। वर्ष में दस हजार पौंड और शायद अधिक! यह तो लार्डों के सदृशही हुए। और फिर एक खास लाइसेंस मिलेगा – तुम्हें तो एक खास लाइन्सेस लेकर ही विवाह करना चाहिये, करनाही होगा। परन्तु मेरी प्यारी, यह तो बतलाओ कि मि. डारसी कौनसा भोजन अधिक पसंद करता है, जिसे कि मैं उस के लिये कल बनवा सकूं।

यह एक शोक की बात थी कि उसकी माताका उस सज्जन पुरुष से अच्छा बर्त्ताव न रहा था। और एलिजाबेथ जानती थी, कि यद्यपि वह अत्यन्त प्रेम करती थी, और उससे अपने नये संबंध की स्वीकृति भी लेली थी, तो भी कुछ और उससे जानने की इच्छा थी। परन्तु दूसरी प्रातः भी अधिक आराम से गुजर गई, क्योंकि मिसिज बेनट सौभाग्य से अपने भावि दामादके रौबदाबमें इतनी आ गयौ थी, कि उसने उससे बात करनेमें भी

तब तक साहस न किया जबतक कि वह उसपर विशेष ध्यान देनेमें शक्ति अनुभव न करने लगी, या अपने अत्यन्त आदरपर उसकी सम्मति न जान चुकी।

एलिजाबेथ यह देखकर प्रसन्न थी कि उसका पिता अपने को उससे परिचित कराने के लिये स्वयं कष्ट कर रहा है, और मि. बेनट ने शीघ्रही उसे विश्वास दिला दिया कि वह उसका सम्मान करने को प्रत्येक घण्टे में उठने को तय्यार है।

उसने कहा "मैं अपने तीनों दामादों की बडी प्रशंसा करता हूं" विकम, शायद, मेरा प्रिय है, परन्तु मैं समझता हूं, मैं तुम्हारे पति को भी ऐसाही पसंद करूंगा जैसाकि जेन के पतिको पसंद करूंगा।

साठवां परिच्छेद

एलिजाबेथ के भाव फिर आनंदमग्न होकर मि. डारसी से प्रेमकी बात करने में आतुर हो उठे। उसने कहा "आपने प्रेम करना कैसे आरंभ किया ?" मैं आगे बढना तो तुम्हारा समझ सकती हूं पर आरंभ २ में तुमने प्रेम करना कैसे आरंभ किया ?"

डारसी :– "मैं वह घण्टा, जगह, दर्शन, शब्द तो नहीं बतला सकता जो आरंभ में प्रेम की नींव बने थे। इसे बहुत देर हो गई। मैं आधा प्रेम म मग्न हो चुका था जब मैंने जाना कि मैं प्रेम करने लगा हूं।"

एलिजा :– मेरी सुन्दरता से तो तुम्हें पहलेही घृणाथी, मेरे आचार व्यवहार कम से कम तुम्हें असभ्य लगते थे, और मैं तुमसे जब बोलती थी तो केवल तुम्हें दुःख देने के लिये ही। अब, सत्य २ बतलाओ, क्या तुम मेरी गुस्ताखी पर प्रसन्न हुये।

डारसी :– मैं तुम्हारे मन की सुन्दरता पर प्रेम करने लगा था।

एलिजा :– तुम इसे तुरन्त ही गुस्ताखी भी तो कह सकते हो, इससे

कम तो यह थी भी नहीं। बात यह है कि तुम सभ्यताके रोगी थे, मान-प्रतिष्ठा और सरकारी ध्यान के रोगी थे। तुम स्त्रियों से घृणा करते थे क्योंकि वे सदा बोलती रहती हैं, और केवल तुम्हारी मनपसंद बातको ही सोचती रहती हैं। मैं तुम्हारे लिए इस कारण आकर्षक बन गई क्योंकि मैं वैसी स्त्री नहीं थी। यदि तुम वास्तव में मिलनसार न होते तो तुम मुझसे भी घृणा करते, परन्तु यद्यपि तुमने अपने आपको छिपाने के लिये कई प्रकारके कष्ट उठाये, परन्तु तुम्हारे भाव सदा अच्छे और न्यायोचित रहे थे और अपने हृदयमें तुम ऐसे मनुष्योंको सदा छिपाये रहे जो तुमसे मिल सकते थे। इसलिये, मैंने तुम्हें उन मनुष्यों की गिनती करने से बचा लिया है, और सचमुच, सब बातों का विचार करने पर, मैं इसे पूरा युक्ति युक्त समझने लगी। वास्तव में, तुम्हें मेरे असली गुणों का तो कुछ भी पता नहीं हैं, परन्तु इन बातों को तब कौन सोचता है जब कि दो प्रेमी प्रेम करने लगते हैं। "

डारसी :– क्या यह कोई गुण नहीं था, जब कि तुम नीदरफील्ड में रोगी पडी हुई अपनी बहन जेनकी प्रेमसे सेवा कर रहीं थीं ?

एलिजा :– " अतिप्यारी जेन ! उसके लिये कौन कमी कर सकता था ? पर इसमेंसे भी सब यत्न करके गुण निकाल रहे हो। मेरे उत्तम गुण तुम्हारी रक्षा में ही तो प्रकट हो रहे थे, और तुम उनको बढा चढा-कर यथासंभव कह रहे हो, और इसके बदले में मैं, तुम्हें सदा चिढाने और झगडनेका कारण बनने के लिये अवसर ढूंढती रही हूं, और अब मैं सीधा पूछना आरंभ करती हूं, कि किस वस्तुने तुम्हे इतना अनिछुक बनाया था कि तुम अन्तमें सीधे मार्गपर आगये। किस वस्तुने तुम्हें इतना लज्जा-शील बना दिया था कि जब पहले तो तुमने मुझे बुलाया फिर यहां भोजन किया विशेषकर जब तुमने बुलाया था तो क्या तुम ऐसा देख रहे थे मानों कि तुम मेरी पर्वाह ही नहीं करते हो ?

डारसी– क्योंकि तुम गंभीर और मौन थीं, और तुमने मुझे कोई उत्साह नहीं दिलाया "

एलिजा– परन्तु मैं तो द्विविधामें थी ।

डारसी– मैं भी तो था ।

एलिजा– जब तुम भोजन पर आयेथे तुम मुझसे अधिक बातें कर सकते थे ?

डारसी– एक पुरुष जोकि पहले भुगत चुका हो, कमही बात कर सकता था ।

एलिजा– कैसा दुर्भाग्य है कि तुम्हें एक युक्तिसंगत उत्तर देना चाहिये था, और मुझे भी इतना युक्तिसंगत होना चाहिये था कि मैं उसको मान लेती । परन्तु मैं आश्चर्य करती हूं कि इस प्रकार कितनी देर तक तुम करते चले जाते, यदि तुम अपनोही इच्छा पर छोड दिये जाते । मैं आश्चर्य करती हूं कि तुम अपने मुंहसे कब कहते यदि मैं तुमसे कभी पूछती ही न । मेरा विचार है कि तुम्हें लीडियाके ऊपर दया करनेके विषय में मेरा धन्यवाद देना शायद अपना गहरा प्रभाव डाल गया, बहुतही गहरा । मैं डरती हूं; उस आचरणसे क्या लाभ होता यदि हमारा सुख एक प्रतिज्ञा भंग करनेसे उत्पन्न हुआ होता ? क्योंकि मुझे तो यह बात कहनी ही न चाहिये थी । यह कभी भी न होगा ।

डारसी– तुम्हें चिन्ता न करनी चाहिये । आचार पूर्णरूपसे पालन किया जायेगा । लेडी कैथराईनके न्यायविरुद्ध प्रयत्नोंसे हम दोनों मिल न सकें, येही तो साधन बने जिनसे कि मेरे सब संदेह दूर हो गये । मैं अपनी वर्तमान प्रसन्नताके लिये तुम्हारे धन्यवाद देने की प्रबल कामना का ऋणी नहीं हूं । मैं तुम्हारी ओरसे बात आरंभ करने के सुअवसरकी खोजमें नहीं था । मेरी मौसी की बुद्धिने मुझे आशा दिला दीथी, मैं उसी समय सब बातों के जाननेको लिये उद्यत हो गया था ।

एलिजा– लेडी कैथरीन अनंत लाभ देने वाली बनी; इसलिये उसे प्रसन्न करना चाहिये; क्योंकि वह पसंद करती हैकि उसकी प्रतिष्ठा बनी रहे परन्तु मुझे बतलाओ, कौनसी बात तुम्हें नीदर–फील्ड तक लानेका कारण बनी? क्या यही थी कि लौंगबोर्न तक सवारी की और द्विविधा में आकर पड गये? अथवा तुम कुछ और भी गंभीर परिणाम सोचकर आये थे?

डारसी– मेरा वास्तवमें तुम्हें देखने का उद्देश्य था, और यहभी कि मैं निर्णय करूं, यदि मैं कर सकता हूं, कि क्या मैं कभी आशा कर सकता हूं कि तुम मुझे प्रेम करोगी। मेरा प्रण, अथवा मेरा अपना प्रण था कि क्या तुम्हारी बहन अब भी बिंगलेके लिये पक्षपाती है, और वह उसको स्वीकृति देती है, जो कि मैंने अभी दी है।

एलिजा– क्या तुम्हें इतना साहस कभी होगा कि तुम लेडी कैथरीन को कह दो कि उसका क्या होनेवाला है।"

डारसी– मैं साहस की जगह समय की प्रतीक्षा कर रहा हूं, एलिजा-बेथ! परन्तु हाँ, यह हो ही जाना चाहिये; और यदि तुम मुझे एक कागज दो तो यह सीधाही अभी हो जायेगा।

एलिज०– और यदि मैंने एक पत्र स्वयं न लिखना होता तो मैं तुम्हारे पास बैठकर तुम्हारे लेखकी सचाई की प्रशंसा करती, जैसा कि एक अन्य युवती ने एकवार की थी। परंतु मेरी भी एक मामी है, जिसे देरतक भुला रखना ठीक नहीं।

क्योंकि एलिजाबेथ यह स्वीकार करना नहीं चाहती थी कि उसका डारसीसे प्रेम कितना अधिक समझ लिया गया है, इसीलिये उसने मिसिज गार्डनरके लंबे पत्रका अभीतक उत्तर नहीं दिया था। परन्तु अब, तो इस समाचार को वह देना चाहती थी क्योंकि वह जानती थी कि इसका बहुत स्वागत होगा। उसे यह सोचकर भी लज्जा आती थी कि उसको मामा और मामी को तीन दिनतक इस प्रसन्नतासे वंचित रहना पडा है; उसने

तुरन्त ही नीचे लिखा पत्र लिखा–

– पत्र –

मुझे आपका पहले ही धन्यवाद करना चाहिये था, मेरी प्यारी मामी जैसाकि मेरा कर्त्तव्य था कि आपके लंबे, दयामय तथा विशेष सन्तोष-दायक विवरणवाले पत्र का करूं। परन्तु सच बात कहूं, तो मैं लिखने में कुछ घबराती थी। आपने वास्तविक बातसे अधिक ही विचार बना लिये थे। परन्तु अब जितना चाहो आप अपने विचार बना सकती हो। अपनी कल्पनाको दौडा सकती हो, जहां तक इस विषयका संबंध है वहां तक आप जो चाहो सोच सकती हो, और जब तक आप मुझे सचमुच विवाहित न देख लोगी तबतक तुम बडी भूल न करोगी। तुम मुझे शीघ्र ही दूसरा पत्र अवश्य ही लिखना, और उस व्यक्तिकी पहले पत्रसे भी अधिक इस पत्रमें प्रशंसा करना। मैं आपका बार २ धन्यवाद करती हूं कि आप झीलों पर नहीं गयीं। मैं इसको कैसे चाह सकती थी, क्या मैं मूर्ख थी। तुम्हारे टट्टुओंके विषयमें विचार बडे आनन्ददायक हैं। हम (पार्क) वाटिकाके चारों ओर प्रतिदिन घूमा करेंगी। मैं इस जगत्‌में सबसे अधिक आनन्दयुक्त जीव हूं। शायद अन्य लोगों ने ऐसा पहले कहा हो, परन्तु किसी ने भी इतनी सचाईसे नहीं कहा था। मैं जेनसे भी अधिक प्रसन्न हूं। वह केवल मुस्कराती है, मैं हंसती हूं। मि० डारसी सारे संसारका प्रेम, जो मुझसे बच गया हो, तुम्हें भेजता है। तुम सबने क्रिसमसमें पैम्बरलेमें अवश्य आना है– तुम्हारी इत्यादि।"

मि० डारसीका पत्र लेडी कैथरीनको दूसरी शैलीसे ही लिखा गया था, और मि० कालिन्सके अन्तिम पत्रके उत्तरमें जो उसे मि० बेनट ने पत्र भेजा, उसकी शैली भी सबसे ही पृथक् थी।

– पत्र –

प्रिय महोदय !

मैं आपको बधाई देनेके लिये पुनः कष्ट दे रहा हूं। एलिजाबेथ शीघ्र

ही मि० डारसीकी पत्नी बनेगी। लेडी कैथरीनको यथाशक्ति सांत्वना दो। परन्तु यदि मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं अपने भानजेके पास होता। उसे और भी देना पडेगा।" आपका सच्चा, इत्यादि०।

मि० बिंगलेकी बधाइयां, अपने भाईके लिये, उसके आने वाले विवाहके लिये, सर्वथा ही प्रेममयी परन्तु बनावटी थीं। उसने जेनको भी पत्र लिखा था, इसी अवसर पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिये, और उसने अपनी सारी ही पहले सम्मान की बातें दोहरायीं,। जेन ठगी जाने वाली नहीं थीं, पर तो भी प्रभावित हुई; और यद्यपि वह उस पर विश्वास नहीं करती थी, तो भी वह जितना उचित था उससे भी अधिक दयापूर्ण पत्र लिखने में उत्तरमें न चूकी।

वह आनन्द जो कि मिस डारसी ने इस समाचारको सुनकर प्रकट किया ऐसा ही सच्चा था, जैसा कि उसके भाई ने उसको पत्र भेजनेमें प्रकट किया था। चार पृष्ठोंका पत्र भी उसके आनन्दको और उसकी अपने भाईके लिये सभी सच्ची प्रेममयी भावनाओंको प्रकट करनेमें अपर्याप्त था।

मि० कालिन्ससे कोई उत्तर या बधाइयां आनेसे पूर्व ही अथवा उस की पत्नीकी ओरसें एलिजाबेथको बधाइयां आनेसें पूर्व ही, लौंगबोर्नके परिवार ने सुना कि कालिन्स तो स्वयं ल्यूकेस लाजमें आये हैं। इस तुरन्तके परिवर्तनका कारण शीघ्र ही स्पष्ट हो गया था। लेडी कैथरीन अपने भतीजेके पत्रको पाकर इतनी क्रुद्ध हो गई थी, कि शारलोट, जो इस संबंध से बहुत प्रसन्न थी, वहांसे तबतक हट जानेमें ही कुशल समझती थी' जब तक कि वह तूफान ऊपरसे गुजर न जावे। ऐसे समयमें उसकी सखीका वहां आना एलिजाबेथके लिये वास्तविक प्रसन्नता थी, यद्यपि मिलते समय वह यह अनुभव करती थी कि यह आनन्द बडा महंगा खरीदा गया है। जब मि० डारसी ने उसके पति कालिन्स की परेड करने तथा अतिशय खुशामदें

करनेकी बात सब पर प्रकट कर दी थी तो उसने इसे प्रशंसनीय शान्तिसे सहा था। वह सर विलियम ल्यूकस की बात भी सुनना चाहता था, जब उसने उसे पूर्ण करनेके लिये कहा था कि वह गांवके अत्यन्त उज्ज्वलरत्न को ले जारहा है, और उसने आशा प्रकटकी कि वे अब सब सेटजेम्सके गिर्जेमें बहुत ही अच्छे ढंगमें बार २ मिलेंगे। यदि उसने उस समय अपने कंधोंको हिलाया भी तो तब जबकि सर विलियम दृष्टिसे ओझल हो गये थे।

मिसिज फिलिप्सकी असभ्यता तो और भी अधिक थी और उसकी सहनशक्ति पर शायद एक बडा ही कर थी। और यद्यपि मिसिज फिलिप्स और उसकी बहन उससे बातें घुलमिलकर करने में बहुत घबराते थे, जबकि बिंगले अपने हंसमुख स्वभावसे उनके उत्साह को भी बढा रहा था, तो भी जब भी वह बोलती थी, वह निश्चित ही असभ्य या भद्दा होता था। उसके कारण ही उसकी प्रतिष्ठा नहीं थी यद्यपि इसी कारण वह अधिक मौन रही थी और यही उसे पूरी तरह शोभित बना सकी थी। एलिजाबेथ ने वह सब कुछ किया, जो कुछ कि उसकी रक्षाके लिये इन सबकी नजरसे बचानेके लिये किया जा सकता था, और सदा इस बातकी उत्सुक रही थी कि उसे सदा अपने लिये ही नियत रखे और अपने परिवारके लिये कि जिनके साथ कि वह अच्छी प्रकार पूरी २ खुलकर बातचीत कर सकती थी; और यद्यपि बेचैन करने वाली भावनाएं जो कि इससे उठ रही थीं, इसके संबंध जोडनेके समयसे ही इसके आनन्द को कम कर रही थीं, तो भी ये भविष्यकी आशा बढा रहीं थीं, और वह उस आनेवाले समय की प्रसन्नतासे प्रतीक्षा कर रही थीं, जबकि वह इस समाजसे जो कि उनको तनिक भी प्रसन्नता नहीं देता, आराम पायेंगे, और सारे हीं आराम और सुख अपने कुटुम्बकी पार्टीमें पैम्बरलेमैं प्राप्त हो जायेंगे।

———

इकसठवां परिच्छेद

वह दिन माता की प्रेममयी भावनाओंके लिये कितना अच्छा था जबकि मिसिज बेनट अपनी दो सुयोग्य पुत्रियोंके विवाहकी चिन्तासे मुक्त हुई थी। कितने प्रसन्नतामय अभिमान से बादमें वह मिसिज बिंगले से मिली और मिसिज डारसी से बातें करती रही, यह अनुमान किया जा सकता है। मैं चाहती हूं कि यह अच्छा होता कि मैं उसके परिवार के लिये कह सकती कि उसकी अपने इतने अधिक बच्चोंके प्रबंध के लिये सच्ची इच्छाकी पूर्ति, ने इतना प्रसन्नतादायक प्रभाव उत्पन्न किया था कि उससे वह एक बुद्धिमती, मिलनसार, समयोचित ज्ञान रखनेवाली, अपने शेष जीवन के लिए बन गयी थी; यद्यपि उसके पति के लिये तो यह एक मधुर सौभाग्य की ही बात थी, जोकि आजतक कभी न हो सकी थी, यद्यपि वह अब भी कभी २ उत्तेजित और कभी २ बुद्धिरहित हो उठती थी।

मि. बेनट ने अपनी दूसरी पुत्री के वियोग को बहुत मनाया। उसका उसके प्रति स्नेह ही था जोकि और किसी बातकी अपेक्षा प्रायः उसे घरसे बाहर ले जाता रहता था। वह पैम्बरलेमें जानेसे प्रसन्न होता था विशेष करके जब कि उसकी वहां कोई आशा नहीं करता होता था।

मि० बिंगले और जेन नीदरफील्डमें १२ महीने ही रहे। अपनी माताके और मैरिटनके संबंधियोंके इतने पास रहना न तो बिंगलेके ही सरल स्वभावके अनुकूल पडा नांही जेनके प्रेमी हृदयके अनुकूल रहा। बिंगलेकी बहनोंकी प्रिय आकांक्षा तो तब तृप्त हो गयी थीं, जब उसने डर्बीशायरके निकट ही एक जागीर खरीद ली थीं, और जेन और एलिजाबेथ, अन्य सभी प्रसन्नताके साधनोंके साथ २ एक दूसरेसे केवल तीस मील दूरी पर रहती थीं।

किट्टी, अपने लाभके लिये, प्रायः अपनी दोनों बडी बहनोंके साथ रहा करती थी। वह लीडियाके समान आदेश न पालन करने वाली लडकी नहीं थी; और लीडियाके प्रभावसे वह बचा ली गयी थी। वह उचित ध्यान देनेसे तथा सुरक्षासे, कम क्रोधी, कम अज्ञानी तथा कम ढीठ हो गयी थी। लीडियाकी सोसायटीका लाभ न उठानेके कारण निस्सन्देह वह सावधानीसे रक्षित की जा रही थी; और यद्यपि मि० विकम ने उसे कई वार अपने पास बुलानेका यत्न किया। उससे प्रतिज्ञाएं कीं कि वह उसे नृत्यों और नवयुवकोंसे मिलायेगा, परन्तु उसके पिताने उसे कभी जाने की आज्ञा नहीं दीं।

केवल मेरोही एकमात्र पुत्री घरपर रहगई थी, और उसे अपने आपको पूर्णतया योग्य बनानेका समयही नहीं मिलता था, क्योंकि मिसिज बेनट अकेली बैठनेके सर्वथा अयोग्य थी। मेरीको संसारसे और भी अधिक मिलनेकी आवश्यकता थी, परन्तु वह प्रत्येक प्रभातमें संयतभावसेही किसीसे मिलती थो। और क्योंकि वह अपनी बहनोंकी अपेक्षा सुन्दरतामें शीघ्रही उन्नति कर पाई थी, इससे उसके पिताको संदेह हो रहा था कि उसमें यह परिवर्त्तन एकदम कैसे हो गया है।

विकम और लीडियाके चरित्रोंमें उनकी बहनोंके विवाहसे कोई परिवर्त्तन उत्पन्न नहीं हुआ था। उसके मनमें यह विचार उठ रहे थे कि एलिजाबेथको अब तक पता लग चुका होगा कि वह कितना अकृतज्ञ और झूठा था, जिसें कि वह पहले नहीं जानती थी। और ये सब कुछ होते हुए भी, इस बातकी आशा थी कि डारसी शायद इन दोनोंके भविष्यको भी कुछ उज्ज्वल बना दे। एलिजाबेथको जो पत्र बधाई देते हुए लीडियाने लिखा था, उससे यह स्पष्ट हो रहा था कि यद्यपि स्वयं उसने नहीं लिखा तो भी उसके पतिने इसकी आशा उनसे अवश्य की है। पत्रमें इसप्रकार लिखा था :-

पत्र

'मेरी प्यारी लिजी ! मैं चाहती हूं तुम प्रसन्न रहो यदि तुम मि· डारसीको' मुझसे आधा प्यार भी करती हो जितना कि मैं अपने प्यारे विकमको करती हूं, तो तुम बड़ी प्रसन्न होगी। इतने धनाढ्यको पाकर तुम बहुत सुखी होगी, और जब तुम्हें कोई काम करनेको न हो, तो मुझे आशा है तुम हमारे लिये भी अवश्य ध्यान दोगी। मुझे विश्वास है विकम आपके कोर्टमें के स्थानको बहुतही पसन्द करेगा, और म नहीं समझती कि हमारे पास इतना धन होगा कि हम किसीकी सहायताके बिना गुजारा कर सकें। कोई भी स्थान जो ३०० या ४०० पौंड वार्षिक किरायेपर हो, हमारे लिये ठीक रहेगा, परन्तु यदि तुम न भी कर सको, तो कृपया डारसीको यह न कहना। आपकी इत्यादि०

एलिजाबेथ क्योंकि इस प्रकारकी बातोंको समाप्त करना चाहती थी कि उससे इस प्रकारकी सहायता की व्यर्थमें आशा रखे, इसलिये उसने उसे ऐसाही उत्तरभी भेज दिया था। हां, ऐसी सहायता, जो वह अपने निजी खर्चको बचाकर उसे भेज सकती थी, भेजती रहती थी। वह यह स्पष्ट जानती थी कि उन दोनोंकी आय तो कम है और वे खर्च उससें बहुत अधिक करते हैं। और भविष्यके लिए भी कुछ संचय नहीं करते हैं। ऐसी अवस्थामें उसकी भेजी हुई धनराशि भी उन्हें कुछ पर्याप्त न होगी। जब २ भी वे मकान बदलते थे तब २ वे जेनसे एलिजाबेथसे कुछ न कुछ सहायता लेकर अपने खर्चके बिल चुकाते थे। उनके रहनेका ढंग, जब कि शक्ति प्राप्त करनेके बाद उनके रहनेको कोई घर न रहा था, अत्यन्तही अनिश्चित था। वे सदाही सस्ते स्थानकी तलाशमें इधरसे उधर घूमते फिरते थे, और सदाही अपने सामर्थ्यसें अधिक खर्च करते रहते थे। उसका प्रेम भी लीडियाके लिये उदासीनतामें बदल गया था। लीडियाका प्रेम कुछ अधिक दिन तक टिका था, और अपने

यौवन तथा स्वभावके साथ २ उसने अपने विवाहसे उत्पन्न हुए २ सभी सम्मानके दावे रोक लिये थे।

यद्यपि डारसीने विकमका पैम्बरलेमें कभी स्वागत नहीं किया, तो भी एलिजाबेथके लिये, उसने उसके काममें सहायता भेजी थी। लीडिया कभी २ वहां मिलने आती थी, जब कि उसका पति लंडनमें या बाथमें मौज उडाने जाता था। और बिंगलेके साथ, वे दोनों लगातार वहां इतने दिन ठहर जाते थे, कि बिंगलेका हंसमुख मिजाज भी उनसे उकता जाता था। और वह मजबूरन उनको वहांसे जानेका संकेत करनेमें बाधित हो उठता था।

मिस बिंगले डारसीके विवाहसे बहुतही दब गई थी, परन्तु क्योंकि वह इसे उचित समझती थी कि पैम्बरलेमें कभी २ जाकर मिल आनेके अधिकारको जारी रखे, उसने सारा क्रोध दूर कर दिया था। जार्जिआनाकी वह भक्त बन गई थी, डारसीके लिए भी सदाकी तरह अधिक ध्यान देती थी, और एलिजाबेथका इतना मान करती थी कि सारी पिछली कसर भी निकाल दी थी।

पैम्बरले अब ज्यार्जिआनाका घर था, और बहनोंका प्रेम ऐसाही था जैसा कि डारसी देखनेकी आशा करता था। वे एक दूसरेसे प्रेम करनेके योग्य थे। ऐसा जैसा कि वे चाहते थे। जार्जिआना सब संसारसें अधिक सम्मान एलिजाबेथका करती थी, यद्यपि पहले २ आश्चर्यसे भय करती हुई, उसने सुना कि वह सजीवतासें खिलाडियोंके सदृश उसके भाईसे बातें करती है। डारसी भी एलिजाबेथ ी प्रतिष्ठा करके उसके प्रेमको जीत गया था। इस बातको जानकर वह उसकी खुली बातोंसे बहुतही प्रसन्न हुई थी। उसके मनने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया था जो उसने पहले कभी नहीं जाना था। एलिजाबेथकी शिक्षासे सोचना शुरू किया कि एक स्त्री स्वतंत्रता ले सकती है, अपने पतिके साथ, जिस स्वतंत्रताको कि एक भाई

कभी भी नहीं देगा अपनी बहनको जो कि उससे दस वर्ष छोटी हो।

लेडी कैथरीन अपने भतीजेके विवाहपर घोर कुपित थी और क्योंकि उसने अपनी सारी स्वतंत्रताका यहीं उपयोग करना उचित समझा, इसलिए उसने प्रत्युत्तरमें ऐसा गालियोंसे भरा हुआ, विशेषकर एलिजाबेथके लिए गालियोंसे भरा हुआ पत्र भेजा, कि जिसको पाकर कुछ दिनोंके लिए उनका आपसका वार्तालाप और मिलनाजुलना भी सर्वथा बंद हो गया। परन्तु अन्तमें, एलिजाबेथके समझानेसे डारसीने उस अपराधको भुलाना उचित समझा और सन्धि कर लेनी ही उचित समझी। यद्यपि पहले तो उसकी मौसीने उसका कुछ विरोध किया, पर अन्तमें उसका क्रोध दूर हो गया। चाहे वह उस प्रेमसे प्रभावित हुई जो कि उसे अपने भतीजेके लिए था, अथवा इस बातसे कि उसकी पत्नी अब उससे कैसा व्यवहार करती है। वह उनके घर जानेको भी खुश हो गई थी, यद्यपि उस स्थानके जंगल खराब हो गए थे। वे जंगल कुछ तो उस घरकी इस नई स्वामिनी (एलिजाबेथ)के कारण और अधिकतर नगरसे उसकी मामी और मामाके साथ आए हुए अतिथियोंके कारण भी खराब हो गए थे।

गार्डनर परिवारके साथ, वे सदाही घनिष्ट प्रेमसे बंधे रहे। डारसी और एलिजाबेथ, सचमुच उनसे प्रेम करते थे, और वे दोनों उस गहरी कृतज्ञतासे उन लोगोंके लिए सदाही परिचित थे, जो कि उसे डर्बीशायरमें लाकर, अब दोनोंको मिलानेके कारण बने थे।

समाप्त

शुभ संदेश

हमारी दो ग्रंथमालाएं

(१) विद्यालंकार–आर्यवाङ्मय–रत्नमाला (संस्कृत)

(२) विद्यालंकार-आर्यभाषा-ग्रन्थमाला (हिन्दी ग्रन्थ)

---००---

हमारी इन ग्रन्थमालाओंमें आगे २ संस्कृत तथा हिन्दी के उपन्यास, काव्य, आदि के ग्रन्थ छपेंगे। नं.२ में पहले "कोकसार भाषा" ग्रन्थ आनन्द कविकृत (दाम २।) रुपये छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवादसहित छप चुका है। यह ग्रन्थ अप्राप्य और लुप्त था। एक महाराजाके पुस्तकालयसे प्राप्त करके छपवा दिया गया है। जिससे हिन्दीके एक महाकविका कामशास्त्र पर छन्दोंमें लिखा हुआ सबसे पहला ग्रन्थ आज जगत्के सामने आ गया है। आगे २ संस्कृतके महा कवियों के काव्य, नाटक आदिके हिन्दी अनुवाद, अंग्रेजी उपन्यासोंके हिन्दी अनुवाद, शिकार आदि विषयों पर लिखे हुए अनेक ग्रन्थ हमारी इस ग्रंथमाला में क्रमशः प्रकाशित होते रहेंगे। जो हिन्दी भाषा के सर्वाङ्गीण साहित्यकी वृद्धि करेंगे। जो लोग हमारी ग्रंथमालाके स्थिर ग्राहक बन जायेंगे उन्हें हम प्रत्येक पुस्तक पर दोआना रुपेया कमीशन देंगे। स्थिर ग्राहक बननेके लिये केवल एक जवाबी कार्ड अपने पूरे पतेसहित हमें भेजना पर्याप्त है। इससे हम उन्हें स्थिर ग्राहक नंबर भेज देंगे जो पुस्तकें मंगाते समय उनको कमीशन देनेमें सदा सहायक सिद्ध होगा।

पुस्तकें मंगानेका पता :–
डॉ० सत्यकाम वर्मा, बी. ए.
आयुर्वेदालंकार
३७–६ राजेन्द्रनगर,
डाक–नई दिल्ली ५

पुस्तकें मंगानेका पता :–
श्री विद्याधर विद्यालंकार
विद्यालंकार ग्रंथमाला
सीताराम बाग,
हैदराबाद–दक्षिण